नवजात शिशु तथा बच्चों की घर में देखभालः
'आशा' प्रशिक्षण कैसे करें

प्रशिक्षण-विधि पुस्तिका : खंड 2

सर्च टीम

डा. अभय बंग, एमडी, एम्पीएच्

सुश्री प्रिया परांजपे, एम्एस्सी, एम्एड्

डा. संजय बैतुले, डीएच्एम्एस्

सहयोगी

ज्युडिथ स्टॅन्डली, सीएन्एम्, एम्पीएच्

अनुवाद

सुश्री डा सुधा चौहान

(आई. सी. एम्. आर्.)

खंड 2:

प्रशिक्षण कार्यशाला 4

प्रशिक्षण कार्यशाला 5

प्रशिक्षण कार्यशाला 6

प्रशिक्षण कार्यशाला 7

नवजात शिशु तथा बच्चों की घर में देखभालः
'आशा' प्रशिक्षण कैसे करें

प्रशिक्षण कार्यशाला 4

मोड्यूल 10 : विटामिन 'के' की सुई लगाना

मोड्यूल 11 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय पूर्व जन्मे शिशुओं के खतरे की स्थितियों का निर्धारण तथा देखभाल

मोड्यूल 12 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा चूषण पंप से प्रारम्भिक उपचार

मोड्यूल 13 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार

समयसूची
आशा प्रशिक्षण की प्रशिक्षण कार्यशाला 4
मोड्यूल 10,11,12 तथा 13

समय	दिवस 1	दिवस 2	दिवस 3	दिवस 4	दिवस 5
सुबह का सत्र 8.30 से 12.30	स्वागत, गीत, (15 मि.) मोड्यूल 10 : विटामिन 'के' की सुई लगाना सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 3 मोड्यूल 7, 8, एवँ 9 के बाद कार्यक्षेत्र के अनुभवों की समीक्षा (1 घंटा 30 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 2 : विटामिन 'के' (1 घंटा 30 मि.) सत्र 3 : सुई (सिरिंज) (प्रस्तुति एवम् प्रदर्शन) (30 मि.) भोजन (1 घंटा 25 मि.)	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (15 मि.) सत्र 6 : सुई लगाना : अभ्यास और मूल्यांकन (2 घंटे) चाय (15 मि.) मोड्यूल 11 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय पूर्व जन्मे शिशुओं के खतरे की स्थितियों का निर्धारण तथा देखभाल सत्र 1 : जन्म के समय कम वज़न / समयपूर्व जन्म और इसके खतरे (45 मि.) सत्र 2 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय से पूर्व जन्मे शिशु की देखभाल कैसे करें (प्रस्तुति एवम् चर्चा) (1 घंटा 20 मि.) भोजन (1 घंटा 15 मि.)	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (15 मि.) सत्र 4 : अधिक खतरे वाले शिशु (2 घंटे) चाय (15 मि.) मोड्यूल 12 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा चूषण पंप से प्रारम्भिक उपचार सत्र 1 : जन्म के समय शिशु की साँस घुट रही है, इसे पहचानना (1 घंटा 45 मि.) भोजन (1घंटा 10मि.)	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (15 मि.) मोड्यूल 13 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार सत्र 1 : नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान (1 घंटा 45 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 1 : (जारी) नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान (अभ्यास तभा केस प्रस्तुति) (55 मि.) सत्र 2 : नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचार (55 मि.) भोजन (1 घंटा 15 मि.)	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (15 मि.) सत्र 5 : मूल्यांकन : केस अध्ययन (45 मि.) प्रशिक्षण कार्यशाला 4 : सारांश तथा गॉव में कार्य करने की योजना बनाना (2 घंटे 10 मि.) चाय (15 मि.) संक्षेप में दोहराना (15 मि.)
दोपहर का सत्र 13.30 से 17.30	सत्र 3 : (जारी) सुई (सिरिंज) (अभ्यास) (1 घंटा) सत्र 4 : सुई लगाना (1 घंटा 10 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 5 : सुई लगाने की सुरक्षित विधि तथा सुई को नष्ट करना (1 घंटा 10 मि.)	सत्र 2 : (जारी) जन्म के समय कम वज़न वाले/समय से पूर्व जन्मे शिशु की देखभाल कैसे करें (केस स्थिति अभ्यास) (55 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 3 : माँ को कम वज़न के शिशु की देखभाल के बारे में बताना (1 घंटा 45 मि.)	सत्र 2 : दम घुटने का उपचार : पहला कदम – चूषण पम्प का प्रयोग (2 घंटे) चाय (15 मि.) सत्र 3 : मूल्यांकन : दम घुटने का निदान तथा प्रारम्भिक उपचार (1 घंटा 20 मि.)	सत्र 2 : नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचार (भूमिका नाटक अभ्यास) (35 मि.) सत्र 3 : छाती अंदर धंसे हुए शिशुओं का उपचार (45 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 4 : फॉर्म भरना (1 घंटा 30 मि.)	
शाम	संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल	संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल	संक्षेप में दोहराना (10 मि.) खेल समूहों में खेल	संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल	
मनोरंजन	लोकगीत	भूमिका नाटक		लोकनृत्य	

आशयसूची

प्रशिक्षण कार्यशाला 4

पृष्ठ

मोड्यूल 10 : विटामिन 'के' की सुई लगाना

सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 3 मोड्यूल 7, 8, एवँ 9 के बाद कार्यक्षेत्र के अनुभवों की समीक्षा 344
सत्र 2 : विटामिन 'के' 347
अध्ययनपत्र 1 : सुई लगाने की जगह का चित्र (जाँघ का बाहरी हिस्सा) 350
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : कहानी 1 और 2 351
सत्र 3 : सुई (सिरिंज) 352
अध्ययनपत्र 1 : सुई – गलतियाँ और उनके खतरनाक परिणाम 355
सत्र 4 : सुई लगाना 356
अध्ययनपत्र 1 : विटामिन 'के' की सुई से संबंधित जाँच–सूची 359
तथा अभ्यासपत्र 1
सत्र 5 : सुई लगाने की सुरक्षित विधि तथा सुई को नष्ट करना 360
अध्ययनपत्र 1 : सुई लगाने की सुरक्षित विधियॉ 364
सत्र 6 : सुई लगाना : अभ्यास और मूल्यांकन 365
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : विटामिन 'के' की सुई वाली जाँच–सूची 367

मोड्यूल 11 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय पूर्व जन्मे शिशुओं के खतरे की स्थितियों का निर्धारण तथा देखभाल

सत्र 1 : जन्म के समय कम वज़न / समयपूर्व जन्म और इसके खतरे 368
सत्र 2 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय से पूर्व जन्मे शिशु की देखभाल कैसे करें 371
अध्ययनपत्र 1 : माँ के शरीर की त्वचा से शिशु को चिपकाकर रखने की विधि का चित्र 377
अध्ययनपत्र 2 : बाँह के नीचे और बाँह के नीचे उल्टी तरफ़ के स्तन से स्तनपान कराने के चित्र 378
अध्ययनपत्र 3 : कम वज़न के और समय से पूर्व जन्मे शिशु को स्तनपान कराना 379
अभ्यासपत्र 1 : केस प्रस्तुति 381
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : केस प्रस्तुति के लिये उत्तर 382

		पृष्ठ
सत्र 3	**: माँ को कम वज़न के शिशु की देखभाल के बारे में बताना**	383
अध्ययनपत्र 1	: आदर्श भूमिका नाटक का आलेख	386
सत्र 4	**: अधिक खतरे वाले शिशु**	388
अध्ययनपत्र 1	: अधिक खतरे के लक्षण, जानकारी प्रपत्र	393
अभ्यासपत्र 1	: घरों का दौरा फॉर्म : अधिक खतरेवाले शिशु (पूरक फॉर्म 3)	394
अभ्यासपत्र 2	: दूसरे महीने वाला घरों का दौरा फॉर्म (पूरक फॉर्म 4)	403
अध्ययनपत्र 2	: अधिक खतरे वाले शिशु को पहचानने के लिए मापदण्ड	406
अभ्यासपत्र 3	: प्रश्नपत्र	407
प्रशिक्षक प्रपत्र 1	: प्रशिक्षकों के लिये प्रश्नपत्र के उत्तर	408
मोड्यूल 12	: जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा चूषण पंप से प्रारम्भिक उपचार	
सत्र 1	**: जन्म के समय शिशु की साँस घुट रही है, इसे पहचानना**	410
अध्ययनपत्र 1	: जन्मतेही दम घुटना संबंधी जानकारी	414
अभ्यासपत्र 1	: केस उदाहरणः जन्मतेही दम घुटना, इसकी पहचान	415
प्रशिक्षक प्रपत्र 1	: केस उदाहरणः जन्मतेही दम घुटना, के लिए उत्तर	416
सत्र 2	**: दम घुटने का उपचारः पहला कदम – चूषण पम्प का प्रयोग**	417
अध्ययनपत्र 1	: जन्मतेही दम घुटना : कृती चार्ट	423
अध्ययनपत्र 2	: जन्मतेही दम घुटने के उपचार में शुरूआती कदम	424
अध्ययनपत्र 3	: चूषण पम्प का प्रयोगः जाँच–सूची	425
सत्र 3	**: मूल्यांकनः दम घुटने का निदान तथा प्रारम्भिक उपचार**	426
अभ्यासपत्र 1	: केस अध्ययन प्रश्न	428
प्रशिक्षक प्रपत्र 1	: केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर	430
प्रशिक्षक प्रपत्र 2	: प्रात्यक्षिक मूल्यांकन प्रपत्र (दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम, चूषण पंप का प्रयोगः जाँच–सूची	432
मोड्यूल 13	: सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार	
सत्र 1	**: नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान**	433
अध्ययनपत्र 1	: नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) संबंधी जानकारी	440
अभ्यासपत्र 1	: घरों का दौरा फॉर्म	442
प्रशिक्षक प्रपत्र 1	: कक्षा में केस प्रस्तुति	448
अभ्यासपत्र 2	: केस प्रस्तुति	449
प्रशिक्षक प्रपत्र 2	: केस प्रस्तुति के उत्तर	452

		पृष्ठ
सत्र 2	**: नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचार**	455
अभ्यासपत्र 1	: पूर्व सूचना देकर स्वीकृति लेने के लिये फॉर्म	459
अभ्यासपत्र 2	: केस अध्ययन	460
प्रशिक्षक प्रपत्र 1	: केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर	463
अध्ययनपत्र 1	: खतरे के लक्षणः जानकारी पत्र	466
सत्र 3	**: छाती अंदर धंसे हुए शिशुओं का उपचार**	467
सत्र 4	**: फॉर्म भरना**	470
अभ्यासपत्र 1	: सेप्सिस निदान फॉर्मः घरो का दौरा फॉर्म का भाग	475
अभ्यासपत्र 2	: पूर्व स्वीकृति लेने वाला फॉर्म	481
अभ्यासपत्र 3	: सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म (देखभाल की योजना और अस्पताल भेजने के मापदण्ड)	482
अभ्यासपत्र 4	: केस प्रस्तुति	485
प्रशिक्षक प्रपत्र 1	: केस प्रस्तुति के उत्तर	487
सत्र 5	**: मूल्यांकन : केस अध्ययन**	490
अभ्यासपत्र 1	: परीक्षापत्र	492
प्रशिक्षक प्रपत्र 1	: परीक्षापत्र के उत्तर	494
प्रशिक्षण कार्यशाला 4	: सारांश तथा गॉव में कार्य करने की योजना बनाना	496
अभ्यासपत्र 1	: अब मैं कैसा महसूस कर रहीं हूँ – फॉर्म	504

मोड्यूल 10 : विटामिन 'के' की सुई लगाना

सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 3 मोड्यूल 7, 8, एवँ 9 के बाद कार्यक्षेत्र के अनुभवों की समीक्षा

दिवस : 1
समयावधि : 1 घं. 30 मि.

प्रयोजन

आशा को अपने पिछले प्रशिक्षण के बाद, क्षेत्र में हुए अन्य अनुभवों के बारे में, चर्चा करने का अवसर देना। आशा अपनी चर्चा को शिशुजन्म, स्तनपान में सहायता देना तथा शिशु का शरीर ठंडा पड़े तो उसका उपचार करना इस पर केन्द्रित करें।

उद्देश्य

सत्र के समापन पर आशाओं में निम्न योग्यता आएँगी –

1. समुदाय के बीच काम करने के जो अनुभव हुए उनके बारे में चर्चा करना (प्रसव के समय उपस्थित रहना और तुरंत स्तनपान शुरू कराना, शिशु को गर्म रखना, स्तनपान की समस्या और शिशु ठंडा पड़ने (हायपोथर्मिया) का उपचार करना, बीमार शिशुओं के लक्षणों का आंकलन और वर्गीकरण करना) तथा समस्याओं का हल निकालना।

सामग्री

- प्रशिक्षक, आशा का प्रशिक्षण तथा काम में प्रगती का रिकार्ड साथ में रखें। (प्रशिक्षण कार्यशाला 3 से पहले के मूल्यांकन की यदि पहले चर्चा नहीं की गई तो वे शीट भी साथ रखें।)

तैयारी

- कार्यशाला के पूर्व प्रशिक्षक एवं सुपरवाईजर एक बैठक करें। बैठक के दौरान प्रत्येक आशा का सुपरवाईजर व्दारा गॉव में भरा गया काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड तथा उसकी समस्याओं पर चर्चा हो और यह सारी बातें सुपरवाईजर प्रशिक्षक को अवगत कराएँ। इस प्रकार तैयारी कर लेने से अगली प्रशिक्षण कार्यशाला आरंभ होने से पहले प्रशिक्षक एवं सुपरवाईजर को आशा की प्रशिक्षण संबंधी जरूरतों का पूरा पूरा ज्ञान होगा।
- प्रशिक्षक, आशा का प्रशिक्षण तथा काम में प्रगती का रिकार्ड साथ में रखें। (प्रशिक्षण कार्यशाला 3 से पहले के मूल्यांकन की यदि पहले चर्चा नहीं की गई तो वे शीट भी साथ रखें।) इसका उपयोग प्रशिक्षणार्थियों व्दारा की जानेवाली प्रस्तुति, चर्चा या अभ्यास में होगा।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति/चर्चा</u> (50 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

1. प्रशिक्षणार्थियों को एक गोले में बैठने को कहें।
2. प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी से कहें कि वह समुदाय में किए कार्य के अनुभवों के आधार पर 3–5 मि. का सारांश

प्रस्तुत करें जिसमें नीचे दिए विषयों के बारे में भी बताएँ (यह सब बातें बोर्ड पर लिखें, जिससे कि आशा को याद रहे कि उन्हें क्या चर्चा करनी है।)

- कितने प्रसवों में उपस्थित रही और प्रसव का अवलोकन किया।
- दाई के साथ काम करने का अनुभव ?
- प्रसव के तुरंत बाद शिशु को माता के स्तनों से लगाने के बारे में आशा का अनुभव?
- स्तनपान जल्दी शुरू कराने तथा केवल स्तनपान कराने के बारे में परिवार की प्रतिक्रिया?
- स्तनपान संबंधी समस्या हल करने के लिए सलाह देते समय यदि परामर्श कार्डों का प्रयोग किया हो तो उस क्या भावनाएँ थी? (सरल थे, कठिन लगे या क्या वे सहायक थे?)
- प्रसव के तुरंत बाद स्तनपान शुरू कराने के बारे में दाईयों की क्या प्रतिक्रिया रही?
- प्रसव के तुरंत बाद शिशु को गर्म रखने में उसका अनुभव क्या था?
- बच्चों की बीमारी के लक्षणों का आंकलन तथा वर्गीकरण करते समय उसे कैसा महसूस हुआ?
- जिन परिवारों में उसने बीमार बच्चों को देखा उन परिवारजनों की प्रतिक्रिया क्या थी?
- गाँव में 5 साल से कम उम्र के सारे बच्चों की देखभाल करना उसे कैसा लग रहा है?
- क्या उसे, धंसी हुई ऑखे, पेट की त्वचा पर भरी चिकोटी धीरे वापस जाना, आयु के अनुसार बहुत कम वजन जैसे लक्षणों को देखने का मौका मिला?
- उसे कौनसी कामयाबी मिली?
- कोई अन्य नकारात्मक या बुरे अनुभव?
- कोई अन्य अनुभव जिससे उसने कुछ सीखा, क्या सीखा ?
- ''आदर्श आशा'' बनने की दिशा में कोई प्रगति ?
- पिछली कार्यशाला में बताए गए विषयों तथा योग्यताओं में से किसी की समीक्षा जरूरी हो, तो बताएँ।

3. जब आशा अपने अनुभव बताए तब प्रशिक्षक :
   - समय का ध्यान रखें।
   - शंकाओं का समाधान करें।
   - यदि आवश्यक हो, तो पूरे समूह के सामने महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करें।
   - प्रशिक्षणार्थियों को जिन विषयों में अधिक जानकारी अथवा अभ्यास की आवश्यकता हो, वह नोट करें।
4. गाँव में काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड देखकर; आशा को विशेष जानकारी देते रहना चाहिए और जाँचतें रहें कि उन्होंने समुदाय के बीच रहकर कैसा कार्य किया। यदि किसी को और अधिक सहायता की आवश्यकता हो, तो कक्षा के बाद उन्हें समझाएँ या फिर उन्हें अलग से अधिक समय दें।
5. बोर्ड पर 'कठिनाईयों' और 'अच्छे अनुभवों' के बारे में संक्षिप्त में लिखें। उनमें कुछ निम्न बातें हो सकती हैं।

अच्छे अनुभव :

- बातचीत की सफल विधियों के प्रयोग से, आशा को दाई और माताओं से सम्मान प्राप्त होता है।
- आशा ने ठंड़े पड़े शिशु की सफलतापूर्वक देखभाल की है।

कठिनाईयाँ :

- सास जल्दी स्तनपान कराने के पक्ष में नहीं हैं।

- जनमतेही शिशु को कपड़े पहनाने के लिये परिवार के लोग तैयार नहीं हैं।
- बच्चों की बीमारी के लक्षणों का आंकलन तथा वर्गीकरण ही आशा फिलहाल कर रही है, उपचार नही कर रही इससे परिवार के लोग खुश नहीं है।

भूमिका नाटक (35 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. सभी प्रशिक्षणार्थियों को 4–5 समूहों में बाँटें।
2. प्रत्येक समूह एक विषय चुने; यदि समूह विषय न चुन पाए, तो ऊपर दी सलाह का प्रयोग करें। प्रत्येक समूह आपस में चर्चा करे कि समस्या से कैसे निपटा जा सकता है, अथवा अच्छे अनुभवों द्वारा, आशा को कैसे अपने तथा समुदाय के बीच कार्य में मदद मिलेगी। प्रशिक्षणार्थी भूमिका नाटक के माध्यम से अथवा कहानी के रूप में, या फिर अपने विचार व्यक्त करके, अपने अनुभवों को प्रस्तुत करें। (10 मि.)
3. प्रत्येक समूह भूमिका नाटक खेलने अथवा विचार व्यक्त करने के बाद संक्षिप्त चर्चा करें। (5–10 मि.)
4. गॉव में काम के बारे में आशा की भावनाऐं तथा कठिनाईयॉ जो आशा व्दारा भूमिका नाटक में दर्शायी गई हो उन्हे प्रशिक्षक लिख लें। ऐसी भी बातें लिख लें जिन पर भविष्य में ध्यान देना होगा (जैसे – गॉव के लोग आशा को प्रोत्साहन नहीं देते या दाई आशा से सहकार्य नही करती)।

सारांश (5 मि.)

- क्षेत्र में किए कार्यो तथा जिन विषयों पर चर्चा की आवश्यकता हो उनका सारांश प्रस्तुत करें।
- क्षेत्र में किए कार्य के मूल्यांकन के बाद प्रशिक्षणार्थियों को बताएँ कि उनका कार्य कैसा था।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
समुदाय के बीच काम करने के जो अनुभव हुए उनके बारे में चर्चा करना तथा तथा समस्याओं का हल निकालना।	चर्चा, भूमिका नाटक अथवा कहानी	आशा व्दारा प्रस्तुत भूमिका नाटक का प्रशिक्षक व्दारा लिखा गया विवरण।

मोड्यूल 10 : विटामिन 'के' की सुई लगाना

सत्र 2 : विटामिन 'के'

दिवस : 1
समयावधि : 1 घं. 30 मि.

प्रयोजन

नवजात शिशुओं के लिये विटामिन 'के' के प्रयोग के बारे में आशाओं को अवगत कराना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. बताना कि नवजात शिशुओं को विटामिन 'के' क्यों और कितना दिया जाता है।
2. बताना कि उन्हें यह सुई शरीर के किस भाग में लगानी चाहिए।
3. बताना कि परिवार को क्या सूचना दी जानी चाहिए।
4. बताना कि आशा किसी अन्य को कोई भी दवा या विटामिन 'के' की सुई क्यों न दे।

सामग्री

- विटामिन 'के' की सुई (एम्प्यूल)
- अध्ययनपत्र 1: सुई लगाने की जगह का चित्र (जाँघ का बाहरी हिस्सा)
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: कहानी 1 और 2
- सुई लगाने की जगह तय करने के लिये शिशु या शिशु जैसी बड़ी गुड़िया

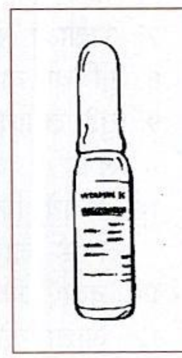

विटामिन 'के' की सुई (एम्प्यूल)

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अध्ययनपत्र 1 की प्रतियाँ तैयार रखें।
- विटामिन 'के' की सुई (एम्पूल) तथा शिशु जैसी बड़ी गुड़िया तैयार रखें। यदि शिशु को इस सत्र में लाना है तो सत्र के पहले जरूरी व्यवस्था कर लें। (सुई लगाने की जगह निश्चित करना सीखने के लिए सहायता होगी)।

प्रशिक्षण विधि

<u>कहानी सुनाना</u> (10 मि.)

1. जोर देकर समझायें कि आशा अब नई योग्यता हासील करने जा रही है, जिसके साथ नैतिक जिम्मेदारी जुड़ी है। यह महत्त्वपूर्ण है कि इस योग्यता का प्रयोग वे उन्हीं स्थितियों में करे जैसे उन्हें सिखाया जाएगा। माँगने पर भी अन्य स्थितियों में उसका प्रयोग न करें। प्रशिक्षक प्रपत्र 1 से कहानी 1 सुनाएँ।
2. शपथग्रहण: सारी आशाओं को निम्न शपथ प्रदान करें: 'मैं भगवान की शपथ खाकर कहती हूँ कि मैं सुई लगाने की नई योग्यता हासील करने के लिए तैयार हूँ। मैं नवजात शिशुओं को उन्हीं स्थितियों में सुई लगाऊँगी जैसा की मुझे सिखाया जाएगा। अन्य लोगों से कोई लालच या दबाव हो तो भी मैं अन्य स्थितियों में उसका प्रयोग नहीं करूंगी। मैं जीवनभर इस शपथ के प्रति निष्ठा रखूँगी'।
3. आज रात के सत्र में दूसरी कहानी सुनाकर (प्रशिक्षक प्रपत्र 1 से कहानी 2) इस नैतिक बंधन को दोहराएँ।

प्रस्तुति और प्रदर्शन (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. समझायें कि जन्म के पहले 24 घंटो मे विटामिन 'के' की सुई बच्चे को लगती है, तो रक्तस्त्राव की जानलेवा बीमारी से बच्चे को बचाया जा सकता है।
2. सभी को विटामिन 'के' की सुई (एम्पूल) दिखाएँ। बतायें कि यह एक द्रव होता है, जो सुई द्वारा शरीर में पहुँचाया जाता है।
3. बतायें कि 1 मि.ग्रा. विटामिन 'के' बच्चे को दिया जाता है, अगले सत्र में उन्हें यह मात्रा सुई में डालना सिखाया जाएगा।
4. आशा पहली जाँच के समय, शिशु को विटामिन 'के' की सुई लगाएँ; प्रसव के 1 घंटे बाद बिल्कुल सही समय है।
5. सुई शिशु की जाँघ (दाईं या बाईं) के बाहरी हिस्से पर घुटने और जाँघ के बीच में लगानी चाहिए। (अध्ययनपत्र 1 सबको देखने को कहे। जिसमे जाँघ से घुटने तक का हिस्सा, साफ दिखाई देता है। आशा उसमे जाँघ का हिस्सा पहचानें)।
6. सुई जाँघ की माँसपेशियों में लगाई जानी चाहिए। त्वचा और हड्डी के बीच के भाग को माँसपेशी कहते हैं। (बच्चे की टाँग के जाँघ वाले **भाग की काट** का चित्र अध्ययनपत्र 1 दिखाएँ) आशा को बताएँ कि जाँघ का भाग कौन सा है।
7. आशाओं से कहें कि वे अध्ययनपत्र 1 में दिया गया चित्र देखें।
8. गुड़िया या छोटे शिशु की जाँघ दिखाकर समझाएँ कि सुई कहाँ लगाई जानी चाहिए।
9. सुई लगाने का समय और किस जाँघ पर सुई लगाई गई, इसे शिशु की पहली जॉंच : फॉर्म पर लिख लें।
10. बतायें कि विटामिन 'के' केवल नवजात शिशुओं को दिया जाना चाहिए। अन्य किसी को भी यह सुई लगाई जाये तो हानिकारक हो सकती है।
11. बताएँ कि आशा नवजात शिशु को सिर्फ विटामिन 'के' की सुई लगाएँ। केवल 1 खुराक पर्याप्त है।
12. आशा को परामर्श कार्ड नं 17 दिखाएँ। मॉ को गर्भावस्था में परामर्श देते समय इस कार्ड का प्रयोग किया जाएगा। परामर्श कार्ड में दिए गए बिंदुओं को देखें जो नीचे विषय–वस्तु बाक्स में दिए गए हैं।

विषय–वस्तु

- नवजात शिशु को इंजेक्शन विटामिन 'के' दिया जाता है।
- इंजेक्शन विटामिन 'के' देने से शिशु के कलेजे में तथा खून में ताकत आती है।
- जन्म के तुरंत बाद शिशु को विटामीन 'के' का एक इंजेक्शन देना चाहिए।
- समय से पूर्व जन्मे और कम वज़न के शिशु को शरीर के किसी हिस्से से खून निकलने का खतरा होता है।
- इस खतरे को टालने के लिए प्रत्येक शिशु को इंजेक्शन विटामिन 'के' देना ज़रूरी होता है।
- अस्पताल मे जन्मे हर शिशु को इंजेक्शन विटामिन 'के' दिया जाता है।
- शिशु जन्म के समय यदि आशा मौजूद है तो वह शिशु को तुरंत इंजेक्शन विटामिन 'के' देती है।
- यदि शिशु जन्म के समय आशा मौजूद नही है तो शिशु के घर पहले दौरे में वह पूछें कि क्या शिशु को पहले अस्पताल में इंजेक्शन विटामिन 'के' दिया गया है ? यदि शिशु को इंजेक्शन विटामिन 'के' नही दिया गया है तो आशा उसके पहले दौरे के समय शिशु को इंजेक्शन विटामिन 'के' लगाएँ।

गर्भावस्था मे माँ को परामर्श देते समय उसे इंजेक्शन विटामिन 'के' का महत्व समझाए और उसे बताएं कि वह आशा को प्रसव के समय बुलाएं ताकि शिशु को समयपर इंजेक्शन विटामिन 'के' मिले।

13. प्रशिक्षणार्थियों से पूछें कि परिवार के लोगों को इस संबंध में क्या जानकारी दी जानी चाहिए। सभी बातें ब्लैक बोर्ड पर लिखें। यदि अभी तक बताई नहीं गई हैं तो निम्न बातें भी लिखें –
    - विटामिन 'के' बच्चे को रक्तस्त्राव की जानलेवा बीमारी से बचाने के लिए आवश्यक है।
    - इसकी केवल सुई लगाई जाती है।
    - जिस टाँग में सुई लगाई गई थी, उसकी रोज जाँच करें। देखें कि वहाँ पर लाली तो नहीं। यदि सुई वाली जगह लाल या गर्म या फूली (सूजी) है तो तुरंत आशा को बुलाएँ।

<u>अभ्यास</u> : सुई लगाने वाले भाग को पहचानना (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

- गुड़ियाएँ बाँटें।
- चित्र देखकर प्रशिक्षणार्थी अभ्यास करें कि सुई कहाँ लगानी है।
- प्रशिक्षक कमरे में घूमकर देखती रहें कि प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को सुई लगाने वाले भाग की सही जानकारी हो गई है।

सारांश (10 मि.)

- किसी एक प्रशिक्षणार्थी से पूछें कि विटामिन 'के' क्यों दिया जाता है।
- किसी अन्य से पूछें कि सुई कहाँ लगानी चाहिए।
- तीसरी प्रशिक्षणार्थी से पूछें कि विटामिन 'के' कब दिया जाना चाहिए।
- पूछें कि माता–पिता को इस संबंध में क्या जानकारी दी जानी चाहिए।
- कुछ गलतियाँ हों तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशा की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन (5 मि.)

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बताना कि नवजात शिशुओं को विटामिन 'के' क्यों और कितना देना चाहिए	प्रश्न–उत्तर	–
सुई शरीर के किस भाग में लगानी चाहिए यह दिखाना	गुड़िया या शिशु में सुई लगाने की जगह दिखाना	–
बताना कि परिवार के लोगों को इस संबंध में क्या जानकारी दी जानी चाहिए	प्रश्न–उत्तर	–
बताना कि आशा विटामिन 'के' अथवा अन्य कोई सुई किसी और को क्यों न दें	प्रश्न–उत्तर	

सुई लगाने की जगह का चित्र (जाँघ का बाहरी हिस्सा)

नवजात शिशु को सुई लगाने की जगह

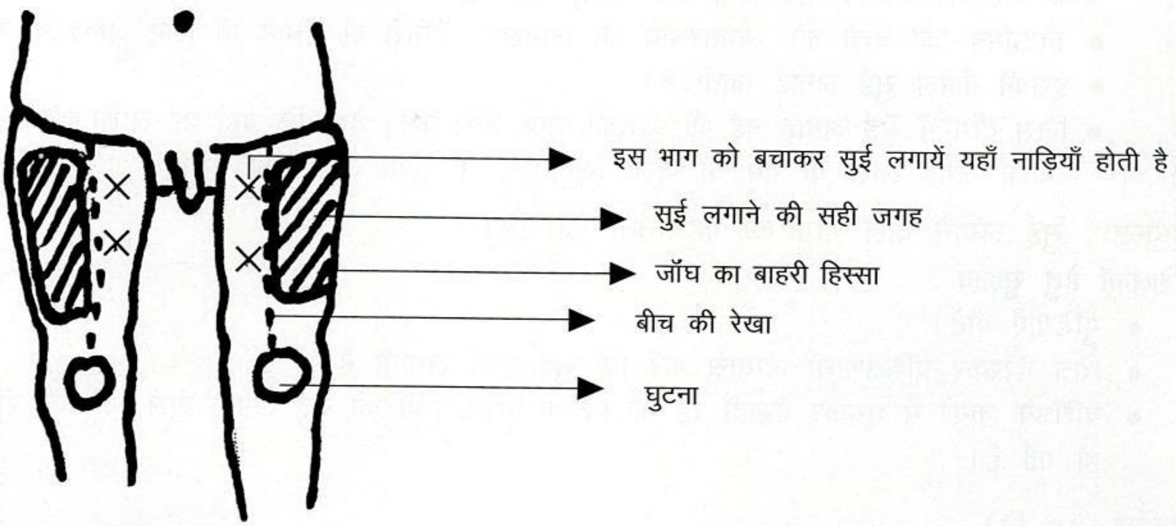

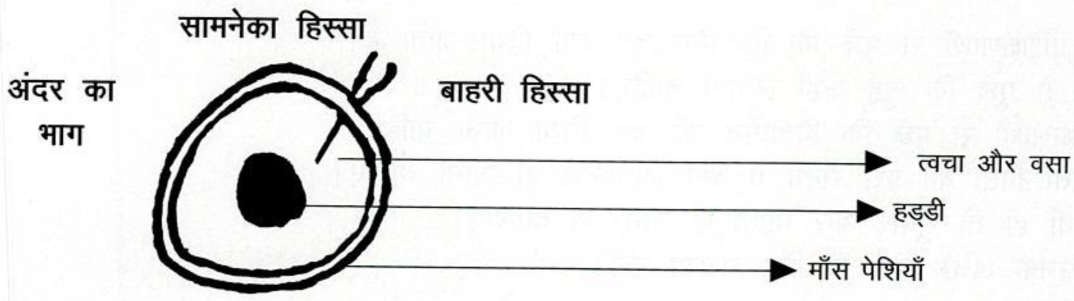

आडी काट

कहानी 1

सीता हरण

सीता का हरण करने रावण ने राक्षस मारीच से मदद माँगी। मारीच ने अपनी जादुई शक्ती से स्वर्ण मृग का रूप धारण किया और जहाँ राम, सीता और लक्ष्मण रहते थे उस आश्रम की ओर चल पड़ा। सीता की नज़र स्वर्ण मृग पर पड़ी और उसने राम से वह स्वर्ण मृग पकड़ने के लिए कहा। राम और लक्ष्मण को स्वर्ण मृग देखकर संदेह हुआ पर सीता की ज़िद के कारण राम अकेले उस मृग को पकड़ने निकल पड़े। जाने से पहले राम ने लक्ष्मण से कहा कि सीता को अकेला न छोड़े। राम ने कुछ दूरी तक स्वर्ण मृग का पीछा किया और अपने बाण से उसे मार गिराया। उसी समय स्वर्ण मृग ने राक्षस का रूप धारण किया और वह सहायता के लिए राम की आवाज में चिल्लाने लगा। राम की चिल्लाने की आवाज सुनकर सीता ने लक्ष्मण से अनुरोध किया कि वह राम की सहायता के लिए जायें। जाने से पहले लक्ष्मण ने कुटीया के पास एक रेखा खींची और सीता से कहा कि किसी भी परिस्थिती में उस रेखा को पार न करें। जब सीता अकेली थी तब बूढ़े साधु के पेहरावे में रावण कुटीया के पास आकर भिक्षा माँगने लगा। बूढ़े साधु को देखकर सीता आश्वस्त थी। उसे भिक्षा देनें वह रेखा के पार चली गई। तभी बुढ़े साधू ने रावण का रूप धारण किया और सीता का अपहरण कर उसे लंका ले गया।

कहानी से यह सीख मिलती है कि लक्ष्मण रेखा पार न करें अन्यथा गहरे संकट का सामना करना पड़ सकता है।

कहानी 2

मेंढक और कुआँ

एक झील में दो मेंढक रहते थे। एक बार गर्मी में झील सूख गई और रहने की दूसरी जगह ढूँढ़ने मेंढक चल पड़ें। रास्ते में उन्होंने कुँआ देखा। एक मेंढक ने कुएँ में झाँककर देखा और दूसरे से कहा कि 'यह काफी ठंडी जगह लगती है, चलो कूदते है'। दूसरा मेंढक समझदार था उसने कहा 'अभी नहीं दोस्त। अभी इस कुएँ में पानी है, मगर यह पानी भी सूख गया तो हम बाहर कैसे निकलेंगे?'

कहानी से यह सीख मिलती है कि तुरंत लाभ की न सोचे भविष्य का भी विचार करें।

मोड्यूल 10 : विटामिन 'के' की सुई लगाना

सत्र 3 : सुई (सिरिंज)

दिवस : 1
समयावधि : 1 घं. 30 मि.

प्रयोजन

सही तरीके से विटामिन 'के' की सुई लगाने के लिए आशा की तैयारी कराना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. सुई (सिरिंज) के भाग पहचानना।
2. बताना कि विसंक्रमण क्या है और क्यों यह सुई विसंक्रमित, पॅक की हुई और एकही बार प्रयोग करने योग्य है।
3. सुई का प्रयोग करना, और विटामिन 'के' की सही मात्रा सुई में भरने का प्रदर्शन करना।

सामग्री

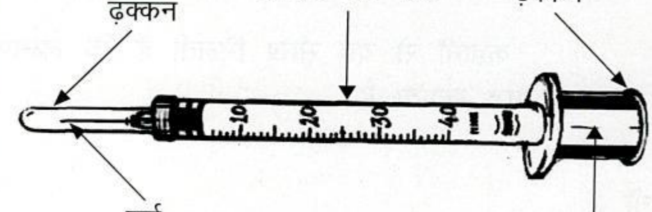

- अध्ययनपत्र 1 : सुई – गलतियाँ और उनके खतरनाक परिणाम
- इन्सुलीन की सुईयाँ
- विटामिन 'के' के एम्प्यूल (1 मि.ली. = 10 मि.ग्रा.)
- पानी (छोटे कपों में)
- एम्प्यूल तोड़ने के लिए चम्मच या कटर
- प्लास्टिक का डिब्बा जिसमें प्रयोग की हुई सुई तथा एम्प्यूल इकट्ठा कर सकें। (इस डिब्बे को सब तरफसे बंद करें और ऊपर सिर्फ एक छेद छोड़ दें, जिसमें से सुई तथा टूटे एम्प्यूल को अंदर डाला जा सके।)

तैयारी

- छोटे समूहों मे अभ्यास करने के लिए सभी सामग्री के तीन सेट तैयार कर लें।
- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अध्ययनपत्र 1 की प्रतियाँ बना लें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति और सिरींजका प्रदर्शन</u> (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. इन्सुलीन सुई (सिरिंज) दिखाएँ और उसके विभिन्न भाग समझाएँ।
2. बताएँ कि विसंक्रमण का अर्थ है, किसी चीज को विशेष विधियों द्वारा (उबले पानी, या भाप अथवा रसायनों द्वारा) साफ करना जिससे उस पर लगे जीवाणु नष्ट हो जायें। बतायें कि यह सुई (सिरिंज) पहले से ही विसंक्रमित की गई है, और डिब्बाबंद तथा सीलबन्द कर ली गई है, इसलिए यह जीवाणुरहित है। इस

जीवाणु रहित सुई को एक ढक्कन द्वारा बचाये रखा जाता है। इस सुई को उंगलियों तथा अन्य चीजों से छूना नही चाहिए, वरना उसमें जीवाणु लग सकते हैं। यदि डिब्बा खुला हुआ है या सील टूटी हुयी है तो सुई का प्रयोग नहीं करना चाहिए। केवल विसंक्रमित सिरिंज और सुई ही प्रयोग करनी चाहिए क्योंकि इससे संक्रमण नहीं होता।

3. सिरिंज की नली पर बने हुए पैमाने को चित्र द्वारा बोर्ड पर बना कर समझाएँ।
4. विटामिन 'के' का एम्प्यूल दिखाएँ। बच्चे को इसका 1 मि.ग्रा. दिया जाता है। इसका अर्थ यह है कि सिरिंज की नली पर लगे हुए 4 के निशान तक यह (विटामिन 'के') भरा जाना चाहिए।
5. एम्प्यूल के ऊपरी भाग को चम्मच की सहायता से तोड़ें। सुई लगाने के बाद टूटे हूए काँच को प्लास्टिक सिरींज बाक्स में डालें।
6. बताएँ कि सुई के आगे लगे हुए सुरक्षा ढक्कन को कैसे हटाना है, सुई को एम्प्यूल में डालना है और पिचकारी को कैसे बाहर की ओर खींचकर एम्प्यूल का द्रव (विटामिन 'के') सिरिंज में '10' के निशान तक भरना है।
7. बताएँ कि कैसे सिरींज को आँखों के बराबर रखकर देखना है, ताकि उस पर लगे निशान साफ–साफ दिखाई पड़ें।
8. बताएँ कि सिरींज के अंदर कोई बुलबुला (हवा) हो तो उसे कैसे निकालना है, सिरिंज की पिचकारी से कैसे अतिरिक्त द्रव बाहर निकालना है ताकि द्रव '4' के निशान तक रहे (विटामिन 'के' का केवल 1 मि. ग्रा.)।
9. सुरक्षा के उपायों के बारे में बताएँ। "गलतियाँ और उसके खतरनाक परिणाम" वाला अध्ययनपत्र 1 देखने को कहें।
10. किसी के कोई प्रश्न हों तो उनका समाधान करें।

<u>सिरींज (सुई) के प्रयोग का अभ्यास</u> (50 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

- सभी को 3–3 सदस्यों के समूहों में बाँटें।
- सिरिंज (सुईयाँ), विटामिन 'के' एम्प्यूल, चम्मच और कपों में पानी सभी को बाँट दें।
- प्रशिक्षणार्थियों को, सुईयों का सुरक्षा ढक्कन खोलने, सिरिंज की सील तोड़ने, उसकी पिचकारी को बाहर की ओर खींचकर सिरिंज में द्रव भरने, हवा के बुलबुले को बाहर निकालने और 'दवा' की सही मात्रा भरने ('4' के निशान तक भरने) का अभ्यास करवाएँ।
- प्रशिक्षक कमरे में घूम–घूमकर मदद करें।

सारांश (10 मि.)

- किसी एक प्रशिक्षणार्थी से सिरिंज (सुई) के मुख्य भाग बताने को कहें।
- दूसरे प्रशिक्षणार्थी से सिरिंज पर लगे हुये निशानों के बारे में और कितनी विटामिन 'के' की सुई लगानी है, यह बताने को कहें।
- कुछ गलतियाँ हों, तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशा की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
सिरिंज (सुई) के विभिन्न भाग पहचानना	देखना	–
बताना कि विसंक्रमण क्या है और क्यों यह सुई विसंक्रमित, पॅक की हुई और एकही बार प्रयोग करने योग्य हैं।	प्रश्न–उत्तर	–
सुई का प्रयोग करना, और विटामिन 'के' की सही मात्रा सुई में भरने का प्रदर्शन करना।	अभ्यास के दौरान निरीक्षण। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी सिरिंज का प्रयोग करना तथा सिरिंज मे विटामीन 'के' की सही मात्रा भरने का प्रदर्शन करे।	प्रशिक्षक व्दारा लिखा गया निरीक्षण का विवरण।

सुई : गलतियाँ और उनके खतरनाक परिणाम

संभाव्य गलतियाँ	खतरनाक परिणाम
स्वच्छता और विसंक्रमण संबंधी गलतियाँ, एक ही सुई/ सिरिंज का दुबारा प्रयोग करना	संक्रमण, सुई लगने वाले भाग का पकना, मवाद पड़ना, टिटनस, एडस्
गलत मात्रा में दवा देना	दवा कम देने से दवा का असर नहीं या अधिक मात्रा में दवा देना खतरनाक हो सकता हैं।
गलत स्थान पर सुई लगाना	खून बहना, लकवा लगना
सुई लगाते समय पैर का हिलना	पैर में सुई फँसने से घाव हो सकता हैं।
माता–पिता को सुई के बारे में सही जानकारी न देना। उनकी लिखित हस्ताक्षरित स्वीकृति न लेना	घाव या मौत होने से निन्दा बाद में गॉव में गपशप
संभावित कुप्रभाव /समस्या को ध्यान में रखते हुए सतर्क न रहना।	ठीक–ठीक उपचार न होने के कारण समस्या और भी बढ़ जाएगी जिसका दोषारोपण आशा पर हो सकता है

मोड्यूल 10 : विटामिन 'के' की सुई लगाना

सत्र 4 : सुई लगाना

दिवस : 4

समयावधि : 1 घं. 10 मि.

प्रयोजन

सही विधि से विटामिन 'के' की सुई लगाने के लिए आशाओं द्वारा तैयारी करना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. विटामिन 'के' की सुई लगाने के विभिन्न कदमों को बताने के लिए संबंधित जाँच–सूची का प्रयोग करना।
2. बताना कि सुई लगाने के बाद क्या परेशानियाँ हो सकती है।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1 तथा अभ्यासपत्र 1 : विटामिन 'के' की सुई से संबंधित जाँच–सूची
- इन्सुलीन सिरिंज
- विटामिन 'के' एम्प्यूल
- चम्मच या कटर (एम्प्यूल तोड़ने के लिए)
- रुई के फोहे
- रुई के फोहे रखने के लिये प्लास्टिक का डिब्बा
- स्पिरिट
- बैगन, आम, केला या गुड़िया
- प्लास्टिक के तीन डिब्बे (एक जिसमें प्रयोग की हुई सुई (सिरिंज), दूसरे मे टूटे एम्प्यूल तथा तीसरे मे प्रयोग किए रूई के फोहे इकट्ठा कर सकें)।
- दो छोटे डिब्बे जिसमें प्रयोग के बाद रूई के फोहे तथा सुई को रखकर घर ले जाया जा सकता है।

तैयारी

- प्रदर्शन के लिये ऊपर दी गई सभी सामग्री तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रदर्शन</u> (50 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. अध्ययनपत्र 1: विटामिन 'के' की सुई संबंधित जाँच–सूची में दिए प्रत्येक बिन्दु पर समूह के सभी लोगों के साथ चर्चा करें।
2. किसी के कोई प्रश्न हों, तो समाधान करें।
3. जिस जगह पर सुई लगाई जाती है, वहाँ संक्रमण को रोकने के लिए आस–पास की त्वचा का स्वच्छ होना बहुत जरूरी है। हाथ धोने, बच्चे की टाँग साफ करने और सुई की नोक को विसंक्रमित (जीवाणुरहित) रखना अत्यंत आवश्यक है। (ध्यान रहे कि सुई का, हाथ से या किसी चीज़ से संपर्क ना हों।)

4. बच्चे की टाँग क्यों साफ करनी है तथा टाँग को साफ करने की विधि बताएँ। सुई लगने वाली जगह की त्वचा एकदम स्वच्छ होनी चाहिए। पहले अपने हाथ (हाथ धोने के सूची के अनुसार) साफ धोकर सुखाएँ। स्पिरिट में भिगोया हुआ एक फोहा लेकर हाथ पोछ लें। ध्यान रहे, पूरी हथेली, उंगलियों के बीच की जगह तथा नाखून अच्छी तरह से साफ कर लें। यह फोहा फेंकने के लिए अलग रखें। पहले से स्पिरिट में भीगे हुए दूसरे रुई के फोहे से उस जगह को साफ करें जहॉं सुई लगानी है। पोंछते समय फोहा सुई लगाने की जगह रखें और हाथ को गोल घुमाते हुए बाहर की ओर पोंछती जाएँ। उसके बाद स्पिरिट में भीगे एक साफ फोहे से टाँग को फिर से पोंछें। टाँग के साफ किए हुए भाग को तब तक छुए नहीं, जब तक सुई न लगा दें।
5. प्रयोग किए हुए रूई के फोहे प्लास्टिक डिब्बे मे रखें। घर जाने के पश्चात् उन्हें अलग डिब्बे में रख दें।
6. सुई लगाने की विधि का प्रदर्शन करें। (बैंगन, आम केला, या गुड़िया का प्रयोग करें)
7. जैसे–जैसे आप करके दिखाते हैं, वैसे–वैसे पढ़ते जाएँ।
8. ध्यान रहे एक बार सुई लगाने के बाद, दुबारा उसी सुई और सिरिंज का प्रयोग ना करें। सिरिंज को पिचकारीकी डंडी वाली भाग से पकड़े और प्लास्टिक बॉक्स में डाल दें और घर ले जाऍं। घर जाकर सिरिंज को पिचकारी की डंडी से पकड़कर घर में रखें प्लास्टिक डिब्बे में ड़ाल दें। उसी प्रकार रूई के फोहे भी घर में रखें प्लास्टिक डिब्बे में ड़ाल दें। इंजेक्शन का कचरा कैसे नष्ट करना है यह अगले सत्र मे सीखेंगे।

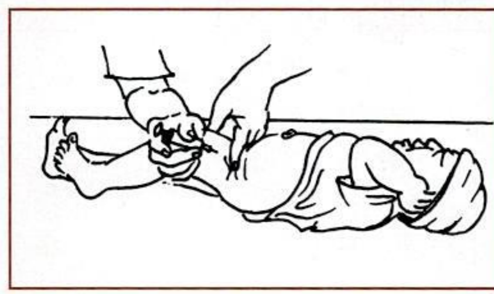

9. किसी के प्रश्न हों, तो समाधान करें।
10. आवश्यक हो, तो दुबारा करके दिखाएँ।

प्रस्तुति/ सामूहिक चर्चा (10 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षणार्थियों से पूछें कि सुई लगाने के बाद के कुछ दिनों तक घरों के दौरे में आप बच्चे की जॉंच करते समय क्या–क्या समस्या देखेंगी ? उनके उत्तर सुनें। *(सुई की जगह पर लाली या सूजन और बुखार)*
2. समझाऍं कि लाली या सूजन और बुखार संभाव्य संक्रमण के लक्षण हो सकते है।

   आशा निम्न बाते भी देखें –

   - सुई लगने वाली जगह पर लाली तो नहीं है। यदि लाली ज़्यादा है तो संक्रमण हो सकता है। बच्चे का तापमान लें। यदि बुखार हो तो डॉक्टर के पास भेज दें। यदि बुखार नहीं है, पर इंजेक्शन की जगह लाली है, तो माँ को बताएँ कि वह सुई लगने वाली जगह पर 20 मि. तक नम कपड़ा गर्म करके, दिन में 3 बार रखें। यदि एक दिन में ठीक न हो, या और ज़्यादा बढ़ जाए तो डॉक्टर के पास भेज दें।
   - देखें कि टाँग और पैर ठीक से हिलडुल रहे हैं। यदि नहीं तो डॉक्टर के पास भेज दें।

सारांश (10 मि.)

- प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी से जाँच–सूची में दिए बिन्दुओं को एक–एक कर पढ़ने को कहें।
- किसी एक प्रशिक्षणार्थी से पूछें, कि किन–किन परेशानियों पर ध्यान देना चाहिए।
- किसी अन्य प्रशिक्षणार्थी से पूछें, कि सुई लगाने से पहले माता–पिता को क्या जानकारी दी जानी चाहिए।
- कुछ गलतियाँ हो, तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
विटामिन 'के' की सुई लगाने के विभिन्न कदमों को बताने के लिए संबंधित जाँच–सूची का प्रयोग करना।	जाँच–सूची का प्रयोग करें प्रश्न–उत्तर	प्रशिक्षक के निरीक्षण का विवरण
बताना कि सुई लगाने के बाद क्या परेशानियाँ हो सकती हैं।	प्रश्न–उत्तर	–

विटामिन 'के' की सुई से संबंधित जाँच–सूची

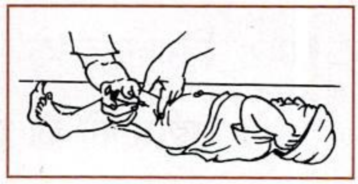

कितनी बार अभ्यास किया

कदम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. एम्पुल, सिरींज तथा स्प्रिट बॉटल तैयार रखें। साबुन से हाथ धोने संबंधी, जाँच–सूची के अनुसार ही हाथ धोएँ										
2. रुई के फोहे बनाये और स्प्रिट में भिगोएँ										
3. स्प्रिट में भीगे 1 फोहे से हाथ साफ करें। फोहा फेंक दें।										
4. बच्चे को लिटाएँ और जाँघ खोलें : सुई के लिए जगह निश्चित करें।										
5. स्प्रिट में भीगा रुई का दूसरा फोहा ले और जाँघ के ऊपरी खुले भाग को जहाँ सुई लगानी है, इससे पोंछें। पोंछते समय फोहा सुई लगाने की जगह रखे और हाथ को गोल घुमाते हुए बाहर की ओर पोंछती जाए। फोहे को नष्ट करने के लिए अलग रख दें।										
6. एम्प्यूल या ऊपरी भाग चम्मच की सहायता से तोड़ दें										
7. प्लास्टिक पैकिंग से सिरींज (सुई) बाहर निकालें; सील देखें और दोनों ढक्कन निकाल दें। (पहले पिचकारी का ढक्कन निकाले और बाद में सुई का ढक्कन)										
8. सुई एम्प्यूल में डालें और दवा को सिरींज (सुई) के इतना अंदर खींचे कि '10' के निशान तक दवा भर जाये।										
9. सिरींज को एम्प्यूलसे बाहर निकालें और सुई को आसमान की ओर करके बायी हाथ में सिरींज पकडे, दाहिनी हाथ की उंगलीसे सिरींज में जहाँ दवा भरी हैं वहाँ हलका धक्का दें ताकि हवा का बुलबुला उपर चला जाएँ।										
10. पिचकारी को अन्दर धकेलें जिससे हवा का बुलबुला और अतिरिक्त दवा बाहर निकल जाए। दवा सिरींज में '4' के निशान तक भरनी है। पिचकारी की काली रिंग 4 के निशान पर हो।										
11. स्प्रिट में भीगा रुई का तीसरा फोहा लें और सुई लगाने वाली जगह को हाथ गोल घुमाते हुए फिर एक बार पोंछें, फोहा रखा रहने दें										
12. एक हाथ में सुई पकड़े और दूसरे हाथ से सुई लगने वाली जगह की त्वचा को थोडा खींचकर पकडें। सुई को जाँघ में सीधा अन्दर लगा लें (खड़ी)										
13. पिचकारी को दबाएँ जिससे दवा अन्दर चली जाए।										
14. सुई को सीधा बाहर खींच लें और त्वचा को छोड़ दें। सुई वाली जगह को रुई के तीसरे फोहे से पोंछ दें।										
15. देखें कि सुई लगने की जगह से खून तो नहीं बह रहा। यदि ऐसा है तो, 3–4 मि. के लिये रुई के फोहे से उस जगह को दबाए रखें।										
16. सुई और सिरींज तथा टूटे एम्पुल प्लास्टिक बॉक्स में डालें और घर ले जाएँ। अंततः नष्ट करने के लिए सिरिंज तथा सुई एक बाक्स में डालें, एम्पुल अन्य बाक्स में डालें।										
17. रूई के सारे फोहे प्लास्टीक डिब्बे में डालकर घर ले जाएँ और अंततः नष्ट करने के लिए उसके लिए बने बैग में डाल दें।										
18. माता को बधाई दें कि उसके शिशु को सफलतापूर्वक एक ताकत की दवा (विटामिन 'के') दे दी गई है और वह अब निश्चिंत रहें।										

मोड्यूल 10 : विटामिन 'के' की सुई लगाना

सत्र 5 : सुई लगाने की सुरक्षित विधि तथा सुई को नष्ट करना

दिवस : 1

समयावधि : 1 घं. 10 मि.

प्रयोजन

आशा को सुई लगाने की सुरक्षित विधियों तथा संक्रमण रोकने के लिए सुई को ड़िब्बे में सुरक्षित रखना तथा नष्ट करने के बारे में बताना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यताएँ आएँगी:

1. सुई लगाने की सुरक्षित विधियों के बारे में जानकारी देना
2. प्रयोग में लाने के बाद सुई आदि नष्ट करने की, राष्ट्रीय मार्गदर्शक तत्व के अनुसार पध्दति बताना
3. सुई लगने से होने वाले आघात रोकने के उपाय बताना।
4. प्रयुक्त सुई/सिरिंज/शीशियाँ/रूई के फोहे आदि के डिब्बों/थैलियों को नष्ट करने के तरीके समझाना।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1 : सुई लगाने की सुरक्षित विधियॉं
- पारदर्शी मजबूत 2 डिब्बें जो पक्के बंद किये जा सकते है तथा पीली थैली
- कॉंच के एम्पुल इंजेक्शन की बोतल तथा रैपर
- सिरिंज, सुई तथा ढक्कन
- रूई के फोहें

तैयारी

- प्रशिक्षाणार्थियों की संख्या के अनुसार अध्ययन प्रपत्र 1 की प्रतियॉं बना लें।

प्रशिक्षण विधि:

<u>प्रस्तुति</u>: सुई लगाने की सुरक्षित विधि (25 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव:

1. प्रशिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को WHO द्वारा दी गयी सुई लगाने की सुरक्षित विधि की परिभाषा बतायें (नीचे दिया हुआ विषय–वस्तु बाक्स देखें)
2. प्रशिक्षणार्थियों से पूछें कि क्या वे सुई लगाने की सुरक्षित विधि के लाभ बता सकती है? उनके उत्तर सुनें तथा कुछ रह गया हो तो जोड़ें (विषय–वस्तु बाक्स में दी गई जानकारी के अनुसार)

सुई लगाने की सुरक्षित विधि

WHO व्दारा दी गयी परिभाषा

'सुरक्षित विधि वह है जिससे सुई लगवाने वाले को कोई हानि नही होती, लगाने वाले को कोई खतरा नहीं होता तथा प्रयुक्त सामग्री से समुदाय के लोगों को भी कोई हानि नही होती'

सुई लगाने की सुरक्षित विधि के लाभः

स्वीकृत तकनीक के अनुसार लगायी गयी सुई सेः

- रक्त में मौजूद वायरस फैलने का खतरा बहुत कम होता है क्योंकि विसंक्रमित सिरिंज तथा सुई का प्रयोग किया जाता है।
- सुई लगवाने वाले व्यक्ति को सुई लगने के स्थानपर चोट, संक्रमण अथवा इतर प्रभाव का खतरा बहुत कम होता है।
- सुई लगाने वाले को भी खतरा बहुत कम होता है।
- इससे समुदाय के लोगों को भी किसी प्रकार के खतरे की संभावना नहीं होती।

3. बतायें कि प्रयोग करने के बाद प्रयुक्त सामग्री को निम्न प्रकार की थैलियों तथा डिब्बों में इकट्ठा करना है।

वस्तुएं	थैलियां/ डिब्बे	सावधानियां
टूटे हूए एम्पूल तथा बोतलें	पारदर्शी मजबूत प्लास्टिक का डिब्बा (काला)	इन डिब्बों/ थैलियों को सील बंद करके प्राथमिक स्वास्थ्य केंद ले जाना चाहिए जहाँ पर उन्हें नष्ट किया जाना है
प्रयुक्त सिरिंज तथा सुईयाँ	पारदर्शी प्लास्टिक का एक अन्य डिब्बा	
प्रयुक्त रूई के फोहे	पीले रंग की थैली	

4. प्रशिक्षणार्थियों को बतायें कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर यह डिब्बे तथा थैलियॉं नष्ट करने के लिए किस व्यक्ति से संपर्क करना है।
5. सुई से होने वाले आघात से बचने के उपाय बताएँः
   - सुई लगाने के बाद उस पर दोबारा ढक्कन न लगायें।
   - सुई को मोड़ें नहीं।
   - प्रयुक्त सिरिंज कि सुई हाथ से न निकालें।

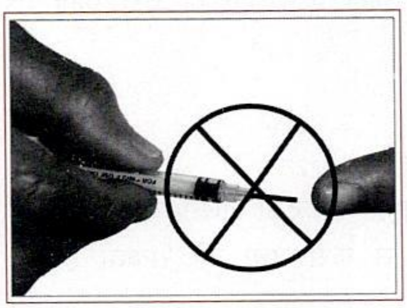

यह सब करना असुरक्षित है। इससे स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को चोट पहुंच सकती है जिसमें संक्रमण हो सकता है तथा रक्त में पाये जाने वाले वायरस का संक्रमण भी हो सकता है।

6. प्रशिक्षणार्थियों को प्रयुक्त सुई आदि इकट्ठा करने वाले डिब्बों/ थैलियों का उपयोग करने के बारे में बतायें।
   - थैलियाँ तथा डिब्बे मज़बूत होने चाहिए जिनमें छेद न हो सके।
   - डिब्बों को 3/4 से अधिक नहीं भरना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से सुई डिब्बों के बाहर निकल सकती है तथा चोट पहुँचा सकती हैं।
   - डिब्बों को अच्छी तरह बंद कर देना चाहिए।
   - डिब्बों तथा थैलियों को बच्चों से दूर रखना चाहिए।
   - कभी भी सिरिंजों/ सुईयों को हाथ से एक डिब्बे से दूसरे डिब्बे में न डालें।

प्रदर्शन:

प्रयुक्त सुईयों/ सिरिंजों आदि के डिब्बों का उपयोग करना (10 मि.)

1. समझायें कि एक सुई जो अभी अभी लगायी गयी है, उस सुई तथा सिरिंज का क्या करना है।
2. प्रशिक्षणार्थियों को सुईयाँ/सिरिंज आदि इकट्ठा करने के लिए डिब्बे तथा थैलियाँ दिखाएँ।
3. बतायें कि किस थैली का प्रयोग किस लिए करना है।
4. बतायें कि थैलियाँ मजबूत हों तथा उनमें छेद न हो।
5. डिब्बा दिखाएँ तथा बताएँ कि उसे कहाँ तक भरना है।
6. बतायें कि पीली थैलियों में प्रयोग के बाद रूई के फोहे कैसे डालने हैं, काले डिब्बो में खाली शीशियाँ, टूटे हूए एम्प्यूल कैसे ड़ालने है तथा प्रयुक्त सिरिंज और सुईयाँ आदि प्लास्टिक ड़िब्बे में कैसे डालने हैं। प्लास्टिक ड़िब्बे में ड़ालने के लिए सिरिंज उठाते समय पिचकारीवाली डंडी पकड़कर सिरिंज उठाऐं। सुई को न छुएँ।
7. बतायें कि थैलियों तथा ड़िब्बों के मुँह कैसे बंद करने हैं।

अभ्यास: (30 मि.)

1. आशा को कचरे के डिब्बे का प्रयोग करने का अभ्यास करवाएँ।
2. प्रत्येक आशा सुई लगाने का अभिनय करे तथा प्रयोग के बाद उचित डिब्बे में सुईयाँ/सिरिंज/खाली शीशियाँ आदि डालने का अभ्यास करे।
3. जब एक आशा यह सब अभ्यास कर रही हो तो अन्य आशाएँ उसे देखें। प्रशिक्षक ध्यान पूर्वक देखे कि आशा सुई लगाने के बाद इन सबको कैसे रखती है। जहाँ आवश्यक हो उसे ठीक तरह फेंकने की विधि समझायें।

सारांश (5 मि.)

- एक आशा से सुई लगाने की सुरक्षित विधि के बारे मे पूछें।
- दूसरी आशा से प्रयुक्त सुईयाँ/ सिरिंज आदि सावधानी पूर्वक इकट्ठा करने की विधि पूछें।
- एक अन्य आशा से पूछें कि सुई से लगने वाले आघातों से कैसे बचा जा सकता है।

सत्र का मूल्यांकन (10 मि.)

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
सुई लगाने की सुरक्षित विधियों के बारे में जानकारी देना	प्रश्नोत्तर	–
प्रयोग में लाने के बाद सुई आदि नष्ट करने की, राष्ट्रीय मार्गदर्शक तत्व के अनुसार पध्दति बताना	प्रदर्शन	–
सुई लगने से होने वाले आघात रोकने के उपाय बताना।	प्रश्नोत्तर	–
प्रयुक्त सुई/सिरिंज/शीशियाँ/रूई के फोहे आदि के डिब्बों/थैलियों को नष्ट करने के तरीके समझाना।	प्रश्नोत्तर	–

सुई लगाने की सुरक्षित विधियाँ

विश्व स्वास्थ्य संगठन व्दारा दी गयी परिभाषा

'सुरक्षित विधि वह है जिससे सुई लगवाने वाले को कोई हानि नही होती, लगाने वाले को कोई खतरा नहीं होता तथा प्रयुक्त सामग्री से समुदाय के लोगों को भी कोई हानि नही होती'

सुई लगाने की सुरक्षित विधि के लाभः

स्वीकृत तकनीक के अनुसार लगायी गयी सुई सेः

- रक्त में मौजूद वायरस फैलने का खतरा बहुत कम होता है क्योंकि विसंक्रमित सिरिंज तथा सुई का प्रयोग किया जाता है।
- सुई लगवाने वाले व्यक्ति को सुई लगने के स्थानपर चोट, संक्रमण अथवा इतर प्रभाव का खतरा बहुत कम होता है।
- सुई लगाने वाले को भी खतरा बहुत कम होता है।
- इससे समुदाय के लोगों को भी किसी प्रकार के खतरे की संभावना नहीं होती।

वस्तुएं	थैलियां/ डिब्बे	सावधानियां
टूटे हूए एम्पूल तथा बोतलें	पारदर्शी मजबूत प्लास्टिक का डिब्बा (काला)	इन डिब्बों/ थैलियों को सील बंद करके प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाना चाहिए जहाँ पर उन्हें नष्ट किया जाना है
प्रयुक्त सिरिंज तथा सुईयाँ	पारदर्शी प्लास्टिक का एक अन्य डिब्बा	
प्रयुक्त रूई के फोहे	पीले रंग की थैली	

सुई से होने वाले आघात से बचने के उपायः

- सुई लगाने के बाद उस पर दोबारा ढक्कन न लगायें।
- सुई को मोड़ें नहीं।
- प्रयुक्त सिरिंज कि सुई हाथ से न निकालें।

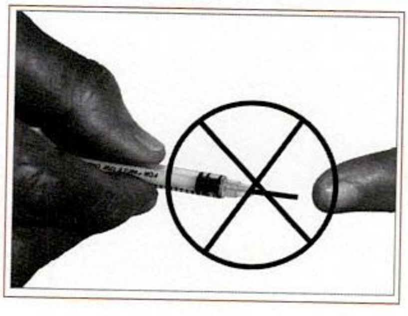

यह सब करना असुरक्षित है। इससे स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को चोट पहुंच सकती है जिसमें संक्रमण हो सकता है तथा रक्त में पाये जाने वाले वायरस का संक्रमण भी हो सकता है।

मोड्यूल 10 : विटामिन 'के' की सुई लगाना

सत्र 6 : सुई लगाना : अभ्यास और मूल्यांकन

दिवस : 1
समयावधि : 2 घंटे

प्रयोजन

आशा को प्रशिक्षक के निरीक्षण में सुई लगाने का अभ्यास करने (सिम्युलेशन) के लिए पर्याप्त समय देना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यता आएगी –

1. जाँच–सूची का प्रयोग करते हुए विटामिन 'के' की सुई लगाने (गुडिया पर) का प्रदर्शन करना।

सामग्री

- प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : विटामिन 'के' की सुई वाली जाँच–सूची
- विटामिन 'के' का एम्प्यूल
- चम्मच या कटर
- एक प्लास्टिक का डिब्बा, प्रयुक्त सुईयों के लिए और एक डिब्बा प्रयुक्त रूई के फोहों के लिए
- रुई के फोहे
- स्पिरिट
- बैगन, आम, केला या गुड़िया
- इन्सुलीन सिरिंज
- प्लास्टिक के डिब्बे, प्रयुक्त सिरिंज, टूटे हुए एम्प्यूल और रूई के फोहों के लिए

तैयारी

- अभ्यास के लिये ऊपर दी गई सभी सामग्री पर्याप्त मात्रा में तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रशिक्षणार्थियों के अभ्यास का प्रदर्शन</u> (1 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. सदस्यों के जोड़े बनाएँ।
2. हर प्रशिक्षणार्थी को कहे कि पिछले सत्र से विटामिन 'के' की जाँच सूची देखें। प्रत्येक जोड़े को आवश्यक सामग्री दे दें।
3. एक आशा अभ्यास करे, और दूसरी पढ़ती जाए। अभ्यास करते समय सुई लगाने हेतु गुड़ियां, बैगन, आम या केले का प्रयोग करें।
4. प्रत्येक आशा कम से कम 8 से 10 बार अभ्यास करे। जब एक आशा अभ्यास कर रही हो तब अन्य आशाएँ जाँच सूची मे उनका निरीक्षण दर्ज करें।

5. प्रशिक्षक कमरे में घूम–घूमकर सभी की सहायता करें और समझाएँ।

प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन (1 घं. 10 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

- प्रशिक्षक प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी का सुई लगाते समय जाँच–सूची के अनुसार निरिक्षण करें तथा निरिक्षण रिकार्ड करें।

सारांश

- प्रशिक्षक सुई लगाने की विधि को संक्षिप्त में बताएँ, और बताएँ कि प्रशिक्षणार्थियों को कौनसे कदमों का अधिक अभ्यास करना चाहिए।
- कुछ गलतियाँ हो तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
जाँच–सूची का प्रयोग करते हुए विटामिन 'के' की सुई लगाने (गुडिया पर) का प्रदर्शन करना	प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी जाँच–सूची के अनुसार सुई लगाने का सही प्रदर्शन करे जॉच सूची के आधार पर अभ्यास तथा निरीक्षण।	प्रत्येक आशा के सुई लगाने के प्रदर्शन का जॉच सूची के आधार पर प्रशिक्षक व्दारा निरीक्षण

विटामिन 'के' की सुई वाली जाँच–सूची

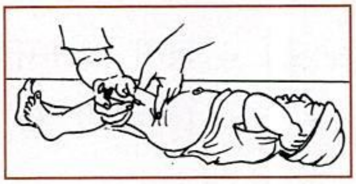

कितनी बार अभ्यास किया

कदम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. एम्पुल, सिरींज तथा स्प्रिट बॉटल तैयार रखें। साबुन से हाथ धोने संबंधी, जाँच–सूची के अनुसार ही हाथ धोएँ										
2. रुई के फोहे बनाये और स्प्रिट में भिगोएँ										
3. स्प्रिट में भीगे 1 फोहे से हाथ साफ करें। फोहा फेंक दें।										
4. बच्चे को लिटाएँ और जाँघ खोलें : सुई के लिए जगह निश्चित करें।										
5. स्प्रिट में भीगा रुई का दूसरा फोहा ले और जाँघ के ऊपरी खुले भाग को जहाँ सुई लगानी है, इससे पोंछें। पोंछते समय फोहा सुई लगाने की जगह रखे और हाथ को गोल घुमाते हुए बाहर की ओर पोंछती जाए। फोहे को नष्ट करने के लिए अलग रख दें।										
6. एम्प्यूल या ऊपरी भाग चम्मच की सहायता से तोड़ दें										
7. प्लास्टिक पैकिंग से सिरींज (सुई) बाहर निकालें; सील देखें और दोनों ढक्कन निकाल दें। (पहले पिचकारी का ढक्कन निकाले और बाद में सुई का ढक्कन)										
8. सुई एम्प्यूल में डालें और दवा को सिरींज (सुई) के इतना अंदर खींचे कि '10' के निशान तक दवा भर जाये।										
9. सिरींज को एम्प्यूलसे बाहर निकालें और सुई को आसमान की ओर करके बायी हाथ में सिरींज पकडे, दाहिनी हाथ की उंगलीसे सिरींज में जहॉं दवा भरी हैं वहाँ हलका धक्का दें ताकि हवा का बुलबुला उपर चला जाएँ।										
10. पिचकारी को अन्दर धकेलें जिससे हवा का बुलबुला और अतिरिक्त दवा बाहर निकल जाए। दवा सिरींज में '4' के निशान तक भरनी है। पिचकारी की काली रिंग 4 के निशान पर हो।										
11. स्प्रिट में भीगा रुई का तीसरा फोहा लें और सुई लगाने वाली जगह को हाथ गोल घुमाते हुए फिर एक बार पोंछें, फोहा रखा रहने दें										
12. एक हाथ में सुई पकड़े और दूसरे हाथ से सुई लगने वाली जगह की त्वचा को थोडा खींचकर पकडें। सुई को जाँघ में सीधा अन्दर लगा लें (खड़ी)										
13. पिचकारी को दबाएँ जिससे दवा अन्दर चली जाए।										
14. सुई को सीधा बाहर खींच लें और त्वचा को छोड़ दें। सुई वाली जगह को रुई के तीसरे फोहे से पोंछ दें।										
15. देखें कि सुई लगने की जगह से खून तो नहीं बह रहा। यदि ऐसा है तो, 3–4 मि. के लिये रुई के फोहे से उस जगह को दबाए रखें।										
16. सुई और सिरींज तथा टूटे एम्पुल प्लास्टिक बॉक्स में डालें और घर ले जाएँ। अंततः नष्ट करने के लिए सिरिंज तथा सुई एक बाक्स में डालें, एम्पुल अन्य बाक्स में डालें।										
17. रुई के सारे फोहे प्लास्टीक डिब्बे में डालकर घर ले जाएँ और अंततः नष्ट करने के लिए उसके लिए बने बैग में डाल दें।										
18. माता को बधाई दें कि उसके शिशु को सफलतापूर्वक एक ताकत की दवा (विटामिन 'के') दे दी गई है और वह अब निश्चिंत रहें।										

मोड्यूल 11 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय पूर्व जन्मे शिशुओं के खतरे की स्थितियों का निर्धारण तथा देखभाल

सत्र 1 : जन्म के समय कम वज़न / समयपूर्व जन्म और इसके खतरे

दिवस : 2

समयावधि : 45 मि.

प्रयोजन

शिशु जन्म के समय कम वज़न का अथवा समय से पूर्व जन्मा है, इसे निर्धारित करने के लिये मापदण्डों की समीक्षा करना, और कम वज़न के नवजात शिशुओं के खतरों के बारे में चर्चा करना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. यह जान पाना कि क्या शिशु का जन्म के समय कम वज़न है
2. 'समय से पूर्व जन्म' के निर्धारण की परिभाषा बताना।
3. जन्म के समय कम वज़न वाले शिशुओं के खतरों को बता पाना।

सामग्री

कुछ नही

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवं चर्चा</u> (35 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से पूछें कि कम वज़न वाले शिशु की परिभाषा क्या है ? (उत्तर : *2500 ग्रा. से कम*)। यह कैसे ज्ञात किया जाता है ? (*आशा जन्म के बाद पहली जाँच के समय उसका वज़न लेती है*)
2. पूछें कि समय से पूर्व जन्मा शिशु की परिभाषा क्या हैं? (उत्तर : *8 महीने 14 दिन या उससे कम का गर्भकाल*)। समय से पूर्व जन्मा कैसे ज्ञात किया जाता हैं? (*पिछली माहवारी के पहले दिन से लेकर प्रसव के दिन तक की गिनती करें। इसके लिये आशाएँ पिछली माहवारी – प्रसव की संभावित तारीख – समयपूर्व जन्म वाला चार्ट का भी प्रयोग कर सकती है।*)
3. बताएँ कि समय से पूर्व जन्में अधिकांश शिशु, जिनका जन्म बहुत जल्दी हो गया, कम वज़न के होते हैं। पर कुछ शिशु पूरे गर्भकाल के बाद जन्म होने पर भी कम वज़न के होते हैं। पूरे गर्भकाल के बाद जन्में शिशुओं का वज़न कम होने के कई कारण हो सकते हैं :
   - माँ का कद छोटा और वज़न कम होना
   - गर्भावस्था के दौरान माँ द्वारा भरपेट भोजन न करना और/अथवा पौष्टिक आहार न लेना।
   - माँ का बीमार रहना।

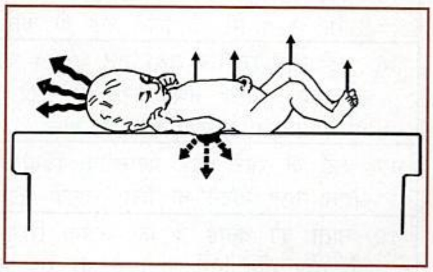

- माँ को खून की कमी (एनीमिया) होना।
- गर्भावस्था के दौरान माँ द्वारा कठिन परिश्रम करना।

4. कम वज़न वाले शिशुओं के खतरों के बारे में चर्चा करें। आशाओं से इन खतरों के बारे में पूछें। उन्हें बोर्ड/कागज़ पर लिखें। यदि कोई बात छूट गई हो तो उसे समझायें।
   - कम वज़न वाले शिशुओं का तापमान सामान्य शिशुओं के तापमान से जल्दी नीचे गिरता है, क्योंकि वे अपने शरीर का तापमान नियमित नहीं कर पाते (उनके शरीर में वसा कम होती है, त्वचा पतली होती है, सिर बड़ा होता है, जिससे गर्मी जल्दी बाहर निकल जाती है। शरीर में गर्मी पैदा करने की ताकत कम होती है।)
   - उन्हें निमोनिया, या खून में संक्रमण जैसे संक्रामक रोग होने की संभावना अधिक होती है।
   - कम वज़न वाले शिशुओं को स्तनपान करने में कठिनाई होती है, जिससे उन्हें कमज़ोरी हो जाती है, उनके शरीर की वृद्धि नहीं होती और उनका स्वास्थ्य गिर जाता है।
   - समय से पूर्व जन्मे शिशुओं को पीलिया (शरीर पीला पड़ना) होने का खतरा होता है और यदि वे बहुत छोटे हों, तो सिर में रक्तस्राव तथा मृत्यु तक होने का खतरा होता है।
5. कम वज़न वाले शिशुओं को मृत्यु का खतरा अधिक होता है :
   - यदि शिशु का वज़न 2.5 कि.ग्रा. या उससे अधिक है, (पैमाने पर हरा रंग) तो खतरा रुपये में 1 पैसे के बराबर है (100 में से 1)
   - यदि शिशु का वज़न 2.5 कि.ग्रा. से कम है, (पैमाने पर पीला रंग) तो खतरा रुपये में 6 पैसे के बराबर होता है (100 में से 6)
   - यदि शिशु का वज़न 2 कि.ग्रा. से भी कम है, (पैमाने पर लाल रंग) तो खतरा रुपये में 36 पैसे के बराबर माना जाएगा (100 में से 36)
   - यदि शिशु समय से पूर्व जन्मा है, तो खतरा रुपये में 36 पैसे के बराबर होगा (100 में से 36)
6. प्रशिक्षणार्थी निम्न अभ्यास करें:
   - सरला का जन्म 3 जून को, 8 महीने 4 दिन के गर्भकाल में हुआ था। उसका वज़न 1.9 कि ग्रा. था। क्या यह जन्म समयपूर्व था ? क्यों ? उसका वजन कैसा था? क्या उसे कोई और खतरा है? क्या–क्या खतरे हो सकते हैं ? *(सरला का जन्म समय से पूर्व हुआ था क्यों कि गर्भकाल 8 महीने 14 दिन से कम था। वह कम वज़न की थी क्यों कि वजन 2.500 ग्रा.से कम था। उसे हायपोथर्मिया, सेप्सिस, स्तनपान की समस्या, पीलिया होना, और मौत के अतिरिक्त खतरें हैं।)*
   - धर्म का जन्म 8 महीने 24 दिन के गर्भकाल समाप्त होने पर हुआ और उसका वज़न 2.4 कि.ग्रा. था। क्या उसका जन्म समय से पूर्व हुआ ? क्यों ? क्या उसका वज़न कम है ? क्यों ? *(धर्म समय से पूर्व जन्मा नहीं है, क्यों कि गर्भकाल 8 महीने 14 दिन से ज्यादा था। उसका वजन 2.500 ग्रा. से कम होने के कारण वह कम वजन का है।)*

सारांशः (5 मि.)

- किसी आशा से पूछें कि वह कैसे पता लगाएगी कि शिशु समय से पूर्व जन्मा है।
- दूसरी आशा से पूछें कि शिशु का जन्म के समय वज़न कम है, यह जानने के लिए क्या मापदण्ड है।
- समय से पूर्व जन्मे और कम वज़न के नवजात शिशु को क्या खतरे होते हैं ?
- शिशु कम वज़न का क्यों पैदा होता है ?
- कुछ गलतियाँ हों तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।

सत्र का मूल्यांकन : (5 मि.)

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
यह जान पाना कि क्या शिशु का जन्म के समय कम वज़न है	प्रश्न–उत्तर	–
'समय से पूर्व जन्म' के निर्धारण की परिभाषा बताना।	प्रश्न–उत्तर	–
जन्म के समय कम वज़न वाले शिशुओं के खतरों को बता पाना।	प्रश्न–उत्तर	–

मोड्यूल 11 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय पूर्व जन्मे शिशुओं के खतरे की स्थितियों का निर्धारण तथा देखभाल

सत्र 2 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय से पूर्व जन्मे शिशु की देखभाल कैसे करें

दिवस : 2
समयावधि : 2 घं. 15 मि.

प्रयोजन

जन्म के समय कम वज़न वाले और समय से पूर्व जन्मे शिशुओं की देखभाल करने की पध्दती सीखने का आशाओं को अवसर देना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. जन्म के समय कम वज़न वाले शिशुओं की प्रसव के तुरंत बाद देखभाल के बारे में बता पाना।
2. शिशु को माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि के बारे मे बताना; समझाना कि इसका प्रयोग कब और कैसे करना है।
3. बताना कि जिस कम वज़न वाले शिशु को स्तनपान में समस्या है, उसकी माँ की कैसे सहायता करें।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1 : माँ के शरीर की त्वचा से शिशु को चिपकाकर रखने की विधि का चित्र
- अध्ययनपत्र 2 : बाँह के नीचे और बाँह के नीचे उल्टी तरफ के स्तन से स्तनपान कराने के चित्र
- अध्ययनपत्र 3 : कम वज़न के और समय से पूर्व जन्मे शिशु को स्तनपान कराना
- अभ्यासपत्र 1 : केस प्रस्तुति
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : केस प्रस्तुति के लिये उत्तर

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थियोंकी संख्या के अनुसार अध्ययनपत्र 1, 2, 3 और अभ्यासपत्र 1 की पर्याप्त प्रतियाँ तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवं चर्चा</u> (1 घं. 20 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से पूछें कि कम वज़न वाले शिशुओं को अधिक देखभाल की आवश्यकता क्यों होती है : उत्तरों में निम्न भी शामिल होना चाहिए :
   - *उन्हें जल्दी ठंड लग जाती है।*
   - *उन्हें जल्दी संक्रमण होने की संभावना होती है*
   - *उन्हें स्तनपान करने में कठिनाई हो सकती है*

2. अतिरिक्त देखभाल क्यों जरूरी है, यह बताते हुए आशाओं से पूछें कि **जन्म के तुरंत बाद अतिरिक्त देखभाल** के क्या उपाय हैं। उन्हें संकेत देकर सुझाएँ कि देखभाल के अधिकांश तरीके वैसे ही हैं जैसे एक स्वस्थ शिशु को गर्म रखने के लिए। उत्तरों में निम्न शामिल होना चाहिए:
   - कमरे को सामान्य से अधिक गर्म रखें।
   - शिशु को जन्म के तुरंत बाद पोंछें।
   - माँ की त्वचा से शिशु को चिपकाकर और ओढ़ाकर रखें (यदि शिशु बहुत छोटा हो तो क्या करना है नीचे देखें), या फिर कपड़े में लपेटकर माँ के पास लिटा दें।
   - स्तनपान शुरू कराएँ।
   - शिशु को कपड़े तथा टोपी पहनाएँ।
   - गर्म थैली में माँ के शरीर से चिपकाकर रखें।
3. बतायें कि नवजात शिशुओं को थोड़ी–थोड़ी देर बाद (2–2 घंटे में) स्तनपान कराना चाहिए। यदि शिशु सोया हुआ है, तो उसे जगाकर दूध पिलाना चाहिए। ऐसा तब तक करना चाहिए, जब तक कि उसका वज़न न बढ़ जाए और उसमें पर्याप्त ताकत आ जाए।

जन्म के समय शिशु के शरीर से निकल जाने वाली गर्मी को रोकना

- **सुखाना/पोंछना** • **लपेटना** • **शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना** • **स्तनपान**

4. बताएँ कि **बहुत छोटे नवजात शिशुओं (खतरेवाले)** को ठंड लगने के कारण बीमार पड़ने का खतरा होता है और उन्हें स्तनपान करने में भी कठिनाई होती है।
5. आशाओं से पूछें कि बहुत छोटे शिशुओं के देखभाल की विधि का क्या नाम है ? (उत्तर –*शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना*)। यह विधि छोटे और समय से पूर्व जन्मे बच्चों की देखभाल का एक सफल तरीका है। इस विधि के प्रयोग से शिशु गर्म रहता है, और उसे कई बार स्तनपान कराया जा सकता है। इस प्रकार देखभाल करने से शिशु की वृद्धि और विकास ठीक प्रकार से होते हैं।
6. **शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि** की समीक्षा करें। आशाओं से कहे कि वे अध्ययनपत्र 1

देखें।

- शिशु को खड़ा रख माँ की त्वचा से चिपकाकर स्तनों के बीच में रखना।
- शिशु नंगा रहता है अथवा हल्के कपड़े पहने हुए, पर उसके सिर पर टोपी और पैरों में जुराबे रहती है और माँ अपनी साड़ी अथवा शॉल से ओढ़ाए रखती है।
- अधिक से अधिक समय तक शिशु माँ के शरीर से चिपका हुआ रहता है।
- थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान कराया जाता है (2–2 घंटे में)। अधिक सहारे के लिए बाँह के नीचे, या बाँह के नीचे उलटी तरफ़ रखकर शिशु को स्तनपान कराया जाता है। (चित्र के लिए अध्ययनपत्र देखें।)

7. मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधी वाले कार्ड की समीक्षा करें। विषय–वस्तु बाक्स देंखें।

विषय–वस्तु

शिशु को मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि का परामर्श कार्ड

आपके बहुत छोटे शिशु को विशेष देखभाल की जरूरत है।

✓ शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने के लिए आप शिशु को अपने स्तनों के बीच रख सकती है।

✓ शिशु की त्वचा माँ की त्वचा से लगी रहने के कारण शिशु गर्म रहता है। जब उसे भूख लगती है, वह मॉ के स्तनों के पास ही है।

✓ जब तक शिशु का वज़न नहीं बढ़ जाता, तब तक उसे अधिक से अधिक समय तक इसी प्रकार से अपने पास रखें।

✓ यदि शिशु को अलग रखना पड़े तो शिशु को गर्म रखें: कपड़े पहनाएँ, टोपा पहनाएँ तथा गर्म बैग मे रखें।

त्वचा से चिपकाकर रखते समय
शिशु की स्थिति

आराम करते समय त्वचा से चिपकाकर रखना

पिताजी तथा नानी–दादी शिशु को त्वचा से चिपकाकर रखते हुए

8. प्रशिक्षणार्थियों से पूछें कि कम वज़न वाले अथवा समय से पूर्व जन्मे शिशु के लिए सर्वोत्तम आहार क्या है? उनके उत्तर सुनें (*सर्वोत्तम आहार है माँ का दूध। जन्म लेते ही (चाहे समय से पूर्व ही क्यों न पैदा हुआ हो) शिशु के पोषण के लिए आवश्यक सभी तत्व इसमें मौजूद रहते हैं। जैसे–जैसे शिशु बढ़ता है, दूध की गुणवत्ता में भी परिवर्तन होता रहता है ताकि वह बढ़ते हुए शिशु की सभी आवश्यकताओं की पूर्ती कर सके।*)
9. बताएँ कि अधिकांश नवजात शिशु स्तनपान कर लेते हैं; 1500 ग्रा. से ऊपर के लगभग सभी शिशु स्तनपान कर लेते हैं। माँ को प्रोत्साहित करके और शिशु के स्तनपान के लिए सही स्थिति माँ को समझाकर शिशु की देखभाल की जा सकती है।
10. प्रशिक्षणार्थियों से पूछें : 'कम वज़न वाले अथवा समय से पूर्व जन्में शिशु के लिए माँ का दूध क्यों लाभदायक है ?' उनके उत्तरों की एक सूची बना लें। जो न बताया गया हो उसे नीचे दिये विषय–वस्तु बाक्स में से पढ़कर बताएँ।

विषय वस्तु

कम वज़न के और समय से पूर्व जन्में शिशुओं को माँ के दूध के लाभ

- ✓ कम वजन और समयपूर्व जन्में शिशुओं के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व उचित मात्रा में मौजूद रहते हैं। समयपूर्व जन्मे शिशुओं को प्रोटीन की अधिक आवश्यकता होती है और समयपूर्व के दूध में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है।
- ✓ सुपाच्य (आसानी से पच जाता है)
- ✓ संक्रमणों से लड़ने के लिए आवश्यक तत्व मौजूद रहते हैं (नवजात शिशु जल्दी बीमार पड़ते हैं)
- ✓ स्तनपान से शिशु का शरीर गर्म रहता है (माँ के शरीर के पास होने के कारण); शरीर ठंडा रहने से (कम तापमान से) संक्रमण हो सकता हैं।

मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर शिशु को गर्म रखना तथा स्तनपान कराना

आवश्यक बाते :

छोटे शिशुओं के लिए, जो स्तनपान कर सकते है :

- ✓ बाहों के नीचे रखकर या बाह के नीचे उलटी तरफ़ रखकर, स्तनपान करायें।
- ✓ यदि बच्चा सोता रहता हो, तो उसे हर दो–तीन घंटे बाद जगाकर स्तनपान कराएँ।

छोटे शिशु, जो शुरू में स्तनपान नहीं कर पाते :

- ✓ 1500 ग्रा. से कम वज़न के शिशु शुरू–शुरू में स्तनपान नहीं कर पाते।
- ✓ मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखें।
- ✓ हाथ से स्तन दबाकर दूध निकालें, और चम्मच से पिलाएँ।
- ✓ स्तनों में दूध अधिक बने, इसलिए प्रत्येक 2–3 घंटे बाद स्तनों से दूध निकालती रहें।
- ✓ शिशु को स्तनों से लगाएँ जिससे कि वह चूचुकों को थोड़ा–थोड़ा चूसे।
- ✓ जब एक बार चूसना शुरू कर दे, तो शिशु को बार–बार स्तनों से लगाना चाहिए ताकि दूध बनता रहे। कप/चम्मच से पिलाना ज़ारी रखें जब तक कि शिशु पूरी तरह से स्तनपान करके अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर सकें।

स्तन दबाकर दूध निकालना

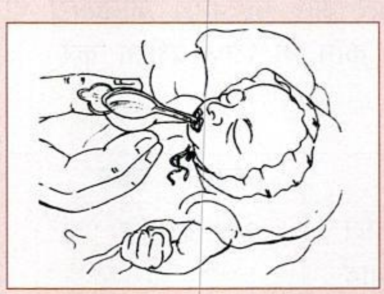

शिशु को चम्मच से दूध पिलाना

कितना दूध दें :

- ✓ कम वज़न का नवजात शिशु – पहले दिन 60 मि.ली. प्रति कि.ग्रा. शरीर के वज़न के अनुसार।
- ✓ 20 मि.ली. प्रति कि.ग्रा. प्रतिदिन के हिसाब से दूध की मात्रा बढ़ाती रहें, जब तक कि शिशु 200 मि. ली. प्रतिदिन दूध न पी ले।
- ✓ दिन में 8–12 बार दूध पिलाएँ (2–3 घंटे पर)
- ✓ कोलोस्ट्रम को सामान्य तापमान पर 12 घंटे तक रखा जा सकता है जब कि पूर्ण विकसित दूध को सामान्य तापमान पर 6–8 घंटे रखा जा सकता है।
- ✓ जब तक शिशु पूरी तरह स्तनपान पर न आ आए, कटोरी–चम्मच से माँ का दूध पिलाती रहें।

11. जिन शिशुओं की माँ अपना दूध न निकाल पाएँ (बीमारी के कारण अथवा माँ की मृत्यु हो गयी हो), उन्हें किसी और माँ का दूध दें या फिर ऊपरी दूध दें :
    - गाय का दूध पतला करें – 150 मि.ली. गाय के ताज़े दूध में 50 मि.ली. पानी मिलायें, उबालें, और 1 चम्मच (15 ग्रा.) चीनी डालें।
    - इसे 8–12 हिस्सों में बाँट लें।
    - दिन में 8–12 बार चम्मच से पिलाएँ।

केस प्रस्तुति का अभ्यास : (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. केस प्रस्तुति (अभ्यासपत्र 1) बाँटें।
2. प्रशिक्षणार्थी अकेले में बैठकर केस प्रस्तुति पर कार्य करें।
3. 20 मि. के बाद सारे अध्ययनपत्र इकट्ठा कर लें। प्रशिक्षक अध्ययनपत्रों का मुल्यांकन करें एवं अंक दें। पूरे समूह के साथ मिलकर केस अध्ययनों की समीक्षा करे और उत्तरों पर चर्चा करे।
4. किसी के कोई प्रश्न और शंकाएँ हों, तो इनका समाधान करें।

सारांश : (10 मि.)

- एक आशा से पूछें कि कम वज़न वाले शिशुओं की जन्म के तुरंत बाद, और शुरू के कुछ दिनों तक, देखभाल कैसे की जानी चाहिये।
- कोई दूसरी आशा से शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि बताने को कहें। पूछें कि इसका प्रयोग कब और कैसे करना है। माँ को यह कैसे समझायेंगी ?
- किसी और आशा से पूछे कि कम वज़न का शिशु, जो स्तनपान नही कर सकता, उसे दूध कैसे पिलाएँ?
- कुछ गलतियाँ हो तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
जन्म के समय कम वज़न वाले शिशुओं की प्रसव के तुरंत बाद देखभाल के बारे में बता पाना।	केस प्रस्तुति	आशाओं व्दारा हल किये गए केस प्रस्तुति अध्ययनपत्र जिनका प्रशिक्षकों ने मूल्यांकन किया हो तथा अंक दिए हो।
शिशु को माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि के बारे मे बताना; समझाना कि इसका प्रयोग कब और कैसे करना है।	केस प्रस्तुति प्रश्न–उत्तर	आशाओं व्दारा हल किये गए केस प्रस्तुति अध्ययनपत्र जिनका प्रशिक्षकों ने मूल्यांकन किया हो तथा अंक दिए हो।
बताना कि जिस कम वज़न वाले शिशु को स्तनपान में समस्या है, उसकी माँ की कैसे सहायता करें।	प्रश्न–उत्तर	–

माँ के शरीर की त्वचा से शिशु को चिपकाकर रखने की विधि

शरीर की त्वचा से चिपकाकर
रखने की विधि मे शिशु

शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखते
समय शिशु की स्थिती

आराम करते समय शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना

पिताजी तथा नानी–दादी शिशु को शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखते हुए

बाँह के नीचे तथा बाँह के नीचे उलटी तरफ रखकर स्तनपान कराने की विधि का चित्र

बाँह के नीचे रखकर स्तनपान कराना

बाँह के नीचे उलटी तरफ रखकर स्तनपान कराना

कम वज़न के और समय से पूर्व जन्मे शिशु को स्तनपान कराना

कम वजन के और समय से पूर्व जन्में शिशुओं को माँ के दूध के लाभ :

- ✓ कम वजन और समयपूर्व जन्में शिशुओं के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व उचित मात्रा में मौजूद रहते हैं। समयपूर्व जन्मे शिशुओं को प्रोटीन की अधिक आवश्यकता होती है और समयपूर्व के दूध में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है।
- ✓ सुपाच्य (आसानी से पच जाता है)
- ✓ संक्रमणों से लड़ने के लिए आवश्यक तत्व मौजूद रहते हैं (नवजात शिशु जल्दी बीमार पड़ते हैं)
- ✓ स्तनपान से शिशु का शरीर गर्म रहता है (माँ के शरीर के पास होने के कारण); शरीर ठंडा रहने से (कम तापमान से) संक्रमण हो सकता हैं।

मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर शिशु को गर्म रख्ना तथा स्तनपान कराना

आवश्यक बातें

छोटे शिशुओं के लिए, जो स्तनपान कर सकते है :

- ✓ बाहों के नीचे रखकर या बाह के नीचे उलटी तरफ़ रखकर, स्तनपान करायें।
- ✓ यदि बच्चा सोता रहता हो, तो उसे हर दो–तीन घंटे बाद जगाकर स्तनपान कराएँ।

छोटे शिशु, जो शुरू में स्तनपान नहीं कर पाते :

- ✓ 1500 ग्रा. से कम वज़न के शिशु शुरू–शुरू में स्तनपान नहीं कर पाते।
- ✓ मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखें।
- ✓ हाथ से स्तन दबाकर दूध निकालें, और चम्मच से पिलाएँ।
- ✓ स्तनों में दूध अधिक बने, इसलिए प्रत्येक 2–3 घंटे बाद स्तनों से दूध निकालती रहें।
- ✓ शिशु को स्तनों से लगाएँ जिससे कि वह चूचुकों को थोड़ा–थोड़ा चूसे।
- ✓ जब एक बार चूसना शुरू कर दे, तो शिशु को बार–बार स्तनों से लगाना चाहिए ताकि दूध बनता रहे। कप/चम्मच से पिलाना ज़ारी रखें जब तक कि शिशु पूरी तरह से स्तनपान करके अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर सकें।

स्तन दबाकर दूध निकालना

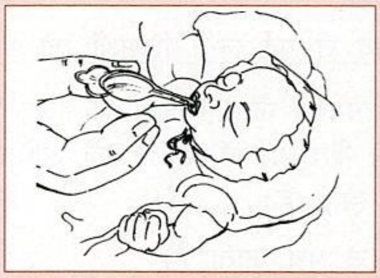

शिशु को चम्मच से दूध पिलाना

कितना दूध दें :

- ✓ कम वज़न का नवजात शिशु – पहले दिन 60 मि.ली. प्रति कि.ग्रा. शरीर के वज़न के अनुसार।
- ✓ 20 मि.ली. प्रति कि.ग्रा. प्रतिदिन के हिसाब से दूध की मात्रा बढ़ाती रहें, जब तक कि शिशु 200 मि. ली. प्रतिदिन दूध न पी ले।
- ✓ दिन में 8–12 बार दूध पिलाएँ (2–3 घंटे पर)
- ✓ कोलोस्ट्रम को सामान्य तापमान पर 12 घंटे तक रखा जा सकता है जब कि पूर्ण विकसित दूध को सामान्य तापमान पर 6–8 घंटे रखा जा सकता है।
- ✓ जब तक शिशु पूरी तरह स्तनपान पर न आ आए, कटोरी–चम्मच से माँ का दूध पिलाती रहें।

केस प्रस्तुति

1. शिशु का जन्म 7 महीने पर हुआ; उसका वज़न 1.6 कि.ग्रा. है। आप प्रसव के समय उपस्थित हैं।

   क) शिशु के गर्भकाल और वज़न के बारे में आपके क्या विचार है ?

   ____

   ख) शिशु के जन्म से पूर्व आप क्या तैयारी करेंगी ?

   ____

   ____

   ग) शिशु के लिये आप पहले 30 मिनट में क्या क्या करेंगी ?

   1. ______________________________
   2. ______________________________
   3. ______________________________
   4. ______________________________

   घ) शिशु को माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने के विधि के बारे में बताएँ। बहुत छोटे शिशुओं के लिये इस विधि के प्रयोग की सलाह क्यों दी जाती है ?

   ____

   ____

   ____

2. शिशु का जन्म 8 महीने 17 दिनों पर हुआ और उसका वज़न 1.8 कि.ग्रा. है। प्रसव के बाद आपने उसे पोंछा, कपड़े में लपेटा, और माँ की स्तनपान कराने में मदद की। 1 घंटे बाद आपने उसकी जाँच की। शिशु एकदम स्वस्थ है। वह ठीक से स्तनपान कर रहा है और उसका तापमान ठीक है। घर लौट जाने से पहले आप माँ को क्या सलाह देंगी ?

   1. ______________________________
   2. ______________________________
   3. ______________________________

केस प्रस्तुति के उत्तर

1. एक शिशु का जन्म 7 महीने पर हुआ; उसका वज़न 1.6 कि.ग्रा. है। आप प्रसव के समय उपस्थित है।

   क) शिशु के गर्भकाल और वज़न के बारे में आपके क्या विचार है ?

   शिशु समय से पूर्व जन्मा है और कम वज़न का है।

   ख) शिशु के जन्म से पूर्व आप क्या तैयारी करेंगी ?

   कमरे को गर्म करेंगे क्योंकि शिशु समय से पूर्व जन्म ले रहा है और उसे ठंड लग सकती है।

   ग) शिशु के लिये आप पहले क्या करेंगी ?

   1. *उसे तुरंत पोंछेगे।*
   2. *सूखे तौलिये में लपेटकर माँ के पास लिटाएँगे या फिर माँ उसे अपने शरीर से चिपकाकर रखें और फिर कपडा ओढ लें।*
   3. *स्तनपान शुरू कराने की कोशिश करेगें।*
   4. *माँ को अपने शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि समझाएँगें।*

   घ) शिशु को माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने के विधि के बारे में बताएँ और बहुत छोटे शिशुओं के लिये इसके इस्तेमाल की सलाह क्यों दी जाती है ?

   शिशु को गर्म रखने के लिए और उसे थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान कराने के लिए आवश्यक है, शिशु को छाती के बीचों–बीच सीधा खड़ा करके माँ अपने शरीर की त्वचा से चिपकाकर विशेष तरह के ब्लाउज (अथवा शॉल) के अंदर रखे। शिशु को जितनी देर रख सकें, इस स्थिति में रखे।

2. दूसरे शिशु का जन्म 8 महीने 17 दिनों पर हुआ और उसका वज़न 1.8 कि.ग्रा. है। प्रसव के बाद आपने उसे पोंछा और कपड़े में लपेटा और माँ की स्तनपान कराने में मदद की। 1 घंटे बाद आपने उसकी जाँच की। शिशु एकदम स्वस्थ है। वह ठीक से स्तनपान कर रहा है और उसका तापमान सामान्य है। घर जाने से पहले आप माँ को क्या सलाह देंगी ?

   1. *शिशु को अपने शरीर से चिपकाकर, रखें ताकि उसका शरीर गर्म रहे। यदि ऐसा संभव नही है, तो शिशुको टोपा पहनाकर गर्म थैली में रखें।*
   2. *थोड़ी–थोड़ी देर में (2–2 घंटे पर) स्तनपान कराएँ।*
   3. *बताएँ कि आप अगले दिन फिर शिशु को देखने आएँगी।*

मोड्यूल 11 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय पूर्व जन्मे शिशुओं के खतरे की स्थितियों का निर्धारण तथा देखभाल

सत्र 3 : माँ को कम वज़न के शिशु की देखभाल के बारे में बताना

दिवस : 2

समयावधि : 1 घं. 45 मि.

प्रयोजन

आशाओं को कम वज़न और समयपूर्व जन्मे शिशुओं की देखभाल के बारे में माताओं को सलाह देने का अभ्यास कराना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यता आएगी –

1. कम वज़न और समयपूर्व जन्मे नवजात शिशु की देखभाल के बारे में माँ को समझाने की विधि का प्रदर्शन करना।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1: आदर्श भूमिका नाटक का आलेख
- स्वास्थ शिक्षा के लिये चित्रपुस्तिका

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थियों से कहें कि वे स्वास्थ शिक्षा के लिये चित्रपुस्तिका सत्र मे अपने साथ रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>आदर्श भूमिका नाटक</u> (20 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षक आलेख के अनुसार भूमिका नाटक प्रस्तुत करें।
2. भूमिका नाटक के बाद प्रशिक्षणार्थियों से कहें कि वे अध्ययनपत्र 1 से भूमिका नाटक पढ़ें।
3. भूमिका नाटक में दिए विषय–वस्तु पढ़ने को कहें; उसमें क्या सलाह दी गई है, कैसे दी गई और परामर्श कार्डों का प्रयोग कैसे किया गया?
4. पूछें, कि क्या किसी को कोई टिप्पणी या सलाह देनी है, या प्रश्न पूछना है?

<u>प्रस्तुती</u> (15 मि.)

परामर्श कार्डो की समीक्षा करें:

- परामर्श कार्ड 28, 29, 30, देखें
- निम्न बातों पर ज़ोर दें
  - आपके शिशु को गर्म रखने की जरूरत है, विशोकर सर्दियों में।
  - शिशु को कपड़े तथा टोपा पहनाईए और गर्म बैग में रखकर माँ के पास रखें।

– शिशु को माँ अपने पास रखे और कई बार स्तनपान कराये।
– जहाँ तक संभव हो, शिशु को माँ अपनी त्वचा से चिपकाकर रखे।

- प्रत्येक परामर्श कार्ड की चर्चा करें।
  – आशाओं से कहे कि वे परामर्श कार्ड 28 का चित्र देखें।
  – कार्ड का संदेश पढ़ें और आशाओं से पूछे कि वे माँ के साथ इसकी चर्चा कैसे करेगी। माँ से कौन से प्रश्न पूछेंगी और कौन सी बाते जोर देकर कहेगी।
  – इसी प्रक्रिया को कार्ड 29 और 30 के साथ दोहराएँ।
- बताएँ कि इन कार्डो का प्रयोग करना तथा उनकी चर्चा भूमिका नाटक के दौरान की जाएगी।

भूमिका नाटक का अभ्यास और प्रस्तुती (1घंटा.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशा को 3–3 की टोलियों में बाँटें।
2. प्रत्येक टोली को नाटक प्रस्तुत करने के लिए एक परिदृश्य दें; 20 मि. का समय चर्चा और नाटक तैयार करने के लिए दें :
   - प्रसव के समय : शिशु का वज़न 1.8 कि.ग्रा. है; वह ठीक से स्तनपान कर रहा है। उसका तापमान सामान्य है।
   - प्रसव के समय : शिशु का वज़न 1.3 कि.ग्रा. है; वह समय से पूर्व जन्मा है, ठंडा है और ठीक से स्तनपान नहीं कर पा रहा।
   - प्रसव के समय : शिशु का वज़न 1.4 कि.ग्रा. है, वह समय से पूर्व जन्मा है और ठीक से स्तनपान नहीं कर पा रहा।
   - दूसरा दिन : शिशु का वज़न 1.6 कि.ग्रा. है वह समय से पूर्व जन्मा हैं। वह मुश्किल से स्तनपान कर पा रहा है।
   - दूसरा दिन : शिशु का वज़न 1.5 कि.ग्रा. है, वह ठीक से स्तनपान कर रहा है।
3. प्रत्येक आशा से शिशु की देखभाल करने और माँ को इस बारे में बताने को कहें।
4. हर टोली पूरे समूह के सामने भूमिका नाटक प्रस्तुत करे और फिर पूरा समूह इस पर चर्चा करे (कुल 50 मि. – प्रत्येक समूह को 10 मि. का समय दें)

सारांश : (5–10 मि.)

- बतायें कि कम वज़न वाले और समय से पूर्व जन्में शिशुओं की देखभाल के बारे में मुख्य बातें माँ को कैसे समझाएगी । (प्रसव के कमरे को सामान्य से ज़्यादा गर्म रखें, शिशु को तुरंत पोंछे, शिशु बहुत छोटा हो तो उसे माँ की त्वचा से चिपकाकर रखें, शिशु को ओढ़ा कर माँ के पास रखे, स्तनपान शुरू करें और बार–बार स्तनपान कराएँ, शिशु को कपड़े तथा टोपा पहनाएँ, (यदि शिशु को माँ की त्वचा से चिपकाकर न रख पायें हो तो गर्म बैग में रखकर माँ के पास रखें।
- एक आशा से पूछें कि माँ से शिशु की देखभाल के लिए बातचीत करने और समझाने में बातचीत की सफल विधियाँ क्या हैं। *(माँ की झिझक दूर करें, खुले प्रश्न (बड़े उत्तर वाले) पूछें, उसकी बात सुनें, और सरल एवं स्पष्ट भाषा में समझायें; आवश्यक हो तो दृश्य साधनों (कार्ड आदि) का प्रयोग करें और चित्र दिखाकर उससे पूछें, या अगर पहले दिखा चुके हों तो याद दिलाएँ; उसे दी गई*

सलाह दोहराने को कहें, पूछें कि उसके कोई प्रश्न तो नहीं; मुख्य बातों को संक्षिप्त में बताएँ, और पूछें कि क्या माँ वैसा करने की कोशिश करेगी; बताएँ कि आवश्यकता पड़ने पर आशा या डॉक्टर को बुलाए, यह भी बताएँ कि आप दोबारा कब आएँगी)।

- कुछ गलतियाँ हों तो सुधारें और, महत्वपूर्ण जानकारी को दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
कम वज़न और समयपूर्व जन्मे नवजात शिशु की देखभाल के बारे में माँ को समझाने की विधि का प्रदर्शन करना।	भूमिका नाटक देखना	आशा व्दारा प्रस्तुत भूमिका नाटकों का प्रशिक्षक व्दारा लिखा गया विवरण

आदर्श भूमिका नाटक का आलेख

समय : (20 मि.)

आशा को भूमिका नाटक का परिदृश्य समझाएँ तथा पात्र परिचय कराएँ।

प्रसव के समय : शिशु समय से पूर्व जन्मा और बहुत कम वज़न (1.5 कि.ग्रा.) का हैं। मॉं की सहायता के लिए आशा उपस्थित हैं।

आशा : ओह, लड़का पैदा हुआ है, उसके रोने की आवाज तो सुनो।

(आशा शीघ्रता से शिशु को पोंछती है, सूखे कपड़े में लपेटती है, और नाल का स्पंदन बंद होने तक कुछ पल इन्तजार करती है। दाई नाल बाँधती और काटती है। आशा उसे लेती है और टोपी पहनाकर कपड़े में लपेटकर माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर लिटा देती है)

माँ : अरे, यह तो बहुत छोटा है।

आशा : हाँ, छोटा तो है ही, क्योंकि समय से पहले पैदा हो गया है, पर इसकी साँस ठीक चल रही है और शक्ल से बड़ा बुद्धिमान लगता है। ये पूरी तरह चैतन्य है। चलो, बड़ा अच्छा हुआ ! *(माँ को देखकर मुस्कराती है।)* समय से पहले पैदा होने के कारण शिशु बहुत छोटा रहता है और उसकी अधिक देखभाल करनी पड़ती है। इसीलिए ज़रूरी है कि उसे गर्म रखा जाए, और थोड़ी–थोड़ी देर में दूध पिलाया जाए। बता सकती हो, ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है ?

मा : मुझे नहीं मालूम; मुझे उसे अपने पास चिपकाकर और अच्छे से पहना/ओढ़ा कर रखना चाहिए, यही न ?

आशा : एकदम ठीक ! वह इतना छोटा है कि उसके लिए सबसे अच्छी जगह है तुम्हारी छाती से लगाकर रखना, इससे ही वह गर्म रह पाएगा। उसे ऐसे सीधा पकड़ना *(मॉं के शरीर से चिपकाकर रखने की विधि का प्रयोग करते हुये शिशु को सीधा खड़ा पकड़कर और माँ/बच्चे को शॉल में लपेटकर आशा दिखाती है)* दिन–रात इसे इसी स्थिति में रखना। देखो–देखो.... लग रहा है कि वह भूखा है; कोशिश करके दूध पिलाओ। *(आशा माँ को सीधा बिठाने में मदद करती है और बाँह की नीचे लिटाकर* (छोटे शिशुओं के लिये उपयुक्त विधि) *उसे स्तनों से लगाने की कोशिश करती है। शिशु थोड़ी सी देर स्तनपान करता है और रुक जाता है।)*

माँ : अरे, यह तो दूध पी ही नहीं रहा ?

आशा : कभी–कभी पहले कुछ दिनों में छोटे शिशुओं को स्तनपान कराने में मदद करनी पड़ती है। लाओ, तुम्हें स्तनों से दूध निकालना सिखाऊँ, चम्मच से दूध पिला देंगे। पहले उसे स्तनों से लगाना आवश्यक है, पर यदि वह दूध न पिये तो स्तनों से दूध निकालकर उसे चम्मच से पिलाया जा सकता है। कुछ दिन बाद उसमें इतनी ताकत आ जायेगी, कि वह स्वयं स्तनपान कर पाएगा। *(आशा अपने हाथ धोती है और माँ को स्तनों को दबाकर साफ कटोरी में दूध निकालना और शिशु को चम्मच से पिलाना सिखाती है पहले दिन 60 मि.ली. प्रति कि.ग्रा. शिशु के शरीर के वज़न*

के हिसाब से, 1.5 कि ग्रा. के शिशु को 90 मि.ली. दूध देना होगा। दिन भर में 10–12 बार थोड़ा–थोड़ा। 10 बार दूध देने का मतलब हुआ, प्रत्येक बार में लगभग 9 मि.ली. अर्थात 2 चम्मच)।

आशा : अब ज़रा चम्मच उसके होठों से छुआओ और चम्मच टेढ़ा करके दूध होठों से लगाओ.... हाँ, ऐसे देखो, कैसे वह अपनी जीभ लगाकर दूध पी रहा है। अब ऐसे ही 2–2 घंटे पर उसे दूध पिलाती रहो। ध्यान रखना कि उसका शरीर/हाथ–पैर गर्म रहें। यदि वह ठंडा पड़ने लगे, या सुस्त हो जाये, या साँस तेज चलने लगे, तो मुझे बुलाने में जरा भी देरी मत करना और कुछ पूछना चाहती हो?

माँ : नहीं तो। देखिए, लग रहा है कि सो गया है..... मैं भी बहुत थक गई हूँ।

मोड्यूल 11 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय पूर्व जन्मे शिशुओं के खतरे की स्थितियों का निर्धारण तथा देखभाल

सत्र 4 : अधिक खतरे वाले शिशु

दिवस : 3
समयावधि : 2 घंटे

प्रयोजन

आशाओं को अधिक खतरे वाले शिशुओं पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। इस सत्र में आशाओं को अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान के मापदण्ड, अतिरिक्त देखभाल और दौरे तथा माँ को शिशु की अतिरिक्त घरेलू देखभाल के बारे में सिखाया जाएगा।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. मापदण्डों के अनुसार पहचानना कि नवजात शिशु में अधिक खतरे के लक्षण तो नहीं हैं।
2. अधिक खतरे वाले शिशुओं की मापदण्डों के अनुसार देखभाल के बारे में बताना।
3. माँ को अधिक खतरे वाले शिशुओं की विशेष देखभाल के बारे में समझाना।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1 : अधिक खतरे के लक्षण, जानकारी प्रपत्र
- अभ्यासपत्र 1 : घरों का दौरा फॉर्म : अधिक खतरेवाले शिशु (पूरक फॉर्म 3)
- अभ्यासपत्र 2 : दूसरे महीने वाला घरों का दौरा फॉर्म (पूरक फॉर्म 4)
- अध्ययनपत्र 2 : अधिक खतरे वाले शिशु को पहचानने के लिए मापदण्ड
- अभ्यासपत्र 3 : प्रश्नपत्र
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: प्रशिक्षकों के लिये प्रश्नपत्र के उत्तर
- ब्लैक बोर्ड या सफ़ेद कागज/ फ़्लिप चार्ट
- मार्कर पेन

तैयारी

- अध्ययनपत्र 1,2 तथा अभ्यासपत्र 1,2,3, की आशाओं की संख्या के अनुसार प्रतियाँ तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवँ चर्चा</u> (1 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. सत्र 3 में आशा को कम वज़न वाले और समय से पूर्व जन्में शिशुओं की देखभाल के बारे में बताया गया था। आशाओं से पूछें कि ऐसे शिशुओं को 'अधिक खतरे वाले शिशु' क्यों माना जाता है। उनके उत्तर सुनें, जो कुछ ऐसे हो सकते हैं : *कम वज़न वाले और समय से पूर्व जन्में शिशु जल्दी बीमार*

पड़ जाते हैं और यदि वे बीमार पड़ें तो सामान्य वज़न और समय से जन्में शिशुओं की तुलना में इनकी मृत्यु की संभावना अधिक होती है।

2. उन्हें बताएँ कि किन शिशुओं को अधिक खतरा होता है यह जानने के लिए मापदण्ड निर्धारित किए गए है। विषय–वस्तु बाक्स में ये मार्गदर्शक दिये गये हैं। ब्लैकबोर्ड या कागज़ पर इन्हें लिखें।

विषय वस्तु

अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान के मापदण्ड

ऐसे शिशु जिनमें निम्न में से कोई लक्षण हों :

- जन्म के समय 2000 ग्रा. से कम वज़न
- समय से पूर्व जन्में (8 माह 14 दिन या उससे कम गर्भकाल)
- पहले दिन ही बच्चे को स्तनपान संबंधी समस्या

3. यदि आशा प्रसव के समय उपस्थित नहीं है और उसे पहली बार शिशु के घर जाने में देरी हो जाए, तो जब भी वह पहली बार घर जाए, तो शिशु का वज़न करे। ऐसे में निम्न तालिका का प्रयोग करते हुये निर्धारित करें कि शिशु को खतरा है या नहीं :

वह दिन जब शिशु का वज़न पहली बार लिया गया	शिशु का वज़न	निदान
1 से 14 दिन	2 कि.ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला
15 से 21 दिन	2 कि.ग्रा. 100 ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला
22 से 27 दिन	2 कि.ग्रा. 200 ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला
28वें दिन	2 कि.ग्रा. 300 ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला

4. आशाओं से पूछें कि अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान करना क्यों जरूरी है ? उनके उत्तर सुनें और सही उत्तरों की प्रशंसा करें। उत्तरों में निम्न बातें शामिल होनी चाहिए :
   - स्वस्थ शिशुओं की तुलना में खतरे वाले शिशु जल्दी बीमार पड़ जाते हैं और उनकी मृत्यु की संभावना भी अधिक होती है।
   - अधिक खतरे वाले शिशुओं को ठंड जल्दी लग जाती है और इसलिए उन्हें गर्म रखने की ज़रूरत होती है।
   - अधिक खतरे वाले शिशुओं को दूध पीने में कठिनाई होती है। स्तनपान शुरू कराने और ज़ारी रखने में उन्हें सहायता देनी पड़ती है।

5. ऊपर दिए कारणों की वजह से यह बहुत जरूरी है कि अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान की जाए, उनकी देखभाल की जाए और इलाज या बचाव के प्रयत्न शीघ्र किए जाएँ।

विषय वस्तु

अधिक खतरे वाले शिशुओं के लिए सावधानियाँ :

- ✓ प्रसव के बाद शिशु के घर के दौरे बढाएँ। शिशु की जाँच के लिए पहले महीने में 13 बार घर जाएँ: 2,3,4,5,6,7,9,12,15,18,21,24,28 वे दिन तथा 42 वें दिन। (पूरक फॉर्म 3:'घरों का दौरा फॉर्म: अधिक खतरेवाले शिशु' का प्रयोग करें।)
- ✓ 7, 15, 21, 28 और 42 वें दिन शिशु का वज़न करें।
- ✓ परिवार के सदस्यों को 'अधिक खतरे वाले शिशु' नामक शीट बाँटें और शिशु की जो विशेष देखभाल आवश्यक है, उस के बारे में बताएँ।
- ✓ समस्याओं के अनुसार विशेष देखभाल करें और शीतकाल में सामान्य रूप से शिशु को गर्म रखें (गर्म थैली, टोपी, कपड़ो का प्रयोग) और उसे थोड़ी–थोड़ी देर बाद (2–2 घंटे में) स्तनपान कराएँ।
- ✓ यदि शिशु ठीक से स्तनपान नहीं कर रहा, तो उसे दूध पीते हुए देखें। देखें, कि उसे ठीक स्थिति में स्तनों से लगाया गया है। माँ को ठीक से दूध पिलाने के बारे में समझाएँ/प्रेरित करें। उसे अन्य तरल पदार्थ/ऊपरी दूध देने से रोकें।
- ✓ 'अधिक खतरे वाले शिशु' शीट में दी गई जानकारी के बारे में मातापिता के साथ चर्चा करें
- ✓ यदि 28 वें दिन शिशु का वज़न 2300 ग्रा. से कम हो, अथवा 28 दिनों मे शिशु का वज़न 300 ग्राम से कम बढ़ा हो, तो आशा दूसरे महीने भी सप्ताह में 1 बार शिशु की जाँच के लिये घर जाए और वज़न लें। (जिन शिशुओं का वज़न 28 वें दिन 2300 ग्रा. से कम होता है उन्हें मृत्यु का खतरा अधिक होता है)
- ✓ दूसरे महीने में दूसरा 'घरों का दौरा फॉर्म'– पूरक फॉर्म 4 भरे, 35, 42, 49 और 56वें दिन शिशु की जाँच के लिए जाएँ। यदि शिशु को दूसरे महीने मे खतरा नहीं है तो आशा 42 वें दिन का नियमित दौरा करें।

6. दूसरे महीने वाला फॉर्म देखें; आशाओं को अवश्य बताएँ कि दूसरे महीने में, कब उन्हें शिशु की जाँच के लिए जाना है (28वें दिन वज़न 2300 ग्रा. से कम अथवा 28 दिनों में शिशु का वज़न 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो)। प्रशिक्षणार्थियों से कहें की यदि वे दूसरे महीने में खतरेवाले शिशु की जॉच के लिए जा रही है, तो वह शिशु की बीमारियों का उपचार भी करेगी।
7. आशाओं से कहे कि वे से अधिक खतरे वाले शिशु के लिए परामर्श कार्ड – नं.28, 29, 30, देखें। (नीचे दिया बाक्स देखें)। इस कार्ड में दी विषय–वस्तु देखें। इस कार्ड का प्रयोग प्रत्येक खतरे वाले शिशु की माँ के साथ करना चाहिए।

विषय–वस्तु

परामर्श (परामर्श कार्ड नं. 28, 29, 30)

आपके शिशु को विशेष सहायता की आवश्यकता है

- ✓ उसे गर्म रखना आवश्यक है। (विशेषकर ठंड के मौसम में)
- ✓ उसे पोंछकर, गर्म थैली में टोपी पहनाकर और अपने शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना चाहिए।
- ✓ समय से पूर्व जन्मे बहुत छोटे शिशु को गर्म रखने के लिए अपनी छाती के बीचों बीच चिपकाकर रखना चाहिए।

✓ सभी छोटे शिशुओं को 2–2 घंटे पर स्तनपान कराना चाहिए।

✓ जब तक शिशु का वज़न 2000 ग्राम से अधिक न हो जाए, उसे नहलाएँ नहीं।

✓ अपने हाथ कई बार धोएँ : अपने नाखून छोटे रखें और स्तनपान कराने से पहले, शौच जाने के बाद और शिशु को छूने से पहले प्रत्येक बार हाथ धोएँ।

ठंड के मौसम मे शिशु को गर्म रखें

खतरे के लक्षण :

✓ यदि निम्न में से कोई भी खतरे के लक्षण शिशु में दिखाई दें तो आशा को तुरंत बुलाएँ:

- हाथ पैर लुंज–पुंज हो
- स्तनपान करना बंद कर दे
- छाती अंदर को धँसी हो
- बुखार हो
- छूने में ठंडा पड़ा हो

स्तनपान करना बंद

छाती अंदर को धँसना

8. आशाओं को बताएँ कि ऊपर दिए हुए खतरे के लक्षण, 10 में से 3 शिशुओं में आने की संभावना होती हैं। आशा जानती हैं कि शिशु ठंडा पडा हो (हायपोथर्मिया) या शिशु को बुखार हो तो इसका निदान और उपचार कैसे करना है। यदि शिशु के हाथ पैर लुंज–पुंज हो, या शिशु दूध पीना बंद कर दे, तो आशा ऐसे शिशुओं को तुरंत अस्पताल या स्वास्थ केंद्र भेजे। अगले मोड्यूल में वे सीखेंगे कि इनमें से कुछ शिशुओं का सेप्सिस के लिए निदान और उपचार कैसे किया जाता है।

<u>भूमिका नाटक</u> : (20 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. दो आशाओं से एक भूमिका नाटक प्रस्तुत करने को कहें; एक माँ की भूमिका निभाए, जिसने अभी–अभी कम वज़न वाले (अधिक खतरे वाले) शिशु को जन्म दिया है, और दूसरी आशा की भूमिका निभाए। आशा परामर्श कार्ड की सहायता से माँ को अधिक खतरे वाले शिशु की देखभाल करना सिखाए।
2. भूमिका नाटक के बाद सभी को बताएँ कि उनकी भूमिका कैसी रही; अच्छी बातों की प्रशंसा करें और सुधार के लिए सलाह दें।

<u>प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन</u> : परीक्षा (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. मूल्यांकन के लिए अभ्यासपत्र 3: प्रश्न–पत्र बाँटें।
2. आशा स्वयं प्रश्न हल करें। (30 मि.)
3. उत्तर पुस्तिकाएँ इकट्ठी करें और कक्षा में चर्चा करें।
4. प्रश्न पूछें; सभी की शंकाओं का समाधान करें।

सारांश

- परीक्षा की समीक्षा ही सत्र (तथा मोड्यूल) का सारांश हैं।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
मापदण्डों के अनुसार पहचानना कि नवजात शिशु में अधिक खतरे के लक्षण तो नहीं हैं।	प्रश्न–उत्तर/परीक्षा	प्रत्येक आशा व्दारा हल किया गया अभ्यासपत्र 3 प्रश्न–पत्र, जिसे जॉचकर प्रशिक्षक ने अंक दिये है
अधिक खतरे वाले शिशुओं की मापदण्डों के अनुसार देखभाल के बारे में बताना।	प्रश्न–उत्तर/परीक्षा	प्रत्येक आशा व्दारा हल किया गया अभ्यासपत्र 3 प्रश्न–पत्र, जिसे जॉचकर प्रशिक्षक ने अंक दिये है
माँ को अधिक खतरे वाले शिशुओं की विशेष देखभाल के बारे में समझाना।	भूमिका नाटक/चर्चा प्रश्न–उत्तर/परीक्षा	प्रत्येक आशा व्दारा हल किया गया अभ्यासपत्र 3 प्रश्न–पत्र, जिसे जॉचकर प्रशिक्षक ने अंक दिये है। प्रशिक्षक व्दारा लिखा गया भूमिका नाटक के निरिक्षण का विवरण

अधिक खतरे के लक्षणः जानकारी प्रपत्र
(अधिक खतरेवाले शिशुओंके माता पिता के लिए)

आपका शिशु अधिक खतरेवाला है। सामान्य तथा स्वस्थ शिशुओं से, अधिक खतरेवाले शिशुओं को बीमार पड़ने का तथा मरने का ज़्यादा खतरा होता है। इसलिए ऐसे शिशुओं की विशेष देखभाल करना बहुत ज़रूरी है।

आपके आशा को अधिक खतरेवाले शिशुओं की देखभाल करने का प्रशिक्षण दिया गया है। ऐसे शिशुओं की समस्या का समाधान करने के लिए उसके पास जानकारी तथा उपकरण हैं। कृपया उसकी बाते सुनें और वो आपको उचित सेवा दे सके, इसके लिए उसकी मदत करें।

अधिक खतरेवाले शिशुओं की जन्मतेही निम्न प्रकारसे देखभाल की जाए तो उनकी जान बच सकती है:

1. शिशु को नंगा न रखें। पहले दिन से ही उसे सूती कपड़े पहनाएँ। ठंडे मौसम में उसे कंबल में या गर्म थैली में रखें। बच्चे को नंगा रखा जाने से उसके शरीर का तापमान कम हो जाता है और बच्चा ठंडा पड़ जाता है। यह स्थिति शिशु के लिए जानलेवा हो सकती है।
2. जब तक शिशु का वज़न 2000 ग्राम से अधिक न हो जाए उसे नहलाना नहीं।
3. माँ अपने नाखून काटती रहे तथा हरबार शिशु को दूध पिलाने से पहले अपने हाथ धोए।
4. सभी परिवारजन शौच से लौटने के बाद, शिशु को छूने से पहले, साबुन और पानी से हाथ धोए।
5. अधिक खतरेवाले शिशुओं को हर दो घंटे बाद स्तनपान कराएँ।
6. यदि शिशु स्तनपान न कर पाए तो स्तनों से दूध निकालकर कटोरी/ चम्मच से शिशु को पिलाना चाहिए।
7. अधिक खतरेवाले शिशुओं का वज़न, दूसरे हफ्ते से हर हफ्ते बढ़ना चाहिए। यदि ऐसा न हो, तो आशा से संपर्क करें।

यदि आपके शिशु में निम्न में से कोई खतरे का लक्षण दिखता है, तो तुरंत आशा को बुलाएँ।

- हाथ पैर लुंज–पुंज हो
- स्तनपान करना बंद कर दे
- छाती अंदर को धँसी हो
- बुखार हो
- छूने में ठंडा पड़ा हो

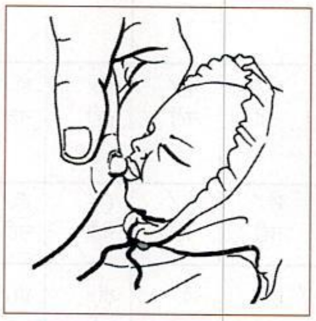
स्तनपान करना बंद

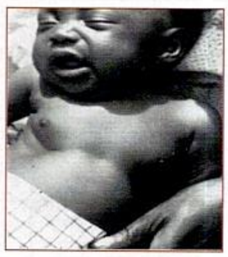
छाती अंदर को धँसना

घरों का दौरा(अधिक खतरेवाले शिशु): फॉर्म–माँ तथा नवजात शिशु की जाँच

पूरक फॉर्म 3

पूछें / जाँच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन 2रा ____	3रा ____	4था ____	5वा ____	6ठा ____	7वा ____	आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
(क) माँ से पूछना								कार्य किया?
मॉ 24 घंटे में कितनी बार भरपेट भोजन ले रही है							यदि मॉ 4 से कम बार भोजन ले रही है और भरपेट भोजन नहीं ले रही है तो उसे ऐसा करने की सलाह दें।	हॉ / नहीं
रक्तस्त्राव : एक दिन में कितनी बार पैड बदलती है?							यदि 5 से अधिक पैड़ गीले हुए, तो उसे तुरंत अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
क्या शिशु को सर्दी मे गर्म रखा गया (मॉ के पास रखा गया, कपड़े पहनाये गये या कपड़े मे लपेटकर रखा गया)	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	यदि मॉ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉ / नहीं /लागु नहीं
क्या शिशु को लगातार दूध पिलाया जा रहा है (जब शिशु को भूख लगे या 24 घंटे मे 7 से 8 बार)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि मॉ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉ / नहीं
क्या शिशु लगातार रो रहा है अथवा दिन मे 6 से कम बार पेशाब कर रहा है?	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	मॉ को कहे कि शिशु को हर 2 घंटे बाद दूध पिलाए	हॉ / नहीं
(ख) माँ की जॉच								
बुखार : नापें और लिखें							यदि मॉ को 102^0 फै (38.9^0 सें) तक बुखार है तो पैरासिटेमॉल दें। यदि बुखार 102^0 फै (38.9^0 सें) से अधिक है, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
बदबूदार स्त्राव के साथ 100^0 फै (37.8^0 सें) से अधिक बुखार	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
मॉ उल्टा–सीधा बोलती है या उसे दौरे पड़ते हैं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
प्रसव के बाद मॉ को दूध नहीं उतरा है या उसे ऐसा लग रहा है कि कम दूध आ रहा है	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉ / नहीं
कटे–फटे चूचुक/स्तनों में दर्द या/और सूजन	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉ / नहीं

सुपरवाईजर की टिप्पणी: काम अधूरा? काम गलत? रिकार्ड गलत?

पूछें / जाँच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन 2रा ____	3रा ____	4था ____	5वा ____	6ठा ____	7वा ____	आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
(ग) शिशु की जाँच								
ऑखों मे सूजन अथवा मवाद	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	यदि हॉ तो मॉ को कहें कि टेट्रासायक्लिन मल्हम 5 दिन तक दिन मे 2 बार शिशु की ऑखों में डालें	हॉ / नहीं
वज़न मापें और लिखें। 7, 15, 28 और 42 दिनों पर								हॉ / नहीं
तापमान मापें और लिखें।								हॉ / नहीं
त्वचा मवाद भरे फोड़े:	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	जी. वी. पेन्ट लगाएँ तथा देखें कि सेप्सिस के लक्षण तो नहीं हैं।	हॉ / नहीं
त्वचा की मोडों में कटना या लाली (जॉघ/बगल/कुल्हे)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	शिशु की त्वचा साफ तथा सूखी रखें। टैल्कम पावडर या जी. वी. पेंट लगाएँ।	हॉ / नहीं
ऑखें या त्वचा का पीलापन (पीलिया)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि जन्म के पहले दिन ही पीलिया है, या यह 14 दिन से अधिक बना रहता है तो यह खतरनाक है। शिशु को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं

दूसरे दिन मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दे अधिक खतरे वाले शिशु का प्रपत्र दूसरे दिन दें	हॉ/नही हॉ/नहीं	खतरे के लक्षण वाला जानकारी प्रपत्र माता पिता को दूसरे दिन दें	हॉ/नहीं

(घ) सेप्सिस का निदानः सेप्सिस के लक्षणों की जॉंच करें। यदि लक्षण दिखाई देता है तो खाने मे सही (✓) का निशान लगाऍं। यदि लक्षण नहीं है तो गलत (X) का निशान लगाऍं।

पहले दिन वाला खाना शिशु की पहली जॉंच वाले फॉर्म से लिखें।

पूछें / जॉंच करें आशा के दौरे की तारीख		दिन 2रा ____	3रा ____	4था ____	5वा ____	6ठा ____	7वा ____	आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे
	1ला दिन							पहले तीन लक्षण सेप्सिस निदान के मापदंड तभी माने जाऍंगे यदि वे पहले न हो और फिर नये से दिखाई दें।	हॉं / नहीं
1.सारे हाथ पैर लुंज–पुंज									
2.स्तनपान कम/बंद									
3.रोना धीमे/बंद									
4.पेट फूला हुआ अथवा मॉं कहे कि शिशु बार बार उल्टी कर रहा है								यदि एक ही दिन में कम से कम दो लक्षण दिखाई दें तो सेप्सिस का निदान करें और सेप्सिस का उपचार करें (सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग करें)	हॉं / नहीं
5.मॉं कहती है कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है अथवा उसका तापमान 99^{0}फै. (37.2^{0}से.) से अधिक है								यदि कोई भी लक्षण न दिखे तो मॉं को ध्यान रखने को कहें। मॉं से कहे कि एक भी लक्षण दिखाई दें तो तुरंत आशा को बुलाऍं।	हॉं / नहीं
6.छाती अंदर को धँसी हुई									
7.टुंडी पर मवाद									हॉं / नहीं
उपस्थित कुल लक्षणों की संख्या								यदि एक लक्षण दिखाई दें तो रोज दौरा करें और देखें कि दूसरा लक्षण तो नहीं आया। इस दौरान एक लक्षण का उपचार करें। (नीचे बाक्स देखें)	हॉं / नहीं
क्या शिशु को सेप्सिस है?		हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं		हॉं / नहीं

सेप्सिस उपचार का कौनसा प्रबंध परिवार के लोगों ने स्वीकार किया? (सही उत्तर पर गोला करें।)

उपचार न करना **अस्पताल भेजना** **आशा व्दारा उपचार** **अन्य उपचार**

यदि आशा उपचार करती है तो, सेप्सिस उपचार फॉर्म (पूरक फॉर्म 5 का प्रयोग करें।)

- स्तनपान की समस्या के लिए स्तनपान समस्या का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 1)
- सिर्फ छाती अंदर को धँसती हो तो कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें।
- टुंडी पर मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाऍं।
- शिशु का शरीर ठंड़ा पड़ रहा हो तो शरीर ठंड़ा पड़ने का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 2)।
- बुखार हो तो बुखार का उपचार करें।

यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2300 ग्राम से कम हो अथवा जन्म के समय के वजन से 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो दूसरे महीने में भी नियमित रूप से शिशु के घर के दौरे जारी रखें। अपना निरिक्षण घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना (पूरक फॉर्म 4) में लिखें।

घरों का दौरा(अधिक खतरेवाले शिशु):फॉर्म–माँ तथा नवजात शिशु की जाँच

पूरक फॉर्म 3

पूछें / जॉच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन 9वा ____	12वा ____	15वा ____	18वा ____	21वा ____	24वा ____	आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
(क) माँ से पूछना								काये किया?
मॉ 24 घंटे में कितनी बार भरपेट भोजन ले रही है							यदि मॉ 4 से कम बार भोजन ले रही है और भरपेट भोजन नहीं ले रही है तो उसे ऐसा करने की सलाह दें।	हॉ / नहीं
रक्तस्त्राव : एक दिन में कितनी बार पैड बदलती है?							यदि 5 से अधिक पैड़ गीले हुए, तो उसे तुरंत अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
क्या शिशु को सर्दी मे गर्म रखा गया (मॉ के पास रखा गया, कपड़े पहनाये गये या कपड़े मे लपेटकर रखा गया)	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	यदि मॉ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉ / नहीं /लागु नहीं
क्या शिशु को लगातार दूध पिलाया जा रहा है (जब शिशु को भूख लगे या 24 घंटे मे 7 से 8 बार)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि मॉ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉ / नहीं
क्या शिशु लगातार रो रहा है अथवा दिन मे 6 से कम बार पेशाब कर रहा है?	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	मॉ को कहे कि शिशु को हर 2 घंटे बाद दूध पिलाए	हॉ / नहीं
(ख) माँ की जॉच								
बुखार : नापें और लिखें							यदि मॉ को 102^0 फै (38.9^0 सें) तक बुखार है तो पैरासिटेमॉल दें। यदि बुखार 102^0 फै (38.9^0 सें) से अधिक है, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
बदबूदार स्त्राव के साथ 100^0 फै (37.8^0 सें) से अधिक बुखार	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
मॉ उल्टा–सीधा बोलती है या उसे दौरे पड़ते हैं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
प्रसव के बाद मॉ को दूध नहीं उतरा है या उसे ऐसा लग रहा है कि कम दूध आ रहा है	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉ / नहीं
कटे–फटे चूचुक/स्तनों में दर्द या/और सूजन	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉ / नहीं

सुपरवाईजर की टिप्पणीः काम अधूरा? काम गलत? रिकार्ड गलत?

पूछें / जाँच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन 9वा ____	12वा ____	15वा ____	18वा ____	21वा ____	24वा ____	आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
(ग) शिशु की जाँच								
ऑखों मे सूजन अथवा मवाद	हॉं/ नहीं/	हॉं/ नहीं/	हॉं/ नहीं/	हॉं/ नहीं/	हॉं/ नहीं/	हॉं/ नहीं/	यदि हॉं तो मॉं को कहें कि टेट्रासायक्लिन मल्हम 5 दिन तक दिन मे 2 बार शिशु की ऑखों में डालें	हॉं / नहीं
वज़न मापें और लिखें। 7, 15, 28 और 42 दिनों पर								हॉं / नहीं
तापमान मापें और लिखें।								हॉं / नहीं
त्वचा मवाद भरे फोड़ेः	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	जी. वी. पेन्ट लगाएँ तथा देखें कि सेप्सिस के लक्षण तो नहीं हैं।	हॉं / नहीं
त्वचा की मोडों में कटना या लाली (जॉंघ/बगल/कुल्हे)	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	शिशु की त्वचा साफ तथा सूखी रखें। टैल्कम पावडर या जी. वी. पेंट लगाएँ।	हॉं / नहीं
ऑखें या त्वचा का पीलापन (पीलिया)	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि जन्म के पहले दिन ही पीलिया है, या यह 14 दिन से अधिक बना रहता है तो यह खतरनाक है। शिशु को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं

दूसरे दिन मॉं को स्वास्थ्य शिक्षा दें अधिक खतरे वाले शिशु का प्रपत्र दूसरे दिन दें	हॉं/नहीं हॉं/नहीं	खतरे के लक्षण वाला जानकारी प्रपत्र माता पिता को दूसरे दिन दें	हॉं/नहीं

(घ) सेप्सिस का निदानः सेप्सिस के लक्षणों की जॉच करें। यदि लक्षण दिखाई देता है तो खाने मे सही (✓) का निशान लगाएँ। यदि लक्षण नहीं है तो गलत (X) का निशान लगाएँ।

पहले दिन वाला खाना शिशु की पहली जॉच वाले फॉर्म से लिखें।

पूछें / जॉच करें आशा के दौरे की तारीख		दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे
		9वा ____	12वा ____	15वा ____	18वा ____	21वा ____	24वा ____		
	1ला दिन							पहले तीन लक्षण सेप्सिस निदान के मापदंड तभी माने जाएँगे यदि वे पहले न हो और फिर नये से दिखाई दें।	हाँ / नहीं
1.सारे हाथ पैर लुंज–पुंज									
2.स्तनपान कम/बंद									
3.रोना धीमे/बंद									
4.पेट फूला हुआ अथवा मॉ कहे कि शिशु बार बार उल्टी कर रहा है								यदि एक ही दिन में कम से कम दो लक्षण दिखाई दें तो सेप्सिस का निदान करें और सेप्सिस का उपचार करें (सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग करें)	हाँ / नहीं
5.मॉ कहती है कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है अथवा उसका तापमान 99^{0}फै. (37.2^{0}से.) से अधिक है								यदि कोई भी लक्षण न दिखे तो मॉ को ध्यान रखने को कहें। मॉ से कहे कि एक भी लक्षण दिखाई दें तो तुरंत आशा को बुलाएँ।	हाँ / नहीं
6.छाती अंदर को धँसी हुई									
7.टुंडी पर मवाद								यदि एक लक्षण दिखाई दें तो रोज दौरा करें और देखें कि दूसरा लक्षण तो नहीं आया। इस दौरान एक लक्षण का उपचार करें। (नीचे बाक्स देखें)	हाँ / नहीं
उपस्थित कुल लक्षणों की संख्या									हाँ / नहीं
क्या शिशु को सेप्सिस है?		हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं		हाँ / नहीं

सेप्सिस उपचार का कौनसा प्रबंध परिवार के लोगों ने स्वीकार किया? (सही उत्तर पर गोला करें।)

उपचार न करना   अस्पताल भेजना   आशा व्दारा उपचार   अन्य उपचार

यदि आशा उपचार करती है तो, सेप्सिस उपचार फॉर्म (पूरक फॉर्म 5 का प्रयोग करें।)

- स्तनपान की समस्या के लिए स्तनपान समस्या का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 1)
- सिर्फ छाती अंदर को धँसती हो तो कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें।
- टुंडी पर मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाएँ।
- शिशु का शरीर ठंडा पड़ रहा हो तो शरीर ठंड़ा पड़ने का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 2)।
- बुखार हो तो बुखार का उपचार करें।

यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2300 ग्राम से कम हो अथवा जन्म के समय के वजन से 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो दूसरे महीने में भी नियमित रूप से शिशु के घर के दौरे जारी रखें। अपना निरिक्षण घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना (पूरक फॉर्म 4) में लिखें।

घरों का दौरा(अधिक खतरेवाले शिशु):फॉर्म–माँ तथा नवजात शिशु की जाँच

पूरक फॉर्म 3

पूछें / जॉच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन 28वा ____	 42वा ____	 अन्य ____	 अन्य ____	 अन्य ____	 अन्य ____	आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ? काये किया?
(क) माँ से पूछना								
माँ 24 घंटे में कितनी बार भरपेट भोजन ले रही है							यदि माँ 4 से कम बार भोजन ले रही है और भरपेट भोजन नहीं ले रही है तो उसे ऐसा करने की सलाह दें।	हॉ / नहीं
रक्तस्त्राव : एक दिन में कितनी बार पैड बदलती है?							यदि 5 से अधिक पैड़ गीले हुए, तो उसे तुरंत अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
क्या शिशु को सर्दी मे गर्म रखा गया (माँ के पास रखा गया, कपड़े पहनाये गये या कपड़े मे लपेटकर रखा गया)	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	यदि माँ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉ / नहीं /लागु नहीं
क्या शिशु को लगातार दूध पिलाया जा रहा है (जब शिशु को भूख लगे या 24 घंटे मे 7 से 8 बार)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि माँ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉ / नहीं
क्या शिशु लगातार रो रहा है अथवा दिन मे 6 से कम बार पेशाब कर रहा है?	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	माँ को कहे कि शिशु को हर 2 घंटे बाद दूध पिलाए	हॉ / नहीं
(ख) माँ की जॉच								
बुखार : नापें और लिखें							यदि माँ को 102^0 फै (38.9^0 सें) तक बुखार है तो पैरासिटेमॉल दें। यदि बुखार 102^0 फै (38.9^0 सें) से अधिक है, तो माँ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
बदबूदार स्त्राव के साथ 100^0 फै (37.8^0 सें) से अधिक बुखार	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो माँ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
माँ उल्टा–सीधा बोलती है या उसे दौरे पड़ते हैं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो माँ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
प्रसव के बाद माँ को दूध नहीं उतरा है या उसे ऐसा लग रहा है कि कम दूध आ रहा है	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉ / नहीं
कटे–फटे चूचुक/स्तनों में दर्द या/और सूजन	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉ / नहीं

सुपरवाईजर की टिप्पणीः काम अधूरा? काम गलत? रिकार्ड गलत?

पूछें / जाँच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
	28वा ____	42वा ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____		
(ग) शिशु की जाँच								
ऑखों मे सूजन अथवा मवाद	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	यदि हॉ तो मॉ को कहें कि टेट्रासायक्लिन मल्हम 5 दिन तक दिन मे 2 बार शिशु की ऑखों में डालें	हॉ / नहीं
वज़न मापें और लिखें। 7, 15, 28 और 42 दिनों पर								हॉ / नहीं
तापमान मापें और लिखें।								हॉ / नहीं
त्वचा मवाद भरे फोड़ः	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	जी. वी. पेन्ट लगाऐँ तथा देखें कि सेप्सिस के लक्षण तो नहीं हैं।	हॉ / नहीं
त्वचा की मोडों में कटना या लाली (जॉघ/बगल/कुल्हे)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	शिशु की त्वचा साफ तथा सूखी रखें। टैल्कम पावडर या जी. वी. पेंट लगाऐँ।	हॉ / नहीं
ऑखें या त्वचा का पीलापन (पीलिया)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि जन्म के पहले दिन ही पीलिया है, या यह 14 दिन से अधिक बना रहता है तो यह खतरनाक है। शिशु को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं

दूसरे दिन मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दें अधिक खतरे वाले शिशु का प्रपत्र दूसरे दिन दें	हॉ/नहीं हॉ/नहीं	खतरे के लक्षण वाला जानकारी प्रपत्र माता पिता को दूसरे दिन दें	हॉ/नहीं

(घ) सेप्सिस का निदानः सेप्सिस के लक्षणों की जॉंच करें। यदि लक्षण दिखाई देता है तो खाने मे सही (✓) का निशान लगाऍं। यदि लक्षण नहीं है तो गलत (X) का निशान लगाऍं।

पहले दिन वाला खाना शिशु की पहली जॉंच वाले फॉर्म से लिखें।

पूछें / जॉंच करें आशा के दौरे की तारीख		दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे
		28वा ____	42वा ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____		
	1ला दिन							पहले तीन लक्षण सेप्सिस निदान के मापदंड तभी माने जाएँगे यदि वे पहले न हो और फिर नये से दिखाई दें।	हॉं / नहीं
1.सारे हाथ पैर लुंज–पुंज									
2.स्तनपान कम/बंद									
3.रोना धीमे/बंद									
4.पेट फूला हुआ अथवा मॉं कहे कि शिशु बार बार उल्टी कर रहा है								यदि एक ही दिन में कम से कम दो लक्षण दिखाई दें तो सेप्सिस का निदान करें और सेप्सिस का उपचार करें (सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग करें)	हॉं / नहीं
5.मॉं कहती है कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है अथवा उसका तापमान 99^0फै. (37.2^0से.) से अधिक है								यदि कोई भी लक्षण न दिखे तो मॉं को ध्यान रखने को कहें। मॉं से कहे कि एक भी लक्षण दिखाई दें तो तुरंत आशा को बुलाऍं।	हॉं / नहीं
6.छाती अंदर को धँसी हुई									
7.टुंडी पर मवाद									हॉं / नहीं
उपस्थित कुल लक्षणों की संख्या								यदि एक लक्षण दिखाई दें तो रोज दौरा करें और देखें कि दूसरा लक्षण तो नहीं आया। इस दौरान एक लक्षण का उपचार करें। (नीचे बाक्स देखें)	हॉं / नहीं
क्या शिशु को सेप्सिस है?		हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं		हॉं / नहीं

सेप्सिस उपचार का कौनसा प्रबंध परिवार के लोगों ने स्वीकार किया? (सही उत्तर पर गोला करें।)

उपचार न करना   अस्पताल भेजना   आशा व्दारा उपचार   अन्य उपचार

यदि आशा उपचार करती है तो, सेप्सिस उपचार फॉर्म (पूरक फॉर्म 5 का प्रयोग करें।)

- स्तनपान की समस्या के लिए स्तनपान समस्या का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 1)
- सिर्फ छाती अंदर को धँसती हो तो कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें।
- टुंडी पर मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाऍं।
- शिशु का शरीर ठंड़ा पड़ रहा हो तो शरीर ठंड़ा पड़ने का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 2)।
- बुखार हो तो बुखार का उपचार करें।

यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2300 ग्राम से कम हो अथवा जन्म के समय के वजन से 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो दूसरे महीने में भी नियमित रूप से शिशु के घर के दौरे जारी रखें। अपना निरिक्षण घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना (पूरक फॉर्म 4) में लिखें।

घरों का दौरा(दूसरे महीने का दौरा):फॉर्म–माँ तथा नवजात शिशु की जाँच

पूरक फॉर्म 4

पूछें / जॉच करें	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
आशा के दौरे की तारीख	35वा ____	42वा ____	49वा ____	56वा ____	अन्य ____	अन्य ____		
(क) माँ से पूछना								कार्य किया?
मॉं 24 घंटे में कितनी बार भरपेट भोजन ले रही है							यदि मॉं 4 से कम बार भोजन ले रही है और भरपेट भोजन नहीं ले रही है तो उसे ऐसा करने की सलाह दें।	हॉं / नहीं
रक्तस्त्राव : एक दिन में कितनी बार पैड बदलती है?							यदि 5 से अधिक पैड़ गीले हुए, तो उसे तुरंत अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
क्या शिशु को सर्दी मे गर्म रखा गया (मॉं के पास रखा गया, कपड़े पहनाये गये या कपड़े मे लपेटकर रखा गया)	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	यदि मॉं यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉं / नहीं /लागु नहीं
क्या शिशु को लगातार दूध पिलाया जा रहा है (जब शिशु को भूख लगे या 24 घंटे मे 7 से 8 बार)	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि मॉं यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉं / नहीं
क्या शिशु लगातार रो रहा है अथवा दिन मे 6 से कम बार पेशाब कर रहा है?	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	मॉं को कहे कि शिशु को हर 2 घंटे बाद दूध पिलाए	हॉं / नहीं
(ख) माँ की जॉंच								
बुखार : नापें और लिखें							यदि मॉं को 102^0 फै (38.9^0 सें) तक बुखार है तो पैरासिटेमॉल दें। यदि बुखार 102^0 फै (38.9^0 सें) से अधिक है, तो मॉं को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
बदबूदार स्त्राव के साथ 100^0 फै (37.8^0 सें) से अधिक बुखार	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो मॉं को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
मॉं उल्टा–सीधा बोलती है या उसे दौरे पड़ते हैं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो मॉं को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
प्रसव के बाद मॉं को दूध नहीं उतरा है या उसे ऐसा लग रहा है कि कम दूध आ रहा है	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉं / नहीं
कटे–फटे चूचुक/स्तनों में दर्द या/और सूजन	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉं / नहीं

सुपरवाईजर की टिप्पणीः काम अधूरा? काम गलत? रिकार्ड गलत?

पूछें / जॉच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
	35वा ____	42वा ____	49वा ____	56वा ____	अन्य ____	अन्य ____		
(ग) शिशु की जॉच								
ऑखों मे सूजन अथवा मवाद	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	यदि हॉ तो मॉ को कहें कि टेट्रासायक्लिन मल्हम 5 दिन तक दिन मे 2 बार शिशु की ऑखों में डालें	हॉ / नहीं
वज़न मापें और लिखें। 7, 15, 28 और 42 दिनों पर								हॉ / नहीं
तापमान मापें और लिखें।								हॉ / नहीं
त्वचा मवाद भरे फोड़ेः	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	जी. वी. पेन्ट लगाऍ तथा देखें कि सेप्सिस के लक्षण तो नहीं हैं।	हॉ / नहीं
त्वचा की मोडों में कटना या लाली (जॉघ/बगल/कुल्हे)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	शिशु की त्वचा साफ तथा सूखी रखें। टैल्कम पावडर या जी. वी. पेंट लगाऍ।	हॉ / नहीं
ऑखें या त्वचा का पीलापन (पीलिया)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि जन्म के पहले दिन ही पीलिया है, या यह 14 दिन से अधिक बना रहता है तो यह खतरनाक है। शिशु को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं

(घ) सेप्सिस का निदानः सेप्सिस के लक्षणों की जॉच करें। यदि लक्षण दिखाई देता है तो खाने मे सही (✓) का निशान लगाएँ। यदि लक्षण नहीं है तो गलत (X) का निशान लगाएँ।

पहले दिन वाला खाना शिशु की पहली जॉच वाले फॉर्म से लिखें।

पूछें / जॉच करें आशा के दौरे की तारीख		दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे
		35वा ____	42वा ____	49वा ____	56वा ____	अन्य ____	अन्य ____		
	1ला दिन							पहले तीन लक्षण सेप्सिस निदान के मापदंड तभी माने जाएँगे यदि वे पहले न हो और फिर नये से दिखाई दें।	हाँ / नहीं
1.सारे हाथ पैर लुंज–पुंज									
2.स्तनपान कम/बंद									
3.रोना धीमे/बंद									
4.पेट फूला हुआ अथवा माँ कहे कि शिशु बार बार उल्टी कर रहा है								यदि एक ही दिन में कम से कम दो लक्षण दिखाई दें तो सेप्सिस का निदान करें और सेप्सिस का उपचार करें (सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग करें)	हाँ / नहीं
5.माँ कहती है कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है अथवा उसका तापमान 99^0फै. (37.2^{0}से.) से अधिक है								यदि कोई भी लक्षण न दिखे तो माँ को ध्यान रखने को कहें। माँ से कहे कि एक भी लक्षण दिखाई दें तो तुरंत आशा को बुलाएँ।	हाँ / नहीं
6.छाती अंदर को धँसी हुई									
7.टुंडी पर मवाद									हाँ / नहीं
उपस्थित कुल लक्षणों की संख्या								यदि एक लक्षण दिखाई दें तो रोज दौरा करें और देखें कि दूसरा लक्षण तो नहीं आया। इस दौरान एक लक्षण का उपचार करें। (नीचे बाक्स देखें)	हाँ / नहीं
क्या शिशु को सेप्सिस है?		हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं		हाँ / नहीं

सेप्सिस उपचार का कौनसा प्रबंध परिवार के लोगों ने स्वीकार किया? (सही उत्तर पर गोला करें।)

उपचार न करना **अस्पताल भेजना** **आशा व्दारा उपचार** **अन्य उपचार**

यदि आशा उपचार करती है तो, सेप्सिस उपचार फॉर्म (पूरक फॉर्म 5 का प्रयोग करें।)

- स्तनपान की समस्या के लिए स्तनपान समस्या का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 1)
- सिर्फ छाती अंदर को धँसती हो तो कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें।
- टुंडी पर मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाएँ।
- शिशु का शरीर ठंडा पड़ रहा हो तो शरीर ठंडा पड़ने का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 2)।
- बुखार हो तो बुखार का उपचार करें।

यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2300 ग्राम से कम हो अथवा जन्म के समय के वजन से 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो दूसरे महीने में भी नियमित रूप से शिशु के घर के दौरे जारी रखें। अपना निरिक्षण घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना (पूरक फॉर्म 4) में लिखें।

अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान के मापदण्ड तथा उनकी देखभाल

अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान के मापदण्ड

ऐसे शिशु जिनमें निम्न में से कोई लक्षण हो :

- जन्म के समय 2000 ग्रा. से कम वज़न
- समय से पूर्व जन्में (8 माह 14 दिन या उससे कम गर्भकाल)
- पहले दिन ही बच्चे को स्तनपान संबंधी समस्या

अधिक खतरे वाले शिशुओं की देखभाल:

✓ प्रसव के बाद शिशु के घर के दौरे बढाएँ। शिशु की जाँच के लिए पहले महीने में 13 बार घर जाएँ: 2,3,4,5,6,7,9,12,15,18,21,24,28 वे दिन तथा 42 वें दिन। (पूरक फॉर्म 3:'घरों का दौरा फॉर्म: अधिक खतरेवाले शिशु' का प्रयोग करें।)

✓ 7, 15, 21, 28 और 42 वें दिन शिशु का वज़न करें।

✓ परिवार के सदस्यों को 'अधिक खतरे वाले शिशु' नामक शीट बाँटें और शिशु की जो विशेष देखभाल आवश्यक है, उस के बारे में बताएँ।

✓ समस्याओं के अनुसार विशेष देखभाल करें और शीतकाल में सामान्य रूप से शिशु को गर्म रखें (गर्म थैली, टोपी, कपड़ो का प्रयोग) और उसे थोड़ी–थोड़ी देर बाद (2–2 घंटे में) स्तनपान कराएँ।

✓ यदि शिशु ठीक से स्तनपान नहीं कर रहा, तो उसे दूध पीते हुए देखें। देखें, कि उसे ठीक स्थिति में स्तनों से लगाया गया है। माँ को ठीक से दूध पिलाने के बारे में समझाएँ/प्रेरित करें। उसे अन्य तरल पदार्थ/ऊपरी दूध देने से रोकें।

✓ 'अधिक खतरे वाले शिशु' शीट में दी गई जानकारी के बारे में मातापिता के साथ चर्चा करें

✓ यदि 28 वें दिन शिशु का वज़न 2300 ग्रा. से कम हो, अथवा 28 दिनों मे शिशु का वज़न 300 ग्राम से कम बढ़ा हो, तो आशा दूसरे महीने भी सप्ताह में 1 बार शिशु की जाँच के लिये घर जाए और वज़न लें। (जिन शिशुओं का वज़न 28 वें दिन 2300 ग्रा. से कम होता है उन्हें मृत्यु का खतरा अधिक होता है)

✓ दूसरे महीने में दूसरा 'घरों का दौरा फॉर्म'– पूरक फॉर्म 4 भरे, 35, 42, 49 और 56वें दिन शिशु की जाँच के लिए जाएँ। यदि शिशु को दूसरे महीने मे खतरा नहीं है तो आशा 42 वें दिन का नियमित दौरा करें।

यदि आशा प्रसव के समय उपस्थित नहीं है और उसे पहली बार शिशु के घर जाने में देरी हो जाए, तो जब भी वह पहली बार घर जाए, तो शिशु का वज़न करे। ऐसे में निम्न तालिका का प्रयोग करते हुये निर्धारित करें कि शिशु को खतरा है या नहीं :

वह दिन जब शिशु का वज़न पहली बार लिया गया	शिशु का वज़न	निदान
1 से 14 दिन	2 कि.ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला
15 से 21 दिन	2 कि.ग्रा. 100 ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला
22 से 27 दिन	2 कि.ग्रा. 200 ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला
28वें दिन	2 कि.ग्रा. 300 ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला

प्रश्नपत्र (कुल अंक 100)

1. **शिशु अधिक खतरे वाला है या नहीं ? नीचे लाईन खींचे। 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दें**

(प्रत्येक में 2 अंक – कुल 20 अंक)

	हाँ	**या**	**नहीं**
लल्लेसरी का जन्म के समय वज़न है 2.1 कि.ग्रा.	हाँ	या	नहीं
रामदीन का जन्म 8 महीने 20 दिन के गर्भकाल पर हुआ, वज़न 2.6 कि.ग्रा.	हाँ	या	नहीं
समरती को पहले दिन से स्तनपान करने में कठिनाई है	हाँ	या	नहीं
निवृत्ता का वज़न 1.8 कि.ग्रा. है	हाँ	या	नहीं
देवला का जन्म 8 महीने 4 दिन के गर्भकाल पर हुआ, पहले दिन स्तनपान करने में कठिनाई है	हाँ	या	नहीं
जयवंता का वज़न 2.3 कि.ग्रा., गर्भकाल 8 महीने 24 दिन	हाँ	या	नहीं
दूधराम का वज़न 2.8 कि.ग्रा., गर्भकाल 9 महीने 4 दिन	हाँ	या	नहीं
हारिनी का वज़न 2.2 कि.ग्रा., गर्भकाल 8 महीने 24 दिन	हाँ	या	नहीं
लालू का वज़न 2.5 कि.ग्रा., गर्भकाल 9 महीने 5 दिन	हाँ	या	नहीं
केवलराम का वज़न 1.7 कि.ग्रा.	हाँ	या	नहीं

2. जन्म के समय, कितने वज़न का शिशु कम वज़न का माना जाता है? (5 अंक)

______किलो______ग्रा.से कम

समय से पूर्व जन्म किसे कहते हैं ? गर्भकाल ______महीने ______दिन से कम हो (5 अंक)

3. यदि खतरे वाले शिशु का जन्म हुआ हो, तो आशा को क्या करना चाहिए ? 3 बातें बताएँ। (30 अंक)

क. ____________________

ख. ____________________

ग. ____________________

4. अधिक खतरे वाले शिशु की देखभाल के बारे में, कम से कम 4 बातें बताएँ ? (40 अंक)

क. ____________________

ख. ____________________

ग. ____________________

घ. ____________________

आशा का नाम ____________________	तारीख ________
प्रशिक्षक का नाम ____________________	कुल अंक ________
ब्लॉक ____________________	

प्रशिक्षकों के लिये प्रश्नपत्र के उत्तर

मूल्यांकन (कुल अंक 100)

1. **शिशु अधिक खतरे वाला है या नहीं ? नीचे लाईन खींचे। 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दें**

(प्रत्येक में 2 अंक – कुल 20 अंक)	**हाँ**	**या**	**नहीं**
लल्लेसरी का जन्म के समय वज़न है 2.1 कि.ग्रा.	<u>हाँ</u>	या	नहीं
रामदीन का जन्म 8 महीने 20 दिन के गर्भकाल पर हुआ, वज़न 2.6 कि.ग्रा.	हाँ	या	<u>नहीं</u>
समरती को पहले दिन से स्तनपान करने में कठिनाई है	<u>हाँ</u>	या	नहीं
निवृत्ता का वज़न 1.8 कि.ग्रा. है	<u>हाँ</u>	या	नहीं
देवला का जन्म 8 महीने 4 दिन के गर्भकाल पर हुआ, पहले दिन स्तनपान करने में कठिनाई है	<u>हाँ</u>	या	नहीं
जयवंता का वज़न 2.3 कि.ग्रा., गर्भकाल 8 महीने 24 दिन	हाँ	या	<u>नहीं</u>
दूधराम का वज़न 2.8 कि.ग्रा., गर्भकाल 9 महीने 4 दिन	हाँ	या	<u>नहीं</u>
हारिनी का वज़न 2.2 कि.ग्रा., गर्भकाल 8 महीने 24 दिन	हाँ	या	<u>नहीं</u>
लालू का वज़न 2.5 कि.ग्रा., गर्भकाल 9 महीने 5 दिन	हाँ	या	<u>नहीं</u>
केवलराम का वज़न 1.7 कि.ग्रा.	<u>हाँ</u>	या	नहीं

2. जन्म के समय, कितने वज़न का शिशु कम वज़न का माना जाता है? (5 अंक)
<u>2 कि. 500 ग्रा. (2500 ग्रा. से कम)</u>

समय से पूर्व जन्म किसे कहते हैं ? गर्भकाल <u>8 महीने 14 दिन या उससे कम</u> (5 अंक)

3. यदि खतरे वाले शिशु का जन्म हुआ हो, तो आशा को क्या करना चाहिए ? 3 बातें बताएँ। (30 अंक)
क. शिशु की जाँच के लिए पहले महीने में कम से कम 13 बार उसके घर जाएँ।
ख. माता–पिता को अधिक खतरे वाले बच्चों से संबंधित प्रपत्र दें
ग. माता–पिता को अधिक खतरे वाले शिशुओं की घरेलू देखभाल और खतरे के लक्षणों के बारे में बताएँ :
   - हाथ पैर लुंज–पुंज
   - स्तनपान/दूध पीना बंद कर दे
   - या छाती अंदर धँसी हो
   - माँ को लगे कि शिशु का शरीर ठंडा है

घ. आवश्यक हो तो विशेष देखभाल करें, जैसे स्तनपान कराने में मदद करें, शिशु को गर्म रखें, दुबारा गर्मी पहुँचाएँ आदि।

4. अधिक खतरे वाले शिशु की देखभाल के बारे में, कम से कम 4 बातें बताएँ ? (40 अंक)

क. शिशु को तुरंत पोंछें, टोपी पहनाकर गर्म थैली में रखें और अपनी छाती से चिपकाकर रखें, या यदि वह बहुत छोटा हो तो माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखें।

ख. शिशु को थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान कराएँ; 2–2 घंटे पर।

ग. उसे गर्म रखें; जहाँ तक संभव हो, माँ के शरीर से चिपकाकर रखें।

घ. जब तक शिशु का वज़न 2000 ग्राम से अधिक न हो जाए उसे नहलाएँ नहीं

च. कई बार हाथ धोएँ।

छ. खतरे के लक्षण देखें और तुरंत सहायता पहुँचाएँ

- हाथ पैर लुज–पुंज
- दूध पीना/स्तनपान बंद कर दे
- या छाती अंदर को धँसी है
- माँ को लगे कि शिशु का शरीर/हाथ–पैर ठंडे हो रहे हैं

मोड्यूल 12 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा चूषण पंप से प्रारम्भिक उपचार

सत्र 1 : जन्म के समय शिशु की साँस घुट रही है, इसे पहचानना

दिवस : 3

समयावधि : 1 घं. 45 मि.

प्रयोजन

आशाओं को नवजात शिशुओं में जन्मतेही दम घुटने की पहचान कराना, इसके परिणामों के बारे में जानकारी देना और प्रसव के दौरान उन परिस्थितियों की जानकारी देना, जिनके कारण जन्मतेही शिशु की साँस में घुटन हो सकती है।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. जन्मतेही साँस में घुटन की परिभाषा बताना।
2. ऐसे शिशुओं को (अभ्यास व्दारा) पहचानना जिनकी जन्मतेही साँस लेने में घुटन हो रही है।
3. प्रसवपीड़ा के दौरान जन्मतेही साँस में घुटन की चेतावनी के बारे में बताना।
4. जन्मतेही दम घुटने के विपरीत परिणामों की सूची बनाना।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1: जन्मतेही दम घुटना संबंधी जानकारी
- अभ्यासपत्र 1: केस उदाहरणः जन्मतेही दम घुटना, इसकी पहचान
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: केस उदाहरणः जन्मतेही दम घुटना, के लिए उत्तर

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अध्ययनपत्र 1 और अभ्यासपत्र 1 की प्रतियॉं बना लें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवं चर्चा</u> : साँस में घुटन किसे कहते हैं और इसके परिणाम ? (1 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. बताएँ कि प्रत्येक सजीव प्राणी को जीवित रहने के लिए वायु की आवश्यकता होती है। माँ के गर्भ में स्थित शिशु को अवलनाल के माध्यम से माँ के खून में उपस्थित वायु मिलती रहती है। जैसे ही शिशु माँ के गर्भ से बाहर आता है, वह साँस लेना आरंभ कर देता है। शिशु का ज़ोर से रोना, पहली ज़ोरदार साँस होती है। अधिकांश शिशु जन्म लेते ही ज़ोर से रोते हैं और स्वयं ही बलपूर्वक साँस लेने लगते हैं। कुछ शिशु रोते ही नहीं। जो शिशु रोते नहीं या साँस नहीं लेते अथवा जो धीमे से रोते हैं या साँस लेते हैं, उन्हें सहायता की आवश्यकता है। ऐसा तब होता है, जब शिशु को शिशुजन्म के समय पर्याप्त वायु नहीं मिल पाती और उसका दम घुटने लगता है। इससे उसका मस्तिक प्रभावित हो जाता है और वह सुस्त दिखाई पड़ता है। दम घुटा शिशु जन्म लेते ही लुंज–पुंज दिखाई पड़ता है और रोता नहीं।

2. साँस में घुटन की परिभाषा बताएँ।

साँस में घुटन की परिभाषा

जिस शिशु में जन्मतेही निम्न में से कोई लक्षण हो, उसको साँस लेने में घुटन हो रही है :

- रोया नहीं हो
- धीमे से रोया हो
- साँस बिल्कुल नहीं ले रहा हो
- हाँफ रहा हो
- हल्की साँस ले रहा हो

3. आशाओं से पूछें कि समुदाय में स्थानीय (आम बोलचाल की) भाषा में साँस में घुटन को क्या कहते हैं। उसे बोर्ड अथवा कागज़ पर लिख दें।
4. आशाओं से पूछें कि साँस में घुटन वाले शिशु को क्या हो सकता है। किसी ने अधूरी बात बताई हो तो अधिक जानकारी दें।

साँस घुटने के परिणाम

तुरंत (जन्म के समय)

- मृत शिशुजन्म
- सुस्त
- स्तनपान नहीं कर पाता
- जन्म के कुछ दिनों में मृत्यु

दूरगामी परिणाम

यदि शिशु जीवित भी रहा तो उसे निम्न लक्षण हो सकते हैं

- मन्दबुद्धि
- मिर्गी रोग
- स्पास्टीक (चलने या हाथ–पाँव हिलाने में कठिनाई)

5. निम्न कहानी सुनाएँ:

शालु को शाम के समय प्रसवपीड़ा शुरू हुई। उसके पति दाई और आशा को तुरंत ही बुला लाए। शालु को रूक–रूक कर और ज़ोर से दर्द हो रहे थे। सुबह–सुबह उसकी पानी की थैली फट गई और गाढ़ा, हरे रंग का पानी बाहर निकलने लगा। इसके तुरंत बाद बच्चे का सिर बाहर आने लगा, तो दाई ने देखा कि उसकी गर्दन के चारों और नाल लिपटी हुई है। उसने नाल बच्चे के सिर के ऊपर निकालने की कोशिश की पर नहीं कर पाई। उसने शीघ्रता से नाल बाँधी और काट दी जबकि बच्चे का शरीर अंदर ही था। इसके बाद बच्चा तो आसानी से बाहर आ गया, पर वह बहुत धीमे रोया और हाँफ रहा था।

6. निम्न प्रश्न पूछें :

- क्या बच्चे की साँस घुट रही थी ? (*हाँ*)
- इसके क्या लक्षण हैं ? (*धीमे से रोना और हाँफना*)
- प्रसव पीड़ा के दौरान ऐसा क्या हुआ जिससे साँस में घुटन का संकेत मिलता है ?

(गाढ़े, हरे रंग का द्रव निकलने का अर्थ है कि शिशु किसी प्रकार के संकट में है; गर्दन के चारों ओर नाल लिपटने से शिशु को कम मात्रा में वायु उपलब्ध हो पाती है)

7. आशाओं से प्रसवपीड़ा के दौरान दिखाई देने वाले उन लक्षणों/घटनाओं के बारे में पूछें, जिनसे यह संकेत मिलता हो कि शिशु को साँस लेने में घुटन हो सकती है। उनके द्वारा बताए उत्तर बोर्ड अथवा कागज़ पर लिखें। यदि उन्हें कोई कठिनाई हो, तो उन्हें ऊपर बताई घटना की याद दिलाएँ (*गाढ़ा हरे रंग का द्रव और नाल का गले के चारों ओर लिपटना*)
8. किसी एक आशा से पूछें, कि क्या वे किसी ऐसे प्रसव के समय उपस्थित थीं, जिसमें शिशु रोया नहीं अथवा साँस नहीं ली, धीमे से रोया और हल्की साँस ली ? यदि हाँ, तो उनसे पूछें कि उन्होंने क्या देखा / क्या प्रसवपीड़ा ठीक–ठाक हुई या फिर कोई समस्या हुई ? क्या समस्या हुई ? उनके उत्तर बोर्ड पर लिखें।
9. उनके द्वारा बताए उत्तरों की सूची की विषय–वस्तु बाक्स में दी चेतावनी से तुलना करें। जो बातें न बताई हों, उन्हें बताएँ और गलत उत्तरों को हटा दें।

विषय–सूची

प्रसवपीड़ा के दौरान जन्मतेही साँस में घुटन की चेतावनी

1. प्रसवपीड़ा बहुत देर तक होना या उसमें कुछ कठिनाई होना।
2. बच्चेदानी की झिल्लि फटनेपर बहुत कम मात्रा में द्रव का निकलना (शुष्क प्रसव)।
3. हरे या पीले रंग का गाढ़ा द्रव योनि से बाहर निकलना।
4. गर्दन के चारों ओर नाल का कस कर लिपटा होना या नाल पहले बाहर निकलना।
5. समय से पूर्व प्रसवपीड़ा शुरू होना (8 माह 14 दिन के गर्भकाल से पूर्व)
6. 'ब्रीच' जन्म (सिर के अलावा शरीर का कोई अन्य भाग पहले निकलना)

10. आशाओं से पूछें कि वह ऐसा क्यों समझती है, कि पहले से इस बात पर विचार और तैयारी कर लेना आवश्यक है, कि शिशु को जन्म लेते समय साँस में घुटन की शिकायत हो सकती है? उनके उत्तर सुनें। (*पहले से मानसिक रूप से इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि हो सकता है पैदा होने वाला शिशु साँस न ले पाए या उसे साँस लेने में घुटन की शिकायत हो जाए। ऐसा करने से आप स्थिति के लिए पहले से तैयार रहेंगी और आवश्यक उपकरण तैयार रखेंगी*)
11. सभी को बताएँ कि साँस लेने में घुटन किसी भी शिशु को हो सकती है, किसी महिला को प्रसव ठीक–ठाक हुआ हो तो भी। जब तक शिशु पैदा नही होता तब तक यह कहना कठिन होता है कि क्या शिशु को साँस लेने में समस्या है। इसलिए प्रसव से पूर्व इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए। अतः हर प्रसव के समय निम्न तैयारी रखें:
    - साफ कपड़े, तौलिये तथा शिशु के लिए कंबल।
    - चूषण पंप
    - बैग/ मास्क (इसका प्रयोग कैसे करना है यह आप अगली प्रशिक्षण कार्यशाला में सिखेंगी।)
12. आशाओं को याद दिलाएँ : यदि शिशु की साँस में घुटन है, तो प्रसव के पहले 5 मिनट आपात्कालीन स्थिति हैं। इन्हीं 5 मि. के समय में जीवन बचाया जा सकता है, या फिर वह समाप्त भी हो सकता है।

13. आशाओं से कहे कि वें अध्ययनपत्र से 'जन्मतेही दम घुटना' संबंधी जानकारी वाली शीट देखें। आशाओं को अध्ययनपत्र पढ़वाएँ और उनके प्रश्नों के उत्तर दें।

पूरे समूह के हल करने के लिए छोटे केस उदाहरण (15 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रत्येक केस प्रस्तुत करें। प्रशिक्षणार्थियों से पूछें, कि इनमें से प्रत्येक शिशु की साँस में घुटन हो रही है या नहीं :
   - शिशु जन्म के समय धीमे से रोया और हाँफ रहा था। क्या उसकी साँस में घुटन थी? (*हाँ*)
   - शिशु जन्म के समय ज़ोर से रोया और ज़ोर से साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी? (*नहीं*)
   - शिशु ने जन्मते ही न तो साँस ली न रोया। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? (*हाँ*)
   - शिशु जन्म के समय रोया नहीं, हाँफ रहा था। क्या उसका दम घुटा हुआ था ? (*हाँ*)
   - शिशु जन्मते समय धीमे से रोया और हल्की साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी? (*हाँ*)
   - शिशु जन्मते समय ठीक से रोया और साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? (*नहीं*)
2. ध्यान रखें कि प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को बात समझ में आ रही है। सभी की शंकाओं का समाधान करें।

केस उदाहरण (25 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. केस उदाहरण के अभ्यासपत्र बाँटें। प्रत्येक आशा लिखें कि शिशु की साँस में घुटन है या नहीं।
2. सभी की उत्तर–पत्रिकाएँ ले लें। कक्षा में उसके उत्तरों की समीक्षा करें और शंकाओं का समाधान करें।

सारांश : (5 मि.)

- किसी एक आशा से साँस में घुटन की परिभाषा बताने को कहें।
- किसी दूसरी आशा से साँस में घुटन के लक्षणों के बारे में बताने को कहें।
- किसी तीसरी आशा से पूछें कि साँस में घुटन आपात्स्थिति क्यों हैं।
- कुछ गलतियाँ हो तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मुल्यांकन (सत्र तथा सारांश के दौरान)

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
जन्मतेही साँस में घुटन की परिभाषा बताना।	कक्षा में प्रश्नोत्तर	–
ऐसे शिशुओं को (अभ्यास व्दारा) पहचानना जिनकी जन्मतेही साँस लेने में घुटन हो रही है।	केस प्रस्तुति के माध्यम से अभ्यास	–
प्रसवपीड़ा के दौरान जन्मतेही साँस में घुटन की चेतावनी के बारे में बताना।	केस उदाहरण	प्रत्येक आशा व्दारा लिखें गये केस उदाहरण के उत्तर जिन्हें प्रशिक्षकों ने जॉचा है।
दम घुटने के विपरीत परिणामों की सूची बनाना	चर्चा	–

जन्मतेही दम घुटना, संबंधी जानकारी

साँस में घुटन की परिभाषा

जिस शिशु में जन्मतेही निम्न में से कोई लक्षण हो, उसको साँस लेने में घुटन हो रही है :

- रोया नहीं हो
- धीमे से रोया हो
- साँस बिल्कुल नहीं ले रहा हो
- हाँफ रहा हो
- हल्की साँस ले रहा हो

यदि शिशु की साँस में घुटन है, तो प्रसव के पहले 5 मिनट आपात्स्थिति के हैं। इन्हीं 5 मि. के समय में जीवन बचाया जा सकता है, या फिर वह समाप्त भी हो सकता है।

साँस घुटने के परिणाम

<u>तुरंत</u> **(जन्म के समय)**

- मृत शिशुजन्म
- सुस्त
- स्तनपान नहीं कर पाता
- जन्म के कुछ दिनों में मृत्यु

<u>दूरगामी परिणाम</u>

यदि शिशु जीवित भी रहा तो उसे निम्न लक्षण हो सकते हैं

- मन्दबुद्धि
- मिर्गी रोग
- स्पास्टीक (चलने या हाथ–पाँव हिलाने में कठिनाई)

प्रसवपीड़ा के दौरान जन्मतेही साँस में घुटन की चेतावनी

1. प्रसवपीड़ा बहुत देर तक होना या उसमें कुछ कठिनाई होना।
2. बच्चेदानी की झिल्लि फटनेपर बहुत कम मात्रा में द्रव का निकलना (शुष्क प्रसव)।
3. हरे या पीले रंग का गाढ़ा द्रव योनि से बाहर निकलना।
4. गर्दन के चारों ओर नाल का कस कर लिपटा होना या नाल पहले बाहर निकलना।
5. समय से पूर्व प्रसवपीड़ा शुरू होना (8 माह 14 दिन के गर्भकाल से पूर्व)
6. 'ब्रीच' जन्म (सिर के अलावा शरीर का कोई अन्य भाग पहले निकलना)

हर प्रसव के दौरान दम घुटे शिशु के लिये तैयार रखें :

निम्न तैयार रखें:

- **साफ कपड़े, तौलिये तथा शिशु के लिए कंबल।**
- **चूषण पंप**
- **बैग/ मास्क**

प्रसव से पहले : **ध्यान रहे कि यह साफ और सूखे हों**
ध्यान रहे कि यह ठीक–ठाक काम कर रहे हों

केस उदाहरण : 'जन्मतेही दम घुटना', इसकी पहचान

प्रत्येक केस उदाहरण में बताएँ कि शिशु की साँस में घुटन है या नहीं

	हाँ	नहीं
1. परवीन के बच्चे का जन्म 12 बजकर 3 मि. पर हुआ। 30 से. में वह रोने लगा और ठीक से साँस लेने लगा। क्या उसकी साँस में घुटन थी ?		
2. नीला को दोपहर में प्रसवपीड़ा शुरू हुई और रात 8:30 बजे उसने बच्ची को जन्म दिया। 30 से. बाद बच्चा रोया नहीं, पर हाँफ रहा था। क्या उसकी साँस में घुटन थी ?		
3. गुलाबो ने 1 अप्रैल को बच्चे को जन्म दिया। जन्म के तुरंत बाद बच्चा धीमे से रोया और हल्की साँस ली। क्या उसे साँस में घुटन थी ?		
4. नन्दा, आयु 40 वर्ष ने, अपने चौथे बच्चे को जन्म दिया। प्रसव पीड़ा बहुत लम्बी चली। बच्चा लुंज–पुंज जन्मा और न रोया, न साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी ?		
5. मुमताज़ (आयु 35 वर्ष) के 3 बच्चे हैं। उसने 8 माह 15 दिन के गर्भकाल में बच्चे को जन्म दिया। बच्चा धीमे से रोया और हाँफ रहा था। क्या उसकी साँस घुटी हुई थी ?		
6. मंजू का बच्चा जन्म के समय ज़ोर–ज़ोर से रोया और ज़ोर से साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी ?		

साँस में घुटन के खतरे और चेतावनी देने वाले लक्षण बताएँ

1. सायरा 32 वर्ष की है। गर्भावस्था (9 माह 20 दिन) की समाप्ति पर उसे प्रसव पीड़ा शुरू हुयी। प्रसवपीड़ा दोपहर 1 बजे शुरू हुई और रात 11 बजे उसने बच्चे को जन्म दिया, और शुष्क प्रसव हुआ	खतरे ? लक्षण ?
2. मीना के तीसरे बच्चे का जन्म होने को है, कल सुबह उसे प्रसवपीड़ा शुरू हुई थी। कल पूरे दिन और अभी (आधे दिन) तक शिशुजन्म नहीं हुआ है और वह बहुत थक चुकी है।	खतरे ? लक्षण ?
3. धन्नो को दूसरा बच्चा होने वाला है। प्रसव के दौरान आप देखती है कि 'ब्रीच' द्वारा बच्चा बाहर आ रहा है (सिर नहीं)	खतरे ? लक्षण ?
4. यमुना को गर्भावस्था के सातवें महीने में बुखार हुआ, मालूम हुआ कि मलेरिया था। और एक सप्ताह बाद शिशु का जन्म हुआ।	खतरे ? लक्षण ?
5. सिन्धु (19 वर्ष की आयु) ने पहले बच्चे को जन्म दिया। उसे प्रसवपीड़ा बहुत देर तक, लगभग 30 घंटे चली तब जाकर बच्चे का जन्म हुआ।	खतरे ? लक्षण ?

आशा का नाम ______________________ तारीख ______________

प्रशिक्षक का नाम ______________________ कुल अंक ______________

ब्लॉक ______________________

केस उदाहरण : 'जन्मतेही दम घुटना', इसकी पहचान – उत्तर

प्रत्येक केस उदाहरण में बताएँ कि शिशु की साँस में घुटन है या नहीं

	हाँ	नहीं
1. परवीन के बच्चे का जन्म 12 बजकर 3 मि. पर हुआ। 30 से. में वह रोने लगा और ठीक से साँस लेने लगा। क्या उसकी साँस में घुटन थी ?		नहीं
2. नीला को दोपहर में प्रसवपीड़ा शुरू हुई और रात 8:30 बजे उसने बच्ची को जन्म दिया। 30 से. बाद बच्चा रोया नहीं, पर हाँफ रहा था। क्या उसकी साँस में घुटन थी ?	हाँ	
3. गुलाबो ने 1 अप्रैल को बच्चे को जन्म दिया। जन्म के तुरंत बाद बच्चा धीमे से रोया और हल्की साँस ली। क्या उसे साँस में घुटन थी ?	हाँ	
4. नन्दा, आयु 40 वर्ष ने, अपने चौथे बच्चे को जन्म दिया। प्रसव पीड़ा बहुत लम्बी चली। बच्चा लुंज–पुंज जन्मा और न रोया, न साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी ?	हाँ	
5. मुमताज़ (आयु 35 वर्ष) के 3 बच्चे हैं। उसने 8 माह 15 दिन के गर्भकाल में बच्चे को जन्म दिया। बच्चा धीमे से रोया और हाँफ रहा था। क्या उसकी साँस घुटी हुई थी ?	हाँ	
6. मंजू का बच्चा जन्म के समय ज़ोर–ज़ोर से रोया और ज़ोर से साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी ?		नहीं

साँस में घुटन के खतरे और चेतावनी देने वाले लक्षण बताएँ

1. सायरा 32 वर्ष की है। गर्भावस्था (9 माह 20 दिन) की समाप्ति पर उसे प्रसव पीड़ा शुरू हुयी। प्रसवपीड़ा दोपहर 1 बजे शुरू हुई और रात 11 बजे उसने बच्चे को जन्म दिया, और शुष्क प्रसव हुआ	खतरे ? हाँ लक्षण ? शुष्क प्रसव
2. मीना के तीसरे बच्चे का जन्म होने को है, कल सुबह उसे प्रसवपीड़ा शुरू हुई थी। कल पूरे दिन और अभी (आधे दिन) तक शिशुजन्म नहीं हुआ है और वह बहुत थक चुकी है।	खतरे ? हाँ लक्षण ? प्रसवपीड़ा देर तक चली
3. धन्नो को दूसरा बच्चा होने वाला है। प्रसव के दौरान आप देखती है कि 'ब्रीच' द्वारा बच्चा बाहर आ रहा है (सिर नहीं)	खतरे ? हाँ लक्षण ? ब्रीच
4. यमुना को गर्भावस्था के सातवें महीने में बुखार हुआ, मालूम हुआ कि मलेरिया था। और एक सप्ताह बाद शिशु का जन्म हुआ।	खतरे ? हाँ लक्षण ? समय से पूर्व
5. सिन्धु (19 वर्ष की आयु) ने पहले बच्चे को जन्म दिया। उसे प्रसवपीड़ा बहुत देर तक, लगभग 30 घंटे चली तब जाकर बच्चे का जन्म हुआ।	खतरे ? हाँ लक्षण ? प्रसवपीड़ा देर तक चली

मोड्यूल 12 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा चूषण पंप से प्रारम्भिक उपचार

सत्र 2 : दम घुटने का उपचार : पहला कदम - चूषण पम्प का प्रयोग

दिवस : 3
समयावधि : 2 घं.

प्रयोजन

आशाओं को साँस घुटने के उपचार के पहले कदम के बारे में बताना; गले के स्राव बाहर निकालने के लिए चूषण पम्प का प्रयोग कैसे करें।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. बताना कि दम घुटे हुए शिशु के जन्म पर उपचार के लिए क्या क्या शुरूआती कदम उठाने चाहिएँ।
2. स्त्राव बाहर निकालने वाले उपकरण चूषण पम्प के प्रयोग का प्रदर्शन।

सामग्री

- विसंक्रमित चूषण पम्प
- बच्चे के बराबर की एक रबड़ की गुड़िया (खिलौना) जिसके नासाछिद्र और मुँह खुला हो (5 आशाओं के प्रत्येक समूह के लिये एक)।
- छोटे कप
- प्रदर्शन के लिये पानी
- अध्ययनपत्र 1: जन्मतेही दम घुटना : कृती चार्ट
- अध्ययनपत्र 2: जन्मतेही दम घुटने के उपचार में शुरूआती कदम
- अध्ययनपत्र 3: चूषण पम्प का प्रयोगः जाँच–सूची

तैयारी

- उपर दी हुई सारी सामग्री तैयार रखें।
- प्रत्येक आशा के अभ्यास के लिए एक विसंक्रमित चूषण पम्प तथा प्रत्येक आशा को देने के लिए दो विसंक्रमित चूषण पम्प। प्रत्येक आशा के लिए 3 विसंक्रमित बिल्टा पम्प का प्रबंध किया जाए।
- छोटे समूहों में अभ्यास करने के लिए जितने समूह हों उतने कप।
- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अध्ययनपत्र 1 और अध्ययनपत्र 2 की प्रतियाँ बना लें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति</u> (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से पूछें कि शिशुजन्म होते ही वे क्या करती हैं ? उनके उत्तर सुनें। वे बताएँगी कि सबसे पहला काम है *बच्चे को पोंछना, सूखे और गर्म कम्बल मे लपेटना*। यह सही है और सभी नवजात शिशुओं की ऐसे ही देखभाल की जानी चाहिए। कई बार शिशु को केवल पोंछने से ही वह साँस लेना शुरू कर देता है और कुछ करना नहीं पड़ता।
2. आशाओं से पूछें, कि 30 सेकंड पर शिशु की जाँच करते समय वह उसमें क्या–क्या देखती हैं? (उत्तर *: क्या वह रो रहा है, साँस ले रहा है और हिल–डुल रहा है*)
3. पूछें कि यदि वह ठीक से रो रहा है और साँस ले रहा है तो वे क्या करती हैं ? (*सामान्य देखभाल करती हैं....गर्म रखना, माँ के शरीर से लगाकर रखना, स्तनपान शुरू कराना आदि*)
4. आशाओं से दम घुटने की परिभाषा बताने को कहें (पिछले सत्र में बताया गया था)। जिन्होंने सही उत्तर दिया, उनकी प्रशंसा करें और जो उन्होंने नहीं बताया, वह भी बताएँ।
5. आशाओं से कहें कि वें अध्ययनपत्र 1ः जन्मतेही दम घुटनाः कृती चार्ट देखें।
6. आशाओं को अध्ययनपत्र 1 पढ़ने को कहें। बताएँ कि यदि झिल्ली फटने पर गाढ़ा पीला या हरे रंग का पानी बाहर आता है तो, जैसे ही शिशु का सिर बाहर आ जाऍ, पट्टी वाले कपड़े से शिशु का मुँह अंदर से साफ करें। शिशु का पूरा शरीर बाहर आने का इंतज़ार न करें। आशाओं ने यह प्रशिक्षण कार्यशाला 2 में सीखा हैं और प्रसव के समय ऐसा किया भी होगा। दम घुटे शिशु के उपचार में यह शुरूआती कदम है। नीचे विषय–वस्तु बाक्स में दिये गये कदमों की समीक्षा करें।

विषय–वस्तु

जन्मतेही दम घुटने के उपचार में शुरूआती कदम

1. झिल्लि फटने पर पानी का रंग कैसा था यह देंखें या माँ से पूछें।
2. यदि पानी गाढ़ा पीला या हरा हो तो जैसे ही शिशु का सिर दिखने लगे (पूरा शिशु बाहर आने से पहले) वैसेही पट्टी वाले कपड़े से शिशु का मुँह अंदर से साफ करें।
3. शिशु पैदा होते ही जन्म का समय नोट करें और समय की गिनती आरंभ करें।
4. जन्मतेही शिशु रोता नहीं, सॉस नहीं लेता, धीमे सॉस लेता है या हॉफता है – जन्मतेही दम घुटने के बारे में निर्णय करें।
5. शिशु को पोंछें
6. शिशु को कपड़े से ढॅके।

7. बताएँ कि यदि शिशु रो नहीं रहा, साँस नहीं ले रहा, हल्की साँस ले रहा है या हाँफ रहा है तो इसका अर्थ है कि उसका दम घुट रहा है और उसे उपचार की आवश्यकता है। उपचार को पुनरुज्जीवन (कृत्रिम साँस दिलाना) कहते हैं।

चूषण पम्प तथा बैग और मास्क का चित्र

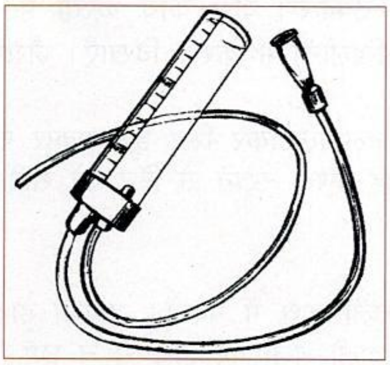

चूषण पम्प

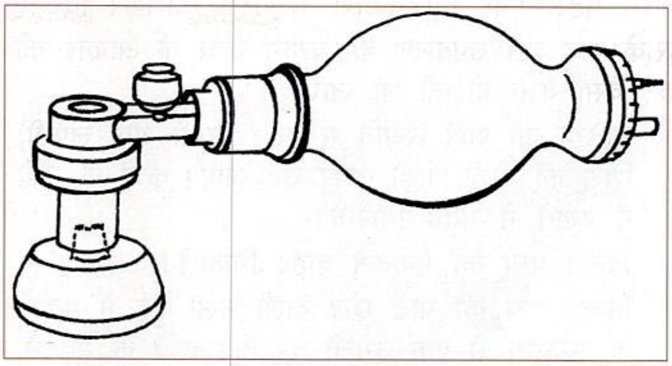

बैग और मास्क

8. पुनरूज्जीवन की प्रकिया बताएँ:
   1. **पोंछना तथा लपेटना :** बताएँ कि जन्मते ही शिशु को शीघ्रता से कपड़े से पोंछ लेना तथा सूखे कपड़े में लपेटना चाहिए। कभी–कभी ऐसा करने से वह रोने और साँस लेने लगता है।
   2. **चूषण पम्प का प्रयोग :** यदि शिशु पोंछने और लपेटने से भी रोए नहीं, तो उसकी साँस की घुटन दूर करने के लिए दूसरा कदम है, उसके मुँह, गले और नाक के स्रावों को साफ करना, जिससे कि वह अच्छी तरह साँस ले सके। इसके लिए चूषण पम्प का प्रयोग किया जाता है। शिशु का मुँह साफ किया जाता है और यदि वह तब भी रोता तथा साँस नहीं लेता, तो उसका गला और नाक साफ किए जाते हैं।
   3. **चूषण पम्प के प्रयोग के पहले नाल नही काटनी चाहिए** (पर यदि नाल छोटी है और पर्याप्त जगह नहीं है तो नाल पहले काटी जा सकती है)। यदि शिशुजन्म चारपाई पर कराया जा रहा हो, तो शिशु को नीचे ज़मीन पर लिटाना ठीक रहता है, जिससे कि उसकी नाल से खून बच्चे के शरीर में आता रहे। यदि जन्म ज़मीन पर कराया जा रहा हो तो शिशु को ज़मीन पर माँ के दाईं ओर माँ की तरफ सिर करके लिटाया जाना चाहिए।
   4. **बैग और मास्क :** यदि स्राव निकालने वाले उपकरण की मदद से भी शिशु रोता नहीं और साँस नहीं लेता, तो तुरंत बैग और मास्क का प्रयोग करें। दम घुटने के उपचार में यह दूसरा कदम है और इसके बारे में अगली प्रशिक्षण कार्यशाला में बताया जाएगा।

8. आशाओं को याद दिलाएँ :
   - यदि शिशु ठीक से रो रहा है और साँस ले रहा है तो स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग न करें।
   - शिशु को ढँकना और गर्म रखना आवश्यक है।
   - जैसे ही शिशु रोना/साँस लेना शुरू कर दे, स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग बंद कर दें।

प्रदर्शन (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. सभी को स्राव निकालने वाला उपकरण (डिली) चूषण पम्प दिखाएँ और उसके मुख्य भाग दिखाएँ : स्राव इकट्ठा करने वाला प्लास्टिक का पात्र, शिशु के मुँह से स्राव इकट्ठा करने वाले पात्र तक जाने वाली नली, पात्र से चूषण पम्प प्रयोग करनेवाले व्यक्ति के मुँह तक जाने वाली नली (विषय–वस्तु बाक्स देखें)।

2. आशाओं से कहें कि वे अध्ययनपत्र से स्राव निकालने वाले उपकरण वाली जाँच–सूची देखें।
3. सबसे पहले एक कप/कटोरी से पानी खींचकर दिखाएँ कि यह उपकरण कैसे कार्य करता है।
4. इसके बाद इस उपकरण का प्रयोग बच्चे के आकार की गुड़िया (खिलौने) में करके दिखाएँ। जैसा–जैसा करें वैसा वैसा बोलती भी जाएँ।
   1) गुड़िया को सही स्थिति में रखें; (सूखी और लपेटी) पीठ के बल लिटाकर सिर इस प्रकार रखें कि शिशु की ठोड़ी थोड़ी ऊपर उठ जाए। कँधों के नीचे कपड़ा तह करके रखने से सिर को सही स्थिति में रखने में मदद मिलेगी।
   2) बिल्टा पम्प को पॅकेटसे बाहर निकालें।
   3) बिल्टा पम्प की मोटे छोर वाली नली मुँह में पकड़ें। दूसरी नली हाथ में पकड़ें। आपका हाथ नली के अग्रभाग से एक उंगली दूर हो। बच्चे के मुँह में दी जाने वाली नली को हाथ से न छुएँ, जिससे संक्रमण होने का खतरा नहीं होगा। बच्चे के मुँह में देते समय, नली को थोड़ा दूर से पकड़ें।
   4) करीब आधी उंगली लंबी नली शिशु के मुँह में रखें, और उसे मुँह में सब तरफ घुमाते हुए दूसरी नलीसे कुछ सेकंड चूषण करें। यदि शिशु रोता है और सामान्य तौर से साँस लेना शुरू करता है तो रूक जाएँ। यदि नहीं तो अगला कदम उठाएँ। बताएँ कि इस उपकरण का प्रयोग शीघ्रता से जन्म के तुरंत बाद (30 से. के अंदर) करना चाहिए।
   5) यदि मुँह से चूषण के बावजूद भी शिशु साँस नहीं ले पा रहा, तो गले से चूषण करें। गले से चूषण करते समय ज़्यादा से ज़्यादा एक उंगली तक की ट्यूब की लंबाई बच्चे के गले तक जाए और दूसरी ट्यूबसे चूषण करें। यदि शिशु रोने लगता है और सामान्य रूप से साँस लेना शुरू करता है, तो रूक जाएँ।
   6) यदि शिशु अभी भी ठीक से साँस नहीं ले पा रहा हो, तो एक एक करके दोनों नासिकाओं से चूषण करें। यदि माँ की योनि से हरे रंग का द्रव निकला था, या शिशु के मुँह से अधिक स्राव निकल रहा हो, तो स्राव अच्छी तरह निकालें। चूषण जल्दी जल्दी 15–20 सेकंड में कर लेना चाहिए।
   7) यदि चूषण के बाद भी शिशु साँस नहीं ले रहा हो तो **तुरंत अगली कार्यवाही करें** : शिशु को कृत्रिम साँस दिलाने के लिए (फेफड़ों में हवा भेजने के लिए) बैग और मास्क का प्रयोग करें। यदि ऐसा समय से न किया गया, तो शिशु के मस्तिष्क में विकृति हो सकती है, या वह मर भी सकता है। (बैग और मास्क का प्रयोग अगली कार्यशाला में बताया जाएगा) स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग केवल एक ही बार करके उसे फेंक देना चाहिए।

स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का चित्रः

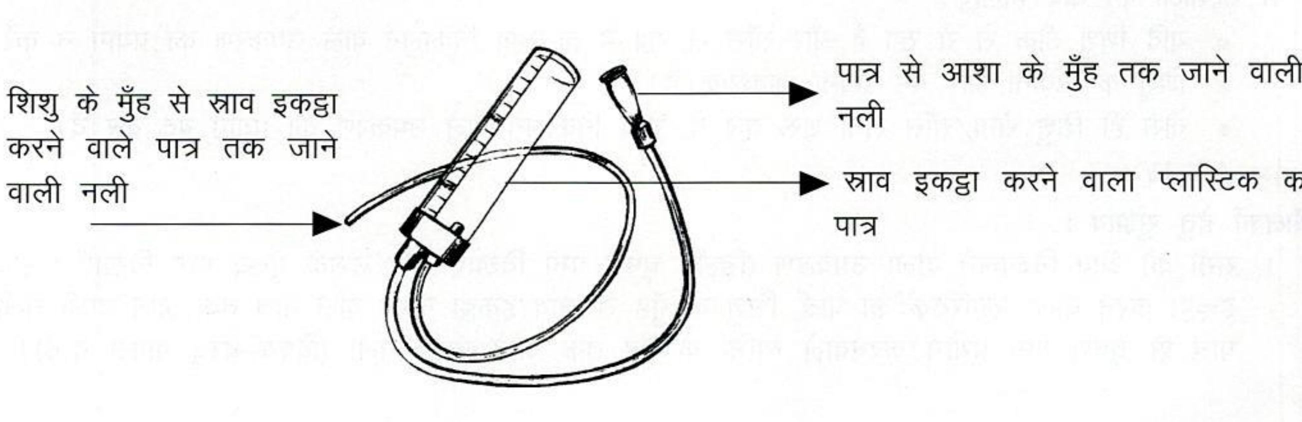

चूषण पम्प का प्रयोगः जाँच–सूची

1. शिशु को सही स्थिति में रखें, पोंछे, कपड़े में लपेटे और कपड़ा तह करके कंधों के नीचे रख दें। ठोड़ी उपर उठी हो और सिर थोड़ा पीछे की ओर।

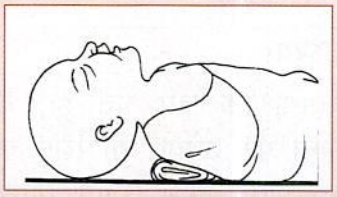

2. विसंक्रमित किए हुए उपकरण को खोल से बाहर निकालें।
3. मुँह वाली नली का मोटा छोर अपने मुँह में रखें। दूसरी नली को उसके खुले भाग से एक अंगुल दूर पकड़े।
4. दूसरी नली का खुला भाग आधा अंगुल शिशु के मुँह में डालें और मुँह के स्रावों को निकालने के लिए कुछ देर तक मुँह के अंदर धुमाते हुए चूषण करें। यदि शिशु रोने लगे और ठीक से साँस लेने लगे, तो रुक जाएँ। यदि अभी भी न रोए/साँस न ले, तो अगला कदम उठाएँ।
5. लगभग एक अंगुल नली को शिशु के गले में डालें और धीरे से गले के स्रावों का चूषण करें। यदि शिशु रोने/साँस लेने लगे, तो रूक जाएँ अन्यथा अगला कदम उठाएँ।
6. शिशु के गले और मुँह से नली निकाल लें, उसका खुला सिरा उसके एक नासिका छिद्र में डालें और धीरे से चूषण करें। इसी तरह दूसरी तरफ की नासिका छिद्र से चूषण करें।
7. जब सारा स्त्राव निकाल चुकें तो इस उपकरण को फेंक दें। (इसे दुबारा प्रयोग नहीं करना चाहिए)

<u>प्रशिक्षणार्थियों हेतु अभ्यास</u> (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं को 3–3 के समूहों में बाँटें।
2. प्रत्येक आशा को पानी के कप का प्रयोग करते हुए स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग करने का अभ्यास कराएँ।
3. जब वे प्रयोग करना सीख जाएँ, तो शिशु के आकार की गुड़िया का प्रयोग करते हुए उन्हें अभ्यास करायें, जबकि अन्य सभी आशाएँ जाँच सूची का प्रयोग करके निरीक्षण करती जाएँ।
4. आशाओं को अभ्यास करने के लिए पर्याप्त समय दें, ताकि उन्हें उपकरण के प्रयोग में कुशलता प्राप्त हो जाए। इसके बाद इन्हें इस उपकरण का प्रयोग शीघ्रतापूर्वक अर्थात् – 30 से. के अन्दर, करने का अभ्यास कराएँ।
5. प्रशिक्षक कमरे में घूमती रहें। सभी की मदद करती रहें और उनकी योग्यता की जाँच भी करती रहें।

सारांश : (15 मि.)

- किसी एक आशा से पूछें, कि यदि शिशु का दम घुट रहा हो, तो क्या करना चाहिए।
- दूसरी आशा से स्राव निकालने वाले उपकरण के प्रयोग का प्रदर्शन करने को कहें, जबकि अन्य सभी जाँच–सूची का प्रयोग करते हुए निरीक्षण करती रहें।
- कुछ गलतियाँ हों, तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बताना कि दम घुटे हुए शिशु के जन्म पर उपचार के लिए क्या क्या शुरूआती कदम उठाने चाहिएँ।	जन्मतेही दम घुटना : कृती चार्ट पर चर्चा	–
स्त्राव बाहर निकालने वाले उपकरण चूषण पम्प के प्रयोग का प्रदर्शन।	किए जा रहे प्रदर्शन को जाँच–सूची की मदद से देखना। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी चूषण पम्प सही तरीके से प्रयोग करने का प्रदर्शन करेगा।	जाँच–सूची की मदद से प्रशिक्षक व्दारा अवलोकन

जन्मतेही दम घुटना : कृती चार्ट

पूरी तरह तैयार रहें। प्रसवपीड़ा के दौरान दिखाई देने वाले उन लक्षणों की जानकारी रखें, जो दम घुटा हुआ बच्चा पैदा होने की संभावना का संकेत देते हैं।

प्रसवपीड़ा के दौरान : पानी की थैली के फटनेपर 'पानी' के रंग के बारे में माँ से प्राप्त जानकारी

'पानी' गाढ़ा हरा या पीला है

जब शिशु का सिर दिखने लगे तब
शिशु का मुँह अंदर से पट्टी वाले कपड़े से साफ करें

'पानी' सफेद पारदर्शी है

जन्म के तुरंत बाद :

1. **जन्म का समय नोट करें और समय की गिनती आरंभ करें**
2. **शिशु को शीघ्रता से पोंछे और कपड़े में लपेटें**

30 सेकिंड पर

शिशु ठीक से रोया

दम घुटा नहीं है

3. नाल बाँधे और काटें
4. शिशु को सूखा कपड़ा ओढ़ाएँ
5. शिशु को माँ के पास लिटाएँ
6. स्तनपान शुरू कराएँ

शिशु रोया नही
साँस नही ली या हल्की साँस ली

दम घुटा हुआ हैं।

3. शिशु को ठीक तरह से रखें।
4. कपड़ा तह करके कंधों के नीचे रख दें। ठोडी उपर उठी हो और सिर थोडा पीछे की ओर
5. तुरंत चूषण पम्प से मुँह साफ कराएँ। यदि शिशु साँस नही लेता, तो गला साफ करें। यदी फिर भी शिशु साँस नही लेता तो चूषण पम्प से नाक साफ करें।
6. 10 मि. पर यदी शिशु रोता नहीं या साँस नही लेता तो
7. शिशु को मृत घोषित करें

जन्मतेही दम घुटने के उपचार में शुरूआती कदम

1. झिल्लि फटने पर पानी का रंग कैसा था यह देखें या माँ से पूछें।
2. यदि पानी गाढ़ा पीला या हरा हो तो जैसे ही शिशु का सिर दिखने लगे (पूरा शिशु बाहर आने से पहले) वैसेही पट्टी वाले कपड़े से शिशु का मुँह अंदर से साफ करें।
3. शिशु पैदा होते ही जन्म का समय नोट करें और समय की गिनती आरंभ करें।
4. जन्मतेही शिशु रोता नहीं, साँस नहीं लेता, धीमे साँस लेता है या हाँफता है – जन्मतेही दम घुटने के बारे में निर्णय करें।
5. शिशु को पोंछें
6. शिशु को कपड़े से ढँके।

चूषण पम्प का प्रयोग: जाँच–सूची

अभ्यास :	1	2	3	4
1. शिशु को सही स्थिति में रखें, पोंछे, कपड़े में लपेटे और कपड़ा तह करके कंधों के नीचे रख दें। ठोड़ी उपर उठी हो और सिर थोड़ा पीछे की ओर।				
2. विसंक्रमित किए हुए उपकरण को खोल से बाहर निकालें।				
3. मुँह वाली नली का मोटा छोर अपने मुँह में रखें। दूसरी नली को उसके खुले भाग से एक अंगुल दूर पकड़े।				
4. दूसरी नली का खुला भाग आधा अंगुल शिशु के मुँह में डालें और मुँह के स्रावों को निकालने के लिए कुछ देर तक मुँह के अंदर धुमाते हुए चूषण करें। यदि शिशु रोने लगे और ठीक से साँस लेने लगे, तो रुक जाएँ। यदि अभी भी न रोए/साँस न ले, तो अगला कदम उठाएँ।				
5. लगभग एक अंगुल नली को शिशु के गले में डालें और धीरे से गले के स्रावों का चूषण करें। यदि शिशु रोने/साँस लेने लगे, तो रूक जाएँ अन्यथा अगला कदम उठाएँ।				
6. शिशु के गले और मुँह से नली निकाल लें, उसका खुला सिरा उसके एक नासिका छिद्र में डालें और धीरे से चूषण करें। इसी तरह दूसरी तरफ की नासिका छिद्र से चूषण करें।				
7. जब सारा स्त्राव निकाल चुकें तो इस उपकरण को फेंक दें। (इसे दुबारा प्रयोग नहीं करना चाहिए)				

मोड्यूल 12 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा चूषण पंप से प्रारम्भिक उपचार

सत्र 3 : मूल्यांकनः दम घुटने का निदान तथा प्रारम्भिक उपचार

दिवस : 3

समयावधि : 1 घं. 20 मि.

प्रयोजन

आशाओं को दम घुटने की पहचान तथा देखभाल की विधियों के अभ्यास का समय देना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. दम घुटे शिशुजन्म का संकेत देने वाली अलग अलग स्थितियाँ पहचानना ।
2. जन्मतेही दम घुटे शिशुओं को पहचानना और सही कदम उठाना।

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1 : केस अध्ययन प्रश्न
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : प्रात्यक्षिक मूल्यांकन प्रपत्र (दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम, चूषण पम्प का प्रयोगः जाँच–सूची)
- गुड़िया
- चूषण पंम्प (प्रात्यक्षिक मूल्यांकन के लिये)

तैयारी

- अभ्यासपत्र 1 और 2 की प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार प्रतियाँ बनाएँ।
- 2 गुडियाएँ तथा प्रात्यक्षिक मूल्यांकन हेतु पर्याप्त चूषण पम्प तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>केस अध्ययन के लिये उदाहरण</u> (1 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. सभी प्रशिक्षणार्थियों को केस अध्ययन प्रश्नपत्र लिखने हेतु एक दूसरे से दूर बैठने को कहें।
2. सभी को अभ्यासपत्र 1: केस अध्ययन प्रश्नपत्र बाँट दें और प्रत्येक केस के प्रश्नों के उत्तर स्वयं देने का अवसर दें।
3. 30 मिनट बाद प्रश्नपत्र इकट्ठा कर लें।
4. सभी आशाओं को बड़े समूह में बैठने को कहें। प्रत्येक केस पर चर्चा करें, प्रश्न पूछें और शंकाओं का समाधान करें।

प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

- प्रशिक्षक प्रत्येक आशा की गले के स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग करने की योग्यता की जाँच–सूची की मदद से, जाँच करें।

सारांश : (5 मि.)

- मुख्य बातों को संक्षिप्त में बताएँ और जिन बातों पर अधिक ध्यान देने की या दोहराने की आवश्यकता है, उनके लिए मूल्यांकन के नतीजों के बारे में बताएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
दम घुटे शिशुजन्म का संकेत देने वाली अलग अलग स्थितियाँ पहचानना ।	प्रश्न–पत्र	सभी आशाओं व्दारा हल किये गए तथा प्रशिक्षक व्दारा जॉच कर अंक दिए गए केस अध्ययन प्रश्नपत्र।
जन्मतेही दम घुटे शिशुओं को पहचानना और सही कदम उठाना।	प्रश्न–पत्र और योग्यता मापने वाली जाँच–सूचियाँ	सभी आशाओं व्दारा हल किये गए तथा प्रशिक्षक व्दारा जॉच कर अंक दिए गए केस अध्ययन प्रश्नपत्र। प्रत्येक आशा की गले के स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग करने की योग्यता की जाँच–सूची की मदद से, प्रशिक्षक व्दारा की गई जाँच।

केस अध्ययन प्रश्न (कुल अंक 20 – प्रत्येक सही उत्तर को एक अंक)

1. बसंती को पहले शिशु के जन्म के समय प्रसवपीड़ा हो रही है। जैसे ही उसे प्रसवपीड़ा शुरू हुई उसके परिवार वालों ने आपको बुलाया। उसे प्रसव पीड़ा सामान्य हो रही है; द्रव का रंग सफेद है, दर्द तेज़ उठ रहे हैं और 6 घंटे में शिशु का जन्म हो गया।

   क्या बसंती को दम घुटे शिशु के जन्म का खतरा औरों से अधिक है ? हॉ / नहीं

   इस प्रसव के लिये आप क्या तैयारी करेंगी ?

   क. ____________________

   ख. ____________________

   ग. ____________________

   बसंती ने सुबह 10 बजे शिशु को जन्म दिया। शिशु बहुत धीमी आवाज़ में रोया और उसकी साँस फूल रही है।

   आप क्या करेंगी ?

   क. ____________________

   ख. ____________________

   शिशु ज़ोर से रोने और साँस लेने लगता है।

   कृत्रिम साँस दिलाने के लिये आप क्या करेंगी ? ____________________

   आप और क्या करेंगी ?

   क. ____________________

   ख. ____________________

   ग. ____________________

   घ. ____________________

आशा का नाम ____________________	तारीख ____________
प्रशिक्षक का नाम ____________________ ब्लॉक ____________________	कुल अंक ____________

2. लाजो ने दोपहर को एक बहुत छोटी लड़की को जन्म दिया। वह न तो रोई, न उसने साँस ली।

आप सबसे पहले कौन से 2 कदम उठाएँगी।

क. ____________________

ख. ____________________

शिशु साँस लेने लगा

इसके बाद आप क्या करेंगी ?

क. ____________________

ख. ____________________

3. परवीन को पाँचवा बच्चा होने वाला है। आप उसके प्रसव के समय उपस्थित हैं। उसे प्रसवपीड़ा ठीक से हो रही है। उसकी झिल्ली फट गई और द्रव का रंग सफेद है, पर मात्रा बहुत कम है। उसे दर्द तेज़ और लगातार हो रहे हैं।

क्या परवीन को दम घुटे शिशु के जन्म का खतरा है ____________________

यदि हाँ, तो क्या खतरा है ? ____________________

शिशु का जन्म सुबह 5 बजे हुआ। वह रो रहा है और ज़ोर से साँस ले रहा है।

तुरंत आप क्या करेंगी ?

क. ____________________

ख. ____________________

ग. ____________________

क्या जन्मतेही शिशु का दम घुटा हुआ था ? हाँ / नहीं

केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. बसंती को पहले शिशु के जन्म के समय प्रसवपीड़ा हो रही है। जैसे ही उसे प्रसवपीड़ा शुरू हुई उसके परिवार वालों ने आपको बुलाया। उसे प्रसव पीड़ा सामान्य हो रही है; द्रव का रंग सफेद है, दर्द तेज़ उठ रहे हैं और 6 घंटे में शिशु का जन्म हो गया।

क्या बसंती को दम घुटे शिशु के जन्म का खतरा औरों से अधिक है ? नहीं

इस प्रसव के लिये आप क्या तैयारी करेंगी ?

क. हाथ धोना

ख. तौलिया और कम्बल तैयार रखना

ग. गले के स्राव बाहर निकालने वाला उपकरण तैयार रखना

बसंती ने सुबह 10 बजे शिशु को जन्म दिया। शिशु बहुत धीमी आवाज़ में रोया और उसकी साँस फूल रही हैं।

आप क्या करेंगी ?

क. शिशु को पोंछना और कंबलमें लपेटना

ख. मुँह गले और नाक के स्राव बाहर निकालने के लिये स्राव निकालने वाले उपकरण (चूषण पम्प) का प्रयोग

शिशु ज़ोर से रोने और साँस लेने लगता है।

कृत्रिम साँस दिलाने के लिये अब आप क्या करेंगी ? रोक देंगे। और अधिक कृत्रिम साँस देने की आवश्यकता नहीं।

आप और क्या करेंगी ?

क. शिशु को गर्म रखने और माँ से स्नेहपूर्ण संबंध बनाने के लिये उसके पास लिटाना

ख. शीघ्र स्तनपान कराने में माँ की सहायता करना

2. लाजो ने दोपहर को एक बहुत छोटी लड़की को जन्म दिया। वह न तो रोई, न उसने साँस ली।

आप सबसे पहले कौन से 2 कदम उठाएँगी।

क. शिशु को पोंछना और कम्बल में लपेटना

ख. स्राव बाहर निकालने के लिए उपकरण का प्रयोग

शिशु साँस लेने लगा।

इसके बाद आप क्या करेंगी ?

क. कृत्रिम साँस देना बंद कर दें

ख. कंबल में लपेटकर स्तनपान कराने के लिये माँ को दे दें।

3. परवीन को पाँचवा बच्चा होने वाला है। आप उसके प्रसव के समय उपस्थित हैं। उसे प्रसवपीड़ा ठीक से हो रही है। उसकी झिल्ली फट गई और द्रव का रंग सफेद है पर मात्रा बहुत कम है। उसे दर्द तेज़ और लगातार हो रहे हैं।

क्या परवीन को दम घुटे शिशु के जन्म का खतरा है ? हाँ

यदि हाँ, तो क्या खतरा है ? योनि से कम द्रव निकला (शुष्क प्रसव)

शिशु का जन्म सुबह 5 बजे हुआ। वह रो रहा है और ज़ोर से साँस ले रहा है।

तुरंत आप क्या करेंगी ?

क. शिशु को पोंछे और कपड़े में लपेटे

ख. माँ के पास लिटाएँ

ग. स्तनपान कराने में सहायता करें

क्या जन्मतेही शिशु का दम घुटा हुआ था ? नहीं

प्रात्यक्षिक मूल्यांकन प्रपत्र

(प्रत्येक कदम के लिए 1 से 5 के पैमाने पर अंक (अधिकतम अंक 5)

जन्मतेही दम घुटने के उपचार में शुरूआती कदम (हर कदम के लिए 5 अंक X 6 कदम = 30 अंक)

आशा का नाम				
1. झिल्लि फटने पर पानी का रंग कैसा था यह देंखें या माँ से पूछें।				
2. यदि पानी गाढ़ा पीला या हरा हो तो जैसे ही शिशु का सिर दिखने लगे (पूरा शिशु बाहर आने से पहले) वैसेही पट्टी वाले कपड़े से शिशु का मुँह अंदर से साफ करें।				
3. शिशु पैदा होते ही जन्म का समय नोट करें और समय की गिनती आरंभ करें।				
4. जन्मतेही शिशु रोता नहीं, साँस नहीं लेता, धीमे साँस लेता है या हाँफता है – जन्मतेही दम घुटने के बारे में निर्णय करें।				
5. शिशु को पोंछें				
6. शिशु को कपड़े से ढँके।				

चूषण पम्प का प्रयोगः जाँच–सूची (हर कदम के लिए 5 अंक X 7 कदम = 35 अंक)

आशा का नाम				
1. शिशु को सही स्थिति में रखें, पोंछे, कपड़े में लपेटे और तौलिया तह करके कंधों के नीचे रख दें। शिशु का सिर थोडा पीछे और गर्दन तनी हुई।				
2. विसंक्रमित किये हुये उपकरण को खोल से बाहर निकालें।				
3. एक मुँह वाली नली का अगला हिस्सा अपने मुँह में रखे। दूसरी नली को उसके खुले भाग से 1 हाथ छोड़कर दूसरे हाथ से पकड़े।				
4. दूसरी नली का खुला भाग आधा अंगुल शिशु के मुँह में डालें और मुँह के स्रावों को निकालने के लिए कुछ देर तक मुँह के अंदर धुमाते हुए चूषण करें। यदि शिशु रोने लगे और ठीक से साँस लेने लगे तो रुक जाएँ। यदि अभी भी न रोए /साँस न ले, तो अगला कदम उठाएँ।				
5. लगभग एक अंगुल नली को शिशु के गले में डालें और धीरे से गले के स्रावों का चूषण करें। यदि शिशु रोने/साँस लेने लगे, तो, रूक जाएँ अन्यथा अगला कदम उठाएँ।				
6. शिशु के गले और मुँह से नली निकाल लें, उसका खुला सिरा उसके एक नासिका छिद्र में डालें और धीरे से चूषण करें। इसी तरह दूसरी तरफ की नासिका छिद्र से निकालें।				
7. जब सारा स्त्राव निकाल चुकें तो इस उपकरण को फेंक दें। (इसे दुबारा प्रयोग नहीं करना चाहिए)				

मोड्यूल 13: सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार

सत्र 1 : नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान

दिवस : 3

समयावधि : 2 घं. 40 मि.

प्रयोजन

आशाओं को नवजात शिशुओं में और जन्म के 1 माह के दौरान होने वाले सेप्सिस (जन्तुदोष) के कारणों की, बीमारी की गंभीरता की, और निदान के मापदण्डों की जानकारी देना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. बताना कि सेप्सिस क्या है, यह कैसे होता है और इससे क्या खतरे हैं।
2. नवजात शिशु में सेप्सिस का निदान करना।
3. बताना कि सेप्सिस होने से कैसे रोका जा सकता है।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1 : नवजात शिशु सेप्सिस संबंधी जानकारी
- अभ्यासपत्र 1 : घरों का दौरा फॉर्म
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : कक्षा में केस प्रस्तुति
- अभ्यासपत्र 2 : केस प्रस्तुति
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : केस प्रस्तुति के उत्तर
- गर्भावस्था फॉर्म, प्रसव फॉर्म, नवजात शिशु की पहली जॉचः फॉर्म, घरों का दौरा फॉर्म
- स्वास्थ्य शिक्षा के लिए चित्र पुस्तिका

तैयारी

- अभ्यासपत्र 1 और 2 की आशाओं की संख्या के अनुसार प्रतियॉं बनालें।
- आशाओं से कहे कि जरूरी फॉर्म वे गर्भावस्था फॉर्म पुस्तिका और मॉं तथा नवजात फॉर्म पुस्तिका में देखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवँ चर्चा</u> (1 घं. 15 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. निम्न कहानी सुनाएँ :

   जानकी ने शनिवार को एक पुत्री को जन्म दिया। वह जन्म के समय स्वस्थ थी । तीसरे दिन उसकी टुंडी में मवाद हो गया। सातवें दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया।

2. आशाओं से पूछें कि शिशु को कौन सी बीमारी है? उनके उत्तर सुनें और सही उत्तरों पर उनकी प्रशंसा करें। यदि उन्हें नहीं मालूम हो तो बताएँ, कि उसे सेप्सिस हुआ है जो एक गंभीर प्रकार का संक्रमण है। परिभाषा नीचे दिए विषय–वस्तु बाक्स में देखें।

विषय–वस्तु

परिभाषा : सेप्सिस (जन्तुदोष) एक प्रकार का संक्रमण है।

नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) फेफड़े, मस्तिष्क अथवा खून का गंभीर संक्रमण हैं।

बीमारी कितनी गंभीर होती है ?

भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्रों में 10 में से 1 नवजात शिशु में सेप्सिस जैसे लक्षण दिखते है।

जन्म के बाद पहले महीने में सेप्सिस होना बहुत खतरनाक है और इससे शिशु की मौत भी हो सकती है।

इलाज के अभाव में सेप्सिस से पीड़ित अधिकांश शिशु मर जाते हैं।

इलाज के बाद अधिकांश जीवित रहते हैं और उनका विकास/वृध्दि सामान्य रूप से होते है।

3. आशाओं से पूछें कि क्या उन्हें किसी ऐसे शिशु के बारे में जानकारी है, जिसे जन्म के पहले महीने में संक्रमण हुआ हो। शिशु को क्या हुआ था ? नवजात शिशुओं में होने वाले सेप्सिस को आम (स्थानीय) भाषा में क्या कहते हैं ? माता–पिता को जानकारी देते समय, किन शब्दों का प्रयोग किया जाएगा। इस बारे में चर्चा करें।
4. बताएँ कि 'सर्च' गडचिरोली, महाराष्ट्र में किये अध्ययन से पता चला है कि हमारे देश में नवजात शिशुओं में सेप्सिस होना बहुत आम बात है। घर पर पैदा हुए 10 बच्चों में से कम से कम एक को जन्म के पहले महीने में यह बीमारी हो जाती है।
5. बताएँ कि सेप्सिस बहुत गंभीर बीमारी है। 'सर्च' गडचिरोली के अध्ययन में पाया गया कि यह जन्म के पहले महीने में शिशुओं की मौत का मुख्य कारण है। इलाज के अभाव में इससे पीड़ित अधिकांश शिशुओं की मौत हो जाती है। परन्तु इलाज के बाद अधिकांश जीवित रहते हैं।
6. आशाओं से पूछें कि नवजात शिशुओं में सेप्सिस के मुख्य कारण क्या हो सकते हैं ? उनके उत्तर सुनें और बोर्ड अथवा कागज पर लिखें (नीचे दिया विषय–वस्तु बाक्स देखें) जिन आशाओं ने सही उत्तर दिए हो उनकी प्रशंसा करें।
7. आशाओं से कहे कि वें अध्ययनपत्र–1 (नवजात शिशुओं में सेप्सिस संबंधी जानकारी वाली शीट) देखें। कारणों के बारे में चर्चा करें और आशाओं द्वारा बताए गए कारणों से तुलना करें। जो उन्होंने न बताया हो, उसे शामिल करें और जो गलत बताया हो उसे निकाल दें।

विषय–वस्तु

नवजात शिशुओं में सेप्सिस के कारण

1) माँ को गर्भावस्था अथवा प्रसव के समय संक्रमण हुआ हो।
2) अस्वच्छता पूर्वक कराए गए प्रसव से (जिसमें हाथ गन्दे रहे हों, दाई ने माँ के अन्दरूनी हिस्सों में हाथ डाले हों, गन्दे ब्लेड और नाल बाँधने की डोरी का प्रयोग किया गया हो,) माँ/बच्चे को संक्रमण हो सकता है।
3) अस्वच्छतापूर्वक काटी गई नाल से या नाल पर उल्टी–सीधी चीजें लगाने से नाल में संक्रमण हो जाता है।
4) शिशु कमजोर, समय से पूर्व जन्मा या जन्म के समय कम वज़न का हो (2000 ग्राम से कम)।

5) स्तनपान शीघ्रता से जन्म के तुरंत बाद शुरू न कराने तथा केवल स्तनपान न कराने जैसी स्तनपान की गलत विधियोंसे शिशु कमजोर हो जाता है।

6) प्रसव के बाद ठंडा पड़ जाने से, शिशु कमज़ोर हो जाता है।

7) संक्रमित व्यक्ति – माँ, परिवार के अन्य सदस्य, दाई, आशा अथवा देखने आने वाले अन्य लोगों के सम्पर्क में आने से भी शिशु को संक्रमण हो सकता है।

8. आशाओं को बताएँ कि शिशुओं में संक्रमण होते ही उसका पता लगाना और उसे होने से रोकना उनके रोज़मर्रा के काम में शामिल है। माँ में संक्रमण होने, समय से पूर्व जन्म, कम वज़न के शिशु का जन्म, केवल स्तनपान न कराना और गन्दे हाथों अथवा कपड़ों के प्रयोग इनके कारण शिशुओं को सेप्सिस होने का खतरा होता है। पहले से सावधानी बरतने से शिशुओं में सेप्सिस होने को रोका जा सकता है।

9. बताएँ कि नवजात शिशुओं में संक्रमण शरीर के अलग–अलग हिस्सों में हो सकता है, जैसे नाल में संक्रमण, या फेफड़ों में (निमोनिया) या फिर खून में। यह संक्रमण जल्दी ही गंभीर रूप धारण कर सकते हैं। नवजात शिशु – खास–तौर पर समय से पूर्व जन्मे और कम वज़न वाले – संक्रमण का मुकाबला प्रभावकारी ढंग से नहीं कर पाते। उनके शरीर में शीघ्र ही जीवविष (टॉक्सिन) फैल जाते हैं और उनका रोना और दूध पीना बंद हो सकता है और वे ठंडा पड़ सकते हैं। ऐसे में यह बताना मुश्किल होता है कि उन्हें संक्रमण शरीर के किस भाग में शुरू हुआ, और साफ–साफ लक्षण दिखाई न देने के कारण, सही निदान नहीं किया जा सकता। आशाओं को सेप्सिस के निदान में सहायता देने के लिए हमने विशिष्ट मापदण्डों को प्रयोग में लाते हुए एक सरल विधि विकसित की है (नीचे दिया विषय–वस्तु बाक्स देखें)

10. सभी को कहे कि वे घरों का दौरा फॉर्म में सेप्सिस निदान का भाग देखें। आशाओं को प्रत्येक मापदण्ड पढ़ने को कहें और चर्चा करें।

11. बताएँ कि सेप्सिस के निदान के लिए एक ही समय पर (उसी दिन) दो लक्षण दिखाई देने चाहिएँ। क्योंकि एक लक्षण तो कई शिशुओं में हो सकता हैं, पर 2 लक्षणों का होना निश्चित रूप से बताता है कि उसे सेप्सिस ही है।

12. यह भी ध्यान में रखें कि पहले 3 लक्षण – हाथ–पैर लुंज–पुंज, कम या बिल्कुल स्तनपान नहीं करना, धीमे से या बिल्कुल भी न रोना, यदि ये जन्म के समय भी दिखाई दिए हों, तो मापदण्डों में शामिल नहीं होंगे । इन लक्षणों को तभी सेप्सिस के लक्षण माना जाएगा जब शिशु को जन्म के समय यह लक्षण न हो पर बाद में उसमें ये लक्षण विकसित हुए हों (उदाहरण के लियेः जन्म के समय शिशु स्तनपान ठीक से कर रहा था जो बाद में कम कर रहा हो या बिल्कुल नही कर रहा हो)

नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान के मापदण्ड

1) हाथ–पैर लुंज–पुंज

(तुलना के लिये मोड्यूल 4 सत्र 6 के अध्ययनपत्र में सामान्य हाथ पैर वाली फोटो देखें।)

2) कम स्तनपान करना या स्तनपान बन्द करना।

3) रोना बन्द कर दिया या धीमे से रो पाया।

4) माँ बताए कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लग रहा है (हाइपोथर्मिया) या तापमान 99° फै. (37.2° सें) से अधिक है

5) पेट फूला हुआ या बार–बार उल्टी होना

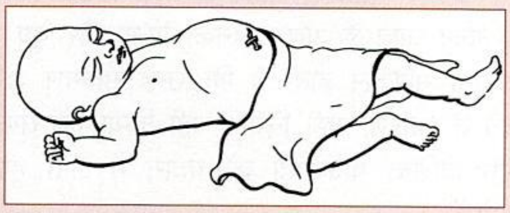

6) छाती अंदर को धँसी हुई।

7) टुंडी में मवाद (पकना) या त्वचा पर मवाद वाला फोड़ा। (स्वास्थ्य शिक्षा फ्लिप चार्ट कार्ड 27 देखें)

पर दिये 7 लक्षणों में से <u>एक ही दिन में कोई भी 2 या ज्यादा लक्षण शिशु में दिखाई दें</u> तो सेप्सिस (जन्तुदोष) माना जाना चाहिए। शुरू के 3 लक्षण 1, 2, 3 शिशु में पहले न हो और बाद में दिखाई देने लगे, तभी गिने जाएँगे।

13. उदाहरण दें :

1. बिन्दी जन्म के समय धीमे से रोई और उसकी साँस भी धीमी चल रही थी। ऐसी हालत 4 दिन तक रही। तीसरे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ने लगा। क्या उसे सेप्सिस था ? (*नहीं*) क्यों ? (*तीसरे दिन पाया जाने वाला लक्षण केवल शरीर का ठंडा पड़ना था। जन्म के समय ही वह धीमे रोई/हल्की साँस ली, अतः इन्हें सेप्सिस (जन्तुदोष) के लक्षणों में शामिल नहीं किया जा सकता।* चौथे दिन उसका पेट फूला था और शरीर ठंडा था। क्या शिशु को सेप्सिस था? (*सेप्सिस (जन्तुदोष का निदान करें क्योंकि चौथे दिन एक साथ 2 लक्षण दिखाई दिए*)।

2. नीता का जन्म के समय दम घुटा हुआ था। वह न रोई, न उसकी साँस चल रही थी। कृत्रिम साँस

देने के बाद वह चैतन्य हो गई और उसका रोना/साँस लेना सामान्य हो गया। छठे दिन उसका शरीर ठंड़ा पड़ा और वह धीमे से रो पा रही थी। आप क्या निदान करेंगी *(सेप्सिस (जन्तुदोष) क्योंकि उसमें दो लक्षण ''ठंडा पड़ना'' और ''धीमे से रोना'' एक साथ दिखाई दिए)*

नोट : यदि शिशु में सेप्सिस का एक लक्षण हो तो अगले तीन दिन आशा हररोज शिशु के घर का दौरा करें और देखें कि शिशु में अन्य कोई लक्षण तो नहीं। यदि स्तनपान की समस्या या शरीर ठंड़ा पड़ने की समस्या है तो उपचार के निर्देशानुसार उपचार करें। यदि टुंडी में मवाद हो तो जी. वी. पेंट से उपचार करें। कभी कभी बुखार के कारन सेप्सिस का अन्य लक्षण अस्थायी रूप से दिखाई देता है। जैसे – दूध पीना कम या बन्द, रोना कमजोर या उल्टी। निःसन्देह निदान के लिये पहले पैरासिटामाल से बुखार का उपचार करें और एक घंटा इन्तजार करें। बुखार कम होने के बावजूद यदि सेप्सिस का दूसरा लक्षण बना रहता है तो सेप्सिस का निदान करें।

14. आशाओं से पूछें कि क्या सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम की जा सकती है ? वे 'हाँ' में उत्तर देंगी। पूछें कि कैसे रोकथाम की जा सकती है? उनके उत्तर सुनें (नीचे दिया हुआ विषय–वस्तु बाक्स देखें)
    - यदि वे बतायें कि 'स्वच्छतापूर्वक काम करने से' तो उनसे विस्तार से बताने को कहें (जैसे – *शिशुजन्म से पूर्व दाईयाँ हाथ धोएँ और अपने हाथ माँ के अन्दरूनी हिस्सों में न डालें, साफ ब्लेड का प्रयोग करें, आशा और अन्य सभी लोग शिशु को छूने/गोद लेने से पहले हाथ धोएँ, शौच के बाद तथा शिशु की टट्टी धोने के बाद माँ अपने हाथ धोएँ, बीमार लोग जच्चा/बच्चा के कमरे में न जाएँ आदि)*
    - पूछें कि शिशु को गर्म कैसे रखेंगी ? *(प्रसव के तुरंत बाद शिशु को पोंछे और सूखे कपड़े में लपेटें; माँ के पास लिटाएँ और स्तनपान शुरू कराएँ; शिशु को कपड़े पहनाएँ, यदि शिशु कम वज़न का पैदा हुआ है, तो गर्म थैली और/अथवा शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि का प्रयोग करें।)*
    - पूछें कि स्तनपान कराने की अच्छी विधियाँ कौन सी हैं ? *(स्तनपान जन्म के तुरंत बाद शुरू कराना, शिशु के माँगने पर पिलाना, पहले कुछ हफ्तों में हर 2–3 घंटे बाद पिलाना, केवल स्तनपान कराना, अन्य कोई भी तरल पदार्थ/आहार न देना।)।*

विषय–वस्तु

सेप्सिस से बचाव

सेप्सिस (जन्तुदोष) को इन विधियों के इस्तेमाल से रोका जा सकता है :

1. स्वच्छतापूर्वक काम करने से

कई बार हाथ धोएँ

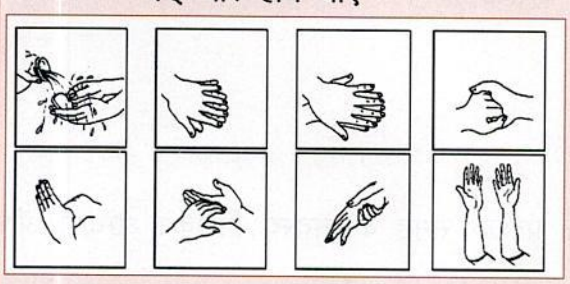

प्रसव के समय स्वच्छ ब्लेड

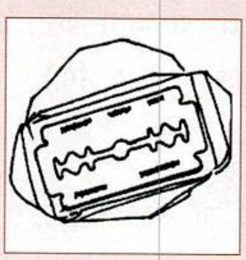

स्वच्छ कपड़ों का प्रयोग

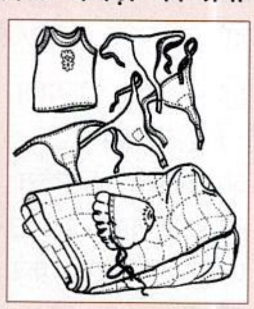

2. शिशु को गर्म रखें

3. स्तनपान जल्दी शुरू कराएँ

4. नाल को साफ सूखा रखें

15. बतायें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम, और माँ/बच्चे के पास जाने पर शिशु के स्वास्थ्य की अच्छी देखभाल करने में आशाओं की अहम् भूमिका है। उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि शिशु की देखभाल स्वच्छतापूर्वक हो, शिशु को गर्म रखा जाए (विशेषकर सर्दी में) और स्तनपान ठीक से कराया जाए।

- आशा प्रसव के तुरंत बाद स्तनपान शुरू करवा दें।
- प्रसव के बाद के अपने दौरों में आशा ध्यान रखें कि शिशु को स्तनपान ठीक से कराया जा रहा हो, वह माँ को स्तनपान कराते हुए देखें और पूछे कि रात–दिन में कितनी बार उसने स्तनपान कराया। वह शिशु का वज़न भी करें।
- इसी तरह शिशु को गर्म रखने पर भी ध्यान दें। यदि तापमान सामान्य से कम है, तो जरूरी है कि माँ शिशु को गर्म रखें; ठीक से कपड़े पहनाएँ और ओढ़ाएँ।
- कई बार हाथ धोने की आदत को आशा बार बार दोहरायें ।

घर का प्रत्येक दौरा शिशु के स्वास्थ्य की देखभाल और सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम का एक अवसर प्रदान करता है। आपका व्यवहार ही सर्वोत्तम शिक्षक है।

बड़े समूह में केस प्रस्तुति (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षक निम्नलिखित केस सभी के सामने प्रस्तुत करें (प्रशिक्षक प्रपत्र 1 देखें) पहला भाग पढ़ें और प्रश्न पूछें। उत्तर देने का समय दें। उत्तरों पर चर्चा करें। यदि आशाओं ने गलत उत्तर दिए हों, तो सभी से राय लें। केस के दूसरे भाग को पढ़ें।
2. अंत में केस की और आशाओं द्वारा लिए गए कदमों की समीक्षा करें।
3. किसी के कोई प्रश्न/शंकाएं हों, तो समाधान करें।

प्रशिक्षणार्थियों हेतु अभ्यास – केस प्रस्तुति (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. अभ्यासपत्र–2 (केस प्रस्तुति) बाँटें।
2. सभी आशाओं को 3–4 सदस्यों के छोटे समूहों में बाँटें। प्रत्येक समूह के सदस्य मिलकर अभ्यास और प्रश्नों पर चर्चा करें। (25 मि.)
3. पूरे समूह के साथ मिलकर केस अध्ययनों पर चर्चा करें (20 मि.)
4. प्रश्नों का समाधान करें।

सारांश : (10 मि.)

- किसी एक आशा से सेप्सिस (जन्तुदोष) की परिभाषा बताने को कहें और पूछें कि इसका निदान और इलाज क्यों आवश्यक है (*सेप्सिस (जन्तुदोष) एक प्रकार का संक्रमण है। हमारे देश के गाँवों में नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) होना आम बात है और यदि इसका शीघ्र ही इलाज न किया जाए तो शिशु की मौत भी हो सकती है।*)
- आशाओं से सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान के लिए सात (7) मापदण्ड (लक्षण) बताने को कहें।
- पूछें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान कैसे किया जाता है? (नवजात शिशु में एक साथ 2 लक्षणों का पाया जाना)
- सभी आशाओं से पूछें कि शिशु में यदि एक लक्षण हो तो वे क्या करें? (अगले तीन दिन तक हररोज शिशु के घर का दौरा करें। स्तनपान की समस्या, शिशु का शरीर ठंडा पड़ने की समस्या, टुंडी में मवाद या बुखार हो तो इनके उपचार के बारे में जैसे आशाओं ने पढ़ा है वैसेही उपचार करें।)
- सभी आशाओं से पूछें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम कैसे की जा सकती है? (स्वच्छ प्रसव, हाथ धोने, स्तनपान कराने, शिशु को गर्म रखने, स्वच्छ कपड़ों के प्रयोग, और संक्रमित (बीमार) लोगों को दूर रखने से)
- कुछ गलतियाँ हो तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बताना कि सेप्सिस (जन्तुदोष) क्या है, यह कैसे होता है और इससे क्या खतरे है	प्रश्न–उत्तर	–
नवजात शिशु में सेप्सिस का निदान करना।	केस प्रस्तुति	सभी आशाओं व्दारा समूह में हल की गई केस प्रस्तुती
बताना कि सेप्सिस (जन्तुदोष) होने से कैसे रोका जा सकता है	चर्चा/केस प्रस्तुति	–

नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) संबंधी जानकारी

परिभाषा : सेप्सिस (जन्तुदोष) एक प्रकार का संक्रमण है।
नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) फेफड़े, मस्तिष्क अथवा खून का गंभीर संक्रमण हैं।

सेप्सिस (जन्तुदोष) सामान्यतया कितने बच्चों को होता है और कितना गंभीर रोग है ?

भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्रों में 10 में से 1 नवजात शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) हो जाता है।
जन्म के बाद पहले महीने में सेप्सिस (जन्तुदोष) होना बहुत खतरनाक है और इससे शिशु की मौत भी हो सकती है।
इलाज के अभाव में सेप्सिस (जन्तुदोष) से पीड़ित अधिकांश शिशु मर जाते हैं।
इलाज के बाद अधिकांश जीवित रहते हैं और उनका विकास/वृध्दि सामान्य रूप से होते है।

नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) के कारण

1) माँ को गर्भावस्था अथवा प्रसव के समय संक्रमण हुआ हो।
2) अस्वच्छता पूर्वक कराए गए प्रसव से (जिसमें हाथ गन्दे रहे हों, दाई ने माँ के अन्दरूनी हिस्सों में हाथ डाले हों, गन्दे ब्लेड और नाल बाँधने की डोरी का प्रयोग किया गया हो,) माँ/बच्चे को संक्रमण हो सकता है।
3) अस्वच्छतापूर्वक काटी गई नाल से या नाल पर उल्टी–सीधी चीजें लगाने से नाल में संक्रमण हो जाता है।
4) शिशु कमजोर, समय से पूर्व जन्मा या जन्म के समय कम वज़न का हो (2000 ग्राम से कम)।
5) स्तनपान शीघ्रता से जन्म के तुरंत बाद शुरू न कराने तथा केवल स्तनपान न कराने जैसी स्तनपान की गलत विधियोंसे शिशु कमजोर हो जाता है।
6) प्रसव के बाद ठंडा पड़ जाने से, शिशु कमज़ोर हो जाता है।
7) संक्रमित व्यक्ति – माँ, परिवार के अन्य सदस्य, दाई, आशा अथवा देखने आने वाले अन्य लोगों के सम्पर्क में आने से भी शिशु को संक्रमण हो सकता है।

सेप्सिस से बचाव

सेप्सिस (जन्तुदोष) को इन विधियों के इस्तेमाल से रोका जा सकता है :

✓ स्वच्छतापूर्वक काम करने से

कई बार हाथ धोएँ

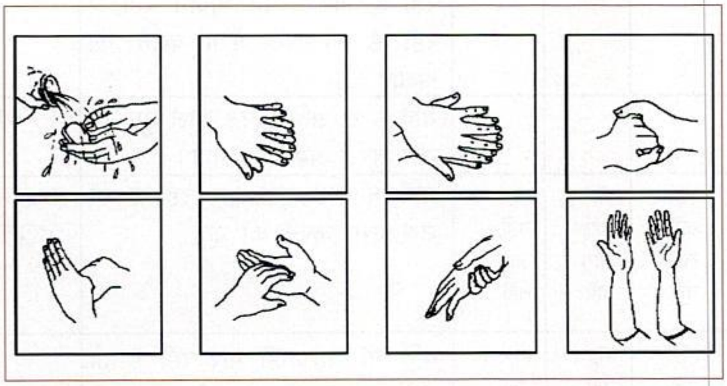

प्रसव के समय स्वच्छ ब्लेड

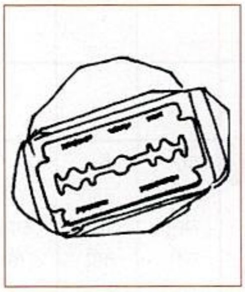

स्वच्छ कपड़ों का प्रयोग

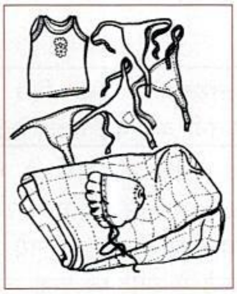

✓ शिशु को गर्म रखें (ठंडे मौसम में)

✓ स्तनपान (जल्दी शुरू कराएँ और शिशु के माँगने पर/कई बार दें)

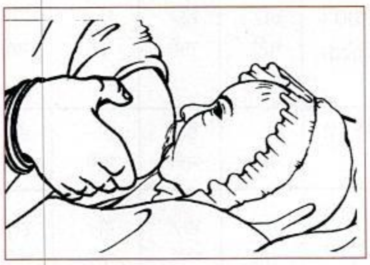

✓ नाल को साफ सूखा रखें

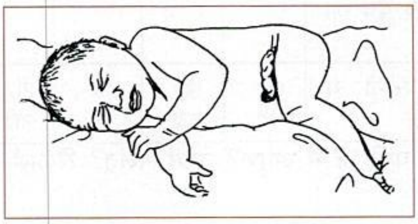

घरों का दौराः फॉर्म – माँ तथा नवजात शिशु की जाँच

पूछें / जॉच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
	2रा ____	3रा ____	7वा ____	15वा ____	28वा ____	42वा ____		
(क) माँ से पूछना								कार्य किया?
मॉ 24 घंटे में कितनी बार भरपेट भोजन ले रही है							यदि मॉ 4 से कम बार भोजन ले रही है और भरपेट भोजन नहीं ले रही है तो उसे ऐसा करने की सलाह दें।	हॉं / नहीं
रक्तस्त्राव : एक दिन में कितनी बार पैड बदलती है?							यदि 5 से अधिक पैड़ गीले हुए, तो उसे तुरंत अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
क्या शिशु को सर्दी मे गर्म रखा गया (मॉ के पास रखा गया, कपड़े पहनाये गये या कपड़े मे लपेटकर रखा गया)	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	यदि मॉ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉं / नहीं /लागु नहीं
क्या शिशु को लगातार दूध पिलाया जा रहा है (जब शिशु को भूख लगे या 24 घंटे मे 7 से 8 बार)	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि मॉ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉं / नहीं
क्या शिशु लगातार रो रहा है अथवा दिन मे 6 से कम बार पेशाब कर रहा है?	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	मॉ को कहे कि शिशु को हर 2 घंटे बाद दूध पिलाए	हॉं / नहीं
(ख) माँ की जॉच								
बुखार : नापें और लिखें							यदि मॉ को 102^0 फै (38.9^0 सें) तक बुखार है तो पैरासिटेमॉल दें। यदि बुखार 102^0 फै (38.9^0 सें) से अधिक है, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
बदबूदार स्त्राव के साथ 100^0 फै (37.8^0 सें) से अधिक बुखार	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
मॉ उल्टा–सीधा बोलती है या उसे दौरे पड़ते हैं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
प्रसव के बाद मॉ को दूध नहीं उतरा है या उसे ऐसा लग रहा है कि कम दूध आ रहा है	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉं / नहीं
कटे–फटे चूचुक/स्तनों में दर्द या/और सूजन	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉं / नहीं

सुपरवाईजर की टिप्पणीः काम अधूरा? काम गलत? रिकार्ड गलत?

पूछें / जॉच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन 2रा ____	 3रा ____	 7वा ____	 15वा ____	 28वा ____	 42वा ____	आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
(ग) शिशु की जाँच								
ऑखों मे सूजन अथवा मवाद	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	यदि हॉ तो मॉ को कहें कि टेट्रासायक्लिन मल्हम 5 दिन तक दिन मे 2 बार शिशु की ऑखों में डालें	हॉ / नहीं
वज़न मापें और लिखें। 7, 15, 28 और 42 दिनों पर								हॉ / नहीं
तापमान मापें और लिखें।								हॉ / नहीं
त्वचा मवाद भरे फोड़ेः	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	जी. वी. पेन्ट लगाएँ तथा देखें कि सेप्सिस के लक्षण तो नहीं हैं।	हॉ / नहीं
त्वचा की मोडों में कटना या लाली (जॉघ/बगल/कुल्हे)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	शिशु की त्वचा साफ तथा सूखी रखें। टैल्कम पावडर या जी. वी. पेंट लगाएँ।	हॉ / नहीं
ऑखें या त्वचा का पीलापन (पीलिया)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि जन्म के पहले दिन ही पीलिया है, या यह 14 दिन से अधिक बना रहता है तो यह खतरनाक है। शिशु को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं

दूसरे दिन मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दें हॉ/नहीं	दूसरे दिन खतरे के लक्षण वाला जानकारी प्रपत्र माता पिता को दें हॉ/नहीं

(घ) सेप्सिस का निदानः सेप्सिस के लक्षणों की जाँच करें। यदि लक्षण दिखाई देता है तो खाने मे सही (✓) का निशान लगाएँ। यदि लक्षण नहीं है तो गलत (X) का निशान लगाएँ।

पहले दिन वाला खाना शिशु की पहली जाँच वाले फॉर्म से लिखें।

पूछें / जाँच करें		दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे
आशा के दौरे की तारीख		2रा ____	3रा ____	7वा ____	15वा ____	28वा ____	42वा ____		
	1ला दिन							पहले तीन लक्षण सेप्सिस निदान के मापदंड तभी माने जाएँगे यदि वे पहले न हो और फिर नये से दिखाई दें।	हाँ / नहीं
1.सारे हाथ पैर लुंज–पुंज									
2.स्तनपान कम/बंद									
3.रोना धीमे/बंद									
4.पेट फूला हुआ अथवा माँ कहे कि शिशु बार बार उल्टी कर रहा है								यदि एक ही दिन में कम से कम दो लक्षण दिखाई दें तो सेप्सिस का निदान करें और सेप्सिस का उपचार करें (सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग करें)	हाँ / नहीं
5.माँ कहती है कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है अथवा उसका तापमान 99^{0}फै. (37.2^{0}से.) से अधिक है								यदि कोई भी लक्षण न दिखे तो माँ को ध्यान रखने को कहें। माँ	हाँ / नहीं
6.छाती अंदर को धँसी हुई								से कहे कि एक भी लक्षण दिखाई दें तो तुरंत आशा को बुलाएँ।	
7.टुंडी पर मवाद									हाँ / नहीं
उपस्थित कुल लक्षणों की संख्या								यदि एक लक्षण दिखाई दें तो रोज दौरा करें और देखें कि	हाँ / नहीं
क्या शिशु को सेप्सिस है?		हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	दूसरा लक्षण तो नहीं आया। इस दौरान एक लक्षण का उपचार करें। (नीचे बाक्स देखें)	हाँ / नहीं

सेप्सिस उपचार का कौनसा प्रबंध परिवार के लोगों ने स्वीकार किया? (सही उत्तर पर गोला करें।)

उपचार न करना   अस्पताल भेजना   आशा व्दारा उपचार   अन्य उपचार

यदि आशा उपचार करती है तो, सेप्सिस उपचार फॉर्म (पूरक फॉर्म 5 का प्रयोग करें।)

- स्तनपान की समस्या के लिए स्तनपान समस्या का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 1)
- सिर्फ छाती अंदर को धँसती हो तो कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें।
- टुंडी पर मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाएँ।
- शिशु का शरीर ठंडा पड़ रहा हो तो शरीर ठंडा पड़ने का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 2)।
- बुखार हो तो बुखार का उपचार करें।

यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2300 ग्राम से कम हो अथवा जन्म के समय के वजन से 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो दूसरे महीने में भी नियमित रूप से शिशु के घर के दौरे जारी रखें। अपना निरिक्षण घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना (पूरक फॉर्म 4) में लिखें।

घरों का दौराः फॉर्म – माँ तथा नवजात शिशु की जाँच

पूछें / जाँच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____		
(क) माँ से पूछना								कार्य किया?
माँ 24 घंटे में कितनी बार भरपेट भोजन ले रही है							यदि माँ 4 से कम बार भोजन ले रही है और भरपेट भोजन नहीं ले रही है तो उसे ऐसा करने की सलाह दें।	हॉं / नहीं
रक्तस्त्राव : एक दिन में कितनी बार पैड बदलती है?							यदि 5 से अधिक पैड़ गीले हुए, तो उसे तुरंत अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
क्या शिशु को सर्दी मे गर्म रखा गया (मॉं के पास रखा गया, कपड़े पहनाये गये या कपड़े मे लपेटकर रखा गया)	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	हॉं/ नहीं/ लागु नहीं	यदि मॉं यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉं / नहीं /लागु नहीं
क्या शिशु को लगातार दूध पिलाया जा रहा है (जब शिशु को भूख लगे या 24 घंटे मे 7 से 8 बार)	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि मॉं यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉं / नहीं
क्या शिशु लगातार रो रहा है अथवा दिन मे 6 से कम बार पेशाब कर रहा है?	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	मॉं को कहे कि शिशु को हर 2 घंटे बाद दूध पिलाए	हॉं / नहीं
(ख) मॉं की जॉंच								
बुखार : नापें और लिखें							यदि मॉं को 102^0 फै (38.9^0 सें) तक बुखार है तो पैरासिटेमॉल दें। यदि बुखार 102^0 फै (38.9^0 सें) से अधिक है, तो मॉं को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
बदबूदार स्त्राव के साथ 100^0 फै (37.8^0 सें) से अधिक बुखार	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो मॉं को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
मॉं उल्टा–सीधा बोलती है या उसे दौरे पड़ते हैं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो मॉं को अस्पताल भेजें।	हॉं / नहीं
प्रसव के बाद मॉं को दूध नहीं उतरा है या उसे ऐसा लग रहा है कि कम दूध आ रहा है	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉं / नहीं
कटे–फटे चूचुक/स्तनों में दर्द या/और सूजन	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	हॉं/ नहीं	यदि हॉं, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉं / नहीं

सुपरवाईजर की टिप्पणीः काम अधूरा? काम गलत? रिकार्ड गलत?

पूछें / जाँच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
	अन्य ___	अन्य ___	अन्य ___	अन्य ___	अन्य ___	अन्य ___		
(ग) शिशु की जाँच								
ऑखों मे सूजन अथवा मवाद	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	यदि हॉ तो मॉ को कहें कि टेट्रासायक्लिन मल्हम 5 दिन तक दिन मे 2 बार शिशु की ऑखों में डालें	हॉ / नहीं
वज़न मापें और लिखें। 7, 15, 28 और 42 दिनों पर								हॉ / नहीं
तापमान मापें और लिखें।								हॉ / नहीं
त्वचा मवाद भरे फोड़ेः	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	जी. वी. पेन्ट लगाऍ तथा देखें कि सेप्सिस के लक्षण तो नहीं हैं।	हॉ / नहीं
त्वचा की मोडों में कटना या लाली (जॉघ/बगल/कुल्हे)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	शिशु की त्वचा साफ तथा सूखी रखें। टैल्कम पावडर या जी. वी. पेंट लगाऍ।	हॉ / नहीं
ऑखें या त्वचा का पीलापन (पीलिया)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि जन्म के पहले दिन ही पीलिया है, या यह 14 दिन से अधिक बना रहता है तो यह खतरनाक है। शिशु को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं

दूसरे दिन मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दें हॉ/नहीं	दूसरे दिन खतरे के लक्षण वाला जानकारी प्रपत्र माता पिता को दें हॉ/नहीं

(घ) सेप्सिस का निदानः सेप्सिस के लक्षणों की जॉंच करें। यदि लक्षण दिखाई देता है तो खाने मे सही (✓) का निशान लगाएँ। यदि लक्षण नहीं है तो गलत (X) का निशान लगाएँ।

पहले दिन वाला खाना शिशु की पहली जॉंच वाले फॉर्म से लिखें।

पूछें / जॉंच करें आशा के दौरे की तारीख		दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे
		अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____		
	1ला दिन							पहले तीन लक्षण सेप्सिस निदान के मापदंड तभी माने जाएँगे यदि वे पहले न हो और फिर नये से दिखाई दें।	हॉं / नहीं
1.सारे हाथ पैर लुंज–पुंज									
2.स्तनपान कम/बंद									
3.रोना धीमे/बंद									
4.पेट फूला हुआ अथवा मॉं कहे कि शिशु बार बार उल्टी कर रहा है								यदि एक ही दिन में कम से कम दो लक्षण दिखाई दें तो सेप्सिस का निदान करें और सेप्सिस का उपचार करें (सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग करें)	हॉं / नहीं
5.मॉं कहती है कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है अथवा उसका तापमान 99^0फै. (37.2^0से.) से अधिक है								यदि कोई भी लक्षण न दिखे तो मॉं को ध्यान रखने को कहें। मॉं से कहे कि एक भी लक्षण दिखाई दें तो तुरंत आशा को बुलाएँ।	हॉं / नहीं
6.छाती अंदर को धँसी हुई									
7.टुंडी पर मवाद									हॉं / नहीं
उपस्थित कुल लक्षणों की संख्या								यदि एक लक्षण दिखाई दें तो रोज दौरा करें और देखें कि दूसरा लक्षण तो नहीं आया। इस दौरान एक लक्षण का उपचार करें। (नीचे बाक्स देखें)	हॉं / नहीं
क्या शिशु को सेप्सिस है?		हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं	हॉं / नहीं		हॉं / नहीं

सेप्सिस उपचार का कौनसा प्रबंध परिवार के लोगों ने स्वीकार किया? (सही उत्तर पर गोला करें।)

उपचार न करना **अस्पताल भेजना** **आशा व्दारा उपचार** **अन्य उपचार**

यदि आशा उपचार करती है तो, सेप्सिस उपचार फॉर्म (पूरक फॉर्म 5 का प्रयोग करें।)

- स्तनपान की समस्या के लिए स्तनपान समस्या का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 1)
- सिर्फ छाती अंदर को धँसती हो तो कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें।
- टुंडी पर मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाएँ।
- शिशु का शरीर ठंडा पड़ रहा हो तो शरीर ठंडा पड़ने का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 2)।
- बुखार हो तो बुखार का उपचार करें।

यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2300 ग्राम से कम हो अथवा जन्म के समय के वजन से 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो दूसरे महीने में भी नियमित रूप से शिशु के घर के दौरे जारी रखें। अपना निरिक्षण घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना (पूरक फॉर्म 4) में लिखें।

कक्षा में केस प्रस्तुति

1. बसंती ने 17 अक्तूबर को सुबह 8 बजकर 30 मिनट ओर 45 सेकंड पर एक लड़की को जन्म दिया। प्रसव के समय बसंती का 9 महीने 7 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु जन्म के समय ज़ोर से रोया और 30 से. पर ठीक से साँस ले रहा था। उसका वज़न 2 कि.ग्रा. 800 ग्रा. था। आशा ने प्रसव के तुरंत बाद उसे माँ के स्तनों से लगाया और उसने ठीक से दूध पिया।

   क्या शिशु अधिक खतरे वाला है ? *नहीं; वह समय पूरा होने पर जन्मा है, उसका वज़न ठीक है, वह ठीक से रोया, साँस ठीक से चल रही थी और ठीक प्रकार से स्तनपान कर रहा था।*

   सोलवें दिन परिवार वालों ने आशा को घर बुलाया।

   माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ गया है। आशा ने उसका तापमान लिया जो 93.5°फै. (34.2° सें) था। जाँच करने पर मालूम हुआ कि उसकी छाती अंदर को धँसी थी।

   क्या शिशु को सेप्सिस हो गया है ? *हाँ*

   यदि हाँ, तो उसमें क्या लक्षण दिखाई दिए : *ठंडा पड़ना (हाइपोथर्मिया) और छाती अंदर को धँसना*

   यदि नहीं, तो क्यों : ______________________________

2. <u>शकीला</u> ने एक लड़के को जन्म दिया। उसका वज़न 2.2 कि.ग्रा. था और जन्म के समय वह साँस ठीक से नहीं ले पा रहा था। उपाय करने से उसकी साँस ठीक चलने लगी। प्रसव के तुरंत बाद आशा ने शकीला को स्तनपान कराने में मदद की।

   पहले से ही शिशु ठीक से स्तनपान नहीं कर पा रहा था।

   अगले 3 दिनों तक आशा ने शिशु को स्तनों से लगाने और माँ–बच्चे को सही स्थिति में रखने तथा प्रोत्साहित करने की कोशिश की। दूसरे दिन आशाने नाल पकी हुई देखी। चौथे दिन शिशु ठीक से स्तनपान करने लगा।

   क्या उसे सेप्सिस (जन्तुदोष) हुआ है ? *नहीं*

   यदि हाँ तो क्यों ? यदि नही तो क्यों ?

   नहीं; यद्यपि दूसरे दिन शिशु की नाल पक गई थी पर उसे स्तनपान करने में जन्म से ही कठिनाई हो रही थी अतः उसे लक्षण नहीं माना जाता। दूसरे दिन केवल एक लक्षण था (नाल पकी थी)।

   दूसरे दिन आप क्या करेंगी ?

   नाल को साफ कपड़े और पानी से साफ करके उस पर जेन्शन वायलेट पेंट (नीली दवा) लगायी जानी चाहिए। माँ को बतायें कि दिन में 2 बार नाल पर जेन्शन वायलेट पेंट (नीली दवा) लगाएँ।

   अगले दिन नाल की जाँच करें

केस प्रस्तुति

1. लीला को 30 नवम्बर को सुबह 8:20 पर बच्चा पैदा हुआ। प्रसव के समय 8 माह 5 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु का वज़न 1 कि.ग्रा 950 ग्रा. था। शिशु पहले 6 दिनों तक बिल्कुल ठीक था।

शिशु जन्म के समय ठीक था या खतरे वाला ?

____

क्यों ?

____

जन्म के बाद 28 दिनों तक आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?

____

प्रसव के समय आप माँ को उसकी घरेलू देखभाल के बारे में क्या–क्या बताएँगी ?

1. ______________________________
2. ______________________________
3. ______________________________
4. ______________________________
5. ______________________________

सातवें दिन जब आशा वहाँ गई, उसने पाया कि शिशु ने स्तनपान करना बंद कर दिया है और उसका पेट फूला हुआ है। उसकी साँस तो ठीक चल रही थी, पर उसका रोना कमजोर था।

शिशु में कौनसे लक्षण मौजूद है ?

____

आपने शिशु के रोग का क्या निदान किया ?

____

आशा का नाम ______________	तारीख ______________
प्रशिक्षक का नाम ______________	कुल अंक ______________
ब्लॉक ______________	

2. रामप्यारी ने जन्म के अनुमानित समय से एक हफ्ते बाद बेटे को जन्म दिया। उसका वज़न 2.9 कि. ग्रा. था। वह तन्दुरुस्त और स्वस्थ था। आशा ने रामप्यारी को उसे स्तनपान कराने में मदद की और एक घंटे बाद उसकी जाँच की। दसवें दिन माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ रहा है। उसका तापमान 93°फै. (33.9°सें) पाया गया। वह बहुत सो रहा था, पर दूध पी रहा था और रो भी रहा था। उसका पेट मुलायम था और हाथ–पैर भी ठीक थे। उसकी नाल ठीक हो चुकी थी और वह ठीक से साँस ले रहा था, छाती अंदर धँसी नहीं थी।

दसवें दिन शिशु का तापमान कैसा था? सामान्य / सामान्य से कम

क्या उसे सेप्सिस हुआ है ? हाँ / नहीं

शिशु में बिमारी के कौनसे लक्षण मौजूद है?

____

अगले दिन आप उसे फिर देखने गई। तब उसका तापमान ठीक था।

शिशु को गर्मी पहुँचाने के लिए आप क्या करेंगी?

____

____

____

____

____

3. ताराबाई को चौथा बच्चा होने वाला था। शिशु का जन्म 7 महीने 27 दिन के गर्भकाल पूरा होने पर हुआ और उसका वज़न 1.65 कि.ग्रा. था। शिशु 14 दिन तक स्तनपान नहीं कर पा रहा था। पन्द्रहवें दिन उसने स्तनपान किया।

शिशु जन्म के समय कैसा था ? अधिक खतरे वाला / सामान्य

क्यों ?

____

____

पहले महीने में आप उसे देखने कितनी बार जाएँगी ? 10 / 13 / 5

पहले दिन आप उसके माता–पिता को क्या सलाह देंगी ?

1. ____________________

2. ____________________

3. ____________________

4. ____________________

5. ____________________

सत्रहवें दिन शिशु को दो बार उल्टी हुई पर उसने स्तनपान करना जारी रखा। वह ठंडा नहीं पड़ा था और ठीक से रो भी रहा था। अठ्ठाइसवें दिन उसका वज़न 2 किलो 250 ग्राम हो गया था।

शिशु के वजन के आधारपर आप दूसरे महिने में उसे कैसा मानेगी? सामान्य / अधिक खतरेवाला

पैतालीसवें दिन शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज थे और माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ गया है। आपने मापने पर उसका तापमान 94°फै. (34.4°सें) पाया।

शिशु में कौनसे लक्षण मौजूद है?

____

____

शिशु को क्या बिमारी हैं?

____

किस दिन उसे ऐसा हुआ ?

____

केस प्रस्तुति – उत्तर

1. लीला को 30 नवम्बर को सुबह 8:20 पर बच्चा पैदा हुआ। प्रसव के समय 8 माह 5 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु का वज़न 1 कि.ग्रा 950 ग्रा. था। शिशु पहले 6 दिनों तक बिल्कुल ठीक था।

   शिशु जन्म के समय ठीक था या खतरे वाला ? खतरे वाला

   क्यों ? क्यों कि, समय से पूर्व जन्मा (8 महीने 14 दिन के गर्भकाल से कम में) और कम वज़न का (2 कि.ग्रा. से कम)

   जन्म के बाद 28 दिनों तक आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ? 13

   प्रसव के समय आप माँ को उसकी घरेलू देखभाल के बारे में क्या–क्या बताएँगी ?

   1. शिशु को गर्म थैली के प्रयोग से और माँ के पास लिटाकर और/अथवा माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना
   2. 2–2 घंटें में स्तनपान कराना
   3. नहलाना नहीं
   4. हर बार शिशु को छूने से पहले हाथ धोना
   5. खतरे वाले लक्षण देखते ही तुरंत आशाको बुलाना

   सातवें दिन जब आशावहाँ गई, उसने पाया कि शिशु ने स्तनपान करना बंद कर दिया है और उसका पेट फूला हुआ है। उसकी साँस तो ठीक चल रही थी, पर उसका रोना कमज़ोर था।

   शिशु में कौनसे लक्षण मौजूद है ? स्तनपान बंद, पेट फुला हुआ, रोना कमजोर

   आपने शिशु के रोग का क्या निदान किया ? सेप्सिस

2. रामप्यारी ने जन्म के अनुमानित समय से एक हफ्ते बाद बेटे को जन्म दिया। उसका वज़न 2.9 कि. ग्रा. था। वह तन्दुरुस्त और स्वस्थ था। आशा ने रामप्यारी को उसे स्तनपान कराने में मदद की और एक घंटे बाद उसकी जाँच की। दसवें दिन माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ रहा है। उसका तापमान 93°फै. (33.9°सें) पाया गया। वह बहुत सो रहा था, पर दूध पी रहा था और रो भी रहा था। उसका पेट मुलायम था और हाथ–पैर भी ठीक थे। उसकी नाल ठीक हो चुकी थी और वह ठीक से साँस ले रहा था, छाती अंदर धँसी नहीं थी।

   दसवें दिन शिशु का तापमान कैसा था? **सामान्य** / सामान्य से कम

   क्या उसे सेप्सिस हुआ है ? **हाँ** / नहीं

   शिशु में कौनसे बिमारी के लक्षण मौजूद है?

   माँ कहती है कि शिशु का शरीर ठंड़ा है, उसका तापमान 93°फै. है

   अगले दिन आप उसे फिर देखने गई। तब उसका तापमान ठीक था।

शिशु को गर्मी पहुँचाने के लिए आप क्या क्या कर सकती है?

- कमरे का तापमान बढ़ाना
- गीले या ठंडे कम्बल/कपड़े हटाना
- शिशु को माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना।
- शिशु की पीठ या पेट पर गर्म कपड़ा (इतना गर्म न हो कि जल जाए) रखें। कपड़ा ठंडा होते ही, बदलकर दूसरा गर्म कपड़ा उसके ऊपर रखें। ऐसा तब तक करते रहें जब तक कि शिशु का तापमान सामान्य न हो जाए।
- कपड़े पहनाना, गर्म थैली में रखना, टोपी पहनाना और माँ के पास लिटाना।

3. ताराबाई को चौथा बच्चा होने वाला था। शिशु का जन्म 7 महीने 27 दिन के गर्भकाल पूरा होने पर हुआ और उसका वज़न 1.65 कि.ग्रा. था। शिशु 14 दिन तक स्तनपान नहीं कर पा रहा था। पन्द्रहवें दिन उसने स्तनपान किया।

शिशु जन्म के समय कैसा था ? अधिक खतरे वाला / **सामान्य**

क्यों ? समय से पूर्व जन्म, कम वज़न का, ठीक से स्तनपान नहीं कर पा रहा।

पहले महीने में आप उसे देखने कितनी बार जाएँगी ? 10 / 13 / 5

पहले दिन आप उसके माता–पिता को क्या सलाह देंगी ?

1. गर्म थैली के प्रयोग से और माँ के पास लिटाकर और/या माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर शिशु को गर्म रखें।
2. स्तनों को दबाकर दूध निकालें और 2–2 घंटे पर शिशु को चम्मच से दूध पिलाएँ जब तक कि वह ठीक से स्तनपान न करने लगे (उसे प्रतिदिन स्तनों से लगाने की कोशिश करें)
3. उसे नहलाए नहीं
4. हर बार शिशु को छूने से पहले हाथ धोएँ।
5. खतरे वाले लक्षण देखते ही तुरंत आशा को बुलाएँ यदि

सत्रहवें दिन शिशु को दो बार उल्टी हुई पर उसने स्तनपान करना जारी रखा। वह ठंडा नहीं पड़ा था और ठीक से रो भी रहा था। अठ्ठाइसवें दिन उसका वज़न 2 किलो 250 ग्राम हो गया था।

शिशु के वजन के आधारपर आप दूसरे महिने में उसे कैसा मानेगी?
सामान्य / **अधिक खतरेवाला**

पैतालीसवें दिन शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज थे और माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ गया है। आपने मापने पर उसका तापमान 94°फै. (34.4°सें) पाया।

शिशु में कौनसे लक्षण मौजूद है?

हाथ पैर लुंज पुंज थे और माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ गया है मापने पर तापमान 94°फै.

शिशु को क्या बिमारी हैं? सेप्सिस

किस दिन उसे ऐसा हुआ ? पैतालीसवें दिन

मोड्यूल 13: सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार

सत्र 2 : नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचार

दिवस : 3

समयावधि : 1 घं. 30 मि.

प्रयोजन

आशाओं को नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) के उपचार की जानकारी और योग्यता हासिल करवाना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. मौखिक एन्टीबायोटिक का उचित खुराक तय करना।
2. शिशु को मुँह से एन्टीबायोटिक (कोट्रिमॉक्सेजोल) देना।
3. माता–पिता को शिशु की बीमारी के बारे में समझाने, उनके उपचार के लिए स्वीकृति लेने और उन्हें घरेलू देखभाल के बारे में सलाह देने के लिए बातचीत की सफल विधियों का प्रयोग एवं प्रदर्शन।

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1: पूर्व सूचना देकर स्वीकृति लेने के लिये फॉर्म
- अभ्यासपत्र 2: केस अध्ययन
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर
- अध्ययनपत्र 1: खतरे के लक्षण: जानकारी पत्र
- कोट्रिमॉक्सेजोल सिरप की बोतलें
- 5 मि.ली. का चम्मच

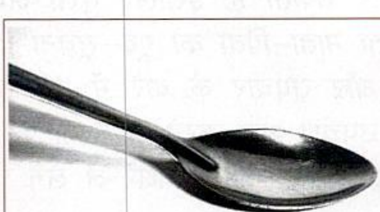

5 मि.ली. का चम्मच

कोट्रिमॉक्सेजोल सिरप की बोतल

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अभ्यासपत्र तथा अध्ययनपत्र की पर्याप्त प्रतियाँ बना लें।
- कोट्रिमॉक्सेजोल सिरप की बोतलें तथा चम्मच तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवं चर्चा</u> : सेप्सिस (जन्तुदोष) की देखभाल (20 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. पिछले सत्र को दोहराते हुए आशाओं से पूछें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) क्या है और जन्म के पहले महीने में इसका निदान कैसे किया जाता है। जिन्होंने सही बताया, उनकी प्रशंसा करें और यदि पूरी बात नहीं बताई गई हो तो अन्य आशाओं से पूछकर पूरी जानकारी समूह को दें।
2. बताएँ कि नवजात शिशु के सेप्सिस (जन्तुदोष) की देखभाल के 4 भाग हैं :
   - शिशु की बीमारी के बारे में माता–पिता को बताना और शिशु को अस्पताल ले जाने की सलाह देना।

यदि वे उसे अस्पताल ले जाना नहीं चाहते, तो शिशु की घर पर ही देखभाल की स्वीकृति लेना।

- उपचार करना (दवा की सही खुराक उतने दिनों तक देना जितना कि आवश्यक हो।)
- माता–पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में सलाह देना और दिन में दो बार उसे घर पर देखने जाना। देखना कि उसकी ठीक–ठाक देखभाल की जा रही है।
- आवश्यक फॉर्म भरना और लेखा–जोखा रखना।

इस सत्र में हम पहले तीन भागों – **पूर्व सूचना देकर स्वीकृति लेना, कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार करना और घरेलू देखभाल करना,** के बारे में चर्चा करेंगे। फॉर्मों, उनको भरने के बारे में जानकारी, और अभ्यास अगले सत्र में कराया जाएगा।

3. आशाओं से **'पूर्व सूचना देकर स्वीकृति लेने'** के बारे में पूछें। (*इसका अर्थ है बीमारी की गंभीरता के बारे में माता–पिता को बताना और उन्हें, शिशु को अस्पताल ले जाने की सलाह देना। यदि वे शिशु को अस्पताल नहीं ले जा सकते या शिशु को अस्पताल ले जाना नहीं चाहते हो तो इसके संभावित खतरों के बारे में जानकारी देना और आशा द्वारा घर पर ही उपचार के लिए उनकी स्वीकृति लेना।)* *ऐसा करना क्यों आवश्यक है ? (जिससे कि माता–पिता किए जाने वाले उपचार के लाभ और खतरे, दोनों के बारे में समझ सकें, और अपनी इच्छा से इसके लिए तैयार हों)।*
4. सेप्सिस (जन्तुदोष) में माता–पिता को शिशु की हालत के बारे में बताना, और उपचार के लिए उनकी लिखित स्वीकृति लेना क्यों आवश्यक है ? आशाओं को इस बारे में आपस में विचार–विमर्श करने का पूरा मौका दें। उनके उत्तर सुनें। यदि आशा ठीक से नहीं बता पा रही हों, तो उन्हें बताएँ कि सेप्सिस (जन्तुदोष) से शिशु की जान को खतरा होता है और सेप्सिस (जन्तुदोष) के इलाज के लिए अस्पताल ले जाना आवश्यक है। *(आशा बीमारी की गंभीरता के बारे में माता–पिता को बताएँ: इससे शिशु शिघ्र मर सकता है, इसलिए तुरंत अस्पताल ले जाने की सलाह दें। यदि वे अस्पताल न ले जाना चाहें, तो माता–पिता को पूर्व–सूचना देकर, स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवा ले और उन्हें खतरों और उपचार के बारे में पूरी तरह समझाकर शिशु की चिकित्सा घर पर ही करें)।*
5. याद रहे कि उपचार शुरू करने से पहले पूर्व सूचना देकर स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर माता या पिता अथवा अन्य अभिभावक के हस्ताक्षर ले लेने चाहिएँ। उन्हें यह फॉर्म दिखाएँ। सत्र 3 में उन्हें इसे भरने का अभ्यास करवाया जाएगा।
6. **सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचारः** नवजात शिशु में सेप्सिस (जन्तुदोष) के उपचार के लिये कोट्रिमॉक्सेजोल और जेन्टामाइसिन का प्रयोग किया जाता है। कोट्रिमॉक्सेजोल खाने की दवाई है। जबकि जेन्टामाइसिन एक एन्टीबायोटिक है जिसकी सुई लगाई जाती है। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में, आशा कोट्रिमॉक्सेजोल से सेप्सिस का उपचार करना सीखेंगी।

   घरोंका दौरा फॉर्म एक ऐसा साधन है जो आशाओं को सेप्सिस का सही निदान करने में मदद करेगा। इससे यह सुनिश्चित होगा कि जिन बच्चों को सेप्सिस है और उपचार की आवश्यकता है उन्हेंही कोट्रिमॉक्सेजोल दवा मिलें।
7. बतायें कि कोट्रिमॉक्सेजोल द्वारा इलाज कितने दिन चलेगा यह गर्भकाल के आधार पर निश्चित किया जाता है। नवजात शिशुओं के लिए खुराक है – 1/4 चम्मच कोट्रिमॉक्सेजोल दिन में दो बार।
   - समय से पूर्व जन्मे शिशुओं को दवा 10 दिन तक दी जानी चाहिए।
   - ठीक समय पर जन्मे शिशुओं को दवा 7 दिन तक दी जानी चाहिए।

माता–पिता द्वारा लिखित स्वीकृति दिए जाने के तुरंत बाद पहली खुराक दे दें। कोट्रिमॉक्सेजोल की दवा आशा द्वारा (या माँ द्वारा ठीक तरह समझाकर) सुबह और शाम खिलानी है। बतायें कि आशा दिन में दो बार शिशु के घर पर जाकर तब तक देखभाल करे जब तक कि इलाज पूरा न हो जाए, अर्थात ठीक समय पर जन्मे शिशु के लिए 7 दिन तक और समय से पूर्व जन्मे शिशु के लिए 10 दिन तक।

8. बताएँ : आशा माता–पिता को अवश्य बताएँ कि जिस बच्चे का सेप्सिस (जन्तुदोष) का इलाज चल रहा है उसकी **घरेलू देखभाल** कैसे करनी है। अधिक खतरे वाले शिशुओं की घरेलू देखभाल के लिए भी इसी तरह की सलाह दी जाती है (अधिक खतरे वाले शिशुओं की स्वास्थ्य शिक्षा के लिए कार्ड का प्रयोग करें)। आशाओं से कहें कि वें अध्ययनपत्र 1 – 'खतरे के लक्षणः जानकारी पत्र' देखें। एक–एक करके खतरे के लक्षणों की समीक्षा करें। इस जानकारी पत्र को शिशु जन्म के बाद दूसरे दिन माता–पिता को देना हैं। आशा, खतरे के लक्षणः जानकारी पत्र की विषय–वस्तु, माता–पिता को समझाएँ। बताएँ कि शिशु में एक भी खतरे का लक्षण दिखें तो वे तुरंत आशा को बुलाएँ जो समयसे सही उपचार कर सकती है। संभव हो तो 'खतरे के लक्षणः जानकारी पत्र' नवजात शिशु के घर में दीवार पर चिपका दें या कैलेंडर की तरह टॉग दें, जिससे वह सब समय संदर्भ के लिए उपलब्ध हो। यह जानकारी पत्र माता–पिता के लिए प्रपत्र की पुस्तिका में दिया है।
9. सेप्सिस (जन्तुदोष) से ग्रस्त शिशुओं की हालत बहुत नाजुक होती है और जल्दी ही बिगड़ सकती है। उनकी जान जितनी दवाओं द्वारा बचाई जा सकती है, उतनी ही अच्छी तरह देखभाल करके जैसे, ठीक से स्तनपान कराकर, और गर्म रखकर। सुनिश्चित करें कि माँ–
   - शिशु को गर्म रखें।
   - थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान करायें (2–2 धंटे बाद)
   - सलाह नुसार दवा दें
   - शिशु को छूने से पहले हाथ धोएँ
   - यदि हालत बिगड़ने लगे, तो तुरंत आशा को बुलाएँ
   - अन्य संक्रमणों की देखभाल करें – जैसे नाभि (टुंडी), त्वचा, आँखें आदि।

<u>प्रदर्शन तथा अभ्यासः कोट्रिमॉक्सेजोल देना</u> (15 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. कोट्रिमॉक्सेजोल की खुराक के बारे में समझाएँ। इन्सुलिन सिरिंज से 1.25 मि लि पानी नापकर एक चम्मच में लें और आशाओं को दिखाएँ। इससे 1/4 चम्मच दवा कितनी होती है इसका आशाओं को सही अनुमान होगा। 1/4 चम्मच सिरप (दवा) नापकर शिशु को सुबह–शाम देना हैं। आशाओं को कोट्रिमॉक्सेजोल की खुराक नापने का अभ्यास करने दें (चम्मच का प्रयोग कर के न की सिरिंज का प्रयोग करके)।
2. प्रदर्शन के बाद किसी के कोई प्रश्न हों, तो उनका समाधान करें।

<u>केस अध्ययन – छोटे समूह</u> (20 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं के 3–4 के समूह बनाएँ। अभ्यासपत्र 2: केस अध्ययन, बाँटें।
2. समूह में आशाएँ ठीक खुराक, घर के दौरे पर जाने और घरेलू देखभाल की सलाह देने के बारे में मिलकर बातचीत करें।

3. सभी छोटे समूहों को मिला दें और पूरे समूह के सदस्यों के साथ उत्तरोंकी चर्चा करें।
4. प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

बड़े समूह में भूमिका नाटक (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रत्येक समूह से केस अध्ययन के आधार पर, (अथवा स्वयं के अनुभव पर आधारित) एक छोटी भूमिका नाटक प्रस्तुत करने को कहें। उस नाटक में बताया जाए कि माता–पिता को कैसे समझाया जाए कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है, उन्हें स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करना सिखाया जाए और शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में बताया जाए।
2. बातचीत की योग्यता में सुधार और दी जाने वाली जानकारी के बारे में रचनात्मक सलाह देते हुए भूमिका नाटक के बारे में चर्चा करें। यदि आशा बातचीत में अच्छी योग्यता का प्रदर्शन करें और जानकारी सही दें तो उनकी प्रशंसा करें।

सारांश : (30 मि.)

- एक आशा से पूछें कि पूर्व सूचना देकर लिखित स्वीकृति लेना क्यों आवश्यक है।
- सेप्सिस (जन्तुदोष) से ग्रस्त नवजात शिशु की समग्र देखभाल के बारे में बतायें – पूर्व सूचना देकर स्वीकृति लेना, उपचार के दौरान दो बार शिशु को देखने जाना, 7 से 10 दिन तक उपचार, माता–पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में सलाह, उचित फॉर्म भरना (अगले सत्र में बताया जाएगा)।
- कुछ गलतियाँ हों, तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
मौखिक एन्टीबायेटिक का उचित खुराक तय करना	केस अध्ययन	आशाओं ने समूहों में काम करते हुए लिखें केस अध्ययन के उत्तर
शिशु को मुँह से एन्टीबायोटिक (कोट्रिमॉक्सेजोल) देना।	प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी व्दारा कोट्रिमॉक्सेजोल की सही मात्रा मापने का प्रदर्शन।	आशाओं के अभ्यास का प्रशिक्षकों ने लिखा विवरण
माता–पिता को शिशु की बीमारी के बारे में समझाने, उनके उपचार के लिए स्वीकृति लेने और उन्हें घरेलू देखभाल के बारे में सलाह देने के लिए बातचीत की सफल विधियों का प्रयोग एवं प्रदर्शन।	भूमिका नाटक	आशाओं व्दारा किये गये भूमिका नाटक का प्रशिक्षक व्दारा किये गये निरिक्षण का विवरण

पूरक फॉर्म 5
आवश्यकतानुसार प्रयोग करें

सेप्सिस उपचार – पूर्व स्वीकृति फॉर्म

माँ का नाम ______________________ गाँव का नाम ______________

आशा का नाम ______________________ निदान की तारीख ______________

माँ अथवा पिता की स्वीकृति

मैं ______________________ निवासी ग्राम ______________________ को आशा ने बताया है कि मेरा नवजात शिशु गंभीर रूप से बीमार है और उसकी जान को खतरा है। आशा ने शिशु को अस्पताल ले जाने के लिये बताया है पर मैं शिशु को अस्पताल नहीं ले जा सकता या मेरी इच्छा नहीं हैं। इसलिए मैं आशा को शिशु का दवा से और सुई लगाकर उपचार करने की स्वीकृति देता/देती हूँ। मुझे जानकारी है कि शिशु गंभीर रूप से बीमार है और उपचार के दौरान उसकी मृत्यु भी हो सकती है। ऐसा होने पर मैं आशा को मृत्यु का उत्तरदाई नहीं ठहराऊँगा (गी)।

हस्ताक्षर/अंगूठे का निशान

____

केस अध्ययन

1. धन्नो को 30 नवम्बर को सुबह 8:20 पर बच्चा पैदा हुआ। प्रसव के समय 8 माह 5 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु का वज़न 1 कि. 950 ग्रा. था। शिशु पहले 6 दिनों तक बिल्कुल ठीक था। सातवें दिन जब आशा वहाँ गई, उसने पाया कि शिशु ने स्तनपान करना बंद कर दिया है और उसका पेट फूला हुआ है। उसकी साँस तो ठीक चल रही थी, पर उसका रोना कमज़ोर था। उसका वज़न 1 कि 900 ग्रा. था।

   आशा ने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया, क्योंकि शिशु ने दूध पीना बंद कर दिया था और उसका पेट फूला हुआ था।

   आप सबसे पहले क्या करेंगी ?

   ____

   शिशु का क्या उपचार किया जाएगा ? (कितनी खुराक/कितने दिन)

   ____

   ____

   आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?

   ____

   आप माता–पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में क्या बताएँगी ?

   1. ______________________________
   2. ______________________________
   3. ______________________________
   4. ______________________________

2. विमल ने जन्म के अनुमानित समय से 1 हफ्ते बाद शिशु को जन्म दिया। उसका वज़न 2.9 कि.ग्रा. था। वह तन्दुरुस्त और स्वस्थ था। आशा ने विमल को उसे स्तनपान कराने में मदद की और 1 घंटे पर उसकी जाँच की।

   दसवें दिन माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ रहा है। उसका तापमान 93° फै (33.9° सें) पाया गया। उसका वज़न 3 कि.ग्रा. था।

   वह दूध भी पी रहा था और रो भी रहा था, पर उसकी छाती अंदर को धँसी थी।

   उसका पेट मुलायम था और हाथ–पैर भी ठीक थे।

   उसकी नाल ठीक हो चुकी थी।

   आशा ने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

आप सबसे पहले क्या करेंगी।

____

आप क्या उपचार देंगी ? (और क्यों) :

____

____

____

जाने से पहले आप माता–पिता को क्या–क्या बताएँगी ?

____

____

____

आप कितनी बार शिशु को देखने जाएँगी ?

____

3. काजूबाई को चौथा बच्चा होने वाला था।
शिशु का जन्म 7 महीने 27 दिन के गर्भकाल पूरा होने पर हुआ और उसका वज़न 1.65 कि.ग्रा. था।
शिशु ने 14 दिन तक स्तनपान नहीं किया।
पन्द्रहवें दिन उसने स्तनपान किया।
सत्रहवें दिन शिशु को दो बार उल्टी हुई पर वह स्तनपान करता रहा। वह ठंडा नहीं पड़ा था और ठीक से रो भी रहा था। अठ्ठाइसवें दिन उसका वज़न 2.250 कि.ग्रा. हो गया था। आशाने दूसरे महीने में शिशु के घर जाना जारी रखा और उसका वज़न बढ़ाने की और अधिक कोशिश की।
पैतालीसवें दिन शिशु के हाथ और पैर लुंज पुंज थे और माँ ने बताया कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है। आपने उसका तापमान लिया और 94° फै (34.4° सें) पाया और आशा ने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

शिशु में जन्म के समय खतरे वाले क्या लक्षण दिखाई दिए ?

____

सेप्सिस (जन्तुदोष) की पहचान के लिए कौन से मापदण्ड (लक्षण) ध्यान में रखे गए ?

____

____

आप माता–पिता को समस्या के बारे में कैसे समझाएँगी ?

____

____

उपचार के लिए आप कितनी खुराक देंगी और कितने दिनों तक ?

____

____

शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में आप माता–पिता को क्या बताएँगी ?

____

____

____

____

____

केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. धन्नो को 30 नवम्बर को सुबह 8:20 पर बच्चा पैदा हुआ। प्रसव के समय 8 माह 5 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु का वज़न 1 कि. 950 ग्रा. था। शिशु पहले 6 दिनों तक बिल्कुल ठीक था।

   सातवें दिन जब आशा वहाँ गई, उसने पाया कि शिशु ने स्तनपान करना बंद कर दिया है और उसका पेट फूला हुआ है। उसकी साँस तो ठीक चल रही थी, पर उसका रोना कमज़ोर था। उसका वज़न 1 कि 900 ग्रा. था।

   आशा ने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया, क्योंकि शिशु ने दूध पीना बंद कर दिया था और उसका पेट फूला हुआ था।

   आप सबसे पहले क्या करेंगी ?

   माता–पिता को बताएँगे कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है जो कि एक भयंकर प्रकार का संक्रमण है। इसके लिए उसे अस्पताल ले जाना चाहिए। यदि माता–पिता उसे अस्पताल नहीं ले जा सकते , तो आशा घर पर ही पीने की दवा देकर उसका इलाज कर सकती हैं। माता–पिता को यह भी बताया जाना चाहिए कि इलाज के बाद भी शिशु मर सकता है और आशा इसके लिए जिम्मेदार नहीं होगी।

   शिशु का क्या उपचार किया जाएगा ?(कितनी खुराक/कितने दिन)

   कोट्रिमॉक्सेजोल 1/4 चम्मच दिन में दो बार 10 दिन तक

   आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?

   दिन में दो बार, 10 दिन तक

   आप माता–पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में क्या बताएँगी ?

   1. शिशु के शरीर को गर्म रखें।

   2. 2–2 घंटे बाद स्तनपान कराएँ।

   3. शिशु में खतरे वाले लक्षण देखते रहें और यदि उसकी हालत और खराब हो जाए तो तुरंत आशा को बुलाएँ।

2. विमल ने जन्म के अनुमानित समय से 1 हफ्ते बाद शिशु को जन्म दिया। उसका वज़न 2.9 कि.ग्रा. था। वह तन्दुरुस्त और स्वस्थ था। आशा ने विमल को उसे स्तनपान कराने में मदद की और 1 घंटे पर उसकी जाँच की।

   दसवें दिन माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ रहा है। उसका तापमान 93° फै (33.9° सें) पाया गया। उसका वज़न 3 कि.ग्रा. था।

   वह दूध भी पी रहा था और रो भी रहा था, पर उसकी छाती अंदर को धँसी थी।

   उसका पेट मुलायम था और हाथ–पैर भी ठीक थे।

   उसकी नाल ठीक हो चुकी थी।

   आशा ने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

आप सबसे पहले क्या करेंगी।

माता–पिता को बताएँगे कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है। उन्हें सलाह देंगे कि शिशु को अस्पताल ले जाएँ। यदि ऐसा करना संभव न हो तो बताएँ कि घर पर ही शिशु का इलाज हो सकता है। माता पिता से सन्मान पूर्वक बर्ताव करें, पर उन्हें स्थिति की गंभीरता के बारे में अवश्य जानकारी दें।

आप क्या उपचार देंगी ?

कोट्रिमॉक्सेजोल 1/4 चम्मच दिन में दो बार, 7 दिन तक

जाने से पहले आप माता–पिता को क्या–क्या बताएँगी ?

1. शिशु के शरीर को गर्म रखें।
2. 2–2 घंटे पर स्तनपान कराएँ।
3. शिशु में खतरे के लक्षण देखती रहें और यदि उसकी हालत और बिगड़ने लगे, तो तुरंत आशा को बुलाएँ।

आप कितनी बार शिशु को देखने जाएँगी ?

दिन में दो बार 7 दिन तक

3. काजू.बाई को चौथा बच्चा होने वाला था।

शिशु का जन्म 7 महीने 27 दिन के गर्भकाल पूरा होने पर हुआ और उसका वज़न 1.65 कि.ग्रा. था। शिशु ने 14 दिन तक स्तनपान नहीं किया।

पन्द्रहवें दिन उसने स्तनपान किया।

सत्रहवें दिन शिशु को दो बार उल्टी हुई पर वह स्तनपान करता रहा। वह ठंडा नही पड़ा था और ठीक से रो भी रहा था। अठ्ठाइसवें दिन उसका वज़न 2.250 कि.ग्रा. हो गया था। आशाने दूसरे महीने में शिशु के घर जाना जारी रखा और उसका वज़न बढ़ाने की और अधिक कोशिश की।

पैतालीसवें दिन शिशु के हाथ और पैर लुंज पुंज थे और माँ ने बताया कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है। आपने उसका तापमान लिया और 94° फै (34.4° सें) पाया और आशा ने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

शिशु में जन्म के समय खतरे वाले क्या लक्षण दिखाई दिए ?

समय से पूर्व जन्मा। कम वज़न का और स्तनपान नहीं कर पा रहा।

सेप्सिस (जन्तुदोष) की पहचान के लिए कौन से मापदण्ड (लक्षण) ध्यान में रखे गए ?

शिशु के हाथ और पैर लुंज पुंज और शरीर ठंडा (हाइपोथर्मिया)

आप माता–पिता को समस्या के बारे में कैसे समझाएँगी ?

माता–पिता को बतायेंगे कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है जोकि एक गंभीर प्रकार का संक्रमण है। उन्हें सलाह देंगे कि शिशु को अस्पताल ले जाएँ। यदि ऐसा करना संभव न हो तो बताएँ कि घर पर ही शिशु का इलाज हो सकता है।

उपचार के लिए आप कितनी खुराक देंगी और कितने दिनों तक ?

कोट्रिमॉक्सेजोल 1/4 चम्मच दिन में दो बार, 10 दिन तक

शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में आप माता–पिता को क्या बताएँगी ?

शिशु को जन्म से ही खतरे वाले लक्षण हैं। नीयत समय से पूर्व जन्में शिशुओं की ज़्यादा देखभाल करनी पड़ती है। इसे सेप्सिस (जन्तुदोष) भी हो गया है अतः निम्न बातों का ध्यान रखें :

1. शिशु का शरीर गर्म रखें।
2. उसे 2–2 घंटे पर स्तनपान कराएँ।
3. उसमें खतरे वाले लक्षण देखती रहें और यदि हालत अधिक बिगड़े , तो तुरंत आशा को बुलाएँ।

खतरे के लक्षणः जानकारी पत्र

(माता–पिता के लिये जानकारी पत्र। प्रसव के दूसरे दिन देना है।)

आपके शिशु में निम्न से कोई लक्षण दिखें तो तुरंत आशा को बुलायें। आशा आपके शिशु का दवाई तथा सुई से उपचार कर सकती है। आशा गॉव में बीमार शिशुओं का उपचार कर रही है और उसके उपचार से कई शिशुओं को लाभ हुआ है।
आपके शिशु में निम्न से कोई लक्षण दिखें तो तुरंत आशा को बुलायें।

1. हाथ पैर लुंज पुंज

2. स्तनपान करना बंद
3. बुखार
4. शिशु का शरीर छुने में ठंडा

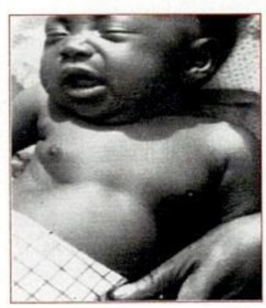

5. छाती अंदर धँसना

यदि आपके शिशु में खतरे के कोई लक्षण है तो आपके शिशु को गंभीर बीमारी है। तुरंत आशा को बुलायें और शिशु का सही उपचार करवाकर उसकी जान बचाएँ।

मोड्यूल 13: सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार

सत्र 3 : छाती अंदर धंसे हुए शिशुओं का उपचार

दिवस : 3
समयावधि : 45 मि.

प्रयोजन

आशा को छाती अंदर धंसे हुए शिशुओं की कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार तथा ऐसे शिशुओं को अस्पताल भेजने की जानकारी देना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यताएँ आएँगी।

1. छाती अंदर धंसे शिशु की पहचान, उपचार तथा शिशु को अस्पताल भेजना क्यों आवश्यक है, यह बताना।

सामग्री

- सॉस संबंधी बिमारीयों के बारे में WHO की सीडी
- सीडी/डिव्हीडी प्लेअर

तैयारी

- प्रशिक्षक द्वारा WHO की सीडी को सत्र के दौरान दिखाने की तैयारी

प्रशिक्षण विधि

प्रस्तुति तथा चर्चा : (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

1. प्रशिक्षणार्थियों को एक गोले में बिठायें
2. आशा से पूछें कि वे नवजात शिशु की छाती अंदर धंसे होने की पहचान कैसे करेंगी तथा वह पसलियों के नीचे की त्वचा का हल्का सा अंदर चलें जाने से कैसे भिन्न है?
   उनके उत्तर निम्न हो सकते हैं:
   - जब शिशु सांस लेता है तो पेट तथा छाती ऊपर उठती है, पर छाती के नीचे का भाग अंदर चला जाता है।
   - पसलियों के नीचे की त्वचा का हल्का सा अंदर चले जाने को छाती अंदर धंसना नही कहते। ऐसा प्रायः जन्म के समय कम वज़न वाले शिशुओं में देखा जाता है।
3. आशाओं की सहायता के लिए सीडी चलायें और छाती का अंदर धंसना सही पहचानने का अभ्यास कराएँ। इसकी पहचान करवाएँ। पहचान के लिए पर्याप्त समय दें। यदि आशाओं के अभ्यास का नतीजा सन्तोषजनक नहीं हैं (सभी आशा 75 प्रतिशत केसेस में सही पहचान करे) और यदि कोई संदेह है तो दोबारा सीडी चलाएँ। यह बहुत महत्वपूर्ण है, और नवजात शिशु में सेप्सिस की पहचान के लिए भी आवश्यक है। अतः

उन्हे अच्छी तरह अभ्यास करने का अवसर दें। जब सबको छाती अंदर धंसे होने की पहचान हो जाये तो ही आगे बढ़ें।

4. आशा से पूछें कि यदि 2 माह से कम के शिशु की गंभीर रूप से छाती अंदर धंसी हुई है तो उसका निदान क्या है? उत्तर होना चाहिए – *गंभीर निमोनिया*।
5. उनसे पूछें कि इसका उपचार क्या है? – उत्तर होना चाहिए– *कोट्रिमॉक्सेजोल*। उनसे पूछें 2 माह से कम के शिशु की खुराक क्या है? उत्तर होना चाहिए– *1/4 चम्मच कोट्रिमोक्सेजॉल दिन में दो बार, सात दिन तक*।
6. आशाओं से पूछें कि क्या उन्होंने कभी शिशु में छाती अंदर धंसने का निदान किया है? उनके अनुभव जाने। क्या शिशु के माता–पिता उसे अस्पताल ले गये? (कई बार शिशु को अस्पताल ले जाना कठिन होता है और यदि समय पर उसका उपचार नहीं किया गया तो उसकी मौत भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में आशा तुरंत शिशु का उपचार करें)।

   इस विषय में उसके अनुभव सूनें। अच्छे कार्य के लिए उसकी प्रशंसा करें। यदि वह कुछ बताना भूल जाये तो उसे जोड़ें यदि कुछ गलत जानकारी हो तो उसे सुधारे।
7. बतायें कि आशा नवजात शिशुओं की बयालीसवें दिन तक देखभाल करेगी। यदि इस दौरान किसी शिशु की छाती अंदर धंसी है तो आशा उसे कोट्रिमॉक्सेजोल की एक खुराक देकर अस्पताल भेज देगी। यदि माता–पिता शिशु को अस्पताल ले जाने के लिए तैयार नहीं है तो आशा उनसे पूर्व स्वीकृति फॉर्म भरवाएँ (उसमे लिखा हुआ इंजेक्शन शब्द काट दें), दिन में दो बार शिशु को देखने जाएँ, और 7 दिन तक उसका उपचार पूरा करें।
8. इस दौरान शिशु की स्तनपान और तापमान नियंत्रण के बारे में खतरेवाले शिशु जैसे देखभाल करें।

छाती का अंदर धंसना–सेप्सिस का एक लक्षण (10 मि.)

1. बतायें कि यदि शिशु की छाती अंदर धंसी हुयी है तो यह सेप्सिस का एक लक्षण है। आशा उसका कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार करेगी और दिन में दो बार उसे देखने उसके घर पर जायेगी तथा अन्य लक्षणों का भी निरिक्षण करेगी।
2. आशा को पहले ही सिखाया जा चुका है कि सेप्सिस के अन्य लक्षण (यदि एक ही लक्षण दिखायी दे) दिखाई देने पर क्या उपचार करना है। (यदि माँ बताये कि शिशु का शरीर छूने में ठंडा है तो वे हाईपोथर्मिया का उपचार शुरू करें, यदि शिशु को स्तनपान करने में कठिनाई हो रही है तो उसका उपचार करें, यदि उसकी टुंडी में मवाद है तो इसके लिए जेन्शन वायलेट पेन्ट लगायें, यदि शिशु को बुखार है तो उसे पॅरासिटामॉल देकर एक घंटे तक प्रतीक्षा करें। यदि बुखार न उतरे और अन्य कोई लक्षण नज़र आये तो सेप्सिस का उपचार शुरू करें। आशाओं ने यह सब पहले के सत्रों में सिखा हैं)।
3. आशा से सेप्सिस के एक ही लक्षण का उपचार करने के बारे में हुए अनुभवों की जानकारी लें। जब आशा बता रही हो तो,
   - समय का ध्यान रखें।
   - उसकी शंकाओं का समाधान करें।
   - सामूहिक चर्चा के दौरान कोई संदेह हो तो उसका समाधान करें।
   - नोट करें कि प्रशिक्षणार्थियों को किस विषय में अधिक अभ्यास अथवा जानकारी की आवश्यकता है।

4. यह जानने के लिए कि आशा ने समुदाय के बीच रहकर समस्या का समाधान कैसे किया, आशा के काम और प्रशिक्षण की प्रगती पुस्तिका देखें। यदि किसी को अधिक सहायता की आवश्यकता हो तो सत्र के बाद उन्हें अलग से समझायें तथा अतिरिक्त समय दें।

सारांश (5 मि.)

- किसी एक आशा से पूछें कि वह छाती अंदर धंसे हुए शिशु का उपचार कैसे करेगी।
- अन्य आशा से पूछें कि छाती अंदर धंसे शिशु को अस्पताल भेजना क्यों आवश्यक है।
- किसी अन्य आशा से पूछें कि सेप्सिस के एक लक्षण का उपचार कैसे करें।
- यदि कुछ रह गया हो तो जोड़ें तथा गलतियों का सुधार करें।
- आशा की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
छाती अंदर धंसे शिशु की पहचान, उपचार तथा शिशु को अस्पताल भेजना क्यों आवश्यक है, यह बताना।	प्रश्नोत्तर	–

मोड्यूल 13: सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार

सत्र 4 : फॉर्म भरना

दिवस : 3

समयावधि : 1 घं. 30 मि.

प्रयोजन

आशा को नवजात शिशु में सेप्सिस की पहचान और उपचार करने वाले फार्मों की जानकारी देना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. सेप्सिस के सही निदान के लिए घरों का दौरा फॉर्म के सेप्सिस निदान भाग का प्रयोग।
2. पूर्व स्वीकृति लेने वाले फॉर्म को भरने का प्रदर्शन करना।
3. सेप्सिस के ठीक–ठीक उपचार और शिशु के देखभाल तथा प्रगती की सही लिखित जानकारी रखने के लिए सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग।

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1: सेप्सिस निदान फॉर्मः घरो का दौरा फॉर्म का भाग
- अभ्यासपत्र 2: पूर्व स्वीकृति लेने वाला फॉर्म
- अभ्यासपत्र 3: सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म (देखभाल की योजना और अस्पताल भेजने के मापदण्ड)
- अभ्यासपत्र 4: केस प्रस्तुति
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: केस प्रस्तुति के उत्तर

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार सभी अभ्यासपत्रों की प्रतियाँ बना लें।
- प्रशिक्षणार्थियों को बताएँ कि वे माँ तथा नवजात शिशु फॉर्म में घरों का दौरा फॉर्म देंखें।

प्रशिक्षण विधि

प्रस्तुति एवँ चर्चा (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. सेप्सिस की देखभाल/उपचार से संबंधित तीनों फॉर्म सभी को बाँटें। 3 फॉर्म पहचानें: नवजात शिशु सेप्सिस निदान फॉर्मः घरों का दौरा फॉर्म का भाग, पूर्व स्वीकृति लेने वाला फॉर्म और सेप्सिस उपचार फॉर्म
2. घरो के प्रत्येक दौरे पर आशा, घरों का दौरा फॉर्म का सेप्सिस निदान भाग भरें। यदि शिशु में सिर्फ छाती अंदर को धँसना है तो आशा, शिशु का कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार करें। यदि स्तनपान की समस्या है या शिशु ठंड़ा पड़ने की समस्या है तो जैसा आशाओं ने पहले सीखा है उसी प्रकार शिशु की देखभाल करें। बताए गए सात मापदण्डों/लक्षणों में से एक या एक से अधिक लक्षण जिस दिन शिशु में दिखाई दें उस दिन आशा सेप्सिस का निदान करें और सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म प्रयोग करें।

उदाहरण के लिए :

केस : चौथे दिन माँ को लगा कि शिशु का शरीर ठंडा पड़ रहा है, पर अन्य कोई लक्षण नहीं है। तो आशा''माँ को शिशु का शरीर छूने में ठंडा लगा'' वाले खाने में निशान लगाए। (घरों का दौरा फॉर्म का सेप्सिस निदान भाग, मापदण्डों में से पाँचवा नम्बर)

3. आशाओं से पूछें, कि ऊपर दिए उदाहरण में क्या शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है ?*(नहीं)* नहीं है तो क्यों नही ? *(केवल 1 लक्षण दिखाई दिया)*

4. सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान के क्या मापदण्ड हैं ?*(जब एक ही समय, एक ही दिन में दो या दो से अधिक लक्षण दिखाई दें)*। इस नियम के क्या अपवाद है ? *(यदि पहले 3 लक्षण (शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज, स्तनपान कम या नहीं कर रहा, कम या बिल्कुल नहीं रो रहा) जन्म के समय से हैं, तो सेप्सिस के लक्षण नहीं माने जाएँगे। ये लक्षण तब महत्त्वपूर्ण है यदि शिशु जन्म के समय ठीक–ठाक था, पर बाद में इनमें से कोई लक्षण दिखाई दिया। या फिर, ये लक्षण जन्म के समय मौजूद थे, शिशु सामान्य हो गया था, और बाद में ये लक्षण फिर से दिखाई दिए।*

5. अगला उदाहरण दें और आशाओं से कहे कि वे घरों का दौरा फॉर्म से सेप्सिस निदान भाग भरें।

   केस : हुसेन का जन्म बुधवार को हुआ। उसे पहले 3 दिनों तक स्तनपान करने में कठिनाई हुई, पर बाद में वह ठीक से दूध पीने लगा। ऑठवें दिन उसका शरीर छूने में ठंडा लगा और उसने स्तनपान करना बंद कर दिया।

6. **आशाओं से घरों का दौरा फॉर्म से सेप्सिस निदान फॉर्म भरवाएँ** *(ऑठवें दिन, ''स्तनपान करना बंद कर दिया'' 2 नं. और ''शिशु छूने में ठंडा लगा'' नं. 5 खाने में निशान लगाना चाहिए)*

   क्या हुसेन को सेप्सिस (जन्तुदोष) हो गया है ? *(हाँ)*

   क्यों ? *(उसमें एक ही दिन में 2 लक्षण दिखाई दे रहे हैं)।*

   हुसेन को किस दिन सेप्सिस हुआ? *(ऑठवें दिन)।* यदि किसी के कोई प्रश्न/शंकाएँ हों तो समाधान करें।

7. **पूर्वस्वीकृति लेने वाला फॉर्म समझाएँ :** आशाओं को पूर्व स्वीकृति लेने वाला फॉर्म देखने को कहें।

पिछले सत्र में उन्होंने केस अध्ययनों और भूमिका नाटकों के माध्यम से माता–पिता को यह समझाने का अभ्यास किया कि यह फॉर्म भरना क्यों आवश्यक है। अब आशाओं ने कोट्रिमॉक्सेजोल से सेप्सिस का उपचार करना सीखा हैं। आशा ने अभी इंजेक्शन जेंटामायसीन सीखा नहीं हैं। इसलिए मातापिता से पूर्व स्वीकृती फॉर्मपर हस्ताक्षर लेते समय पूर्व स्वीकृती फॉर्म से **'और सुई लगाकर'** यह शब्द काट दें। (बाद में जब आशा इंजेक्शन जेंटामायसीन सीख लेगी तब पूर्व स्वीकृती फॉर्म जैसा है वैसाही प्रयोग करेंगी।)

8. उन्हें फॉर्म पढ़नें को कहें। ''निदान की तारीख'' वह होगी जिस दिन एक साथ 2 लक्षण दिखाई दें। हुसेन को सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किस दिन किया गया ? *(प्रसव के ऑठवें दिन)।* आशा कैलेण्डर देखकर सही तारीख भरें।

9. आशाओं को बताएँ कि सेप्सिस एक प्रकार की आपात्स्थिति है, अतः जैसे ही इसके 2 लक्षण दिखाई दें, पूर्व स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर माता–पिता के हस्ताक्षर तुरंत करवाने चाहिए। इस फॉर्म पर हस्ताक्षर करवाए बिना आशा आवश्यक इलाज शुरू नहीं कर सकती।

10. **सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म समझाएँ** : आशाओं से सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म देखने को कहें। बताएँ कि जिस दिन उपचार शुरू किया जाए, उस दिन से लेकर उपचार समाप्त करने तक इस फॉर्म का उपयोग करना चाहिए।

11. आशाओं से पूछें कि उपचार कितने दिन किया जाता है ? (*नीयत समय पर जन्मे शिशुओं का 7 दिन तक और समय से पूर्व जन्में शिशुओं का 10 दिन तक; एक दिन में 2 बार देखने जाएँ*) जिन्होंने सही उत्तर दिया, उनको प्रोत्साहित करें। बताएँ कि खानों में दिये नंबर उपचार की दिन दर्शाते है। उसके नीचे आशाओं को उपचार की तारीख लिखनी हैं।

12. फॉर्म के पहले भाग में (नं. 1 से 7) प्रत्येक बिन्दु के बारे में पूछें। फूला हुआ पेट, अंदर धँसी छाती, टुंडी पर मवाद, हाथ पैर लुंज पुंज तथा शिशु ने दूध पीना बंद कर दिया, इन स्थितियों के बारे में, फोटो आशाओं को दिखाएँ और इस बात पर ध्यान दें कि वे इन लक्षणों को सही पहचान पा रही हैं। अन्य लक्षणों के बारे में भी चर्चा करें और सभी स्थितियों और उन्हें पहचानने की विधि को दोहरायें। यदि निम्न से कोई हर लक्षण मौजूद हो तो (✓) का निशान लगाएँ और यदि लक्षण मौजूद न हो तो (×) का निशान लगाएँ।

    1. हाथ पैर लुंज पुंज – हर दौरे के समय शिशु के हाथ पैर की ताकद देंखें और फॉर्म में लिखें।
    2. स्तनपान करना कम/बंद – *प्रत्येक बार शिशु को देखने जाते समय (दिन में 2 बार) शिशु को स्तनपान करते देखें। यदि स्तनपान कम/बंद हो गया है तो* (✓) का निशान लगाएँ। यदि स्तनपान *कम/बंद नहीं है तो* (×) का निशान लगाएँ।
    3. रोना धीमे/बंद – *प्रत्येक बार शिशु को देखने जाते समय (दिन में 2 बार) शिशु का रोना देखें। यदि रोना कम/बंद हो गया है तो* (✓) का निशान लगाएँ। यदि रोना *कम/बंद नहीं है तो* (×) का निशान लगाएँ।
    4. पेट फूला हुआ – हाँ/नहीं
       उल्टी – हाँ/नहीं : लगातार 3 या अधिक बार हो तो हॉ कहें। घर के दौरे में *दोनों बार सही खाने में निशान लगाएँ। यदि हॉ हो तो* (✓) का निशान लगाएँ।
    5. तापमानः *दिन में दोनों बार जाकर शिशु के शरीर का तापमान नापकर लिखें। मॉ से पूँछे कि क्या उसे शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा लगता हैं? शिशु को बुखार हो तो* (✓) का निशान लगाएँ। मॉ कहे कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है *तो* (✓) का निशान लगाएँ।
    6. छाती अंदर को धँसना – छाती अंदर को धँसी है हाँ/नहीं लिखें।
       दिन में दोनों बार जाकर फॉर्म में सही खाना भरें। यदि छाती अंदर को धॅसती तो (✓) का निशान लगाएँ।
    7. टुंडी में मवाद हाँ/नहीं लिखें।
       दिन *में 2 बार जाकर स्थिति सही खाने में लिखें। यदि हॉ तो* (✓) का निशान लगाएँ।
    8. अन्य कोई समस्या – यदि अन्य कोई समस्या हो तो लिखें।

13. सेप्सिस के उपचार वाले फॉर्म का दूसरा भाग देखें: 'उपचार का रिकार्ड'। उपचार के दिन उपचार की तारीख लिखें। अभी आशा कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार करेगी। क्या 'कोट्रिमॉक्सेजोल दी गई?' *प्रत्येक बार शिशु को दवाई देने के बाद 'हाँ' या 'नहीं' पर निशान लगाएँ।*

14. फॉर्म का तीसरा भाग 'देखभाल करना' देखें। *इसे दिन में 1 बार भरा जा सकता है। अपनी जाँच के अनुसार 'हाँ' या 'नहीं' पर निशान लगाएँ।*

क्या शिशु को ठीक से ओढ़ाया गया ?	हाँ/नहीं
क्या शिशु टोपी और फ्रॉक पहने था	हाँ/नहीं
क्या शिशु को नहलाया गया	हाँ/नहीं
क्या शिशु को माँ के पास/गर्म रखा गया	हाँ/नहीं
क्या शिशु को 2–2 घंटे में स्तनपान कराया गया	हाँ/नहीं
माँ के नाखून साफ/कटे हुए हैं और वह अपने हाथ साबुन से धोती है	हाँ/नहीं
अन्य सेप्सिस (आँख, त्वचा, नाल) के लिये दवा ठीक से दी जा रही है	हाँ/नहीं/ज़रूरी नही*

** यदि अन्य कोई सेप्सिस नहीं तो 'जरूरी नहीं' पर निशान लगायें*

15. फॉर्म का आखिरी भाग देखें – 'अस्पताल भेजना'। यदि शिशु में निम्न लक्षणों में से कोई एक भी हो तो उसे तुरंत अस्पताल भेजें। माँ को तथा बीमार बच्चे को अस्पताल कब भेजा जाना चाहिये, इस बारे में अगली प्रशिक्षण कार्यशाला में जानकारी दी जायेगी।

<u>केस प्रस्तुति</u> (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं को अलग–अलग कार्य करने दें।
2. केस उदाहरण शीट और फॉर्म बाँटें।
3. 25 मि. के बाद सभी आशाओं को एक साथ बुलाएँ और बड़ा समूह बनाऍं। प्रशिक्षक केस प्रस्तुती के आधारपर फॉर्म कैसे भरना है यह समझाएँ। आशा आपस में फॉर्मों की अदलाबदली करे और एकदूसरे के फॉर्म जॉचे और देखें कि फॉर्म में प्रत्येक प्रश्न कैसे भरा है।
4. सभी की शंकाओं का समाधान करें।

सारांश : (10 मि.)

- किसी एक आशा से पूछें कि तीनों फॉर्मों (घरों का दौरा फॉर्म का सेप्सिस निदान भाग, पूर्व स्वीकृति फॉर्म तथा सेप्सिस उपचार फॉर्म) से उन्हें क्या मदद मिलती है।
- एक अन्य आशा से पूछें कि नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान कैसे किया जाता है। (घरों का दौरा फॉर्म के सेप्सिस निदान भाग पर एक दिन में दो या अधिक लक्षण दिखाई देना।)
- किसी अन्य आशा से पूछें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) से ग्रस्त शिशु की कितनी बार और कितने दिनों तक उपचार/देखभाल की जानी चाहिए। (*जब तक दवा दी जा रही हो, तब तक दिन में 2 बार, नीयत समय पर जन्मे शिशु को 7 दिन तक, और समय से पूर्व जन्मे शिशु को 10 दिन तक। इसके बाद भी शिशु को देखने के लिए जाती रहें; अधिक खतरे वाले शिशुओं के लिए महीने में 13 बार, कम खतरे वाले शिशुओं के लिए महीने में 5 बार; दूसरे महीने में, जिन्हे देखने जाना है उन्हें प्रति माह 4 बार*)

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
सेप्सिस के सही निदान के लिए घरों का दौरा फॉर्म के सेप्सिस निदान भाग का प्रयोग।	केस उदाहरण / पूरे भरे फॉर्मों की जाँच। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी सेप्सिस के निदान के लिए सेप्सिस निदान फॉर्म का सही प्रयोग करें।	प्रत्येक आशा व्दारा भरा गया सेप्सिस निदान फॉर्म
पूर्व स्वीकृति लेने वाले फॉर्म को भरने का प्रदर्शन करना	भूमिका नाटक और पूरे भरे फॉर्मों की जाँच	आशाओं व्दारा किये गये भूमिका नाटक के निरीक्षण का प्रशिक्षक व्दारा लिखा विवरण तथा प्रत्येक आशा व्दारा भरा गया फॉर्म
सेप्सिस के ठीक–ठीक उपचार और शिशु के देखभाल तथा प्रगती की सही लिखित जानकारी रखने के लिए सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग।	केस उदाहरण / पूरे भरे फॉर्मों की जाँच प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी सेप्सिस उपचार फॉर्म का सही प्रयोग करके सेप्सिस का उपचार तथा शिशु की प्रगति का लेखाजोखा रखें।	प्रत्येक आशा व्दारा भरा गया सेप्सिस उपचार फॉर्म

घरों का दौराः फॉर्म – माँ तथा नवजात शिशु की जाँच

पूछें / जाँच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
	2रा ____	3रा ____	7वा ____	15वा ____	28वा ____	42वा ____		
(क) माँ से पूछना								कार्य किया?
माँ 24 घंटे में कितनी बार भरपेट भोजन ले रही है							यदि माँ 4 से कम बार भोजन ले रही है और भरपेट भोजन नहीं ले रही है तो उसे ऐसा करने की सलाह दें।	हाँ / नहीं
रक्तस्त्राव : एक दिन में कितनी बार पैड बदलती है?							यदि 5 से अधिक पैड़ गीले हुए, तो उसे तुरंत अस्पताल भेजें।	हाँ / नहीं
क्या शिशु को सर्दी मे गर्म रखा गया (माँ के पास रखा गया, कपड़े पहनाये गये या कपड़े मे लपेटकर रखा गया)	हाँ/ नहीं/ लागु नहीं	हाँ/ नहीं/ लागु नहीं	हाँ/ नहीं/ लागु नहीं	हाँ/ नहीं/ लागु नहीं	हाँ/ नहीं/ लागु नहीं	हाँ/ नहीं/ लागु नहीं	यदि माँ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हाँ / नहीं /लागु नहीं
क्या शिशु को लगातार दूध पिलाया जा रहा है (जब शिशु को भूख लगे या 24 घंटे मे 7 से 8 बार)	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	यदि माँ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हाँ / नहीं
क्या शिशु लगातार रो रहा है अथवा दिन मे 6 से कम बार पेशाब कर रहा है?	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	माँ को कहे कि शिशु को हर 2 घंटे बाद दूध पिलाए	हाँ / नहीं
(ख) माँ की जाँच								
बुखार : नापें और लिखें							यदि माँ को 102^0 फै (38.9^0 सें) तक बुखार है तो पैरासिटेमॉल दें। यदि बुखार 102^0 फै (38.9^0 सें) से अधिक है, तो माँ को अस्पताल भेजें।	हाँ / नहीं
बदबूदार स्त्राव के साथ 100^0 फै (37.8^0 सें) से अधिक बुखार	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	यदि हाँ, तो माँ को अस्पताल भेजें।	हाँ / नहीं
माँ उल्टा–सीधा बोलती है या उसे दौरे पड़ते हैं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	यदि हाँ, तो माँ को अस्पताल भेजें।	हाँ / नहीं
प्रसव के बाद माँ को दूध नहीं उतरा है या उसे ऐसा लग रहा है कि कम दूध आ रहा है	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	यदि हाँ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हाँ / नहीं
कटे–फटे चूचुक/स्तनों में दर्द या/और सूजन	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं	यदि हाँ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हाँ / नहीं

सुपरवाईजर की टिप्पणीः काम अधूरा? काम गलत? रिकार्ड गलत?

पूछें / जॉच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
	2रा ____	3रा ____	7वा ____	15वा ____	28वा ____	42वा ____		
(ग) शिशु की जाँच								
ऑखों मे सूजन अथवा मवाद	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	यदि हॉ तो मॉ को कहें कि टेट्रासायक्लिन मल्हम 5 दिन तक दिन मे 2 बार शिशु की ऑखों में डालें	हॉ / नहीं
वज़न मापें और लिखें। 7, 15, 28 और 42 दिनों पर								हॉ / नहीं
तापमान मापें और लिखें।								हॉ / नहीं
त्वचा मवाद भरे फोड़ेः	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	जी. वी. पेन्ट लगाएँ तथा देखें कि सेप्सिस के लक्षण तो नहीं हैं।	हॉ / नहीं
त्वचा की मोडों में कटना या लाली (जॉघ/बगल/कुल्हे)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	शिशु की त्वचा साफ तथा सूखी रखें। टैल्कम पावडर या जी. वी. पेंट लगाएँ।	हॉ / नहीं
ऑखें या त्वचा का पीलापन (पीलिया)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि जन्म के पहले दिन ही पीलिया है, या यह 14 दिन से अधिक बना रहता है तो यह खतरनाक है। शिशु को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं

दूसरे दिन मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दें हॉ/नहीं	दूसरे दिन खतरे के लक्षण वाला जानकारी प्रपत्र माता पिता को दें हॉ/नहीं

(घ) सेप्सिस का निदानः सेप्सिस के लक्षणों की जाँच करें। यदि लक्षण दिखाई देता है तो खाने मे सही (✓) का निशान लगाएँ। यदि लक्षण नहीं है तो गलत (X) का निशान लगाएँ।

पहले दिन वाला खाना शिशु की पहली जॉच वाले फॉर्म से लिखें।

पूछें / जाँच करें आशा के दौरे की तारीख		दिन 2रा ____	3रा ____	7वा ____	15वा ____	28वा ____	42वा ____	आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे
	1ला दिन							पहले तीन लक्षण सेप्सिस निदान के मापदंड तभी माने जाएँगे यदि वे पहले न हो और फिर नये से दिखाई दें।	हाँ / नहीं
1.सारे हाथ पैर लुंज–पुंज									
2.स्तनपान कम/बंद									
3.रोना धीमे/बंद									
4.पेट फूला हुआ अथवा मॉं कहे कि शिशु बार बार उल्टी कर रहा है								यदि एक ही दिन में कम से कम दो लक्षण दिखाई दें तो सेप्सिस का निदान करें और सेप्सिस का उपचार करें (सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग करें)	हाँ / नहीं
5.मॉं कहती है कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है अथवा उसका तापमान 99^0फै. (37.2^0से.) से अधिक है								यदि कोई भी लक्षण न दिखे तो मॉं को ध्यान रखने को कहें। मॉं से कहे कि एक भी लक्षण दिखाई दें तो तुरंत आशा को बुलाएँ।	हाँ / नहीं
6.छाती अंदर को धँसी हुई									
7.टुंडी पर मवाद									हाँ / नहीं
उपस्थित कुल लक्षणों की संख्या								यदि एक लक्षण दिखाई दें तो रोज दौरा करें और देखें कि दूसरा लक्षण तो नहीं आया। इस दौरान एक लक्षण का उपचार करें। (नीचे बाक्स देखें)	हाँ / नहीं
क्या शिशु को सेप्सिस है?		हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं		हाँ / नहीं

सेप्सिस उपचार का कौनसा प्रबंध परिवार के लोगों ने स्वीकार किया? (सही उत्तर पर गोला करें।)

उपचार न करना　　अस्पताल भेजना　　आशा व्दारा उपचार　　अन्य उपचार

यदि आशा उपचार करती है तो, सेप्सिस उपचार फॉर्म (पूरक फॉर्म 5 का प्रयोग करें।)

- स्तनपान की समस्या के लिए स्तनपान समस्या का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 1)
- सिर्फ छाती अंदर को धँसती हो तो कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें।
- टुंडी पर मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाएँ।
- शिशु का शरीर ठंड़ा पड़ रहा हो तो शरीर ठंड़ा पड़ने का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 2)।
- बुखार हो तो बुखार का उपचार करें।

यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2300 ग्राम से कम हो अथवा जन्म के समय के वजन से 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो दूसरे महीने में भी नियमित रूप से शिशु के घर के दौरे जारी रखें। अपना निरिक्षण घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना (पूरक फॉर्म 4) में लिखें।

घरों का दौराः फॉर्म – माँ तथा नवजात शिशु की जाँच

पूछें / जाँच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____		
(क) माँ से पूछना								कार्य किया?
मॉ 24 घंटे में कितनी बार भरपेट भोजन ले रही है							यदि मॉ 4 से कम बार भोजन ले रही है और भरपेट भोजन नहीं ले रही है तो उसे ऐसा करने की सलाह दें।	हॉ / नहीं
रक्तस्त्राव : एक दिन में कितनी बार पैड बदलती है?							यदि 5 से अधिक पैड़ गीले हुए, तो उसे तुरंत अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
क्या शिशु को सर्दी मे गर्म रखा गया (मॉ के पास रखा गया, कपड़े पहनाये गये या कपड़े मे लपेटकर रखा गया)	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	हॉ/ नहीं/ लागु नहीं	यदि मॉ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉ / नहीं /लागु नहीं
क्या शिशु को लगातार दूध पिलाया जा रहा है (जब शिशु को भूख लगे या 24 घंटे मे 7 से 8 बार)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि मॉ यह नही कर रही है तो उसे ऐसा करने को कहे	हॉ / नहीं
क्या शिशु लगातार रो रहा है अथवा दिन मे 6 से कम बार पेशाब कर रहा है?	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	मॉ को कहे कि शिशु को हर 2 घंटे बाद दूध पिलाए	हॉ / नहीं
(ख) माँ की जाँच								
बुखार : नापें और लिखें							यदि मॉ को 102^0 फै (38.9^0 सें) तक बुखार है तो पैरासिटेमॉल दें। यदि बुखार 102^0 फै (38.9^0 सें) से अधिक है, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
बदबूदार स्त्राव के साथ 100^0 फै (37.8^0 सें) से अधिक बुखार	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
मॉ उल्टा–सीधा बोलती है या उसे दौरे पड़ते हैं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो मॉ को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं
प्रसव के बाद मॉ को दूध नहीं उतरा है या उसे ऐसा लग रहा है कि कम दूध आ रहा है	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉ / नहीं
कटे–फटे चूचुक/स्तनों में दर्द या/और सूजन	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि हॉ, तो स्तनपान उपचार फॉर्म के अनुसार उपचार करें	हॉ / नहीं

सुपरवाईजर की टिप्पणीः काम अधूरा? काम गलत? रिकार्ड गलत?

पूछें / जॉच करें आशा के दौरे की तारीख	दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे ?
	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____		
(ग) शिशु की जाँच								
ऑखों मे सूजन अथवा मवाद	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	हॉ/ नहीं/	यदि हॉ तो मॉ को कहें कि टेट्रासायक्लिन मल्हम 5 दिन तक दिन मे 2 बार शिशु की ऑखों में डालें	हॉ / नहीं
वज़न मापें और लिखें। 7, 15, 28 और 42 दिनों पर								हॉ / नहीं
तापमान मापें और लिखें।								हॉ / नहीं
त्वचा मवाद भरे फोड़ेः	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	जी. वी. पेन्ट लगाएँ तथा देखें कि सेप्सिस के लक्षण तो नहीं हैं।	हॉ / नहीं
त्वचा की मोडों में कटना या लाली (जॉघ/बगल/कुल्हे)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	शिशु की त्वचा साफ तथा सूखी रखें। टैल्कम पावडर या जी. वी. पेंट लगाएँ।	हॉ / नहीं
ऑखें या त्वचा का पीलापन (पीलिया)	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	हॉ/ नहीं	यदि जन्म के पहले दिन ही पीलिया है, या यह 14 दिन से अधिक बना रहता है तो यह खतरनाक है। शिशु को अस्पताल भेजें।	हॉ / नहीं

दूसरे दिन मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दें हॉ/नहीं	दूसरे दिन खतरे के लक्षण वाला जानकारी प्रपत्र माता पिता को दें हॉ/नहीं

(घ) सेप्सिस का निदानः सेप्सिस के लक्षणों की जॉंच करें। यदि लक्षण दिखाई देता है तो खाने मे सही (✓) का निशान लगाएँ। यदि लक्षण नहीं है तो गलत (X) का निशान लगाएँ।

पहले दिन वाला खाना शिशु की पहली जॉंच वाले फॉर्म से लिखें।

पूछें / जॉंच करें आशा के दौरे की तारीख		दिन						आशा व्दारा कार्य	कार्य किया गया क्या यह सुपरवाईज़र देखे
		अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____	अन्य ____		
	1ला दिन							पहले तीन लक्षण सेप्सिस निदान के मापदंड तभी माने जाएँगे यदि वे पहले न हो और फिर नये से दिखाई दें।	हाँ / नहीं
1.सारे हाथ पैर लुंज–पुंज									
2.स्तनपान कम/बंद									
3.रोना धीमे/बंद									
4.पेट फूला हुआ अथवा मॉं कहे कि शिशु बार बार उल्टी कर रहा है								यदि एक ही दिन में कम से कम दो लक्षण दिखाई दें तो सेप्सिस का निदान करें और सेप्सिस का उपचार करें (सेप्सिस उपचार फॉर्म का प्रयोग करें)	हाँ / नहीं
5.मॉं कहती है कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है अथवा उसका तापमान 99^{0}फै. (37.2^{0}से.) से अधिक है								यदि कोई भी लक्षण न दिखे तो मॉं को ध्यान रखने को कहें। मॉं से कहे कि एक भी लक्षण दिखाई दें तो तुरंत आशा को बुलाएँ।	हाँ / नहीं
6.छाती अंदर को धँसी हुई									
7.टुंडी पर मवाद									हाँ / नहीं
उपस्थित कुल लक्षणों की संख्या								यदि एक लक्षण दिखाई दें तो रोज दौरा करें और देखें कि दूसरा लक्षण तो नहीं आया। इस दौरान एक लक्षण का उपचार करें। (नीचे बाक्स देखें)	हाँ / नहीं
क्या शिशु को सेप्सिस है?		हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं	हाँ / नहीं		हाँ / नहीं

सेप्सिस उपचार का कौनसा प्रबंध परिवार के लोगों ने स्वीकार किया? (सही उत्तर पर गोला करें।)

उपचार न करना   अस्पताल भेजना   आशा व्दारा उपचार   अन्य उपचार

यदि आशा उपचार करती है तो, सेप्सिस उपचार फॉर्म (पूरक फॉर्म 5 का प्रयोग करें।)

- स्तनपान की समस्या के लिए स्तनपान समस्या का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 1)
- सिर्फ छाती अंदर को धँसती हो तो कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें।
- टुंडी पर मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाएँ।
- शिशु का शरीर ठंडा पड़ रहा हो तो शरीर ठंडा पड़ने का उपचार करें तथा फॉर्म भरें (पूरक फॉर्म 2)।
- बुखार हो तो बुखार का उपचार करें।

यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2300 ग्राम से कम हो अथवा जन्म के समय के वजन से 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो दूसरे महीने में भी नियमित रूप से शिशु के घर के दौरे जारी रखें। अपना निरिक्षण घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना (पूरक फॉर्म 4) में लिखें।

पूरक फॉर्म 5
आवश्यकतानुसार प्रयोग करें

सेप्सिस उपचार – पूर्व स्वीकृति फॉर्म

माँ का नाम ______________________ गाँव का नाम ______________________

आशा का नाम ______________________ निदान की तारीख ______________________

माँ अथवा पिता की स्वीकृति

मैं ______________________ निवासी ग्राम ______________________ को आशा ने बताया है कि मेरा नवजात शिशु गंभीर रूप से बीमार है और उसकी जान को खतरा है। आशा ने शिशु को अस्पताल ले जाने के लिये बताया है पर मैं शिशु को अस्पताल नहीं ले जा सकता या मेरी इच्छा नहीं हैं। इसलिए मैं आशा को शिशु का दवा से और सुई लगाकर उपचार करने की स्वीकृति देता/देती हूँ। मुझे जानकारी है कि शिशु गंभीर रूप से बीमार है और उपचार के दौरान उसकी मृत्यु भी हो सकती है। ऐसा होने पर मैं आशा को मृत्यु का उत्तरदाई नहीं ठहराऊँगा (गी)।

हस्ताक्षर/अंगूठे का निशान

____

पूरक फॉर्म 5
आवश्यकतानुसार प्रयोग करें

सेप्सिस उपचार फॉर्म

सेप्सिस उपचार का दिन ➔	1		2		3		4		5		6		7		8		9		10	
तारीख ➔																				
सुबह/शाम	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा
1 हाथ पैर लुंज पुंज																				
2 स्तनपान कम/बन्द																				
3 रोना धीमे/बन्द																				
4 पेट फूला हुआ उल्टी																				
5 तापमान नापे और लिखें सुबह																				
शाम																				
माँ कहे कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है																				
6 छाती अंदर धँसी																				
7 टुंडी में मवाद																				
8 अन्य समस्याएँ (दिन लिखें)																				

पूरक फॉर्म 5
आवश्यकतानुसार प्रयोग करें

उपचार का रिकार्ड

जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई ?	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं
पिछली बार जहाँ सुई लगाई गई थी उसकी हालत ठी = ठीक सू = सूजी हुई सा–सामान्य	ठी/सू /सा	ठी/सू /सा	ठी/सू /सा	ठी/सू /सा	ठी/सू /सा	ठी/सू /सा	ठी/सू /सा	ठी/सू /सा	ठी/सू /सा	ठी/सू /सा
क्या कोट्रिमॉक्सेजॉल सिरप पिलाया गया ?	हाँ/ नहीं | हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं | हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं | हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं | हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं | हाँ/ नही	हाँ/ नही | हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं | हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं | हाँ/ नहीं	हाँ/ नहीं | हाँ/ नही	हाँ/ नहीं | हाँ/ नहीं

देखभाल करना

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1 क्या शिशु को ठीक से ओढाया गया?										
2 क्या शिशु को टोपी और फ्रॅाक पहने था?										
3 क्या शिशु को नहलाया गया?										
4 क्या शिशु को माँ के पास/गर्म रखा गया?										
5 क्या शिशु को 2–2 घंटे पर स्तनपान कराया गया?										
6 माँ के नाखून साफ/कटे हुए हैं और वह अपने हाथ साबुन से धोती है?										
7 अन्य सेप्सिस (आँख, त्वचा, नाल) के लिए दवा ठीक से दी जा रही है										

अस्पताल भेजने के लिये मापदण्ड

यदि नीचे दिए लक्षणों में से कोई हो तो तुरंत अस्पताल भेजें। जिस दिन अस्पताल भेजा गया वह दिन लिखें।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1 एन्टीबायोटिक दवाएँ देने के 24 घंटे बाद तक भी शिशु की हालत में सुधार न हो रहा हो										
2 एक दिन तक गर्मी पहुँचाने की कोशिशो के बावजूद शिशु के शरीर का तापमान 95° फॅ (35° सें) से कम हो										
3 पूरे दिन प्रयत्न करने पर भी शिशु स्तनपान न कर रहा हो										
4 शिशु का शरीर अधिक पीला पड़ गया हो										
5 शिशु के मुँह, नाक और गुदा से खून निकल रहा हो										
6 टेटनेस हो गया हो; 4 दिन बाद यदि दूध पीना बंद कर दे, शरीर अकड़ जाए और मुँह न खुले।										
7 शिशु को दौरे पड़ें।										

सुपरवाईजर की टिप्पणी

यदि शिशु अब भी बीमार हो तो समस्या लिखें	**7 वें /10वें दिन परिणामः शिशु स्वस्थ है/अब भी बीमार है/मृत** **सुपरवाईजर के हस्ताक्षर** ____________________

केस प्रस्तुति – फॉर्म भरना (इसे ठीक भरे हुए फॉर्मों के साथ लगाएँ)

1. माला ने 17 अक्टूबर को सुबह 8 बजकर 30 मि. 45 से. पर एक लड़की को जन्म दिया। उसका गर्भकाल 9 माह 7 दिन रहा।

   बच्ची ठीक से रो रही थी और साँस ले रही थी। उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं थे।

   उसका वज़न 2 कि. 800 ग्रा. था।

   आशा ने प्रसव के तुरंत बाद, उसे माँ के स्तनों से लगाया और उसने ठीक से स्तनपान भी किया।

   सोलहवें दिन सबेरे आशा को घर बुलाया गया।

   माँ ने बताया कि लड़की का शरीर ठंडा है।

   आशा ने उसके शरीर का तापमान लिया और उसे 93.5° फॅ (34.2° सें) पाया।

   जाँच करने पर पाया कि उसकी छाती अंदर को धँसी थी।

   आशा ने निदान किया कि लड़की को सेप्सिस है।

   आप सबसे पहले कौनसा फॉर्म भरेंगी ? (फॉर्म भरें) ____________________

   सोलहवें दिन सामान्य तौर पर शिशु को देखने नहीं जाया जाता। ''अन्य दिन'' वाले खाने में निशान लगायें और सबसे ऊपर '16' लिखें। उस खाने में पॉचवी पंक्ति (बच्ची ठंडी पड़ी थी) और छठी पंक्ति (छाती अंदर धँसी) में सही का निशान लगाएँ।

   क्या लड़की को सेप्सिस है ? हाँ / नहीं

   क्या इस फॉर्म दोबारा प्रयोग किया जायेगा ? हाँ / नहीं कब? ____________________

   अब आप क्या करेंगी ? ____

   ____

   ____

   अब यह फॉर्म भरें।

   आप शिशु की जॉच करेगी। पूर्व स्वीकृति फॉर्म पर माता–पिता से हस्ताक्षर करवाने के बाद आप लड़की का उपचार करेंगी। जॉच में आपने पाया कि:

   उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं है।

   वह ठीक से स्तनपान नहीं कर रही।

   रोना भी बहुत धीमा है।

   उसका पेट मुलायम है और उसे उल्टी नहीं हो रही।

   माँ ने बताया कि लड़की का शरीर ठंडा है और आशा ने मापने पर तापमान 93.5° फॅ (34.2° सें) पाया।

   छाती अंदर धँसी है।

   उसकी नाल पकी नहीं हैं।

आप उसे कौनसी दवा देंगी ? ______________________________

दवा की खुराक क्या है ? ______________________________

सेप्सिस उपचार वाला फॉर्म भरें

घर से जाते समय माता–पिता को बताएँ कि लड़की की घरेलू देखभाल कैसे करनी है। आप दोबारा आने पर इन सबकी जाँच करेंगी (उसे ठीक से ओढ़ाना, 2–2 घंटे पर स्तनपान कराना, आदि) और सेप्सिस के उपचार वाले फॉर्म में भरेगी।

फॉर्म का आखरी हिस्सा – देखे कि शिशु को अस्पताल कब भेजना है। इस पर निशान तभी लगाना है, जब शिशु को इनमें से कुछ लक्षण हों और तभी अस्पताल भेजना है।

आप लड़की को देखने के लिए 7 दिन तक, दिन में 2 बार जाएँगी।

उपचार के पाँचवें दिन शाम को आपने दवा दी और पाया :

- उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं है
- लड़की ठीक से स्तनपान कर रही है
- ठीक से रो रही है
- माँ को शिशु का शरीर ठंड़ा नही लगता और शिशु के शरीर का तापमान 98° फॅ (36.7° सें)
- पेट फूला हुआ नहीं है, उल्टी नहीं हो रही।
- छाती अंदर धँसी नहीं है।
- नाल पकी नहीं हैं।
- शिशु को ठीक से ओढ़ाया गया है।
- शिशु ठीक से टोपी, कपड़े पहने हुए है।
- उसे नहलाया नहीं।
- उसे उसे माँ के पास लिटाया गया है।
- माँ उसे 2–2 घंटे पर स्तनपान करा रही है।
- माँ के नाखून छोटे हैं और उसने बताया कि वह बच्ची को छूने से पहले अपने हाथ धोती है।
- बच्ची को किसी अन्य बीमारी की दवा नहीं दी जा रही।
- उसकी हालत में सुधार हो रहा है।
- उसमें खतरे वाले ऐसे कोई लक्षण नहीं है कि उसे अस्पताल भेजा जाए।

सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म भरें

केस प्रस्तुति के उत्तर

1. माला ने 17 अक्टूबर को सुबह 8 बजकर 30 मि. 45 से. पर एक लड़की को जन्म दिया। उसका गर्भकाल 9 माह 7 दिन रहा।

   बच्ची ठीक से रो रही थी और साँस ले रही थी। उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं थे।

   उसका वज़न 2 कि. 800 ग्रा. था।

   आशा ने प्रसव के तुरंत बाद, उसे माँ के स्तनों से लगाया और उसने ठीक से स्तनपान भी किया।

   सोलहवें दिन सबेरे आशा को घर बुलाया गया।

   माँ ने बताया कि लड़की का शरीर ठंडा है।

   आशा ने उसके शरीर का तापमान लिया और उसे 93.5° फॅ (34.2° सें) पाया।

   जाँच करने पर पाया कि उसकी छाती अंदर को धँसी थी।

   आशा ने निदान किया कि लड़की को सेप्सिस है।

   आप सबसे पहले कौनसा फॉर्म भरेंगी ? (फॉर्म भरें) घरों का दौरा फॉर्म

   सोलहवें दिन सामान्य तौर पर शिशु को देखने नहीं जाया जाता। ''अन्य दिन'' वाले खाने में निशान लगायें और सबसे ऊपर '16' लिखें। उस खाने में पॉचवी पंक्ति (बच्ची ठंडी पड़ी थी) और छठी पंक्ति (छाती अंदर धँसी) में सही का निशान लगाएँ।

   क्या लड़की को सेप्सिस है ? हॉ / **नहीं**

   क्या यह फॉर्म दोबारा प्रयोग किया जायेगा ? हॉ / **नहीं** **कब?** अगले घरों के दौरे के दिन।

   अब आप क्या करेंगी ? माता–पिता को बच्ची की हालत तथा खतरों के बारे में पहले से बता दें और उनसे कहें कि वे शिशु को अस्पताल लें जायें। यदि वे बच्ची को अस्पताल नहीं ले जा सकते या नहीं जाना चाहते, तो उनसे पूर्व स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवाएँ।

   अब यह फॉर्म भरें। (निदान की तारीख 1 नवंबर है। प्रसव के 15 दिन बाद।)

   आप शिशु की जॉच करेगी। पूर्व स्वीकृति फॉर्म पर माता–पिता से हस्ताक्षर करवाने के बाद आप लड़की का उपचार करेंगी। जॉच में आपने पाया कि

   उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं है।

   वह ठीक से स्तनपान नहीं कर रही।

   रोना भी बहुत धीमा है।

   उसका पेट मुलायम है और उसे उल्टी नहीं हो रही।

   माँ ने बताया कि लड़की का शरीर ठंडा है और आशा ने मापने पर तापमान 93.5° फॅ (34.2° सें) पाया।

   छाती अंदर धँसी है।

   उसकी नाल पकी नहीं हैं।

   आप उसे कौनसी दवा देंगी ? कोट्रिमॉक्सेजोल

दवा की खुराक क्या है ? 1/4 चम्मच दिन में 2 बार × 7 दिन तक

सेप्सिस उपचार वाला फॉर्म भरें (उचित खाने में ✓ या × का निशान लगाएँ)

"पहला दिन" वाले खाने (दाईं ओर पहले दौरे वाला खाना) में लिखें

हाथ पैर लुंज पुंज – नहीं	×
स्तनपान – कम	✓
रोना – धीमे	✓
माँ ने बताया कि लड़की का शरीर ठंडा है और तापमान – 93.5° फॅ (34.2° सें)	✓
पेट – पेट फूला हुआ – नहीं; – उल्टी हुई – नहीं	×
छाती – छाती अंदर को धँसी – है	✓
नाल पकी हुई – नही	×

घर से जाते समय माता–पिता को बताएँ कि लड़की की घरेलू देखभाल कैसे करनी है। आप दोबारा आने पर इन सबकी जाँच करेंगी (उसे ठीक से ओढ़ाना, 2–2 घंटे पर स्तनपान कराना, आदि) और सेप्सिस के उपचार वाले फॉर्म में भरेगी।

फॉर्म का आखरी हिस्सा – देखे कि शिशु को अस्पताल कब भेजना है। इस पर निशान तभी लगाना है, जब शिशु को इनमें से कुछ लक्षण हों और तभी अस्पताल भेजना है।

आप लड़की को देखने के लिए 7 दिन तक, दिन में 2 बार जाएँगी।

उपचार के पाँचवें दिन शाम को आपने दवा दी और पाया :

- उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं है
- लड़की ठीक से स्तनपान कर रही है
- ठीक से रो रही है
- माँ को शिशु का शरीर ठंडा नही लगता और शिशु के शरीर का तापमान 98° फॅ (36.7° सें)
- पेट फूला हुआ नहीं है, उल्टी नहीं हो रही।
- छाती अंदर धँसी नहीं है।
- नाल पकी नहीं हैं।
- शिशु को ठीक से ओढ़ाया गया है।
- शिशु ठीक से टोपी, कपड़े पहने हुए है।
- उसे नहलाया नहीं।
- उसे उसे माँ के पास लिटाया गया है।
- माँ उसे 2–2 घंटे पर स्तनपान करा रही है।
- माँ के नाखून छोटे हैं और उसने बताया कि वह बच्ची को छूने से पहले अपने हाथ धोती है।
- बच्ची को किसी अन्य बीमारी की दवा नहीं दी जा रही।
- उसकी हालत में सुधार हो रहा है।
- उसमें खतरे वाले ऐसे कोई लक्षण नहीं है कि उसे अस्पताल भेजा जाए।

सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म भरें

पाँचवें दिन' वाले खाने (दाईं ओर शाम के दौरे के खाने में ✓ या × का निशान लगाए)

हाथ पैर लुंज पुंज – नही	×
स्तनपान – ठीक	×
रोना – ठीक	×
माँ ने बताया कि लड़की का शरीर ठंडा है और तापमान – 98° फॅ (36.7° सें)	×
पेट – पेट फूला हुआ – नही – उल्टी हुई – नहीं	×
छाती – छाती अंदर को धँसी – नही	×
नाल पकी हुई – नही	×

कोट्रिमॉक्सेजोल – ¼ चम्मच पिलाई

शिशु ठीक से ढका है –	हाँ
टोपी, फ्रॉक पहने है –	हाँ
नहलाया गया –	नहीं
माँ के पास रखा हैं। –	हाँ
स्तनपान 2–2 घंटे पर –	हाँ
माँ के नाखून छोटे और साबुन से हाथ धोती है –	हाँ
अन्य सेप्सिस का उपचार –	आवश्यकता नहीं

मोड्यूल 13 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार

सत्र 5 : मूल्यांकन : केस अध्ययन

दिवस : 3

समयावधि : 45 मि.

प्रयोजन

आशाओं की सेप्सिस के निदान, देखभाल तथा इलाज करने, माता–पिता को उचित सलाह देने और ठीक प्रकार से फॉर्म भरने की योग्यताओं की जाँच करना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यता आएँगी –

1. सुनिश्चित मापदंडों के अनुसार सेप्सिस का निदान और उपचार (लिखित परीक्षा में 70% से अधिक अंक प्राप्त करना)

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1: परीक्षापत्र
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: परीक्षापत्र के उत्तर

तैयारी

- मूल्यांकन के लिये प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अभ्यासपत्र 1 की प्रतियाँ बनालें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन</u> (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. अभ्यासपत्र 1: परीक्षापत्र बाँटें
2. प्रत्येक आशा परीक्षापत्र स्वयं हल करे।
3. आशा व्दारा लिखें गये परीक्षापत्र 35 मिनट बाद इकट्ठा कर लें।
4. प्रत्येक प्रश्न/उत्तर के बारे में चर्चा करें। सभी की समस्याओं का समाधान करें।

सारांश :

सेप्सिस (जन्तुदोष) की देखभाल से संबंधित मुख्य बातों को दोहराना:

- घरों का दौरा फॉर्म के सेप्सिस निदान वाले भाग में दिए गए, एक ही दिन में 2 या अधिक लक्षणों के आधार पर नवजात शिशुओं में सेप्सिस का निदान।
- माता–पिता को शिशु के रोग की सही स्थिति के बारे में आशा बताएँ और घर पर रखकर ही इलाज करने के लिए माता–पिता से लिखित पूर्व स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवाएँ।
- आशा 7 से 10 दिन तक दिन में 2 बार शिशु को देखने जाएँ।
- आशा माता–पिता को बताएँ, और करके दिखाएँ, कि शिशु की घर पर रखकर देखभाल कैसे करनी है।
- प्रत्येक दौरे के समय सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म भरें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
सुनिश्चित मापदंडों के अनुसार सेप्सिस का निदान और उपचार (लिखित परीक्षा में 70% से अधिक अंक प्राप्त करना)	लिखित परीक्षा केस प्रस्तुति। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी सुनिश्चित मापदंडों के अनुसार सेप्सिस का सही निदान तथा उपचार करे।	प्रत्येक आशा व्दारा स्वयं हल किया गया परीक्षापत्र।

परीक्षा पत्र

लिखित परीक्षा में अंक (कुल अंक 50 उत्तीर्णांक 35) हर सही उत्तर के लिए 2 अंक

नोट : संदर्भ के लिये प्रपत्र – खुराक वाली शीट, फॉर्म, जाँच–सूची, आदि का प्रयोग किया जा सकता है, क्योंकि कार्यक्षेत्र में ये सभी आशा को उपलब्ध हैं।

लहानु का जन्म 9 महीने पर हुआ और उसका वज़न 2 कि.ग्रा. था। वह जन्म के समय ठीक था, पर चौथे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया और उसने स्तनपान बंद कर दिया (2×10 = 20 अंक)

1. **उसका निदान क्या है?** ____________________________
2. **क्यों? विशेष लक्षण क्या दिखे?**

   ____

   ____
3. **आप उसे क्या दवाएँ देंगी ?** ____________________________
4. **कितनी खुराक देंगी ?** ____________________________
5. **आप कितने दिन दवा देंगी ?** ____________________________
6. **इस अवधि में आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?** ____________________
7. **माता–पिता को आप घर पर शिशु की देखभाल के बारे में कौन सी 3 बाते बताएँगी ?**

   ____

   ____

   ____

नीता का जन्म 7 महीने पर हुआ और उसने पहले 7 दिनों तक ठीक से स्तनपान नहीं किया। चौथे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया, पर अन्य कोई लक्षण नहीं थे (2 ×15 = 30 अंक)

1. **क्या उसे सेप्सिस है ?** हाँ / नहीं
2. **क्यों ?** ________________________________

आशा का नाम ____________________	तारीख ________
प्रशिक्षक का नाम ____________________ ब्लॉक ____________________	कुल अंक ________

3. क्या नीता का स्तनपान न करना सेप्सिस का लक्षण है ? हाँ / नहीं

4. क्यों ? ____

5. नीता को क्या बीमारी है ? ________________________________

6. उस दिन आप क्या करेंगी ? (तीन बातें लिखें)

____

____

____

अगले दिन दोपहर में जाने पर आप पाती हैं कि उसकी स्थिति उसी प्रकार है। अगले दिन आपको बुलाया जाता है। आप पाती हैं कि उसका शरीर अभी भी ठंडा है तथा छाती अंदर को धँसी है।

7. उसके रोग का क्या निदान है ? ____________________________

8. क्यों ? ____

____

____

9. आप उसे क्या दवा देंगी ? ________________________________

10. आप उसे कितनी खुराक देंगी ? ____________________________

11. आप उसे दवाई कितने दिन तक देंगी? __________________________

12. क्यों? ____

परीक्षा पत्र के उत्तर

लिखित परीक्षा में अंक (कुल अंक 50 उत्तीर्णांक 35)

लहानु का जन्म 9 महीने पर हुआ और उसका वज़न 2 कि.ग्रा. था। वह जन्म के समय ठीक था, पर चौथे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया और उसने स्तनपान बंद कर दिया (2×10 = 20 अंक)

1. **उसका निदान क्या है?** *सेप्सिस*
2. **क्यों? विशेष लक्षण क्या दिखे?**
   शरीर ठंडा पड़ गया था
   स्तनपान बंद हो गया था
3. **आप उसे क्या दवाएँ देंगी ?** *कोट्रिमॉक्सेज़ोल*
4. **कितनी खुराक देंगी ?** *1/4 चम्मच दिन में 2 बार*
5. **आप कितने दिन दवा देंगी ?** *7 दिन*
6. **इस अवधि में आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?** *दिन में 2 बार × 7 दिन*
7. **माता–पिता को आप घर पर शिशु की देखभाल के बारे में कौन सी 3 बाते बताएँगी ?**
   शिशु को गर्म रखें (माँ के पास चिपकाकर रखें, कपड़े पहनाएँ)
   कई बार स्तनपान कराएँ, हर 2 घंटे के बाद
   यदि शिशु की हालत बिगड़े, तो तुरंत आशा को बुलाएँ

नीता का जन्म 7 महीने पर हुआ और उसने पहले 7 दिनों तक ठीक से स्तनपान नहीं किया। चौथे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया, पर अन्य कोई लक्षण नहीं थे (2 ×15 = 30 अंक)

1. **क्या उसे सेप्सिस है ?** हाँ / *नहीं*
2. **क्यों ?** *उसमें चौथे दिन केवल एक लक्षण था – शरीर ठंडा (हाइपोथर्मिया)*
3. **क्या नीता का स्तनपान न करना सेप्सिस का लक्षण है ?** हाँ / *नहीं*
4. **क्यों ?** *क्योंकि वह जन्म के समय से ही स्तनपान नहीं कर रही थी।*
5. **नीता को क्या बीमारी है ?** *हाइपोथर्मिया*

6. उस दिन आप क्या करेंगी ? (तीन बातें लिखें)

माँ को शिशु के शरीर को गर्म करना सिखाएँ।

बताएँ कि वह शिशु को अपने शरीर से चिपकाकर रखे।

थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान कराती रहे।

अगले दिन दोपहर में जाने पर आप पाती हैं कि उसकी स्थिति उसी प्रकार है। अगले दिन आपको बुलाया जाता है। आप पाती हैं कि उसका शरीर अभी भी ठंडा है तथा छाती अंदर को धँसी है।

7. उसके रोग का क्या निदान है ? *सेप्सिस*

8. क्यों ? *उसमें एक ही दिन में 2 लक्षण दिखाई दिए –*

शरीर ठंडा होना

छाती अंदर धँसी होना।

9. आप उसे क्या दवा देंगी ? *कोट्रिमॉक्सेज़ोल*

10. आप उसे कितनी खुराक देंगी ? *1/4 चम्मच दिन में 2 बार*

11. आप उसे दवाई कितने दिन तक देंगी? *10 दिन*

12. क्यों? *शिशु का जन्म समय से पहले हुआ था।*

प्रशिक्षण कार्यशाला 4 : सारांश तथा गाँव में कार्य करने की योजना बनाना

दिवस : 4
समयावधि : 2 घं. 10 मि.

प्रयोजन

जो इस प्रशिक्षण (प्रशिक्षण कार्यशाला 4 मोड्यूल 10, 11, 12 तथा 13) के दौरान सीखा, उसकी समीक्षा करना तथा आने वाले दिनों में समुदाय के बीच आशाओं को जो कार्य करना है, उसकी योजना बनाना। आशा गांव में जिस माँ तथा नवजात शिशु वाले नये फॉर्म का प्रयोग करेगी, उससे परिचय कराना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यतायें आएँगी:

1. बता पाना कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला के बाद समुदाय के बीच क्या–क्या कार्य करने है।
2. गाँव में किन किन फॉर्मो का प्रयोग करना है, और कैसे?
3. गाँव में कार्य करने के लिए आवश्यक सामुग्री की सूची बनाना।
4. चार प्रशिक्षण कार्यशालाओं के बाद आशा कैसा महसूस कर रही है उस के बारे में बताना।

सामग्री

- विटामिन के की सुई (एम्प्यूल)
- सिरिंज
- रुई के फोहे
- स्पिरिट
- रुई के फोहे रखने के लिये प्लास्टिक का डिब्बा
- पारदर्शी मज़बूत प्लास्टिक का डिब्बा (काला), पारदर्शी मज़बूत प्लास्टिक का अन्य डिब्बा, पीले रंग की थैली।
- गले के स्त्राव निकालने वाला उपकरण (चूषण पंप)
- कोट्रिमॉक्सेज़ोल
- अभ्यास पुस्तिका 1
- माँ तथा नवजात शिशु वाला फॉर्म
- पूरक फॉर्मो की पुस्तिका
- अभ्यासपत्र 1: अब मैं कैसा महसूस कर रहीं हूँ – फॉर्म

तैयारी

- विटामीन 'के' की सुई लगाने के लिए आवश्यक सभी सामान तैयार रखें। (विटामिन के की सुई (एम्प्यूल), सिरिंज, रुई के फोहे, रुई के फोहे रखने के लिये प्लास्टिक का डिब्बा, स्पिरिट, एक प्लास्टिक का डिब्बा प्रयुक्त सुईयॉ तथा टूटे (एम्प्यूल) रखकर घर ले जाने के लिये तथा और एक डिब्बा प्रयुक्त रूई के फोहे घर ले जाने के लिए, पारदर्शी मज़बूत प्लास्टिक का डिब्बा (काला), पारदर्शी मज़बूत प्लास्टिक का अन्य डिब्बा, पीले रंग की थैली)। प्रत्येक आशा अपने साथ 100 मि. ली. स्पिरीट, 10 सिरिंज, रूई, विटामिन 'के' की 5 एम्प्यूल, तथा उपर दिया हुआ सामान ले जायेगी।

- गले का स्त्राव निकालने वाले उपकरण तथा कोट्रिमॉक्सेज़ोल तैयार रखें क्यों कि आशायें (जिन्हे 70% से अधिक अंक मिले है) अपने साथ ये सब सामान ले जायेगी (प्रत्येक आशा अपने साथ गले का स्त्राव निकालने वाले 3 उपकरण तथा 5 बोतल कोट्रिमॉक्सेजोल) जिससे वह अपने गॉंव में, दम घुटे शिशु का उपचार गले का स्त्राव निकालने वाले उपकरण से तथा सेप्सिस का उपचार कोट्रिमॉक्सेज़ोल से आरंभ कर सके।
- पर्याप्त मात्र में मॉं तथा नवजात शिशु वाले फॉर्म और पूरक फॉर्म तैयार रखे। प्रत्येक आशा अपने साथ हर प्रकार के पॉंच फॉर्म ले जायेगी।
- आशाओं की संख्या के अनुसार अभ्यासपत्र 1 की पर्याप्त प्रतियॉं तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधिः

समुदाय में कौनसे कार्य करने है (30 मि.)

1. आशाओं से पूछें कि जो कार्य वे समुदाय में कर रही हैं, उसके बारे में बताएँ (घरों के दौरे पर जाना, सभी गर्भधारण योग्य महिलाओं का पंजीकरण, गर्भवती महिलाओं की सूची बनाना, गर्भवती महिलाओं के पास जॉंच के लिये जाना, प्रसव देखना, प्रसव फॉर्म भरना, नवजात शिशु का 30 से. और 5 मि. पर अवलोकन करना, शिशु की पहली जॉंच करना, शिशु की पहली जॉंच फॉर्म भरना, प्रसव के पश्चात् घरों का दौरा करना और घरों का दौरा फॉर्म भरना, बातचीत की सफल विधि का प्रयोग करना और माताओं को स्वास्थ्य शिक्षा परामर्श देना)
2. आशाओं से पूछें की इस प्रशिक्षण के दौरान उन्होने क्या सीखा है (विटामिन 'के' की सुई लगाना, कम वजन के तथा समय पूर्व जन्में शिशुओं की देखभाल, कौनसे शिशु खतरे के लक्षण वाले होते है, खतरे के लक्षणों वाले शिशु, की देखभाल, खतरे के लक्षण वाले शिशु के प्रति आशा की जिम्मेदारी, दम घुटे शिशु की पहचान तथा गले के स्त्राव निकालने वाले उपकरण की सहायता से उसका उपचार, सेप्सिस का निदान तथा मुँह से कोट्रिमॉक्सिज़ोल दे कर उसका उपचार, सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म भरना, तथा खतरे के लक्षणों वाले शिशुओं की घर पर ही देखभाल के लिए उनके माता–पिता को परामर्श देना)।
3. आशा सभी नवजात शिशुओं को विटामिन 'के' की सुई लगाना आरंभ करेगी। शुरू में सभी आशाएँ अपने सुपरवाईजर की उपस्थिति में (जब सुपरवाईजर उनके गॉंव में जायेंगे) ही नवजात शिशु को सुई लगाएँगी। इस तरह गॉंव में सुपरवाईज़र की देखरेख में जब वे बिना कोई गलती किए 5 सुई लगालें, तब सुपरवाईज़र उन्हें प्रमाणपत्र देंगे। उसके पश्चात् शिशु की पहली जॉंच के समय (जन्म के 1 घंटे बाद) वे खुद सुई लगा सकती हैं। कुछ रह गया हो तो वह भी बताये।
4. बतायें की आशायें जो कार्य कर रही हैं उसके अतिरिक्त वह निम्न कार्य भी करेगीं – कम वज़न वाले, समय पूर्व जन्मे तथा खतरे के लक्षणों वाले शिशुओं की पहचान, इन शिशुओं को स्तनपान कराने में माताओं की मदद, माताओं को शिशुओं की देखभाल के बारे में जानकारी देना, यदि शिशु में खतरे के लक्षण हों तो इसके बारे में मॉं को परामर्श देना, दम घुटे शिशु की पहचान तथा उपचार, और सेप्सिस का निदान एवं उपचार। आशा पहले महीने में 13 बार खतरे के लक्षणों वाले शिशु के घर जॉंच के लिए जायेगी।
5. आशाओं से कहें कि गॉंव में लौटकर उन्हें जो कार्य करने है उसके लिये जरूरी सामान की वे एक सूची तैयार करें। प्रशिक्षक भी आवश्यक सामान की सूची तैयार करें और आशाओं ने तैयार की सूची को उनकी सूची से मिलाकर देखें। कुछ छूट गया हो तो उसे लिखकर आशाएँ अपनी सूची पूरी करें। प्रशिक्षक देखें

कि सूची के अनुसार सारा सामान, लौटते समय आशा अपने साथ ले जायेगी।

6. जिस आशाओं ने दम घुटने तथा सेप्सिस के बारे में परीक्षा पास नहीं की है, वह अगली कार्यशाला में पुनः परीक्षा दे सकती है। यदि वे परीक्षा में उत्तीर्ण हो गयी तो उन्हे समुदाय मे कार्य करने के लिए आवश्यक सभी सामान (गले का स्त्राव निकालने वाले 3 उपकरण तथा 5 बोतल कोट्रिमॉक्सेजोल) दे दिया जायेगा जिससे वे गॉव में काम करना आरम्भ कर सके। जिन आशाओं ने परीक्षा पास करली है उन्हे सूची के अनुसार सारा सामान दिया जायेगा।
7. बतायें कि इस अवधि में प्रशिक्षक/सुपरवाईज़र उनके काम के निरीक्षण हेतु दौरे पर आयेंगे। प्रशिक्षक/सुपरवाईज़र आशा के काम मे सहायता देंगे तथा उसका मूल्यांकन करेंगे।

फॉर्मो कि समीक्षाः चर्चा (50 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

प्रसव फॉर्म :

1. आशाओं से अभ्यास पुस्तिका 1 में दिये गये प्रसव फॉर्म को देखने को कहें। इस में तथा मॉ एवं नवजात शिशु वाले फॉर्म में दिये गये प्रश्नों को देखने को कहें।
   - एक एक कर के प्रश्न पढ़वायें।
   - बतायें कि प्रश्न नंबर 1 से ९अ तक दोनो फॉर्मो में कोई अंतर नहीं है।
   - उनसे प्रश्न ९ब देखने को कहें।
   - पहले आशा यह निदान करती थी कि शिशु सामान्य है अथवा मृत शिशु जन्म हुआ है। अब आशा को बताया जा चुका है कि दम घुटे हुए शिशु को गले का स्त्राव निकालने वाले उपकरण की सहायता से पुनरूज्जीवन किया जा सकता है।
2. फॉर्म मे तीन विकल्प दिये गये हैं – सामान्य / दम घुटा शिशु / देर का मरा
3. यदि शिशु का दम घुटा है तो गले का स्त्राव निकालने वाले उपकरण की सहायता से आशा उसका उपचार करेगी। इसके लिए उसने क्या कदम उठाए, यह प्रश्न ९क में दिया गया है। (९क का दुसरा बिन्दु बैग और मास्क से सॉस देने के बारे में है। प्रशिक्षण कार्यशाला 6 में बैग और मास्क का प्रयोग करना सीखने के पश्चात् आशा इस प्रश्न को भरना शुरू करेगी।)
4. प्रश्न ९ड में कृत्रिम श्वास देने के बाद शिशु जीवित अथवा मृत है, यह लिखा जाए।
5. शेष प्रश्नों को भी पढ़वायें। प्रश्न नंबर 10 तथा 11 एक से हैं। प्रश्न 12 का पहला बिन्दु बाद में जोड़ा गया है। इस में बताया गया हैं कि आशा को क्या कार्य करने हैं।
   - आशा इस बात का ध्यान रखे कि दाई नाल को खींचे नहीं।
   - प्रसव के तुरंत बाद मॉ को कुछ पीने को दें यह बिन्दु पहले के फॉर्म जैसाही है। यहॉं लिखना है कि क्या आशा यह कर पायी। यदि वह कर पायी, तो 'हॉं' पर गोला बनायें, यदि नही, तो 'नहीं' पर गोला बनायें।
6. अगले बाक्स में आशा को बताया गया है की वह मॉ को शीघ्र स्तनपान करवाने में मदद करे। इससे मॉ का रक्तस्त्राव कम हो जायेगा तथा अवलनाल जल्दी बाहर आ जायेगी।
7. कोई प्रश्न हो तो पूछें। कठिनाईओं का समाधान करें तथा उन पर चर्चा करें।

नवजात शिशु की पहली जांच वाला फॉर्मः

1. आशाओं से अभ्यास पुस्तिका 1 में दिया गया "नवजात शिशु की पहली जॉच" वाला फॉर्म तथा "मॉ एवं नवजात शिशु" वाला फॉर्म देखने को कहें।

   भाग 1 मे दिये गये प्रश्नों को एक–एक कर पढ़ने को कहें।

   बतायें कि प्रश्न 1 से 7 तक दोनो फॉर्मो में कोई अंतर नहीं है। प्रश्न नंबर 6 में एक खाना जोड़ा गया है जिसमे बताया गया है कि यदि स्तनपान की समस्या है, तो क्या करना है। यहाँ आशा को लिखना है कि उसने कोई कदम उठाये या नहीं। पिछली प्रशिक्षण कार्यशाला में वे यह सीख चुकी हैं कि स्तनपान संबंधी समस्या के लिए क्या कदम उठाने हैं।

2. आशा से 'शिशु की पहली जांच' वाला भाग देखने को कहें।

   – प्रश्न नंबर 1 में आशा को शिशु के शरीर का तापमान लिखना है। यदि तापमान 97° F (36.1° C) से कम है तो शिशु को गर्म करने के उपाय करने हैं। पिछली प्रशिक्षण कार्यशाला में यह सिखाया जा चुका है।

3. प्रश्न 2 को देखे। उस में आशा को ऑखों की स्थिति (सामान्य/ सूजन/ ऑखों मे कीचड़ आना) लिखनी है। ऑखें ठीक हों, उनमें सूजन हो, अथवा कीचड़ आ रहा हो, तो क्या करना है? आशा को पिछली कार्यशाला में ऑख में मल्हम लगाना सिखाया जा चुका है।

4. दोनों फॉर्मो में प्रश्न नं. 3,4 तथा 5 देखने को कहें। इन प्रश्नों में कोई अंतर नही है।

5. प्रश्न नं. 5 के नीचे दिये गये बाक्स को देखें। यह खतरे के लक्षणों वाले शिशु के निदान तथा उपचार के बारे में है।

   – खाने में 1 नंबर पर दिये विूाय देखें। इसमे तीन बिंदु दिये गये हैः

   समयपूर्व जन्मा शिशु, जन्म के समय वजन 1 कि. 999 ग्रा. अथवा इससे कम तथा पहले दिन शिशु स्तनपान नहीं कर रहा।

   – इनमे से जो भी लक्षण उपस्थित हो उस पर ✓ ऐसा निशान लगा दें।

   – दाईं ओर दो विकल्प हॉ/नहीं दिये गये हैं। यदि तीन लक्षणों में से एक में भी ✓ ऐसा निशान लगा है, तो शिशु अधिक खतरेवाला हैं। **'हॉं'** पर गोला बनायें। यदि एक भी ✓ ऐसा निशान नहीं लगाया गया तो, **'नही'** पर गोला बनायें।

   – विषय नं. 2 देखे। इस में बताया गया है कि यदि शिशु में खतरे के लक्षण है, तो आशा को क्या कदम उठाने हैं।

   – ये कदम है – शिशु को मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना, जब तक शिशु का वज़न दो किलो न हो जाये, उसे नहलाना नहीं, हर दो घंटे बाद उसे स्तनपान कराना, तथा कमरा, कपड़े और हाथ स्वच्छ रखना। हॉं या नहीं पर गोला बनाकर आशा को रिकार्ड करना है कि उसने ये कदम उठाये या नहीं।

   – यदि शिशु अधिक खतरेवाला है तो आशा 'अधिक खतरेवाले शिशुओं का घरों का दौरा फॉर्म' भरें।

6. नवजात शिशु की नियमित देखभाल, तथा प्रश्न नं. 6 एवं 7 देखें। इन में कोई अंतर नहीं है।

घर के दौरे वाला फॉर्म

1. आशाओं से अभ्यास पुस्तिका में दिया गया "घर के दौरे वाला फॉर्म" तथा "मॉ तथा नवजात शिशु वाला फॉर्म" देखने को कहें। पहले भाग ('मॉ से पूछें') में कोई अंतर नहीं है। 'मॉ की जांच' वाले भाग में स्तनपान संबंधी समस्याओं के लिए जो कदम उठाने हैं, वे दिये गये हैं। ये आशा को याद दिलाने के लिए हैं।
2. आशाओं से कहे कि वे 'शिशु की जांच' वाले भाग में वि्राय वजन देंखें। यदि शिशु का वजन नहीं बढ़ रहा हो तो आशा को क्या कार्य करना है यह यहाँ दिया गया हैं। आगे का वि्राय तापमान देंखें। यदि शिशु को बुखार हो, या उसका तापमान कम हो या शिशु का शरीर ठंड़ा पड़ा हो तो आशा को क्या करना है यह यहॉ दिया गया हैं।
3. अब सेप्सिस के निदान वाला भाग देखें। पहले फॉर्म में यह भाग सेप्सिस के लक्षण कहलाता था। तब आशा यहॉ सेप्सिस के लक्षण है या नहीं यह दर्ज करती थी। अब आशाएँ जानती है कि सेप्सिस का निदान कैसे करना है। इसलिए यह भाग अब सेप्सिस का निदान वाला भाग है। सेप्सिस के निदान के लिए दिए गये सात लक्षणों में कोई अंतर नहीं है। इसके नीचे 'उपस्थित कुल लक्षणों की संख्या' है। आशा को सारे ✓ निशान गिनकर यहॉ लिखना है। लक्षणों की संख्या की आधार पर आशा को यह तय करना है कि सेप्सिस है, या नहीं, तथा तद्नुसार अगले खाने में 'हॉ' या 'नहीं' पर गोला बनाना है।
4. नीचे आशा को लिखना है कि सेप्सिस के उपचार का कौनसा प्रबंध परिवार ने स्वीकार किया। आशा को उचित उत्तर पर गोला बनाना हैं। आगे आशा को बताया गया है कि यदि वह सेप्सिस का उपचार करती हो तो उसे सेप्सिस उपचार फॉर्म (पूरक फॉर्म 4) भरना है। नीचे बाक्स में दिया गया है कि सेप्सिस का एक लक्षण मौजूद हो तो आशा को क्या उपचार करना है।
5. तालिका के नीचे आशा को बताया गया है कि वह इस बात का सावधानी से निरीक्षण करे कि क्या 28 दिन में शिशु का वज़न जन्म के समय के वजन से 300 ग्राम से कम बढ़ा है अथवा 28 वें दिन शिशु का वजन 2 किलो 300 ग्राम से कम है, तो दूसरे महीने में भी वह शिशु को देखने उसके घर पर जाये, तथा दूसरे महीने का घरों का दौरा फॉर्म (पूरक फॉर्म 4) भरें।
6. आशा को यह भी बताया गया है कि वह मॉ को प्रसव के अगले दिन स्वास्थ्य शिक्षा दें। अधिक खतरे वाले शिशु के माता पिता को अधिक खतरेवाले शिशु का जानकारी पत्र दें। दूसरे दिन खतरे के लक्षणों की जानकारी वाला प्रपत्र सभी परिवारों को देना शुरू करेगी। सभी प्रशिक्षण कार्यशालाओं की समाप्ति पर आशा यह प्रपत्र सभी परिवारों को देगी (अंतिम प्रशिक्षण कार्यशाला में भी इसकी चर्चा की जायेगी और उसके बाद आशा यह प्रपत्र बांटना शुरू करेगी)।

"अधिक खतरे वाले शिशुः घरों का दौरा फॉर्म":

आशाओं से कहें की पूरक फॉर्मो वाली पुस्तिका में दिये गये "अधिक खतरे वाले शिशुः घरों का दौरा फॉर्म देखें। इसमे दिये गये वही प्रश्न है जो स्वस्थ शिशु की जॉच के लिए घर के दौरे वाले फॉर्म में दिये गये हैं। लेकिन दौरे के दिन अलग–अलग है। अधिक खतरे के लक्षणों वाले शिशु के पास पहले 28 दिनों में 13 बार जाना है। यदि शिशु में दूसरे महीने में भी खतरे के लक्षण मौजूद रहे, तो दूसरे महीने वाला फॉर्म प्रयोग करना है।

"घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना":

आशाओं से कहें कि पूरक फॉर्मो वाली पुस्तिका में दिये गये "घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना" देखें। इस में 35वें, 42वें, 49वें तथा 56वें दिन के दौरे के बारे में लिखने के लिए जगह दी गई है। इस फॉर्म का प्रयोग तब करें जब दूसरे महीने में भी शिशु में खतरे के लक्षण दिखाई दें।

अन्य फॉर्मः

पूरक फॉर्म की पुस्तिका में दिये गये अन्य फॉर्म हैः "स्तनपान संबंधी समस्या का उपचार", "हाईपोथर्मिया निदान तथा उपचार" तथा "सेप्सिस का उपचार"। यह बताया जा चुका है कि इन फॉर्मो को प्रयोग कब और कैसे करना है।

"नवजात शिशु स्वास्थ्य सेवा मूल्यांकन फॉर्म":

"माँ तथा नवजात शिशु" वाले फॉर्म में नवजात शिशु स्वास्थ्य सेवा मूल्यांकन फॉर्म देखें। सब विूायों को एक एक कर के पढ़ें। देखभाल किये हुये माँ–बच्चे के बारे में जानकारी आशा इस फॉर्म में भरें। यह फॉर्म उसी महीने में भरा जाना चाहिए जिस में सेवाए दी गयी। प्रत्येक प्रश्न ज़ोर से बोल कर पढ़ें, तथा उदाहरण दे, जिससे हर आशा यह समझ जाये कि उत्तर कैसे देने हैं। सुपरवाईज़र खुद भी इस फॉर्म को पूरा करें। इस फॉर्म को भरने के लिए आवश्यक जानकारी इसी फॉर्म में दी गयी है। जिन कार्यक्रमों में कार्यकर्ताओं को उनके कार्य के अनुसार पारिश्रमिक दिया जाता है, वहाँ इस फॉर्म का प्रयोग पारिश्रमिक के निर्धारण में किया जायेगा।

निदान तथा उपचार सारांशः

निदान तथा उपचार सारांश वाला फॉर्म देखे। बताए की नवजात शिशु तथा माँ के लिए भरे गये फॉर्मो में से यह जानकारी मिल जायेगी। एक एक करके सभी विूाय पढ़ते जाये और आशा से पूछते जाये कि जानकारी किस फॉर्म में उपलब्ध है। फॉर्म देखकर उन्हें उत्तर देने को कहें। आशा को फॉर्म के बारे में जानकारी होनी चाहिए। यद्यपि फॉर्म में दी गयी जानकारी सुपरवाईज़र व्दारा भरी जानी है।

"माता–पिता के लिए प्रपत्रों वाली पुस्तिका":

आशा से माता–पिता के लिए प्रपत्रों वाली पुस्तिका के बारे में बताने को कहें। इस पुस्तिका में तीन प्रकार के प्रपत्र हैं:

1. माँ व्दारा शिशु के जन्म से पूर्व तथा पश्चात् उठाये जाने वाले कदम (सभी गर्भवती महिलाओं को सातवें महीने वाले घर के दौरे के समय दिया जायेगा)।
2. अधिक खतरे के लक्षणों वाले शिशुः जानकारी प्रपत्र (अधिक खतरे के लक्षणों वाले शिशुओं के माता–पिता को दिया जायेगा)।
3. खतरे के लक्षणः जानकारी प्रपत्र।

विषयों कि समीक्षा करें। बतायें कि तीसरा प्रपत्र प्रसव के पश्चात् दूसरे दिन सभी परिवारों को दिया जाना है। आशा उस समय शिशु की जांच के लिए आयेगी, तथा माँ एवं परिवार के लोगों को स्वास्थ्य शिक्षा देगी। सुनिश्चित करें कि माँ तथा परिवार के सदस्य इस प्रपत्र में दी गयी जानकारी को समझ लेंगे। आशा नवजात शिशु की जाँच के लिए जाते समय प्रत्येक बार माता–पिता से इस प्रपत्र में दी गई जानकारी की चर्चा करे।

प्रश्नोत्तर/चर्चा (25 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

1. आशा से पूछें कि नवजात शिशु की घरेलू देखभाल हेतु कौन कौन सी सूचियाँ, फॉर्म तथा प्रपत्र प्रयोग किए जाते है। आशा की सहायता से इसकी एक सूची ब्लैक बोर्ड पर बनाएँ। सूची में निम्न बातें सम्मिलित होनी चाहिएः

रजिस्टरः

1. गाँव की सभी गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची
2. गर्भवती महिलाओं की सूची

गर्भावस्था फॉर्म पुस्तिकाः

1. गर्भावस्था फॉर्म

माँ एवं नवजात शिशु पुस्तिकाः

1. प्रसव फॉर्म
2. नवजात शिशु की पहली जॉचः फॉर्म
3. घरों का दौराः फॉर्म
4. नवजात शिशु स्वास्थ्य सेवा मूल्यांकन फॉर्म
5. निदान तथा उपचार सारांश

पूरक फॉर्म पुस्तिकाः

1. घरों का दौरा फॉर्मः अधिक खतरे वाले शिशु
2. घरों का दौरा फॉर्मः दूसरे महीने का दौरा
3. स्तनपान संबंधी समस्याएँ उपचार फॉर्म
4. हाईपोथर्मिया उपचार फॉर्म
5. नवजात शिशु सेप्सिस उपचार फॉर्म

माता–पिता के लिए प्रपत्रः

1. शिशु जन्म से पूर्व तथा पश्चात् माँ व्दारा उठाये जाने वाले कदम
2. अधिक खतरे के लक्षण वाले शिशुः जानकारी प्रपत्र
3. खतरे के लक्षणः जानकारी प्रपत्र

सारांश (30 मि.)

- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिये प्रशंसा करें।
- आशाओं को अभ्यासपत्र 1: अब मैं कैसा महसूस कर रहीं हूँ – फॉर्म बॉटे। उन्हें समझाएँ कि यह परीक्षा नहीं है। फॉर्म पूरा करने के लिये उन्हें 20 मिनट का समय दें।

टिप्पणीः आशाओं को बताएँ कि उन्होंने अब तक जो सीखा है (प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4) उसके लिये उनका मूल्यांकन अगली प्रशिक्षण कार्यशाला में किया जाएगा। उनके ज्ञान के मूल्यांकन के लिये लिखित परीक्षा तथा योग्यताओं के मूल्यांकन के लिये प्रायोगिक प्रदर्शन मूल्यांकन में समाविष्ट होगे। परीक्षा की तैयारी के लिये सभी आशा, प्रशिक्षण कार्यशाला 4 तक की पूरी अध्ययनपुस्तिका कम सक कम 2 बार पढ़े। अच्छा होगा कि वे हर दिन 2 पन्ने पढ़ें। अलग अलग योग्यताओं का भी वे तब तक अभ्यास करें जब तक उन्हें दक्षता हासिल हो। जिन आशाओं का मूल्यांकन का फल सन्तोषजनक होगा उन्हें इंजेक्शन जेंटामायसिन तथा बैग और मास्क जैसे अतिरिक्त योग्यताओं का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बता पाना कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला के बाद समुदाय के बीच क्या–क्या कार्य करने है।	प्रश्नोत्तर	–
गांव में किन किन फॉर्मो का प्रयोग करना है और कैसे?	प्रश्नोत्तर	–
गॉव में कार्य करने के लिए आवश्यक सामुग्री की सूची बनाना।	आशाओं व्दारा तैयार की गई सूची	आशाओं व्दारा तैयार की गई सूची तथा आशाओं को दिए गये सामग्री की सूची
चार प्रशिक्षण कार्यशालाओं के बाद आशा कैसा महसूस कर रही है उस के बारे में बताना।	'अब मैं कैसा महसूस कर रहीं हूँ' – फॉर्म	प्रत्येक आशा व्दारा भरा गया 'अब मैं कैसा महसूस कर रहीं हूँ' – फॉर्म

'अब मैं कैसा महसूस कर रहीं हूँ' – फॉर्म

1. अब आप जब अपने गॉव लौट रहीं हैं तो आप को कैसा महसूस हो रहा है?

___

___

2. क्या आपके पास सारी सामग्री है? हॉं / नहीं

यदि नहीं तो क्या नहीं है? ___

___

3. इस सामग्री को पा कर आप को कैसा लग रहा है?

___

4. निम्न कार्य करने में आपकी योग्यता के बारे में आप क्या सोचती है? (उचित खाने में ✓ निशान लगाएँ)

		आश्वस्त	थोड़ा आश्वस्त	आश्वस्त नहीं
अ.	विटामिन 'के' की सुई लगाना			
ब.	अधिक खतरेवाले शिशु की पहचान करना।			
	उसकी घरपर देखभाल करना।			
क.	दम घुटे शिशु की पहचान करना।			
	चूषण पंप का प्रयोग करना।			
ड.	नवजात शिशु में सेप्सिस की पहचान करना।			
	उसका कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार करना।			

5. गॉव में लौटने के पश्चात् आप पहले क्या करेंगी?

___

___

___

6. क्या आपको कोई कठिनाई महसूस होती है? यदि हॉं तो विवरण दें।

___

___

___

नवजात शिशु तथा बच्चों की घर में देखभालः
'आशा' प्रशिक्षण कैसे करें

प्रशिक्षण कार्यशाला 5

प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 की दोहराई, अभ्यास तथा मूल्यांकन

आशा का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4

समयसूची
आशा प्रशिक्षण की प्रशिक्षण कार्यशाला 5
दोहराई, मूल्यांकन तथा मोड्यूल ९ब (बीमार बच्चा)

समय	दिवस 1	दिवस 2	दिवस 3
सुबह का सत्र 8.30 से 12.30	स्वागत, गीत, (15 मि.) **प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 की दोहराई, अभ्यास तथा मूल्यांकन** सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 तथा 2 में दी गयी जानकारी तथा दक्षताओं को दोहराना तथा मूल्यांकन करना (2 घंटे 10 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 1 : (जारी) प्रशिक्षण कार्यशाला 1 तथा 2 में दी गयी जानकारी तथा दक्षताओं को दोहराना तथा मूल्यांकन करना (बड़े समूह में चर्चा तथा नवजात शिशु की स्थितियों को पहचानना) (50 मि.) सत्र 2 : प्रशिक्षण कार्यशाला 3 तथा 4 में दी गयी जानकारी तथा दक्षताओं को दोहराना (30 मि.) भोजन (1 घंटा)	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (15 मि.) सत्र 2 : योग्यताओं का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 (1 घंटा 50 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 2 : (जारी) योग्यताओं का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 (1 घंटा 45 मि.) भोजन (1 घंटा)	गीत, पिछले दिवस की मीक्षा (15 मि.) सत्र 2: उपचार के बारे में जानकारी तथा अस्पताल भेजने से पूर्व उपचार (30 मि.) सत्र 3: बच्चे का उपचार – रेफरल संबंधी विषय (1 घंटा) चाय (15 मि.) सत्र 4: बच्चे का उपचार : घर पर ही दवा द्वारा उपचार निमोनिया/पेचिश का कोट्रिमॉक्सेजोल द्वारा उपचार (1 घंटा) सत्र 5: बच्चे का उपचार : घर पर ही दवा द्वारा उपचार दस्त तथा निर्जलीकरण का ओ आर एस घोल (प्लान बी) पिलाकर उपचार (1 घंटा) भोजन (1 घंटा)
दोपहर का सत्र 13.30 से 17.30	सत्र 2 : (जारी) प्रशिक्षण कार्यशाला 3 तथा 4 में दी गयी जानकारी तथा दक्षताओं को दोहराना (1 घंटा 30 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 2 : (जारी) प्रशिक्षण कार्यशाला 3 तथा 4 में दी गयी जानकारी तथा दक्षताओं को दोहराना (30 मि.) **आशा का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4** सत्र 1 : प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 (1 घंटा 30 मि.)	सत्र 2 : (जारी) योग्यताओं का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 (1 घंटा 30 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 2 : (जारी) योग्यताओं का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 (25 मि.) **मोड्यूल 9 : बीमार शिशु की देखभाल तथा टीकाकरण और पोषण के लिए परामर्श** ९ब : उपचार पहचानना तथा रेफरल पूर्व उपचार करना सत्र 1: प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन तथा पूर्व प्रशिक्षण को दोहराना (1 घंटा)	सत्र 6: बच्चे का उपचार : घर पर ही दवा द्वारा उपचार तेज़ बुखार तथा एनीमिया का उपचार (30 मि.) सत्र 7: घरेलू देखभाल (1 घंटा) चाय (15 मि.) सत्र 7: (जारी) घरेलू देखभाल (1 घंटा) प्रशिक्षण कार्यशाला 5 : सारांश तथा गॉव में कार्य करने की योजना बनाना (45 मि.)
शाम	संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल	संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल	संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल
मनोरंजन	समूह चर्चा : साक्षरता	भूमिका नाटक	लोकगीत

आशयसूची

प्रशिक्षण कार्यशाला 5

पृष्ठ

प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 की दोहराई, अभ्यास तथा मूल्यांकन

सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 तथा 2 में दी गयी जानकारी तथा दक्षताओं को दोहराना तथा मूल्यांकन करना 508

अभ्यासपत्र 1 : पिछली माहवारी की तिथि के आधार पर प्रसव की संभावित तारीख ज्ञात करना 514

अभ्यासपत्र 2 : भूमिका नाटक के विषय 515

अभ्यासपत्र 3 : प्रसव के बाद 30 से. तथा 5 मि. का समय तय करना 516

सत्र 2 : प्रशिक्षण कार्यशाला 3 तथा 4 में दी गयी जानकारी तथा दक्षताओं को दोहराना 517

आशा का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4

सत्र 1 : प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 523

अभ्यासपत्र 1 : मूल्यांकन प्रश्नपत्र 525

प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : प्रश्नपत्र के उत्तर (अभ्यासपत्र 1) 532

प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : मूल्यांकन अंकतालिका 540

सत्र 2 : योग्यताओं का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 541

प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : नवजात शिशुओं की समस्याओं को दर्शाते चित्र 545

प्रशिक्षण कार्यशाला 5 : सारांश तथा गॉव में कार्य करने की योजना बनाना 557

प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 की दोहराई, अभ्यास तथा मूल्यांकन

सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 तथा 2 में दी गयी जानकारी तथा दक्षताओं को दोहराना तथा मूल्यांकन करना

दिवस : 1
समयावधि : 3 घं.

प्रयोजन

प्रशिक्षण कार्यशाला 1 तथा 2 में दी गई जानकारी को दोहराना तथा आशाओं की कठिनाईयों और शंकाओं का समाधान करना। इसके अतिरिक्त अब तक ली गई जानकारी एवं अपनी योग्यताओं को सुदृढ़ करने का अवसर देना तथा आशाओं का मूल्यांकन करना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यताएँ आएँगीः

1. ठीक ठीक बताना कि किन महिलाओं को गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में और किन को गर्भवती महिलाओं की सूची में शामिल करना। गर्भावस्था के दौरान किन खतरे के लक्षणों के होने पर महिला को अस्पताल भेजना। पिछली माहवारी की तारीख के आधार पर प्रसव की संभावित तिथि ज्ञात करना।
2. गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को स्वास्थ्य शिक्षा देते समय बातचीत की सफल विधियों का प्रयोग करना।
3. प्रसव के बाद 30 से. तथा 5 मि. तय करना।
4. नवजात शिशु की पहली जांच करने की योग्यता का प्रदर्शन करना– तापमान लेना, शिशु का वजन लेना, तथा नवजात शिशु के रोगों की पहचान।

सामग्री

- गांव की, गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची
- गर्भवती महिलाओं की सूची
- आशा की अभ्यास पुस्तिका– गर्भावस्था फॉर्म, प्रसव फॉर्म, नवजात शिशु की पहली जॉचः फॉर्म तथा घरों का दौरा फॉर्म।
- माँ तथा शिशु के स्वास्थ्य का रिकार्ड
- स्वास्थ्य शिक्षा चित्रपुस्तिका
- थर्मामिटर
- वजन नापने के लिए तराजू
- अभ्यासपत्र 1: पिछली माहवारी की तिथि के आधार पर प्रसव की संभावित तारीख ज्ञात करना।
- अभ्यासपत्र 2: भूमिका नाटक के विषय
- अभ्यासपत्र 3: प्रसव के बाद 30 से. तथा 5 मि. का समय तय करना।
- संगणक तथा वेब कैमेरा – आशाओं का मूल्यांकन रिकार्ड करने के लिये
- नवजात शिशुओं के रोगों की पहचान कराने के लिये आशा अध्ययन पत्र से फोटो का प्रयोग करें।

तैयारी

- कार्यशाला के पूर्व प्रशिक्षक एवं सुपरवाईजर एक बैठक करें। बैठक के दौरान प्रत्येक आशा का सुपरवाईजर व्दारा गॉव में भरा गया काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड तथा उसकी समस्याओं पर चर्चा हो और यह सारी बातें सुपरवाईजर प्रशिक्षक को अवगत कराएँ। इस प्रकार तैयारी कर लेने से अगली प्रशिक्षण कार्यशाला आरंभ होने से पहले प्रशिक्षक एवं सुपरवाईजर को आशा की प्रशिक्षण संबंधी जरूरतों का पूरा पूरा ज्ञान होगा।
- आशा से कहें कि वह कक्षा में गॉव की गर्भधारण योग्य तथा गर्भवती महिलाओं की सूची, गॉव में भरे गये गर्भावस्था फॉर्म, अभ्यासपुस्तिका, मॉ तथा नवजात शिशु वाला रिकार्ड, तथा स्वास्थ्य शिक्षा चित्र पुस्तिका लेकर आएँ। आशा अपने साथ अध्ययनपत्र भी रखें।
- अभ्यासपत्र 1, 2 तथा 3 की पर्याप्त प्रतियाँ रखें। अभ्यासपत्र 2 को ठीक जगह पर काट कर भूमिका नाटकों के परिदृश्यों की हर समूह के लिए एक पर्ची बना लें।
- इस सत्र की शुरूआत से पहले आशाओं से कहें कि वे प्रशिक्षण कार्यशाला 1 तथा 2 की अध्ययन सामग्री पढ़ लें।
- नवजात शिशुओं के रोगों की पहचान कराने के लिये अध्ययन पत्र वाली पुस्तिकाओं का प्रयोग करें।

प्रशिक्षण विधि

सामूहिक चर्चा तथा परीक्षा (20 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

गर्भधारण योग्य तथा गर्भवती महिलाओं की सूचीः

- आशाओं को बड़े गोले में बिठाएँ। उनसे गर्भधारण योग्य तथा गर्भवती महिलाओं की सूची वाले अपने–अपने रजिस्टर देखने को कहें।
- आशाएँ गर्भधारण योग्य तथा गर्भवती महिलाओं की जो सूचियॉ तैयार कर रही थीं, उसके बारे में चर्चा से शुरूआत करें। उन से पूछें कि इसमें उन्हे कोई समस्या तो नहीं आयी। सुपरवाईज़र के गॉव के दौरे के समय संभवतः इन समस्याओं का समाधान हो गया होगा पर फिर भी सभी की जानकारी के लिए इस पर चर्चा करना आवश्यक है।
- उदहारणतः एक आशा से पूछें कि गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची तैयार करने के लिए गॉव में जाने पर अगर कोई गर्भवती महिला उसे मिले तो वह उसे किस सूची मे रखेगी। उसके उत्तर सुनें तथा चर्चा करें *(सही उत्तरः उसे गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में रखा जायेगा क्योंकि वह पुनः गर्भवती हो सकती है, तथा उसे गर्भवती महिलाओं की सूची में तो रखा ही जायेगा)।*
- आशाओं से पूछें कि गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में महिला का नाम लिखने के लिए क्या मापदंड है। उनके उत्तर सुने। निम्न मापदंड होना चाहिएः
  - विवाहित हो।
  - पति के साथ रह रही हो।
  - परिवार नियोजन का ऑपरेशन न कराया हो।
  - माहवारी रूकी न हो।

- यदि कोई कुछ और बताना चाहती हों, तो सुने। हो सकता है कि उनमें से कोई बताये कि गॉंव में एक अविवाहित गर्भवती लड़की भी मिली और वह समझ नही पायी कि उसका नाम गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में रखना है या नहीं। बतायें कि यदि वह लड़की मान जाए तो आशा उसकी हाल की गर्भावस्था के दौरान सहायता कर सकती है, पर उसका नाम गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में नहीं लिखा जायेगा।
- आशाओं को गर्भवती महिलाओं की सूची बनाने में जो कठिनाईयॉं हुई हो उस संबंध में भी चर्चा करें। इसमें निम्न कठिनाईयॉं हो सकती हैं – पिछली माहवारी की तारीख नही तय कर पायी, कुछ महिलाएँ गॉंव में प्रसव के लिए गर्भावस्था के 7वें महीने में आयीं, इस लिए उनकी पिछली माहवारी की तारीख ज्ञात करना कठिन था। पूछें कि 'इंडि' किसे कहते हैं। उनके उत्तर सुने *(इंडि, उस स्थिति को कहते है जब पिछले बच्चे के जन्म के बाद माहवारी आये बिना महिला फिर से गर्भवती हो जाती है)।* यदि इंडि का कोई केस हो तो पिछली माहवारी की तारीख ज्ञात करना संभव नहीं होता।
- आशाओं से प्रसव की संभावित तारीख तथा प्रसव की संभावित तारीख के आधार पर समयपूर्व जन्म की तिथी पता करने के बारे में पूछें। उनके निम्न उत्तर हो सकते हैं–
  - – प्रसव की संभावित तारीख पिछली माहवारी के 9 महीने तथा 7 दिन बाद होती है।
  - – गर्भकाल 8 महीने तथा 14 दिन अथवा उससे कम हो तो इसे समयपूर्व जन्म कहते है। आशाएँ पिछली माहवारी की तारीख, प्रसव की संभावित तारीख तथा समयपूर्व जन्म की तारीख वाले चार्ट का प्रयोग कर ही रही हैं।
  - – आशाओं को अभ्यासपत्र 1 दें तथा पिछली माहवारी की तारीख, प्रसव की संभावित तारीख तथा समयपूर्व जन्म की तारीख वाले चार्ट का प्रयोग करते हुए प्रसव की संभावित तारीख तथा समयपूर्व जन्म की तारीख लिखने को कहें।
  - – आशाओं से कहें कि वे भरें हुए अभ्यासपत्रों की आपस में अदला बदली करें। प्रशिक्षक सही उत्तर बोर्ड पर लिखें, जिसके आधारपर आशा अभ्यासपत्र का मूल्यांकन करें और जिसका अभ्यासपत्र उसे लौटाएँ।

चर्चा (10 मि.)

गर्भावस्था के दौरान अस्पताल भेजनाः

- आशाओं को अभ्यास पुस्तिका में गर्भावस्था फॉर्म देखने को कहें। पूछें कि अस्पताल भेजने के लिए सामान्य तथा आपात्कालीन स्थितियॉं कौन कौनसी है? उनसे अध्ययन सामग्री पढ़ने और उसमे दिये मापदंडो के बारे में चर्चा करने को कहें। यदि उनमे से किसी को गॉंव की किसी महिला में खतरे के लक्षण देख कर अस्पताल भेजने का अनुभव हुआ हो, तो सबको इसके बारे में बताने को कहें। पूछें किः
  - – स्थिति के बारे में उसने परिवार के लोगों से कैसे सलाह मश्वरा किया?
  - – क्या परिवार के लोगों को स्थिति की गंभीरता समझ में आयी?
  - – क्या वे महिला को अस्पताल भेजने के लिए तैयार हुए?
  - – यातायात के लिए कैसी सुविधा उपलब्ध हुयी?
  - – क्या पैसे की कोई समस्या थी?
  - – अस्पताल के कर्मचारियों का रवैया कैसा था?
  - – अस्पताल भेजने का क्या परिणाम रहा?

चर्चा के लिए पर्याप्त समय दें। इससे वे बहुत कुछ सीखेंगी। सभी को चर्चा में शामिल करें। जब आशा बाते बता रहीं हों तो प्रशिक्षक समय का ध्यान रखें। ऐसा न हो कि एक ही आशा बोलती जाए, सभी को बोलने का मौका दें। ध्यान रहें कि चर्चा आवश्यक बातों पर ही हो।

भूमिका नाटक का अभ्यास (1 घं. 40 मि.)

गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य शिक्षा

- आशा से पूछें कि गर्भावस्था के दौरान माँ को कब स्वास्थ्य शिक्षा देनी है तथा कौन से कार्डो का प्रयोग करना हैं। उत्तरों में निम्न शामिल होने चाहिएं:
  - पंजीकरण के समय। जब गर्भवती महिला को 4 माह का गर्भ है: 5वें महीने में कार्ड नं. 1 से 9 दिखाने हैं।
  - 7 वें महीने में कार्ड नं. 1 से 9 दोबारा दिखाने है, और उसके आगे 21 नं. तक के कार्ड भी दिखाने है।

    बाहर गाँव की जो महिला प्रसव के लिये गाँव में आती हैं उसे उपर दी गयी स्वास्थ्य शिक्षा आशा के पहले दौरे में मिलनी चाहिये।
  - 9वें महीने में आशा को देखना है कि माँ ने प्राप्त जानकारी का कितना प्रयोग किया तथा कितना याद रखा। आशा को माँ की विशेष समस्याओं का भी समाधान करना है।
- आशाओं को दो–दो की टोलियों में बाँटे। उन्हे परिदृश्य (अभ्यासपत्र 2 से बनायी पर्चियाँ) दें तथा 10 मि. का समय भूमिका नाटक की तैयारी के लिए दें। 10 मि. के पश्चात प्रत्येक टोली को सब के सामने भूमिका नाटक प्रस्तुत करने को कहें। प्रत्येक प्रस्तुति के लिए 3 मि. का समय दें। हर प्रशिक्षणार्थी को आशा की भूमिका निभाने तथा माँ को स्वास्थ्य शिक्षा देने का अवसर मिलना चाहिये।
- आशाएँ जब भूमिका नाटक प्रस्तुत कर रही हों तो प्रशिक्षक निश्चित करें कि वे सही कार्डो का प्रयोग कर रही हैं, गर्भवती महिलाओं को चित्र ठीक से दिखा रही हैं, तथा उन्हे चर्चा में शामिल कर रही हैं, न कि केवल स्वयं ही बात करती जा रही हैं। प्रशिक्षक बातचीत की सफल विधियों वाली जाँच सूची देखें और प्रत्येक आशा का मूल्यांकन करें। (आशाओं के इस मूल्यांकन को वेब कैमेरा की सहायता से रिकार्ड करें तथा उसकी सीडी बनाकर रखें)
- सभी भूमिका नाटक खेले जाने के पश्चात् बातचीत की सफल विधियों के प्रयोग को दोहराएँ और देखे की सभी आशाओं को इसके आवश्यक घटक याद हैं। पूछें की गाँव की महिलाओं से बातचीत के समय क्या आशाओं ने इनका प्रयोग किया?

सामूहिक चर्चा तथा परीक्षा (20 मि.)

जन्म के बाद 30 से. तथा 5 मि. का समय तय करनाः

- प्रसव, दाई के साथ कार्य, तथा शिशु के निरीक्षण के संबंध में हुए अनुभवों के बारे में आशाओं से पूछें। क्या वे प्रसव के बाद 30 से. तथा 5 मि. का समय तय कर पायीं? प्रसव के बाद 30 से. तथा 5 मि. का समय तय कर पाना आशा के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों हैं। उनके उत्तर सुनें। (उत्तर : जिससे ज्ञात

हो सके कि शिशु को सांस लेने मे कठिनाई तो नहीं या फिर उसका दम तो घुटा हुआ नहीं, जिससे कि समय रहते उसे कृत्रिम साँस दी जा सकें)।

- आशा की प्रसव के बाद 30 से. तथा 5 मि. का समय तय करने की योग्यता की जाँच के लिए एक पहेली हल करवाएँ।
  - शुरू करने से पहले घड़ियों का समय मिला लें। जन्म का समय बतायें तथा उसके बाद 30 से. एवं 5 मि. का समय बताने को कहें।

    जैसे – यदि जन्म का समय है ९घं. 20 मि. तथा 15 से., तो 30 से. बाद क्या समय होगा? 5 मि. बाद क्या समय होगा?
- उनके उत्तर सुनें। उत्तर शायद निम्न होंगे–
  - 30 से. के बाद समय होगा ९घं. 20 मि. तथा 45 से.
  - 5 मि. के बाद समय होगा ९घं. 25 मि. तथा 15 से.
- यह बताने का ध्यान रखें कि प्रसव के बाद 30 से. तथा 5 मि. गिनना हैं। आशा की उनके अच्छे कार्य के लिए प्रशंसा करें।
- अभ्यासपत्र 3ः जन्म के पश्चात् 30 से. तथा 5 मि. का समय तय करना, बांटें।
- आशाओं से कहें कि वे पूरे भरे हुये अभ्यासपत्रों की अदला बदली करें। प्रशिक्षक सही उत्तर बोर्ड पर लिखें। एक दूसरे के अभ्यासपत्र जाँचने के आशाएँ अभ्यासपत्र लौटा दें।
- किसी के कोई प्रश्न हों तो उनका समाधान करें।

जन्म के समय देखभाल तथा शिशु की पहली जाँच (10 मि.)

- आशा से नवजात शिशु की पहली जाँच वाला फॉर्म देखने को कहें। उनसे पूछें कि जन्म के तुरंत बाद शिशु की देखभाल कैसे की जाती है।
- उत्तर में निम्न बातें शामिल होनी चाहिएँ – शिशु को पोछें, कपड़े में लपेटे तथा तुरंत स्तनपान कराने के लिए माँ के पास लिटायें।
- उनसे पूछें कि शिशु की पहली जाँच करने में कौनसी योग्यताएँ शामिल हैं? उत्तर में निम्न बातें शामिल होनी चाहिएँ:
  - शिशु के शरीर का तापमान लेना
  - शिशु का वज़न लेना
  - नवजात शिशु में अन्य रोगों की जाँच करना
- आशाओं को दो दो सदस्यों के जोड़ियों में बाँट दें। उनसे शिशु का तापमान तथा वज़न लेने का अभ्यास करने को कहें। एक आशा जब ऐसा कर रही हो तो दूसरी अध्ययनपत्र में दी गयी जाँच सूची में पढ़कर जाँच करती जाए। प्रशिक्षक आवश्यकता पड़ने पर आशा की मदद करें। अभ्यास पूरा होने पर जो आशाएँ तैयार हो उसकी परीक्षा लें।
- प्रशिक्षक योग्यता जाँच सूची का प्रयोग करते हुए आशा की वज़न तथा तापमान लेने की योग्यता का मूल्यांकन करें।

नवजात शिशु के रोगों की पहचान (20 मि.)

- प्रशिक्षक अध्ययनपत्र में दिए गये चित्रों का प्रयोग करें। चित्रों के नाम ढँककर उन्हें अनुक्रम दे तथा उन्हें कमरे में फैला दें। आशा चित्रों को देखें और शिशु रोगों की पहचान करके अपने उत्तर कागज़ पर चित्र के सही नंबर के साथ लिखें। सभी को लिखने के लिये पर्याप्त समय दें। सभी आशाएँ लिख लें तो उन्हें आपस में कागज़ों की अदला बदली करने को कहें। प्रशिक्षक जोर से उत्तर बताएँ। आशाएँ एक दूसरे का लिखा हुआ जॉचें।

सारांशः

- एक आशा से गर्भवती महिलाओं के सूची में नाम लिखने के लिए मापदंड बताने को कहें।
- अन्य आशा से आपात्काल में अस्पताल भेजने के लिए मापदंड बताने को कहें।
- एक अन्य आशा से पूछें कि गर्भावस्था के 5वें महीने में स्वास्थ्य शिक्षा देने के लिए किन कार्डो का प्रयोग किया जाता है।

सत्र का मूल्यांकनः

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
ठीक ठीक बताना कि किन महिलाओं को गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में, और किन को गर्भवती महिलाओं की सूची में रखना है।	प्रश्नोत्तर	–
पिछली माहवारी की तारीख के आधार पर प्रसव की संभावित तिथि ज्ञात करना।	अभ्यासपत्र 1: मूल्यांकन के लिए उदाहरण	–
गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को स्वास्थ्य शिक्षा देते समय बातचीत की सफल विधियों का प्रयोग करना।	प्रश्नोत्तर भूमिका नाटक	प्रशिक्षक व्दारा भूमिका नाटक का अवलोकन (वेब कैमेरा व्दारा रिकार्ड कर सीडी तैयार करना)
प्रसव के बाद 30 से. तथा 5 मि. तय करना।	अभ्यास – अभ्यासपत्र 3	–
नवजात शिशु की पहली जॉंच करने में समाविष्ट योग्यताओं का सही प्रदर्शन करना– तापमान लेना, शिशु का वज़न लेना, तथा नवजात शिशु के रोगों की पहचान।	जॉंच सूची की सहायता से योग्यताओं का अवलोकन करनाचित्रों की पहचान व्दारा अभ्यास	सभी आशाओं व्दारा चित्रों की पहचान का अभ्यास तथा मूल्यांकन

पिछली माहवारी की तिथि के आधार पर प्रसव की संभावित तारीख ज्ञात करना।

पिछली माहवारी की तिथि	प्रसव की संभावित तारीख
2 जनवरी 2007	
12 फरवरी 2006	
27 मार्च 2007	
21 नवंबर 2006	
20 जून 2006	
30 अप्रैल 2007	
17 मई 2007	
15 अगस्त 2006	
6 जनवरी 2007	
9 फरवरी 2007	

आशा का नाम ____________________ तारीख __________

प्रशिक्षक का नाम ____________________ कुल अंक __________

ब्लॉक ____________________

भूमिका नाटक के विषय

1. 5 महीने की गर्भवती भरपेट खाना नहीं खाती।
2. 7 महीने की गर्भवती ने टीटनस का एक भी टीका नहीं लगवाया।
3. 6 महीने की गर्भवती के चेहरे तथा हथेली पर सूजन है।
4. 8 वें महीने में गर्भवती को तेज बुखार है।
5. 4 थे महीने में गर्भवती आयरन की गोलियाँ खाना नहीं चाहती।

प्रसव के बाद 30 से. तथा 5 मि. का समय तय करना।

10 : 15 : 02		
08 : 10 : 12		
06 : 25 : 11		
01 : 12 : 15		
03 : 14 : 10		
07 : 11 : 08		
02 : 05 : 22		
11 : 35 : 28		
12 : 05 : 05		
01 : 40 : 20		

आशा का नाम ______________________ तारीख __________

प्रशिक्षक का नाम ______________________ कुल अंक __________

ब्लॉक ______________________

प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 की दोहराई, अभ्यास तथा मूल्यांकन

सत्र 2 : प्रशिक्षण कार्यशाला 3 तथा 4 में दी गयी जानकारी तथा दक्षताओं को दोहराना

दिवस : 1
समयावधि : 2 घं. 30 मि.

प्रयोजन

प्रशिक्षण कार्यशाला 3 तथा 4 में दी गई जानकारी और योग्यताओं को दोहराना तथा आशा की कठिनाइयों का समाधान करना। इसके अतिरिक्त, इस सत्र के दौरान निरीक्षण में अपनी योग्यताओं का अभ्यास करने का तथा अपनी शंकाओं का समाधान करने का आशा को अवसर मिलेगा।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यताएँ आएँगी:

1. स्तनपान कराने की प्रभावी विधियाँ बताना तथा स्तनपान संबंधी समस्याओं का समाधान करना।
2. हाईपोथर्मिया की परिभाषा बताना। बताना कि नवजात शिशुओं को हाईपोथर्मिया से बचाने के लिए क्या उपाय करने चाहिए तथा इसका क्या उपचार है।
4. नवजात शिशुओं को सही तरीके से विटामिन 'के' की सुई लगाना।
5. खतरे के लक्षणों वाले शिशु की पहचान तथा उपचार।
6. दम घुटे शिशु का निदान तथा चूषण पंप की सहायता से इसका उपचार।
7. सेप्सिस का निदान तथा कोट्रिमॉक्सेज़ोल से इसका उपचार।

सामग्री

- कंबल
- गर्म थैली
- विटामिन 'के' ऍम्प्यूल
- सिरिंज
- रूई
- स्पिरिट
- चूषण पंप
- कोट्रिमॉक्सेज़ोल सिरप
- 4 गुड़ियाँ

तैयारी

- आशाओं को पहले से बता दें कि वह माँ तथा नवजात शिशु वाला फॉर्म, पूरक फॉर्म की पुस्तिका, अध्ययन प्रपत्र तथा स्वास्थ्य शिक्षा चित्र पुस्तिका लेकर आएँ।
- ध्यान रखें कि उपर्युक्त सभी सामान पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों।

प्रशिक्षण विधि

सामूहिक चर्चा

स्तनपान– सहायता, स्वास्थ्य शिक्षा तथा समस्याओं का समाधान (20 मि.)

- आशाओं को गोले मे बिठाएँ।
- स्तनपान के बारे में चर्चा शुरू करें। आशाओं से पूछें की उन्होने गांव में क्या देखा है। उनके उत्तरों से दो सूचियाँ बनाएँ, एक में लाभकारी प्रथाएँ हो जिनसे स्तनपान को बढ़ावा मिलता है, दूसरी में ऐसी प्रथाएँ हो जो हानिकारक हो सकती है जैसे – प्रसव के तुरंत बाद दो तीन दिन तक स्तनपान न कराना या गुड़ का पानी पिलाना।
- आशाओं से हानिकारक प्रथाओं वाली सूची देखकर बताने को कहें कि इनसे क्या क्या समस्यायें हो सकती हैं? (निम्न उत्तर होने चाहिएः स्तनपान देर से शुरू कराने का अर्थ हुआ कि शिशु कम स्तनपान कर रहा है, जिस कारण से दूध कम बनता है, और शिशु को पर्याप्त पोषण नहीं मिलता। कम स्तनपान कराने से स्तनों में सूजन भी हो जाती है। गुड़ का पानी देने से शिशु को दस्त लग सकते हैं, आदि।) यदि किसी की कोई शंका हो तो उसका समाधान करें।
- स्तनपान कराने के लिए मॉं तथा शिशु की सही स्थिति बनाने के बारे में बताने को आशाओं से कहें। (उत्तरः शिशु का मुँह खुला हुआ हो तथा मॉं के स्तन के एरियोला तथा चूचुक से लगा हुआ हो, शिशु का निचला होठ बाहर को निकला हो)
- आशाओं से पूछें कि यदि शिशु केवल चूचुक से ही मुँह लगा कर स्तनपान कर रहा है तो क्या समस्या हो सकती है? आशा के विचार तथा अनुभव जाने। चर्चा में कटे–फटे चूचुक के उपचार के बारे में भी पूछें। (उत्तरः चूचुक कट–फट सकते हैं। इससे स्तनों में सूजन हो सकती है तथा यदि शिशु कम बार स्तनपान कर रहा है, तो दूध भी कम बनता है। उपचार के लिए: स्तपान के समय मॉं–बच्चे को सही स्थिति में रहना सिखाएँ। मॉं को बतायें कि स्तनों की सूजन स्तनपान लगातार कराने से ठीक हो सकती है, तथा उससे दूध भी ठीक मात्रा में बनने लगेगा। दूध पिलाने के बाद चूचुकों पर थोड़ा मॉं का दूध लगायें (चिकनाई मिलती है) तथा हवा में सूखने दें। यदि चूचुक लाल, सूखे तथा फटे हुए हों तथा उपर्युक्त उपचार से भी ठीक न हों, तो इसका कारण संक्रमण हो सकता है। इस स्थिति में पॉंच दिन तक, प्रत्येक बार दूध पिलाने के बाद दोनो चूचुकों में जेन्शन वायलेट पेन्ट लगाएँ। यदि फिर भी ठीक न हो, तो डॉक्टर को दिखाएँ।
- आशाओं से, स्तनपान जल्दी शुरू कराने के लाभों के बारे में पूछें। (उत्तरः मॉं तथा बच्चे के बीच भावनात्मक संबंध, अवलनाल का शीघ्र बाहर आना, मॉं में रक्तस्त्राव कम होना, प्रसव के तुरंत बाद शिशु को उर्जा की आवश्यकता होती है जिसके लिए मॉं का दूध सर्वोत्तम पोषण है, स्तनपान कराने से अधिक दूध बनता है, आदि)
- कभी कभी छोटा शिशु स्तनपान नहीं कर पाता। आशाओं से पूछें कि ऐसे में वह मॉं की मदद कैसे करेंगी। उनके उत्तर सुनें। (उत्तर में निम्न बातें शामिल होनी चाहिए– शिशु को जितनी बार भूख लगे, उतनी बार मॉं के स्तनों से लगाना क्योंकि इससे मॉं के दूध की मात्रा बढ़ेगी। पहले कुछ दिनों में हर दो घंटे के बाद स्तनपान कराना चाहिये। यदि वह स्तनपान न करा पाये तो मॉं को अपने स्तनों से दूध निकालकर शिशु को चम्मच से पिलाना सिखाएँ।)

- दो आशाओं से भूमिका नाटक प्रस्तुत करने को कहें, जिसमें यह दिखाया जाये कि आशा किस प्रकार माँ–बच्चे की स्तनपान की स्थिति ठीक करने में, तथा शिशु को स्तनपान कराने में मदद कर रही है। नाटक के बाद आशाओं को यदि कोई समस्या हो तो उस पर चर्चा करें।

तापमान नियंत्रण – हाईपोथर्मिया की रोकथाम तथा उपचार (20 मि.)

- इन विषयों पर चर्चा करें: शिशु का शरीर ठंडा क्यों हो जाता है, कैसे यह जाने कि शिशु का ृरीर ठंडा है, उसे ठंडा होने से कैसे बचाए, ठंडे पड़े शिशु को कैसे गर्मी पहुँचायें, तथा उसे कैसे गर्म रखें। आशायें ये सीख ही चुकी हैं तथा समुदाय के बीच इसका अभ्यास भी कर चुकी हैं। एक एक करके उन्हें बोलने को कहें। प्रशिक्षक ध्यान रखें कि वे सभी बाते बताएँ। यदि कोई गलत बात बताए, तो उसे सही करें । किसी के कोई प्रश्न अथवा कठिनाई हो तो इसका समाधान करे।
- आशाओं से शिशु को लपेटने तथा गर्म थैली में रखने का प्रदर्शन करने को कहें। बतायें कि शिशु को कस कर नहीं लपेटना चाहिए। गर्म थैली की चैन खींचते समय हाथ चैन के नीचे होना चाहिए, जिससे शिशु की त्वचा चैन में न फँसे। गर्म थैली में रखें शिशु को माँ के पास रखें। गर्म थैली के अलावा शिशु को गर्म रखने का एक विकल्प है (बहुत छोटे शिशुओं के लिये इसका प्रयोग होता है) कि शिशु को माँ के स्तनो के बीच खड़ा करके माँ अपने शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखें।

नवजात शिशु को विटामिन 'के' की सुई (30 मि.)

- चर्चा की शुरूआत यह पूछकर करें कि शिशु को विटामिन 'के' की सुई क्यों लगायी जाती है। पूछें की सुई कब, किस मात्रा में तथा कितनी बार देनी चाहिए, क्या यह किसी और को भी लगायी जा सकती है, सुई किस स्थान पर लगायी जाती है तथा प्रयुक्त सुई/सिरिंज/शीशियाँ आदि का प्रबन्धन कैसे किया जाता है। (उत्तर: विटामिन 'के' रक्तस्त्राव रोकने के लिए दिया जाता है। शिशु की जांघ के सामने के भाग के बाहरी हिस्से में 1 मिली ग्राम मात्रा की सुई केवल एक बार प्रसव के बाद, पहले घंटे की जाँच के समय लगायी जाती है। केवल नवजात शिशुओं को ही विटामिन 'के' की सुई लगाई जाती हैं।
- आशायें सुपरवाईज़र के निरीक्षण में यह सुई लगाने का क्षेत्र में अभ्यास पहले से कर ही रही है। यदि आशा को कोई समस्या हो तो उसका समाधान करें। सुई लगाने की सुरक्षित विधि का महत्व बताएँ।
- एक आशा से विटामिन 'के' की सुई लगाने का प्रदर्शन करने को कहें। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को अभ्यासपत्र 1 जाँच सूची की एक कापी दें। आशाओं से कहें कि प्रदर्शन के दौरान वे जाँच सूची के आधारपर निरीक्षण करें तथा जाँच सूची भरती जायें। सारी आशाएँ अपनी भरी हुई जाँच सूची के आधारपर प्रदर्शन का मूल्यांकन करें तथा कुछ गलतियाँ हो तो बताएँ। अन्त में प्रशिक्षक टिप्पणी करें।
- सारी आशाओं को 4 समूहों में बाँटें। एक एक करके प्रत्येक आशा गुड़ियाँ पर सुई लगाने का प्रदर्शन करें। बाकी आशाएँ जाँच सूची के आधारपर निरीक्षण तथा मूल्यांकन करें तथा कुछ गलतियाँ हो तो बताएँ। प्रशिक्षक घूम घूम कर देंखें कि प्रत्येक आशा सही तरीके से सुई लगा रही हैं।

अधिक खतरेवाले शिशुओं की पहचान तथा उपचार (20 मि.)

- आशाओं से पूछें कि वे अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान कैसे करेंगी? (उत्तर: शिशु जन्मते ही स्तनपान नहीं कर पा रहा, जन्म के समय वज़न 2000 ग्रा. से कम, गर्भकाल 8 माह 14 दिन अथवा इससे कम)
- आशाओं से पूछें की उनमें से किसीने खतरे वाले शिशु की गाँव में देखभाल की है क्या? यदि हाँ तो उस आशा को अपना अनुभव बताने दें। क्या उन्हें शिशु को गर्म थैली में रखने या माँ के शरीर से चिपकाकर

रखने में कोई कठिनाई हुई? क्या माता–पिता ने उनकी बात मानी (कभी कभी माता–पिता शिशु को गर्म थैली में रखने तथा माँ के शरीर से चिपकाकर रखने का विरोध करते हैं) क्या शिशु स्वयं स्तनपान कर पाया, या चम्मच से माँ का दूध पिलाना पड़ा? क्या माँ स्वयं अपना दूध निकाल पायी? क्या शिशु को कोई अन्य समस्या थी? (अधिक खतरे के लक्षणों वाले शिशुओं में संक्रमण की संभावना होती है।)

- दो आशाओं को एक ऐसा भूमिका नाटक प्रस्तुत करने को कहें जिसमे प्रसव के दूसरे दिन खतरे के लक्षणों वाले शिशु की देखभाल के बारे में आशा माँ को समझा रही है (ध्यान रहे आशा दूसरे दिन माता–पिता को खतरे के लक्षणों वाला जानकारी पत्र अवश्य दें)। भूमिका नाटक के पश्चात् उसमें दर्शायें गयें सारे मुद्यों पर चर्चा करें, तथा कुछ छूट गया हो, या किसी ने कुछ गलत बताया हो, तो सही कर दें।
- आशाओं से पूछें की अधिक खतरे के लक्षणों वाले शिशु को देखने के लिए पहले महीने में कितनी बार उसे शिशु के घर जाना है?

जन्मतेही दम घुटे शिशु का निदान तथा चूषण पंप से उसका उपचार (30 मि.)

- आशाओं से जन्मतेही दम घुटने की परिभाषा पूछें और इसके निदान के बारे में भी पूछें। उनसे कहें कि उन्होंने पिछली प्रशिक्षण कार्यशाला में दम घुटने के बारे में जो सीखा था उसे याद करें।
- पूछें कि प्रसवपीड़ा के दौरान कौनसे लक्षण दम घुटे शिशु के जन्म की ओर संकेत करते हैं (उत्तरः लंबी प्रसवपीड़ा, लंबे समय तक झिल्लियों का फटना, असामान्य (ब्रीच) जन्म, योनि से गाढ़े तथा नीले या पीले रंग के द्रव का स्त्राव, समयपूर्व जन्म)
- सभी से पूछें कि दम घुटने के तुरंत और फिर भविष्य में, क्या प्रभाव होते है? (उत्तरः जन्म के समय– मृत शिशु जन्म, शिशु सुस्त, स्तनपान नहीं कर पाना, तथा शुरू के कुछ हफ्तों में ही मरने की संभावना। भविष्य में आगे चल के – मंद बुध्दि शिशु,, मिर्गी आने की बीमारी, मानसिक विकलांगता)
- पूछें कि शिशु जन्म के पहले आशा को ऐसी क्या तैयारी करना आवश्यक है जिससे वह जन्मतेही दम घुटे शिशु की देखभाल कर सकेगी? (उत्तरः सूखे और स्वच्छ कपडे या तौलिये, चूषण पंप तथा घड़ी तैयार रखना)
- यदि जन्मतेही शिशु नहीं रो रहा या धीमे रो रहा है, हॉफ रहा है, हल्की सांस ले रहा है या सांस नही ले रहा तो, आशा को क्या कदम उठाने चाहिए? (उत्तरः प्रसव का सही समय नोट करे, शिशु को पोछें तथा तौलिये से ढँके, 30 से. पर यदि शिशु रोता नही तो गले का स्त्राव (मुँह, गला, नाक) निकालने के लिए चूषण पंप का प्रयोग करे।
- आशाओं से पूछें कि शिशु को मृत शिशु जन्म कब कहना चाहिये? (उत्तरः यदि शिशु प्रसव के तुरंत बाद या चूषण पंप का प्रयोग करने के 10 मि. बाद तक न रोये और न ही साँस ले, तो इसे मृत शिशु जन्म कहते हैं।
- यदि जन्मतेही शिशु का दम घुटा हुआ है तो वह क्या करेगी इसका प्रदर्शन करने को एक आशा से कहें (इसमें चूषण पंप का प्रयोग शामिल है)। सभी आशाओं को अभ्यासपत्र 2ः चूषण पंप का प्रयोग वाली जॉच सूची बॉटें। आशाओं के 4–4 के समूह बना लें। समूह की प्रत्येक आशा बारी बारी, जन्मतेही दम घुटे शिशु के उपचार का गुड़ियाँ पर प्रदर्शन करें। समूह की बाकी आशा प्रदर्शन का निरीक्षण करें तथा कुछ गलतियाँ हो तो प्रदर्शन के पश्चात् बताएँ। प्रशिक्षक यह करते हुए आशाओं को देखें तथा सुनिश्चित करें कि प्रत्येक आशा सही कदम उठा रही है।

सेप्सिस का निदान तथा कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार (30 मि.)

- आशाओं से पूछें कि क्या उनमें से किसी ने सेप्सिस का निदान तथा कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार किया है? यदि हॉं, तो अनुभव पूछें– सेप्सिस के कौनसे लक्षण मोजूद थे। क्या वह आत्मविश्वास के साथ शिशु का उपचार कर पायीं? माता–पिता की क्या प्रतिक्रिया थी? उपचार का क्या परिणाम हुआ? सभी केसों के बारे में विस्तार से चर्चा करें ताकि अन्य आशाएँ इन अनुभवों से सीख सकें।
- सिम्युलेटेड केसः
  - मॉं के, गर्भावस्था के 9 महीने पूरे होने के बाद शिशु का जन्म हुआ।
  - जन्म के समय शिशु का वजन 2 किलो 700 ग्राम था।
  - पॉंचवें दिन शिशु की टुंडी पर मवाद था।
  - आशा ने पॉंचवें दिन जी. वी. पेंट से उपचार किया।
  - छठ़े दिन शिशु ने दूध पीना बंद कर दिया।
  - क्या शिशु को सेप्सिस है? हॉं / नहीं
  - यदि हॉं तो शिशु को कौनसे दिन सेप्सिस हुआ?
  - शिशु के लिये क्या उपचार है?
- आशाओं से पूछें कि क्या उन्हें सेप्सिस के सात लक्षणों में से कोई लक्षण पहचानने में कोई कठिनाई है? (हाथ पैर लुंज–पुंज, दूध पीना कम अथवा बंद, रोना कम अथवा बंद, मॉं कहें कि शिशु का शरीर छूने में ठंडा है अथवा तापमान 99^{0}फै. (37.2^{0}सें) से अधिक, पेट फूला या बार बार उलटी होना, छाती अंदर को धँसी, टुंडी मे मवाद)। सेप्सिस के निदान के लिए एक ही दिन शिशु में कितने लक्षण होना आवश्यक है? (उत्तरः 2)
- सेप्सिस का क्या उपचार है? (एंटीबायोटिकः कोट्रिमॉक्सेज़ोल) समयपूर्व जन्मे तथा समय पर जन्मे शिशु के लिए इसकी क्या खुराक है? (उत्तरः समयपूर्व जन्में शिशु को 10 दिन तक दिन मे 2 बार 1/4 चाय का चम्मच कोट्रिमॉक्सेज़ोल, समय पर जन्मे शिशु को 7 दिन तक दिन में 2 बार 1/4 चाय का चम्मच कोट्रिमॉक्सेज़ोल)
- क्या सेप्सिस होने से रोका जा सकता है तथा कैसे? (उत्तरः हॉं। रोक थामः सफाई रखना, कई बार हाथ धोना, नाल को काटने के लिए स्वच्छ ब्लेड का प्रयोग करना, शिशु को गर्म रखना, कई बार स्तनपान कराना, टुंडी को साफ़ रखना)
- जिस शिशु को सेप्सिस है, उसकी मॉं को आशा क्या सलाह देती है? (उत्तरः स्तनपान कराती रहो तथा शिशु को गर्म रखो, खतरे के लक्षणों की ओर ध्यान दो। यदि शिशु का स्वास्थ्य बिगड़े तथा खतरे के लक्षण नज़र आये तो आशा की सहायता लो)
- सेप्सिस निदान का फॉर्म आशा कब भरती है? (उत्तरः हर बार घरों के दौरे पर)
- सेप्सिस उपचार वाला फॉर्म आशा कब भरती है? (उत्तरः जैसे ही सेप्सिस का निदान हो)
- माता–पिता से पूर्व–स्वीकृति वाला फॉर्म कब भरवाना आवश्यक है? (उत्तरः उपचार शुरू करने से पहले)
- सभी विषयों पर विस्तार से चर्चा करें और शंकाओं का समाधान करें।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
स्तनपान कराने की प्रभावी विधियॉं बताना तथा स्तनपान संबंधी समस्याओं का समाधान करना।	प्रश्नोत्तर	–
हाईपोथर्मिया की परिभाषा बताना। बताना कि नवजात शिशुओं को हाईपोथर्मिया से बचाने के लिए क्या उपाय करने चाहिए तथा इसका क्या उपचार है।	प्रश्नोत्तर प्रदर्शन	–
नवजात शिशुओं को सही तरीके से विटामिन 'के' की सुई लगाना।	प्रदर्शन	आशाओं के प्रदर्शन का जॉंच सूची के आधार से प्रशिक्षक व्दारा अवलोकन तथा निरीक्षण का विवरण
खतरे के लक्षणों वाले शिशु की पहचान तथा उपचार।	प्रश्नोत्तर, प्रदर्शन	–
दम घुटे शिशु का निदान तथा चूषण पंप की सहायता से इसका उपचार।	प्रश्नोत्तर	आशाओं के प्रदर्शन का जॉंच सूची के आधार से प्रशिक्षक व्दारा अवलोकन तथा निरीक्षण का विवरण
सेप्सिस का निदान तथा कोट्रिमॉक्सेज़ोल से इसका उपचार।	प्रश्नोत्तर	–

आशा का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4

सत्र 1 : प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकनः प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4

दिवस : 1
समयावधि : 1 घं. 30 मि.

प्रयोजन

आशायें क्षेत्र में पिछले कई महीनों से कार्य कर रहीं हैं। उन्हें नवजात शिशु की आवश्यक देखभाल करना, और साथ साथ जन्मतेही दम घुटना तथा सेप्सिस का निदान सिखाया जा चुका है। इन समस्याओं का उपचार आशायें विशिष्ट चरणों में सीख रही हैं। जन्मतेही दम घुटे शिशु के उपचार के लिए वे सीख चुकी हैं कि चूषण पंप की सहायता से स्त्राव कैसे निकालते हैं। सेप्सिस के लिए उन्होंने कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करना सीखा है। नवजात शिशु की पूरी देखभाल के लिए आशा को दम घुटे शिशु का बैग और मास्क की सहायता से उपचार करना तथा सेप्सिस का जेन्टामायसिन इंजेक्शन से उपचार करना सिखाये जाने हैं। प्रशिक्षण के इस अंतिम चरण की शुरूआत से पहले आशाओं की कार्य कुशलता– प्राप्त ज्ञान तथा योग्यताओं का मूल्यांकन करना आवश्यक है।

उद्देश्य

सत्र के अंत में, प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 में प्राप्त ज्ञान के लिये लिखीत परीक्षा व्दारा आशाओं का मुल्यांकन हुआ होगा।

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1: मूल्यांकन प्रश्नपत्र
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: प्रश्नपत्र के उत्तर (अभ्यासपत्र 1)
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2: मूल्यांकन अंकतालिका

तैयारी

- अभ्यासपत्र 1 की पर्याप्त प्रतियाँ तैयार रखें।
- इस परीक्षा के समय एक बाहरी परीक्षक मौजूद हो।

प्रशिक्षण विधि

मूल्यांकन (1 घं. 30 मि.)

बाहरी परीक्षकों हेतु सुझावः

1. अभ्यासपत्र 1: प्रश्नपत्र बॉटें।
2. आशाओं को अपने आप इसे भरने दें।
3. हल किये हुए प्रश्नपत्र वापस ले लें तथा बाहरी परीक्षक उन्हें जॉच लें।
4. प्राप्त अंकों की सूची तैयार करें।
5. जॉचे हुए प्रश्नपत्र तथा प्राप्त अंको की सूची गुण निर्धारण के लिए भेंज दें।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
सभी आशाओं को प्राप्त ज्ञान के मूल्यांकन में 50 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक मिलेंगे	प्रश्नपत्र	सभी आशाओं व्दारा हल किये गये तथा बाहरी परीक्षक व्दारा जॉचे गए प्रश्नपत्र

मूल्यांकन प्रश्नपत्रः

कुल अंक 60: (उत्तिर्णांक 30) **समयः 1 घंटा 30 मिनट**

सही उत्तर पर गोला करें

1) नवजात शिशु के टुंडी पर क्या लगाना चाहिये?
   अ. टेट्रासायक्लिन मल्हम
   ब. जी. वी. पेंट
   क. तेल
   ड. कुछ न लगाएँ, टुंडी को साफ तथा सूखा रखें

2) निम्न में से कौनसे कारण प्रसव के समय माँ तथा शिशु को खतरा हो सकता है?
   अ. माँ को गर्भावस्था में रतौंधी
   ब. माँ ने गर्भावस्था में भरपेट खाना खाना
   क. माँ को गर्भावस्था में खून जाना
   ड. माँ ने गर्भावस्था में आयरन फोलिक की गोली खाना

3) निम्न में से कौनसा शिशु खतरे वाला है?
   अ. शिशु को पहले दिन दूध पीने में कठिनाई
   ब. शिशु को 100^0 फै (37.8^0 सें) बुखार होना
   क. शिशु का जन्म के समय वजन 2 किलो 500 ग्राम
   ड. शिशु का 28 वें दिन वजन 2 किलो 500 ग्राम

4) आपने पहले महीने में कितनी बार अधिक खतरे वाले शिशु के घर का दौरा करना है?
   अ. हररोज
   ब. 13 बार
   क. 17 बार
   ड. 2, 5, 7, 15, तथा 28 वें दिन

5) शिशु का वजन कौनसे दिन करना है?
   अ. 1, 15 तथा 28 वें दिन
   ब. पहले दिन और फिर 7, 15, 28 तथा 42 वें दिन
   क. हर 15 दिन में एक बार
   ड. पहले दिन और फिर 28 वें दिन

आशा का नाम ______	तारीख ______
प्रशिक्षक का नाम ______	कुल अंक ______
ब्लॉक ______	

6) आप शिशु का कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार कब करती है?
   अ. शिशु को पीलीया हो तो
   ब. शिशु की ऑंखे लाल हो तो
   क. शिशु की छाती अंदर धँसती हो तो
   ड. शिशु जोर से रोता हो तो

7) शिशु के जॉंघ की त्वचा के मोडों में यदि लाली हो या त्वचा कटी हो तो निम्न में से कौनसा कार्य गलत है?
   अ. टेट्रासायक्लिन मल्हम लगाएँ
   ब. जी. वी. पेंट लगाएँ
   क. त्वचा साफ तथा सूखी रखें
   ड. टैल्कम पाउडर डालें

8) विटामीन 'के' की सुई लगाने के क्या लाभ है?
   अ. शिशु को सेप्सिस नहीं होता
   ब. शिशु के जिगर तथा खून में ताकद आती हैं
   क. शिशु को बुखार नहीं होता
   ड. शिशु की सॉंस की दर नहीं बढ़ती

9) यदि मॉं को हथेली तथा चेहरे पर सूजन हो तो क्या करना चाहिये?
   अ. गर्भावस्था के दौरान इस प्रकार की सूजन आम बात है ध्यान न दें
   ब. मॉं सुंदर दिखती है उसे बधाई दें
   क. उसे बताएँ कि बाहर न घूमें नजर लग सकती है
   ड. यह खतरे का लक्षण है मॉं को अस्पताल भेंजें

10) यदि शिशु को गरमी के दिनों में बुखार हो तो पहला कदम क्या होना चाहिये?
   अ. शिशु को अस्पताल भेंजें
   ब. कमरे में गीले तौलिये, चादरें ड़ालकर कमरा ठंड करने का प्रयास करें और शिशु का शरीर ठंडे पानी से पोंछें
   क. शिशु को कोट्रिमॉक्सेज़ोल दें
   ड. विटामीन 'के' की सुई लगायें

11) कौनसे शिशुओं को सॉंस दिलाने के लिये गले के स्त्राव निकालने की आवश्यकता होती है?
   अ. समय से पूर्व जन्में सारे शिशु
   ब. सारे नवजात शिशु
   क. ठंड़ के मौसम में पैदा हुए शिशु
   ड. जन्मतेही पोंछने के बाद भी जो शिशु नहीं रोते है

12) शिशु को पुनर्जिवीत करने का सही तरीका कौनसा है?
अ. शिशु की छाती को मालिश करें
ब. शिशु को कपड़े में लपेटे
क. सुई लगायें
ड. चूषण पंप का प्रयोग करें

13) शिशु को पहला आहार कब देना चाहिये?
अ. जन्म के तुरंत बाद
ब. जन्म के 2 घंटे बाद
क. मॉं की अच्छी निंद हो तथा मॉं खाना खा लें उसके पश्चात्
ड. जन्म के 3 दिन बाद

14) स्तन सूजे हो तो क्या उपचार करना चाहिये?
अ. शिशु को स्तनपान करना बंद करें
ब. मॉं को दवाई दें ताकि मॉं अच्छी निंद ले सके
क. स्तनों को कसकर बॉंधे
ड. शिशु को लगातार स्तनपान करें तथा मॉं के स्तनों से दूध निकालें

15) चूचुक न कटें फटें इसलिये मॉं को क्या सावधानी बरतनी चाहिये?
अ. रोज न नहायें
ब. देंखें कि शिशु सिर्फ चूचुकों को न चूसे
क. भरपेट खाना खाये
ड. अधिक पानी पीयें

16) शिशु को जन्मसे ही मॉं के दूध के साथ साथ क्या देना चाहिये?
अ. पानी पिलाते रहना चाहिये
ब. दाल और चॉवल
क. कुछ भी न दें। केवल स्तनपान करें
ड. गुड का पानी दें

17) जन्म के तुरंत बाद क्या सावधानी बरतनी चाहिये जिससे शिशु को ठंड़ा होने से बचाया जा सकें?
अ. जन्म के बाद 6 घंटे तक शिशु को स्तनपान न करें
ब. शिशु को मॉं के पास न दें
क. जन्म के तुरंत बाद शिशु को पोंछें तथा लपेटे
ड. जन्म के तुरंत बाद शिशु को गुड का पानी दें

18) शिशु का तापमान नापने के लिये थर्मामिटर को कहॉं रखना चाहिये?
अ. मुँह में
ब. बगल में
क. गुदा में
ड. थर्मामिटर से तापमान न नापें

19) शिशुका जन्मतेही दम घुटा है इसका पता कैसे चलता है?
अ. शिशु का वजन कम
ब. माँ का वजन कम
क. शिशु जन्मतेही साँस नहीं लेता और रोता नहीं
ड. शिशु का दूध पीना बंद

20) निम्न से कौनसा सेप्सिस निदान का मापदंड नहीं है?
अ. माँ कहती है कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है
ब. शिशु के शरीर पर लाल ददोरे
क. फूला हुआ पेट या लगातार उल्टी
ड. टुंडी पर मवाद

21) सेप्सिस हो तो शिशु को कौनसी दवाई दी जाती है?
अ. कोट्रिमॉक्सेज़ोल
ब. पैरासिटामॉल
क. टेट्रासायक्लिन
ड. विटामिन 'के' की सुई

22) जन्म के समय कम वजन का शिशु स्तनपान न करें तो आप क्या करोगी?
अ. बोतल से दूध पिलाएँ
ब. शिशु को दूध पिलाना बंद करें
क. माँ का दूध निकालकर शिशु को पिलाने का प्रयास करें
ड. दाई को बुलाएँ

23) निम्न से किस बात के लिये आप गर्भवती महिला को ए एन एम बहनजी के पास भेजोगी?
अ. गर्भावस्था फॉर्म भरवाने के लिये
ब. महिला ए एन एम बहनजी को प्रसव के समय बुलाएँ यह सुनिश्चित करने के लिये
क. टिटनस का टीका लगवाने
ड. ए एन एम बहनजी को अच्छा लगे इसलिये

24) शिशु की टुंडी पर मवाद हो तो आप क्या करोगी?
अ. टुंडी को ढँककर रखें
ब. गरम तेल लगाएँ
क. जी. वी. पेंट लगाएँ और सेप्सिस के अन्य लक्षणों के लिये सतर्क रहें
ड. टैल्कम पाउडर लगाएँ

25) महिला को पहला बच्चा होनेवाला हो तो आप कब कहोगी के प्रसव पीड़ा लंबी चल रही है?
अ. प्रसव पीड़ा 10 घंटे चली
ब. प्रसव पीड़ा 12 घंटे चली
क. प्रसव पीड़ा 24 घंटे चली
ड. प्रसव पीड़ा 7 घंटे चली

26) यदि आप शिशु जन्म के समय उपस्थित हो तो शिशु की पहली जॉंच कब करोगी?
 अ. एक घंटे के अंदर
 ब. एक घंटे के बाद पर 6 घंटे के अंदर
 क. दूसरे दिन
 ड. जन्म के तुरंत बाद शिशु को पोंछने के बाद

27) निम्न से किस बात के लिये शिशु को तुरंत अस्पताल भेजना चाहिये?
 अ. टीकाकरण
 ब. शिशु को ज़ुकाम हो तो
 क. शिशु की त्वचा जॉंघ की मोड़ों में कटना
 ड. सेप्सिस उपचार शुरू करने के 24 घंटे बाद भी शिशु में कोई सुधार नहीं

28) निम्न से किन महिलाओं के नाम गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में शामिल करने चाहिये?
 अ. जिस महिला की माहवारी बंद हो चुकी हो
 ब. जिस महिला के पती की नसबंदी हो चुकी हो
 क. 30 साल की विधवा जिसका पुनर्विवाह हुआ है
 ड. दूसरे गॉंव की महिला जो प्रसव के लिये आप के गॉंव में आयी है

29) आप के गॉंव के निम्न में से किसी एक को चुनिये जिसे स्वास्थ्य सेवा की आवश्यकता सबसे अधिक है?
 अ. पाठशाला में पढ़ने वाली छोटी लड़की
 ब. गॉंव के सरपंच / मुखिया
 क. नवजात शिशु
 ड. बूढ़े दादाजी

30) क्या गॉंव की प्रशिक्षित कार्यकर्ता (आप जैसी) गॉंव के नवजात शिशु तथा बच्चों की मृत्यूदर को कम कर सकती है? हॉं / नहीं

निम्न प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखें

1) निम्न में हर प्रसव का प्रकार लिखें – गर्भपात, समयपूर्व जन्म, समयपर जन्म
 1. प्रसव के समय मॉं के गर्भावस्था के 9 महीने पूरे हुए ________
 2. प्रसव के समय मॉं के गर्भावस्था के 5 महीने पूरे हुए ________
 3. प्रसव के समय मॉं के गर्भावस्था के 8 महीने 4 दिन पूरे हुए ________

2) निम्न तापमान वाले शिशुओं का वर्गीकरण करें – सामान्य / बुखार / ठंडा शिशु
उचित उत्तर पर गोला करें।
 1. 97.2^0 फै. (36.2^0सें) सामान्य / बुखार / ठंडा शिशु
 2. 93.8^0 फै. (34.3^0सें) सामान्य / बुखार / ठंडा शिशु
 3. 99.6^0 फै. (37.6^0सें) सामान्य / बुखार / ठंडा शिशु
 4. 98.0^0 फै. (36.7^0सें) सामान्य / बुखार / ठंडा शिशु

3) निम्न वजन वाले शिशुओं का वर्गीकरण करें – सामान्य/कम वजन वाला/कम वजन वाला + खतरेवाला
   1. शिशु का जन्म के समय वजन 2 किलो 300 ग्राम ______________
   2. शिशु का जन्म के समय वजन 2 किलो 100 ग्राम ______________
   3. शिशु का जन्म के समय वजन 1 किलो 600 ग्राम ______________

4) निम्न व्यवहार का सही या गलत में वर्गीकरण करें। उचित उत्तर पर गोला करें।
   1. इंजेक्शन की सुई की नोंक को उंगली से छूना सही / गलत
   2. सुई लगाने की जगह को स्पिरिट में भिगोये रूई के फोहें से साफ करना सही / गलत
   3. सिरिंज से हवा के बुलबुले निकालना सही / गलत

5) निम्न पिछली माहवारी की प्रत्येक तारीख के लिये प्रसव की अपेक्षित तारीख तथा समयपूर्व जन्म की तारीख लिखें

पिछली माहवारी की तारीख	प्रसव की अपेक्षित तारीख	समयपूर्व जन्म की तारीख
11 अक्टुबर 2006	______________	______________
7 दिसंबर 2005	______________	______________

6) निम्न प्रत्येक जन्म के समय के लिये 30 सेकिंड तथा 5 मिनट पश्चात् का समय लिखें

जन्म का समय	जन्म के समय के पश्चात् 30 सेकिंड बाद का समय	जन्म के समय के पश्चात् 5 मिनट बाद का समय
10 : 20 : 15	______________	______________
11 : 12 : 13	______________	______________

7) निम्न प्रश्नों के प्रकार लिखें – संक्षिप्त उत्तर वाला, लंबे उत्तर वाला, तहकिकात वाला, उत्तर की ओर इशारा करनेवाला
   1. शिशु की उम्र क्या है? ______________
   2. क्या आप अपने आहार के बारे में विस्तार से बताएँगी? ______________
   3. क्या आपको नहीं लगता की शिशु को बीमारी के दौरान आहार नहीं देना चाहिये? ______________
   4. आप गर्भावस्था में क्या क्या खाती है? ______________

8) माता पिता से बातचीत करते समय किस प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग नहीं करना चाहिये?

____

9) निम्न चित्र में सुई लगाने की सही जगह पर '×' निशान लगाएँ।

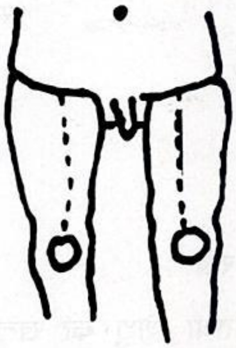

10) निम्न चित्र में सिरिंज के अलग अलग भागों को दर्शाते बाणों को उनके नामों से जोड़े।

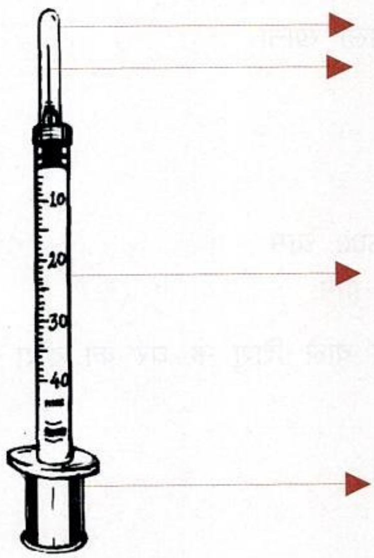

पिस्टन का ढ़क्कन

सिरिंज की नली

सुई का ढ़क्कन

सुई

11) निम्न चित्र में स्तन के अलग अलग भागों को दर्शाते बाणों को उनके नामों से जोड़े।

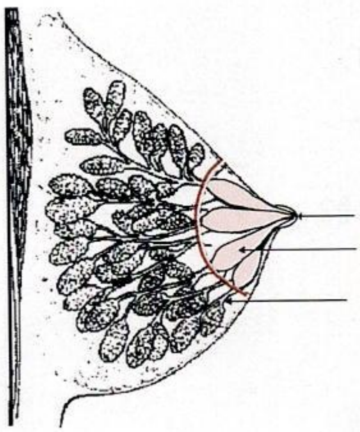

दूध का भंडारण

नलिका

चुचूक

प्रश्नपत्र के उत्तर

कुल अंक 60 (उत्तिर्णाक 30) समय 1 घंटा 30 मिनट

1) नवजात शिशु के टुंडी पर क्या लगाना चाहिये?
   अ. टेट्रासायक्लिन मल्हम
   ब. जी. वी. पेंट
   क. तेल
   ड. **कुछ न लगाएँ, टुंडी को साफ तथा सूखा रखें**

2) निम्न में से कौनसे कारण प्रसव के समय माँ तथा शिशु को खतरा हो सकता है?
   अ. माँ को गर्भावस्था में रतौंधी
   ब. माँ ने गर्भावस्था में भरपेट खाना खाना
   क. **माँ को गर्भावस्था में खून जाना**
   ड. माँ ने गर्भावस्था में आयरन फोलिक की गोली खाना

3) निम्न में से कौनसा शिशु खतरे वाला है?
   अ. **शिशु को पहले दिन दूध पीने में कठिनाई**
   ब. शिशु को 100^0 फै (37.8^0 सें) बुखार होना
   क. शिशु का जन्म के समय वजन 2 किलो 500 ग्राम
   ड. शिशु का 28 वें दिन वजन 2 किलो 500 ग्राम

4) आपने पहले महीने में कितनी बार अधिक खतरे वाले शिशु के घर का दौरा करना है?
   अ. हररोज
   ब. **13 बार**
   क. 17 बार
   ड. 2, 5, 7, 15, तथा 28 वें दिन

5) शिशु का वजन कौनसे दिन करना है?
   अ. 1, 15 तथा 28 वें दिन
   ब. **पहले दिन और फिर 7, 15, 28 तथा 42 वें दिन**
   क. हर 15 दिन में एक बार
   ड. पहले दिन और फिर 28 वें दिन

6) आप शिशु का कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार कब करती है?
   अ. शिशु को पीलीया हो तो
   ब. शिशु की ऑखे लाल हो तो
   क. **शिशु की छाती अंदर धँसती हो तो**
   ड. शिशु जोर से रोता हो तो

7) शिशु के जॉंघ की त्वचा के मोडों में यदि लाली हो या त्वचा कटी हो तो निम्न में से कौनसा कार्य गलत है?

अ. **टेट्रासायक्लिन मल्हम लगाऍं**

ब. जी. वी. पेंट लगाऍं

क. त्वचा साफ तथा सूखी रखें

ड. टैल्कम पाउडर डालें

8) विटामीन 'के' की सुई लगाने के क्या लाभ है?

अ. शिशु को सेप्सिस नहीं होता

ब. **शिशु के जिगर तथा खून में ताकद आती हैं**

क. शिशु को बुखार नहीं होता

ड. शिशु की सॉंस की दर नहीं बढ़ती

9) यदि मॉं को हथेली तथा चेहरे पर सूजन हो तो क्या करना चाहिये?

अ. गर्भावस्था के दौरान इस प्रकार की सूजन आम बात है घ्यान न दें

ब. मॉं सुंदर दिखती है उसे बधाई दें

क. उसे बताऍं कि बाहर न घूमें नजर लग सकती है

ड. **यह खतरे का लक्षण है मॉं को अस्पताल भेंजें**

10) यदि शिशु को गरमी के दिनों में बुखार हो तो पहला कदम क्या होना चाहिये?

अ. शिशु को अस्पताल भेंजें

ब. **कमरे में गीले तौलिये, चादरें ड़ालकर कमरा ठंड करने का प्रयास करें और शिशु का शरीर ठंडे पानी से पोंछें**

क. शिशु को कोट्रिमॉक्सेज़ोल दें

ड. विटामीन 'के' की सुई लगायें

11) कौनसे शिशुओं को सॉंस दिलाने के लिये गले के स्त्राव निकालने की आवश्यकता होती है?

अ. समय से पूर्व जन्में सारे शिशु

ब. सारे नवजात शिशु

क. ठंड़ के मौसम में पैदा हुए शिशु

ड. **जन्मतेही पोंछने के बाद भी जो शिशु नहीं रोते है**

12) शिशु को पुनर्जिवीत करने का सही तरीका कौनसा है?

अ. शिशु की छाती को मालिश करें

ब. शिशु को कपड़े में लपेटे

क. सुई लगायें

ड. **चूषण पंप का प्रयोग करें**

13) शिशु को पहला आहार कब देना चाहिये?

अ. **जन्म के तुरंत बाद**

ब. जन्म के 2 घंटे बाद

क. माँ की अच्छी निंद हो तथा माँ खाना खा लें उसके पश्चात्

ड. जन्म के 3 दिन बाद

14) स्तन सूजे हो तो क्या उपचार करना चाहिये?

अ. शिशु को स्तनपान करना बंद करें

ब. माँ को दवाई दें ताकि माँ अच्छी निंद ले सके

क. स्तनों को कसकर बाँधे

ड. **शिशु को लगातार स्तनपान करें तथा माँ के स्तनों से दूध निकालें**

15) चूचुक न कटें फटें इसलिये माँ को क्या सावधानी बरतनी चाहिये?

अ. रोज न नहायें

ब. **देंखें कि शिशु सिर्फ चूचुकों को न चूसे**

क. भरपेट खाना खाये

ड. अधिक पानी पीयें

16) शिशु को जन्मसे ही माँ के दूध के साथ साथ क्या देना चाहिये?

अ. पानी पिलाते रहना चाहिये

ब. दाल और चाँवल

क. **कुछ भी न दें। केवल स्तनपान करें**

ड. गुड का पानी दें

17) जन्म के तुरंत बाद क्या सावधानी बरतनी चाहिये जिससे शिशु को ठंडा होने से बचाया जा सकें?

अ. जन्म के बाद 6 घंटे तक शिशु को स्तनपान न करें

ब. शिशु को माँ के पास न दें

क. **जन्म के तुरंत बाद शिशु को पोंछें तथा लपेटे**

ड. जन्म के तुरंत बाद शिशु को गुड का पानी दें

18) शिशु का तापमान नापने के लिये थर्मामिटर को कहाँ रखना चाहिये?

अ. मुँह में

ब. **बगल में**

क. गुदा में

ड. थर्मामिटर से तापमान न नापें

19) शिशुका जन्मतेही दम घुटा है इसका पता कैसे चलता है?
अ. शिशु का वजन कम
ब. माँ का वजन कम
क. **शिशु जन्मतेही साँस नहीं लेता और रोता नहीं**
ड. शिशु का दूध पीना बंद

20) निम्न से कौनसा सेप्सिस निदान का मापदंड नहीं है?
अ. माँ कहती है कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है
ब. **शिशु के शरीर पर लाल ददोरे**
क. फूला हुआ पेट या लगातार उल्टी
ड. टुंडी पर मवाद

21) सेप्सिस हो तो शिशु को कौनसी दवाई दी जाती है?
अ. **कोट्रिमॉक्सेज़ोल**
ब. पैरासिटामॉल
क. टेट्रासायक्लिन
ड. विटामिन 'के' की सुई

22) जन्म के समय कम वजन का शिशु स्तनपान न करें तो आप क्या करोगी?
अ. बोतल से दूध पिलाएँ
ब. शिशु को दूध पिलाना बंद करें
क. **माँ का दूध निकालकर शिशु को पिलाने का प्रयास करें**
ड. दाई को बुलाएँ

23) निम्न से किस बात के लिये आप गर्भवती महिला को ए एन एम बहनजी के पास भेजोगी?
अ. गर्भावस्था फॉर्म भरवाने के लिये
ब. महिला ए एन एम बहनजी को प्रसव के समय बुलाएँ यह सुनिश्चित करने के लिये
क. **टिटनस का टीका लगवाने**
ड. ए एन एम बहनजी को अच्छा लगे इसलिये

24) शिशु की टुंडी पर मवाद हो तो आप क्या करोगी?
अ. टुंडी को ढँककर रखें
ब. गरम तेल लगाएँ
क. **जी. वी. पेंट लगाएँ और सेप्सिस के अन्य लक्षणों के लिये सतर्क रहें**

ड. टैल्कम पाउडर लगाएँ

25) महिला को पहला बच्चा होनेवाला हो तो आप कब कहोगी के प्रसव पीड़ा लंबी चल रही है?

अ. प्रसव पीड़ा 10 घंटे चली

ब. प्रसव पीड़ा 12 घंटे चली

क. **प्रसव पीड़ा 24 घंटे चली**

ड. प्रसव पीड़ा 7 घंटे चली

26) यदि आप शिशु जन्म के समय उपस्थित हो तो शिशु की पहली जॉंच कब करोगी?

अ. एक घंटे के अंदर

ब. **एक घंटे के बाद पर 6 घंटे के अंदर**

क. दूसरे दिन

ड. जन्म के तुरंत बाद शिशु को पोंछने के बाद

27) निम्न से किस बात के लिये शिशु को तुरंत अस्पताल भेजना चाहिये?

अ. टीकाकरण

ब. शिशु को जुकाम हो तो

क. शिशु की त्वचा जॉंघ की मोड़ों में कटना

ड. **सेप्सिस उपचार शुरू करने के 24 घंटे बाद भी शिशु में कोई सुधार नहीं**

28) निम्न से किन महिलाओं के नाम गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में शामिल करने चाहिये?

अ. जिस महिला की माहवारी बंद हो चुकी हो

ब. जिस महिला के पती की नसबंदी हो चुकी हो

क. **30 साल की विधवा जिसका पुनर्विवाह हुआ है**

ड. दूसरे गॉंव की महिला जो प्रसव के लिये आप के गॉंव में आयी है

29) आप के गॉंव के निम्न में से किसी एक को चुनिये जिसे स्वास्थ्य सेवा की आवश्यकता सबसे अधिक है?

अ. पाठशाला में पढ़ने वाली छोटी लड़की

ब. गॉंव के सरपंच / मुखिया

क. **नवजात शिशु**

ड. बूढ़े दादाजी

30) क्या गॉंव की प्रशिक्षित कार्यकर्ता (आप जैसी) गॉंव के नवजात शिशु तथा बच्चों की मृत्यूदर को कम कर सकती है?

हॉं / नहीं

निम्न प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखें

1) निम्न में हर प्रसव का प्रकार लिखें – गर्भपात, समयपूर्व जन्म, समयपर जन्म

1. प्रसव के समय माँ के गर्भावस्था के 9 महीने पूरे हुए **समयपर जन्म**
2. प्रसव के समय माँ के गर्भावस्था के 5 महीने पूरे हुए **गर्भपात**
3. प्रसव के समय माँ के गर्भावस्था के 8 महीने 4 दिन पूरे हुए **समयपूर्व जन्म**

2) निम्न तापमान वाले शिशुओं का वर्गीकरण करें – सामान्य / बुखार / ठंडा शिशु
उचित उत्तर पर गोला करें।

1. 97.2^0 फै. (36.2^0सें) **सामान्य** / बुखार / ठंडा शिशु
2. 93.8^0 फै. (34.3^0सें) सामान्य / बुखार / **ठंडा शिशु**
3. 99.6^0 फै. (37.6^0सें) सामान्य / **बुखार** / ठंडा शिशु
4. 98.0^0 फै. (36.7^0सें) **सामान्य** / बुखार / ठंडा शिशु

3) निम्न वजन वाले शिशुओं का वर्गीकरण करें – सामान्य/कम वजन वाला/कम वजन वाला + खतरेवाला

1. शिशु का जन्म के समय वजन 2 किलो 300 ग्राम **सामान्य**
2. शिशु का जन्म के समय वजन 2 किलो 100 ग्राम **कम वजन वाला**
3. शिशु का जन्म के समय वजन 1 किलो 600 ग्राम **कम वजन वाला + खतरेवाला**

4) निम्न व्यवहार का सही या गलत में वर्गीकरण करें। उचित उत्तर पर गोला करें।

1. इंजेक्शन की सुई की नोंक को उंगली से छूना सही / **गलत**
2. सुई लगाने की जगह को स्पिरिट में भिगोये रूई के फोहें से साफ करना **सही** / गलत
3. सिरिंज से हवा के बुलबुले निकालना **सही** / गलत

5) निम्न पिछली माहवारी की प्रत्येक तारीख के लिये प्रसव की अपेक्षित तारीख तथा समयपूर्व जन्म की तारीख लिखें

पिछली माहवारी की तारीख	प्रसव की अपेक्षित तारीख	समयपूर्व जन्म की तारीख
11 अक्टुबर 2006	18 जुलै 2007	25 जून 2007
7 दिसंबर 2005	13 सितम्बर 2006	21 अगस्त 2006

6) निम्न प्रत्येक जन्म के समय के लिये 30 सेकिंड तथा 5 मिनट पश्चात् का समय लिखें

जन्म का समय	जन्म के समय के पश्चात् 30 सेकिंड बाद का समय	जन्म के समय के पश्चात् 5 मिनट बाद का समय
10 : 20 : 15	10 : 20 : 45	10 : 25 : 15
11 : 12 : 13	11 : 12 : 43	11 : 17 : 13

7) निम्न प्रश्नों के प्रकार लिखें – संक्षिप्त उत्तर वाला, लंबे उत्तर वाला, तहकिकात वाला, उत्तर की ओर इशारा करनेवाला

1. शिशु की उम्र क्या है? **संक्षिप्त उत्तर वाला**
2. क्या आप अपने आहार के बारे में विस्तार से बताएँगी? **लंबे उत्तर वाला**
3. क्या आपको नहीं लगता की शिशु को बीमारी के दौरान आहार नहीं देना चाहिये? **उत्तर की ओर इशारा करनेवाला**
4. आप गर्भावस्था में क्या क्या खाती है? **तहकिकात वाला**

8) माता पिता से बातचीत करते समय किस प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग नहीं करना चाहिये? **उत्तर की ओर इशारा करनेवाला**

9) निम्न चित्र में सुई लगाने की सही जगह पर '×' निशान लगाएँ।

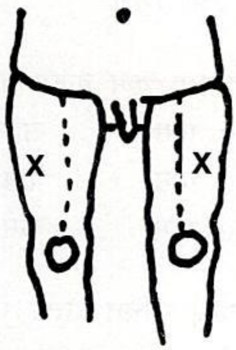

10) निम्न चित्र में सिरिंज के अलग अलग भागों को दर्शाते बाणों को उनके नामों से जोड़े।

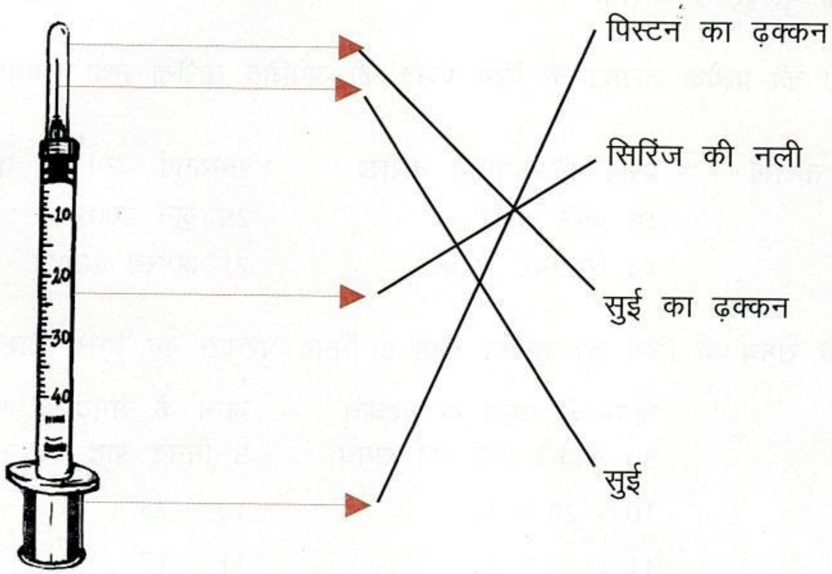

11) निम्न चित्र में स्तन के अलग अलग भागों को दर्शाते बाणों को उनके नामों से जोड़े।

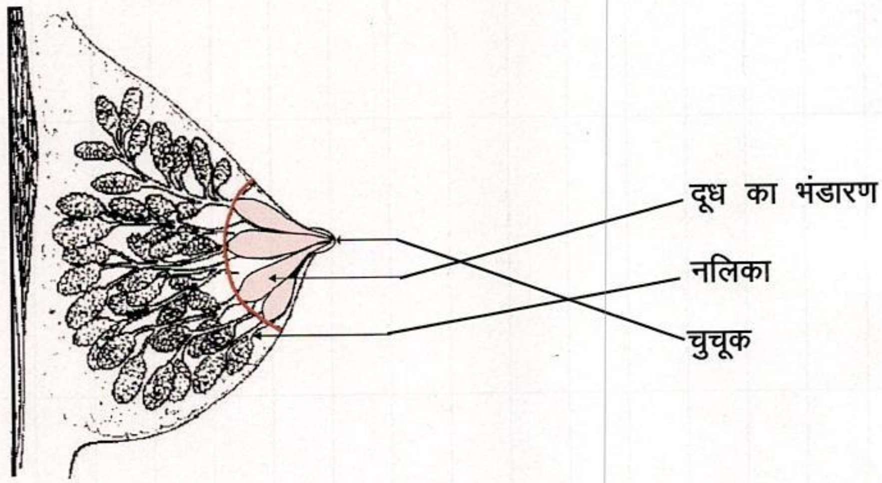

मूल्यांकन अंक तालिका

आशा का नाम	गाव	लिखित परीक्षा के अंक (1)	योग्यताओ की परीक्षा में अंक (2)	व्यवहार तथा क्षमता के मूल्यांकन में अंक (3)	कुल अंक (4=1+2+3)	सकारात्मक काम (प) कोई बड़ी भूल (म) बेईमानी (न) (5)	आशा का परीक्षाफल (4 तथा 5 पर आधारित) उत्कृष्ट**(अ)** सन्तोषजनक **(ब)** असन्तोषजनक **(क)**

आशा का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4

सत्र 2 : योग्यताओं का मूल्यांकन : प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4

दिवस : 2

समयावधि : 5 घं. 30 मि.

प्रयोजन

पिछले सत्र में आशाओं का, नवजात शिशु की देखभाल के बारे में (जिसमें दम घुटने तथा सेप्सिस का निदान तथा उपचार शामिल है) प्राप्त ज्ञान के लिये मूल्यांकन किया गया। इस सत्र में उनका योग्यताओं के लिये मूल्यांकन किया जायेगा।

उद्देश्य

नवजात शिशुओं की देखभाल के लिए आशाओं ने प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 में जो योग्यतायें हासिल की हैं, उसका मूल्यांकन हुआ होगा तथा उन्हें 60 प्रतिशत या अधिक अंक मिलेंगे।

सामग्री

- प्रत्येक आशा का प्रशिक्षण के बाद गॉव में, काम तथा क्षमता का सुपरवाईजर व्दारा मूल्यांकन किया जाता है। उस मूल्यांकन को 'काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड' पुस्तिका में दर्ज किया जाता है। उसी पुस्तिका में इस सत्र के दौरान होनेवाला आशा का मूल्यांकन लिखना है। उसमें निम्न सात जॉच सूचियॉ तथा फोटो की सूची दी है। – 1. हाथ धोना, 2. नवजात शिशु का तापमान मापना, 3. नवजात शिशु का वज़न मापना, 4. विटामिन 'के' की सुई लगाना, 5. शिशु की ऑखों में टेट्रासायक्लिन मल्हम डालना, 6. दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम, 7. चूषण पंप का प्रयोग 8. नवजात शिशु के फोटो देखकर बीमारीयों की पहचान।
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: नवजात शिशुओं की समस्याओं को दर्शाते चित्र
- विडियो कैमेरा अथवा संगणक के साथ वेब कैमेरा
- मूल्यांकन अंकतालिका (पिछले सत्र से)

तैयारी

- प्रशिक्षक प्रपत्र 1 को काटकर सारे चित्र तैयार रखें।
- योग्यताओं की जॉच के लिये बाहरी परीक्षक उपस्थित हो।
- आशाओं व्दारा किया गया प्रदर्शन विडियो कैमेरा अथवा संगणक के साथ वेब कैमेरा पर रिकार्ड करें। इस रिकार्डिग को बाहरी विषेशज्ञ के पास भेंजें जो प्रदर्शन की गुणात्मकता तथा यथातथ्यता का मूल्यांकन करें।

प्रशिक्षण विधि
मूल्यांकन (5 घं. 30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

1. आशाओं को कार्य करने के लिये प्रशिक्षक ठीक जगह का चयन करें जहाँ आशाएँ अपनी कार्य कुशलता का प्रदर्शन कर सकें। प्रत्येक आशा के प्रदर्शन का, जाँच सूची की सहायता से प्रशिक्षक निरीक्षण करें।
2. सभी आशाओं के प्रदर्शन का विडियो कैमेरा अथवा संगणक के साथ वेब कैमेरा पर रिकार्डिग किया जायेगा। इस रिकार्डिंग की सीडी बनाकर उसका प्रयोग आशा प्रशिक्षण के स्वतन्त्र मूल्यांकन के लिये किया जायेगा।
3. निम्न कार्य कुशलताओं में से किसी चार (4) कुशलताओं के लिये प्रत्येक आशा की जाँच की जाएगीः 1. हाथ धोना, 2. नवजात शिशु का तापमान मापना, 3. नवजात शिशु का वज़न मापना, 4. विटामिन 'के' की सुई लगाना, 5. शिशु की आँखों में टेट्रासायक्लिन मल्हम डालना, 6. शिशु जन्म से लेकर चूषण पंप के प्रयोग तक, 7. चूषण पंप का प्रयोग 8. नवजात शिशु के फोटो देखकर बीमारीयों की पहचान।
4. प्रशिक्षक प्रत्येक आशा के 'काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड' पुस्तिका में प्रत्येक कार्य संतोष जनक रूप से किया अथवा नहीं यह दर्ज करें। इसके लिए सही (✓) अथवा गलत (×) का निशान लगायें। कार्य कुशलताओं के मूल्यांकन के बाद प्रशिक्षक प्रत्येक आशा व्दारा प्राप्त सही (✓) निशान गिन ले जो उसके प्राप्तांक होंगे। प्रशिक्षक यह भी गिन लें कि कितने सही (✓) निशान हो सकते थें। (उदा. 25 सही (✓) निशान हो सकते थें और आशा को मिले है 20 तो उस आशा के अंक होंगे 20/25)। चूंकि प्रत्येक आशा अलग अलग चार (4) योग्यताओं का प्रदर्शन करेगी उसके कितने सही (✓) निशान हो सकते थें इसकी संख्या भी बदलेगी।
5. आशाओं व्दारा किये गये प्रदर्शन के मूल्यांकन के रिकार्डिंग को नमुने के तौर पर देखकर स्वतन्त्र परीक्षक मूल्यांकन की गुणवत्ता निश्चित करें कि। यदि उनके व्दारा किये गये मूल्यांकन और प्रशिक्षक व्दारा किये गये मूल्यांकन में अन्तर हो तो प्रोग्राम मैनेजर को खबर करें जो समग्र मूल्यांकन के आधार पर परीक्षाफल घोषित कर सकें (लिखीत परीक्षा, योग्यताओं का मूल्यांकन तथा गाँव में व्यवहार और क्षमता)।
6. सुपरवाईजर ने नियमित रूप से गाँवों का दौरा किया है। उन्होंने गाँव में आशाओं के काम और क्षमताओं का मूल्यांकन किया है। सुपरवाईजर को भी आशाओं के व्यवहार तथा कार्य से सन्तोष होना चाहिये। सुपरवाईजर ने आशा के व्यवहार तथा क्षमता का गाँव के दौरे के समय जो मूल्यांकन किया है उस पर आशा के प्राप्तांक 38 या उससे अधिक हो। सुपरवाईजर ने आशा को भारी भूल करते या बे–ईमानी का काम करते न देखा हो या गाँव वालो ने ऐसा न बताया हो।
7. यदि किसी आशा को निम्न प्रकार से अंक मिलें तो उसकी प्रगती को सन्तोषजनक माना जायेगा।
   - लिखित परीक्षाः 50 प्रतिशत या अधिक अंक
   - प्रात्यक्षिक परीक्षाः 60 प्रतिशत या अधिक अंक (मूल्यांकन बाहरी परीक्षक व्दारा किया गया हो)
   - सुपरवाईजर ने आशा के व्यवहार तथा क्षमता का गाँव के दौरे के समय जो मूल्यांकन किया है उस पर आशा के प्राप्तांक 38 या उससे अधिक हो। सुपरवाईजर ने आशा को भारी भूल करते या बे–ईमानी का काम करते न देखा हो या गाँव वालो ने ऐसा न बताया हो।
8. आशाओं की उनके अच्छे काम के लिये प्रशंसा करें।

मूल्यांकन

इस सत्र के अंत में आशाओं के मूल्यांकन की प्रक्रिया पूरी हो जायेगी। कार्यक्रम प्रबन्धक के पास आशाओं के लिखित परीक्षा के अंक तथा सुपरवाईजर ने गॉव में आशा का जो मूल्यांकन किया है उसकी जानकारी उपलब्ध होगी। स्वतन्त्र परीक्षक, आशाओं के प्रदर्शन के मूल्यांकन के रिकार्डिंग को नमुने के तौर पर देखकर मूल्यांकन की गुणवत्ता निश्चित करेंगें और उसकी जानकारी कार्यक्रम प्रबन्धक के पास भेजेंगें। यह जानकारी पाने के पश्चात् कार्यक्रम प्रबन्धक देंखें की घोषित करने के लिये परीक्षाफल तैयार हो।

जिन आशाओं का कार्य सन्तोषजनक हो उन्हें बधाई दें। जिन आशाओं का कार्य सन्तोषजनक न हो उन्हें प्रशिक्षण तथा अभ्यास के लिये अगली प्रशिक्षण कार्यशाला में दुबारा बुलाएँ।

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
नवजात शिशुओं की देखभाल के लिए आशाओं ने प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 में जो योग्यतायें हासिल की हैं, उसका मूल्यांकन हुआ होगा तथा उन्हें 60 प्रतिशत या अधिक अंक मिलेंगे।	आशाओं व्दारा योग्यताओं का प्रदर्शन	प्रशिक्षकों के निरीक्षण में जॉच सूची से मिलाकर आशा की कार्य कुशलताओं का प्रदर्शन तथा मूल्यांकन। आशाओं व्दारा किये गये प्रदर्शन के मूल्यांकन के रिकार्डिंग की सीडी।

नवजात शिशुओं की समस्याओं के फोटो

1

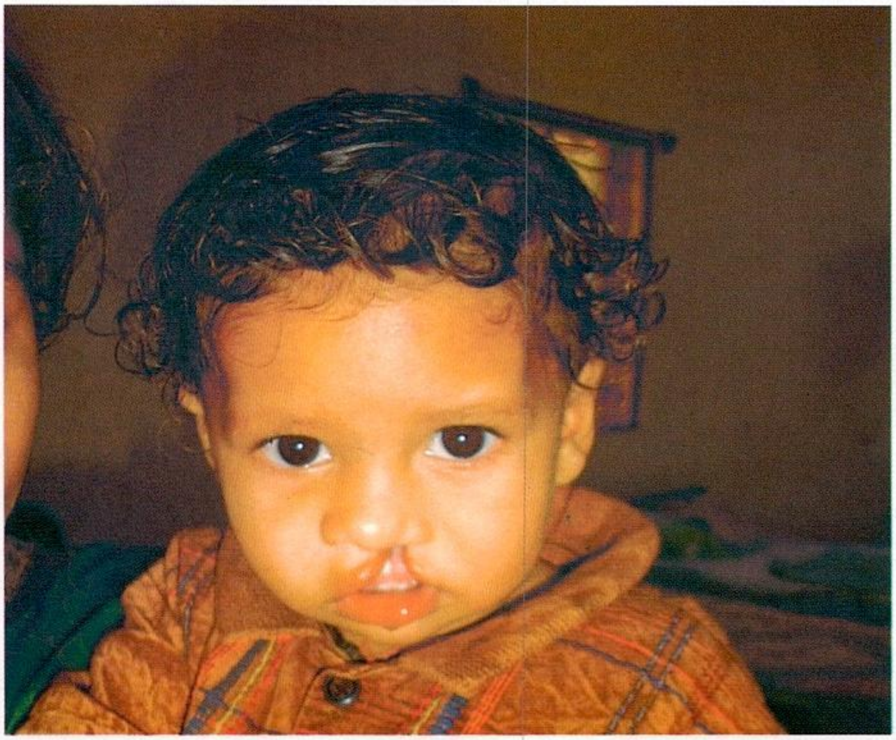

2

3

4

5

6

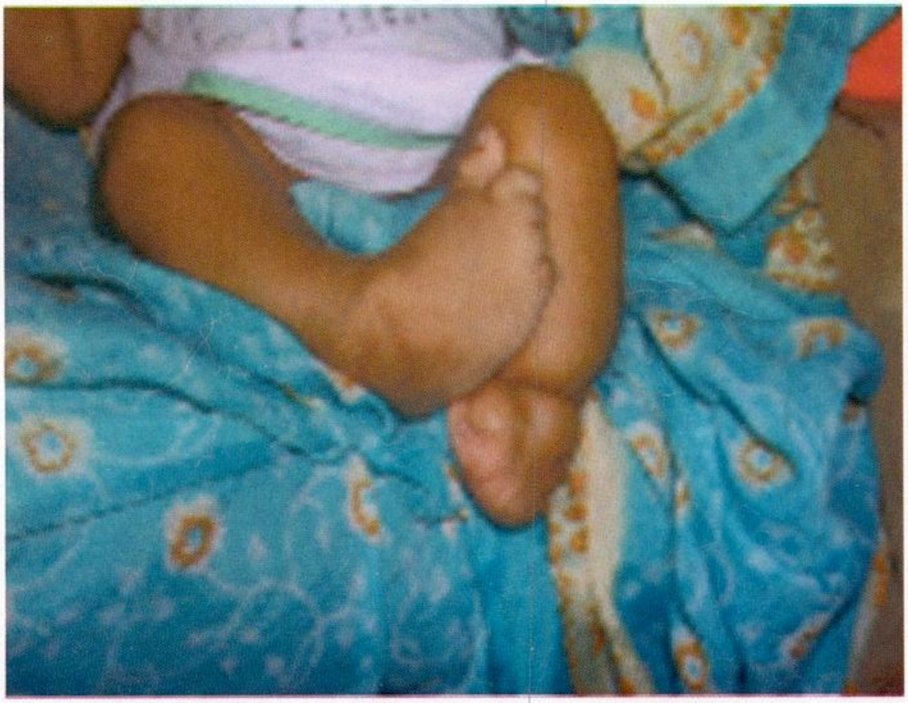

7

8

9

10

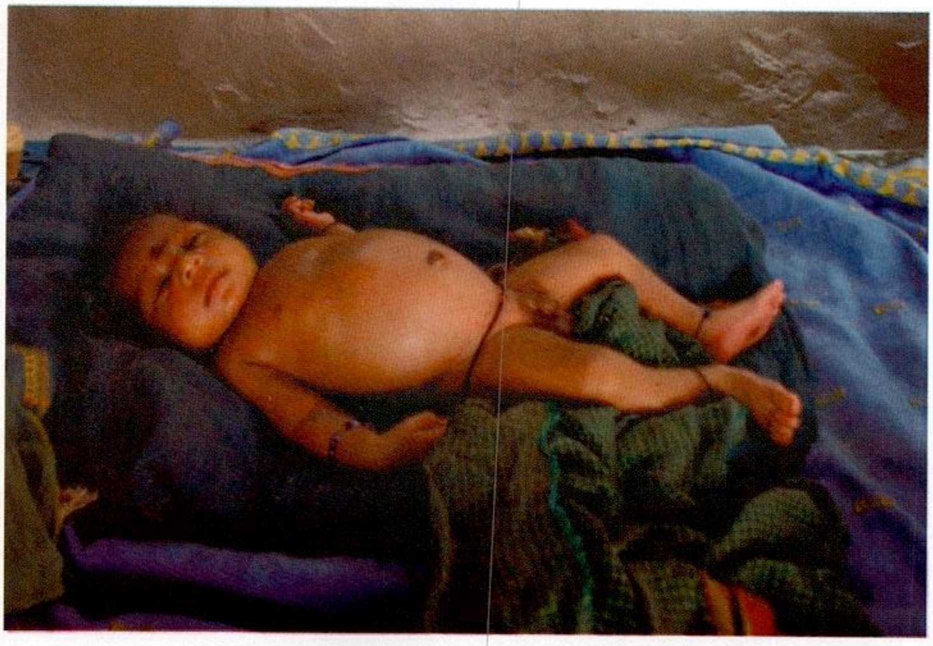

11

12

प्रशिक्षण कार्यशाला 5 : सारांश तथा गाँव में कार्य करने की योजना बनाना

दिवस : 2
समयावधि : 45 मि.

प्रयोजन

इस प्रशिक्षण के दौरान जो सीखा (दोहराई, मूल्यांकन तथा मोड्यूल 9अ) उसकी समीक्षा करना तथा आने वाले महीनों में समुदाय के बीच कार्य की योजना बनाना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यता आएगी:

1. बता पाना कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन पर समुदाय के बीच क्या कार्य करेगी।

सामग्री

- कुछ नहीं

तैयारी

- प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान किए गए मूल्यांकन से प्राप्त अंक तालिका

प्रशिक्षण विधिः

प्रश्नोत्तर/ चर्चा (35 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं को कहे कि इस प्रशिक्षण के दौरान जो दोहराई और मूल्यांकन किया गया उसके बारे में वे अपने विचार व्यक्त करें। पूछें की क्या अब भी कुछ कार्य उन्हें कठिन लगते हैं अथवा किसी विषय के बारे में कोई शंका है? यदि वे कुछ कठिनाईयाँ बतायें, तो उन्हें बोर्ड पर लिख दें।
2. आशाओं ने 2 महीने से 5 साल तक के बच्चों की बीमारीयों के उपचार को पहचानना तथा उपचार करना सीखा है। बच्चों के निमोनिया, दस्त, कुपोषण, पेचिश तथा एनीमिया का उपचार कैसे करें तथा शिशु को अस्पताल कैसे भेंजें यह वे जानती है। आशाएँ गाँव में काम करते हुए शिशुओं की उपर दी हुई बीमारीयों को पहचानने, वर्गीकरण करने तथा उपचार पहचानने का अभ्यास करें। जिस शिशु में आशा बीमारी को पहचानेगी उसके लिये एक रिकार्डीग फॉर्म को भरेगी। रिकार्डीग फॉर्म अभ्यासपुस्तिका 2 में दिये गये है।
3. प्रशिक्षण कार्यशाला के पहले तथा दूसरे दिन किये गये मूल्यांकन का फल, प्रशिक्षक आशाओं को बतायें। जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक हो उन्हें बधाई दें। जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक न हो उन्हें सबके सामने शरमिंदा न करें। उनका हौसला बढ़ायें तथा अगली बार अधिक प्रयास करने के लिये उन्हें प्रेरणा दें। उन्हें बताये कि सुपरवाईजर उपने दौरे के समय उनसे अभ्यास करवाएँगे जिससे, प्रगती करने में उन्हें सहायता मिलेगी। जो कमी है उसे पूरा करने में उन्हें 1 महीने का समय मिलेगा। अगली प्रशिक्षण कार्यशाला से 1 दिन पहले उन्हें 1 दिन का अतिरिक्त प्रशिक्षण दिया जायेगा और दुबारा उनका मूल्यांकन किया जायेगा। जिससे बाकी आशाओं के साथ आ पहुँचने में उन्हें सहायता होगी।

4. बताएँ कि अब आशा नवजात शिशुओं की देखभाल के लिए पूरी तरह सक्षम है। प्रसव में उपस्थित रहने का महत्व बताएँ–जिसके बिना, दम घुटे शिशु को बचाया नहीं जा सकता। घर के दौरे पर जाने के लिए भी ज़ोर डालें क्योंकि इससे वे माँ की आवश्यक देखभाल (स्तनपान, शिशु को गर्म रखना, आदि) कर सकेंगी। इससे माँ को समस्याएँ नहीं होंगी, तथा नवजात शिशु की समस्याओं का निदान और उपचार भी हो सकेगा। समझायें कि यदि परिवार को लगे कि शिशु अस्वस्थ है, और वे आशा को बुलाएँ तो उसे तुरंत जाना चाहिए। इस प्रकार वह शिशु का स्वास्थ्य बिगड़ने से पहले ही उसकी मदद करके जान बचा सकेगी।
5. बताएँ कि सामान्यतः सुपरवाईज़र महीने में एक बार आशा की सहायता तथा कार्य की जाँच हेतु उसके पास आयेंगी। इसके अतिरिक्त सुपरवाईज़र आशा की सेप्सिस तथा दम घुटने के निदान एवं उपचार की योग्यताओं की भी जाँच करेंगी। अपने दौरों में सुपरवाईज़र (गुड़िया पर गले का स्त्राव निकालने वाले उपकरण व्दारा) दम घुटने के उपचार का अभ्यास करते हुए आशा का निरीक्षण करेंगी।
6. सुपरवाईज़र जाँच सूची की सहायता से आशा की कार्यकुशलता का नियमित मूल्यांकन करेंगी। कार्यकुशलता में सुधार के लिए तथा कुछ रह गया हो तो वह बताने के लिए भी सुझाव देंगी। इस विधि से आशायें प्रभावकारी ढंग से सेवाएँ दे सकेगीं।
7. अब आशायें सेप्सिस का कोट्रिमॉक्सेज़ोल देकर उपचार करेंगी। इस लिए, उसे दवाओं के बारे में जानकारी रखनी चाहिए। ध्यान रखें की पर्याप्त मात्र में दवा उपलब्ध है, और ऐसा न हो कि दवा के अभाव से आशा शिशु का उपचार न कर पाये। इसी प्रकार उसके पास गले का स्त्राव निकालने वाले पर्याप्त उपकरण होना चाहिए।
8. आशाओं से कहें कि अगली प्रशिक्षण कार्यशाला से पहले, जब उन्हें समय हो, दी गई अध्ययन सामग्री अवश्य पढ़ें। अगली प्रशिक्षण कार्यशाला से पहले वे सेप्सिस तथा दम घुटने के निदान एवं उपचार की सामग्री ध्यान से पढ़ लें। अगली प्रशिक्षण कार्यशाला में सेप्सिस का उपचार जेंटामायसिन की सुई से तथा दम घुटने का उपचार बैग और मास्क से करना उन्हें सिखाया जायेगा।

सारांश (10 मि.)

- प्रशिक्षणार्थियों से पूछें कि वे समुदाय में अपने कार्य को सुनियोजित ढंग से कैसे करेंगी।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बता पाना कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन पर समुदाय के बीच क्या कार्य करेगी।	प्रश्नोत्तर	जिन आशाओं का परीक्षाफल असन्तोषजनक है उनकी सुपरवाईजर के लिये सूची। सुपरवाईजर को इनके लिये अधिक प्रयास करने है।

नवजात शिशु तथा बच्चों की घर में देखभाल: 'आशा' प्रशिक्षण कैसे करa

प्रशिक्षण कार्यशाला 6

पुनः प्रशिक्षण तथा मूल्यांकन

मोड्यूल 14 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा बैग और मास्क से उपचार

मोड्यूल 15 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा जेन्टामायसिन की सुई से उपचार

समयसूची
आशा प्रशिक्षण की प्रशिक्षण कार्यशाला 6
मोड्यूल 14 तथा 15

समय	दिवस 0	दिवस 1	दिवस 2	दिवस 3
सुबह का सत्र 8.30 से 12.30	स्वागत, गीत, (15 मि.) **पुनः प्रशिक्षण तथा मूल्यांकन** सत्र 1 : चुनिन्दा आशाओं का आवश्यकतानुसार पुनः प्रशिक्षण (2 घंटे)	स्वागत, गीत, (15 मि.) **मोड्यूल 14 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा बैग और मास्क से उपचार** सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 5 (दोहराई, मूल्यांकन तथा मोड्यूल 9) के बाद कार्यक्षेत्र के अनुभवों की समीक्षा (1 घंटा 15 मि.) सत्र 2 : जन्मतेही दम घुटने के निदान तथा उपचार का पहला कदम की दोहराई (55 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 3 : दम घुटने का उपचार : दूसरा कदम : बैग और मास्क का प्रयोग (प्रस्तुती, चर्चा तथा प्रदर्शन) (1 घंटा 30 मि.)	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (10 मि.) सत्र 4 : मूल्यांकन : जन्मतेही दम घुटने का निदान तथा उपचार (1 घंटा 45 मि.) चाय (15 मि.) **मोड्यूल 15 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा प्रतिजैविक की सुई से उपचार** सत्र 1 : नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान तथा उपचार की दोहराई (2 घंटे 35 मि.)	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (10 मि.) सत्र 3 : फॉर्म भरना (1 घंटा 35 मि.) सत्र 4 : मूल्यांकन : केस अध्ययन एवं प्रात्यक्षिक (1 घंटा 30 मि.) चाय (15 मि.) प्रशिक्षण कार्यशाला 6 : सारांश तथा गॉव में कार्य करने की योजना बनाना (1 घंटा) संक्षेप में दोहराना (15 मि.) भोजन (1 घंटा 30 मि.)
दोपहर का सत्र 13.30 से 17.30		भोजन (1 घंटा 30 मि.) सत्र 3 : (जारी) दम घुटने का उपचार : दूसरा कदम : बैग और मास्क का प्रयोग (3 घंटे) चाय (15 मि.) सत्र के दौरान	भोजन (1 घंटा 30 मि.) सत्र 2: नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का जेन्टामायसिन से उपचार (2 घंटे) चाय (15 मि.) सत्र 2: (जारी) नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का जेन्टामायसिन से उपचार (1घंटा 35 मि.)	
शाम		संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल	संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल	
मनोरंजन	लोकगीत	व्यक्तिगत कहानी कथन	समूह में खेल	

आशयसूची
प्रशिक्षण कार्यशाला 6

पृष्ठ

पुनः प्रशिक्षण तथा मूल्यांकन

सत्र 1 : चुनिन्दा आशाओं का आवश्यकतानुसार पुनः प्रशिक्षण 563

अभ्यासपत्र 1 : भूमिका नाटक के विषय 566

अभ्यासपत्र 2 : केस उदाहरण – सेप्सिस का निदान तथा फॉर्म भरना 567

अभ्यासपत्र 3 : मूल्यांकन प्रश्नपत्र 568

प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : मूल्यांकन प्रश्नपत्र के उत्तर 573

प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : आशाओं की अंक तालिका 578

मोड्यूल 14 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा बैग और मास्क से उपचार

सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 5 (दोहराई, मूल्यांकन तथा मोड्यूल 9) के बाद कार्यक्षेत्र के अनुभवों की समीक्षा 579

सत्र 2 : जन्मतेही दम घुटने के निदान तथा उपचार का पहला कदम की दोहराई 581

अध्ययनपत्र 1 : जन्मतेही दम घुटना संबंधी जानकारी (मोड्यूल 12 अध्ययनपत्र में है)

सत्र 3 : दम घुटने का उपचार : दूसरा कदम : बैग और मास्क का प्रयोग 585

अध्ययनपत्र 1 : बैग एवं मास्क के प्रयोग के लिये जाँच–सूची 591

अध्ययनपत्र 2 : जन्मतेही दम घुटनाः कृती चार्ट 592

सत्र 4 : मूल्यांकन : जन्मतेही दम घुटने का निदान तथा उपचार 593

अभ्यासपत्र 1 : मूल्यांकन : जन्मतेही दम घुटना 595

प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : जन्मतेही दम घुटनाः मूल्यांकन के उत्तर 597

प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : प्रात्यक्षिक मूल्यांकन अंक तालिका (जिसमे निम्न जॉच सूचियॉ है – दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम, बिल्टा पंप का प्रयोग तथा बैग और मास्क का प्रयोग) 599

मोड्यूल 15 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा जेन्टामायसिन की सुई से उपचार

सत्र 1 : नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान तथा उपचार की दोहराई 602

प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : कक्षा में केस प्रस्तुति 608

अभ्यासपत्र 1 : केस अध्ययन 609

प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : केस अध्ययन के उत्तर 612

		पृष्ठ
सत्र 2 :	**नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का जेन्टामायसिन से उपचार**	615
अध्ययनपत्र 1 :	दवा की खुराक का चार्ट	622
अध्ययनपत्र 2 :	जेन्टामायसिन सुई वाली जाँच–सूची	623
अभ्यासपत्र 1 :	केस अध्ययन	624
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 :	केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर	627
सत्र 3 :	**फॉर्म भरना**	630
अभ्यासपत्र 1 :	केस अध्ययनः सेप्सिस उपचार के बाद होने वाली समस्याओं को पहचानना	632
अभ्यासपत्र 2 :	सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म	634
अभ्यासपत्र 3 :	केस प्रस्तुति	639
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 :	केस प्रस्तुति के उत्तर	641
सत्र 4 :	**मूल्यांकन : केस अध्ययन एवं प्रात्यक्षिक**	643
अभ्यासपत्र 1 :	लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र	645
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 :	जेन्टामाइसिन सुई वाली जाँच सूची	648
प्रशिक्षक प्रपत्र 2 :	लिखित परीक्षा प्रश्नपत्र के उत्तर	649
प्रशिक्षण कार्यशाला 6 :	सारांश तथा गाँव में कार्य करने की योजना बनाना	652

पुनः प्रशिक्षण तथा मूल्यांकन

सत्र 1 : चुनिन्दा आशाओं का आवश्यकतानुसार पुनः प्रशिक्षण

दिवस :

समयावधि : 2 घं.

प्रयोजन

चार प्रशिक्षण कार्यशालाओं तथा गॉव में कार्य के पश्चात् जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक नहीं है उनकी ओर व्यक्तिगत ध्यान देना, जिससे प्रशिक्षण कार्यशाला 6 के पहले उन्हें बाकी आशाओं के साथ आ पहुँचने में सहायता होगी। इन आशाओं को प्रशिक्षण कार्यशाला 1 से 4 के ज्ञान तथा योग्यताओं को सीखने तथा अभ्यास करने का अवसर देना। इनके ज्ञान तथा योग्यताओं में जो असमर्थता, प्रशिक्षण कार्यशाला 5 के मूल्यांकन के समय ध्यान में आई हो उन्हें दूर करना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यता आएँगीः

1. आशाओं को ज्ञान के मूल्यांकन में 50 प्रतिशत या अधिक तथा योग्यताओं के मूल्यांकन में 60 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त होंगे।

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1ः भूमिका नाटक के विषय
- अभ्यासपत्र 2ः केस उदाहरण – सेप्सिस का निदान तथा फॉर्म भरना
- अभ्यासपत्र 3ः मूल्यांकन प्रश्नपत्र
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1ः मूल्यांकन प्रश्नपत्र के उत्तर
- प्रशिक्षण में उपस्थित प्रत्येक आशा की 'काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड' पुस्तिका
- संगणक के साथ वेब कैमेरा या विडिओ कैमेरा
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2 आशाओं की अंक तालिका

तैयारी

- प्रशिक्षण कार्यशाला 5 के मूल्यांकन में जिन आशाओं का परीक्षाफल असन्तोषजनक रहा हो उन्हें, एक दिन के इस प्रशिक्षण में बुलाया जाएगा।
- कार्यशाला के पूर्व प्रशिक्षक एवं सुपरवाईजर एक बैठक करें। बैठक के दौरान प्रत्येक आशा के प्रशिक्षण कार्यशाला 5 के दौरान किये गये मूल्यांकन की चर्चा हो। प्रशिक्षण कार्यशाला 5 से प्रत्येक आशा का मूल्यांकन प्रश्नपत्र तथा योग्यताओं का मूल्यांकन देखें और सामान्य खामियों की सूची तैयार करें। इस सूची के आधारपर इस प्रशिक्षण कार्यशाला की विषय–वस्तु निश्चित करें।
- प्रशिक्षण में उपस्थित सभी आशाओं का काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड उपलब्ध हो।
- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अभ्यासपत्र 1, 2 और 3 की प्रतियाँ तैयार रखें।
- वेब कैमेरा या विडिओ कैमेरा से आशाओं व्दारा किये गये प्रदर्शन को रिकार्ड करने की तैयारी कर लें।

- मूल्यांकन के समय बाहरी परीक्षक उपस्थित हो जो आशाओं का प्रदर्शन देखकर उनकी योग्यताओं का मूल्यांकन करें।

प्रशिक्षण विधि

प्रस्तुति एवं चर्चा : (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षणार्थियों को बड़े गोले में बैठने को कहें।
2. प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी से पूँछें कि उन्हें कौनसी विषय–वस्तु को दुबारा सीखना है या दोहराना है। उनके उत्तरों की सूची बोर्ड पर तैयार करें।
3. प्रशिक्षक तथा सुपरवाईजर ने मिलकर, आशाओं का काम तथा क्षमता के मूल्यांकन के आधारपर, इस प्रशिक्षण के वि्ाय–वस्तु की एक सूची पहले से ही तैयार की है। प्रशिक्षक इन दोनों सूचियों को मिलाकर देखें। दोनों सूचियों में शामिल विषय तथा कोई अतिरिक्त विषय हो तो उसे मिलाकर तय होगा कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला में क्या सीखना है।
4. प्रशिक्षण कार्यशाला 5 के दोहराई, अभ्यास तथा मूल्यांकन से सत्र 1 और 2 को प्रशिक्षक देंखें।
5. दोहराई, अभ्यास तथा मूल्यांकन के सत्र 1 और 2 से जो भी विषय–वस्तु आवश्यक हो उसका प्रयोग प्रशिक्षक करें।
6. प्रशिक्षक, प्रत्येक आशा के आवश्यकतानुसार योग्यताओं का अभ्यास करने का समय दें।
7. जब एक आशा योग्यताओं का प्रदर्शन (अभ्यास) कर रही हो तब बाकी आशाएँ जॉच सूची के अनुसार निरिक्षण करें। इसप्रकार सभी आशाओं को प्रदर्शन तथा निरिक्षण का अवसर मिलें।
8. प्रभावी बातचीत की विधियों के अभ्यास तथा मूल्यांकन के लिये भूमिका नाटक के विषय अभ्यासपत्र 1 में दिये है।
9. सेप्सिस के निदान तथा फॉर्म भरने की क्षमता के मूल्यांकन के लिये अभ्यासपत्र 2 में केस प्रस्तुती दी हैं।

प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन

1. अभ्यासपत्र 3ः मूल्यांकन प्रश्नपत्र, सभी आशाओं को बॉटे। मूल्यांकन प्रश्नपत्र के उत्तर लिखने के लिये आशाओं को 1 घंटे का समय दें। एक घंटे के पश्चात् सारे मूल्यांकन पत्र इकट्ठा कर लें और हर प्रश्न पर चर्चा करें। कुछ समस्या हो तो पूछें और शंकाओं का समाधान करें।

प्राप्त योग्यताओं का मूल्यांकन

1. प्रशिक्षण कार्यशाला 5 के मूल्यांकन के दौरान प्रत्येक आशा ने जिन योग्यताओं का सही प्रदर्शन नहीं किया था उन्हीं योग्यताओं के लिये उस आशा का मूल्यांकन करें।
2. प्रत्येक आशा व्दारा किये गये प्रदर्शन को विडिओ कैमेरे से रिकार्ड करें।
3. आशा का 'काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड' में दी गई जॉच सूचीयों के आधारपर आशाओं का मूल्यांकन करें। आशा ने विविध कदम सही उठायें या गलत इसे पुनर्मूल्यांकन के खाने में लिखें।
4. बाहरी परीक्षक जॉच सूची के आधारपर आशाओं व्दारा किये गये प्रदर्शन का, विडिओ कैमेरा या वेब कैमेरा से किया गया रिकार्डिंग देखें। प्रत्येक कदम को अंक दें और अंकतालिका प्रशिक्षक के पास भेंज दें।
5. प्रत्येक जॉच सूची में ✓ सही के निशान गिन लें। यही आशा के अंक होंगे। प्रशिक्षक देखें कि किन

योग्यताओं में अभी भी गलतियाँ होती है। यदि समय हो तो उन योग्यताओं को ठीक से समझायें तथा अभ्यास करने का अवसर दें। यदि समय न हो तो प्रशिक्षक आशाओं की गलतियों की सुपरवाईजर के साथ चर्चा करें। सुपरवाईजर गाँव के दौरे के समय उन योग्यताओं को अधिक ध्यान से देखें और गलतियाँ सुधारने के लिये आशाओं की सहायता करें

6. पिछले महीने सुपरवाईजर ने प्रत्येक आशा के व्यवहार तथा क्षमता का गाँव में मूल्यांकन किया है। सुपरवाईजर तथा प्रशिक्षक इस मूल्यांकन की चर्चा करें तथा उसे प्रशिक्षक प्रपत्र 2 में लिखें।

सारांश : (5 मि.)

- सभी आशाओं से पूछें कि इस प्रशिक्षण के पश्चात् वे कैसा महसूस कर रही है?
- यदि उन्हें अब भी कोई कठिनाई है तो उन्हें कहें कि वे अध्ययन सामग्री पढ़ती रहे तथा जब भी प्रशिक्षक गाँव में आये तो अपनी समस्या के बारे में उनसे चर्चा करें।
- आशाओं को उनके ज्ञान तथा योग्यताओं के मूल्यांकन के अंक बताएँ।
- जिन आशाओं का परीक्षाफल अच्छा है उन्हें बधाई दें। जिनका परीक्षा फल अच्छा नहीं है उन्हें कहें कि उनका दुबारा प्रशिक्षण तथा मूल्यांकन होगा।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
आशाओं को ज्ञान के मूल्यांकन में 50 प्रतिशत या अधिक तथा योग्यताओं के मूल्यांकन में 60 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त होंगे।	मूल्यांकन प्रश्नपत्र बाहरी प्रशिक्षक व्दारा योग्यताओं का मूल्यांकन	प्रत्येक आशा व्दारा हल किया गया तथा प्रशिक्षक व्दारा जॉचा गया मूल्यांकन प्रश्नपत्र आशा का विविध योग्यताओं पर प्रदर्शन जिसे आशा के 'काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड' में लिखा है। वेब कैमेरा से रिकार्ड किया गया आशा के योग्यताओं के प्रदर्शन का मूल्यांकन

भूमिका नाटक के विषय

1. 7 महीने की गर्भवती को शिशु का पेट में हिलना महसूस नहीं होता।
2. 7 महीने की गर्भवती को रक्तस्त्राव की समस्या हैं।
3. 8 महीने की गर्भवती के दोनों हथेलीयों पर सूजन है।
4. 8 वें महीने में गर्भवती को तेज बुखार तथा पेशाब में जलन है।
5. 7 महीने की गर्भवती ने प्रसव की कोई तैयारी नहीं की जैसे – पैसे बचाना, शिशु के कपडे आदि।

केस उदाहरण – सेप्सिस का निदान तथा फॉर्म भरना

- कौसर के बेटे का जन्म हुआ तब कौसर का 9 महीने का गर्भकाल पूरा हुआ था।
- जन्म के समय बेटे का वजन 2 किलो 400 ग्राम था।
- शिशु 5 दिन तक ठीक था।
- छठें दिन शिशु की टुंडी पर मवाद था।
- आशा ने टुंडी पर जी. वी पेंट लगाया।
- सातवें दिन शिशु ने दूध पीना बंद कर दिया।

घरों का दौरा फॉर्म का सेप्सिस निदान का भाग भरें।

आपका निदान क्या है? कौसर के बेटे को क्या समस्या है? ______________________

उपचार के पूर्व आप माता पिता से कौनसा फॉर्म भरवायेंगी? ______________________

आप शिशु को कौनसी दवा देंगी? ______________________

दवा की खुराक क्या है? ______________________

दवा कितने दिनों तक दी जायेगी? ______________________

उपचार के पॉचवे दिन शिशु ठीक था

- उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं है
- शिशु ठीक से दूध पी रहा था
- ठीक से रो रहा था
- माँ को शिशु का शरीर ठंडा नहीं लगता और शिशु को बुखार नहीं है
- पेट फुला नहीं है और उल्टी नहीं हो रही
- छाती अंदर धँसी नहीं है
- उसके टुंडी पर मवाद नहीं है

- आपने शिशु को दवाई दी

- शिशु को ठीक से ओढ़ाया गया है।
- शिशु ठीक से टोपी, कपड़े पहने हुए है।
- उसे नहलाया नहीं।
- उसे माँ के पास लिटाया गया है।
- माँ उसे 2–2 घंटे पर स्तनपान करा रही है।
- माँ के नाखून छोटे हैं और उसने बताया कि वह बच्ची को छूने से पहले अपने हाथ धोती है।
- बच्ची को किसी अन्य बीमारी की दवा नहीं दी जा रही।
- उसकी हालत में सुधार हो रहा है।
- उसमें खतरे वाले ऐसे कोई लक्षण नहीं है कि उसे अस्पताल भेजा जाए।

सेप्सिस उपचार का फॉर्म भरें

मूल्यांकन प्रश्नपत्र : अधिकतम अंक 60; उत्तिर्णांक 30 (50 प्रतिशत)

समयः 1 घंटा 30 मि.

सारे प्रश्न हल करना आवश्यक है (प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक)

प्रश्न 1. लीला आपके गॉव की महिला है। वह पहली बार गर्भवती है। आपने उसके घर का दौरा किया।

क. क्या आप उसका नाम गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में लिखोगी? हॉं / नहीं

ख. क्या आप उसका नाम गर्भवती महिलाओं की सूची में लिखोगी? हॉं / नहीं

प्रश्न 2. एक शिशु का जन्म 7 नवम्बर 2005 को हुआ। आप प्रसव के समय उपस्थित थी। दाई ने नाल काटकर बॉंध दी। दूसरे दिन जब आप घर के दौरे पर गई तब आप ने पाया कि शिशु की नाल से खून बह रहा था। आप क्या करोगी? सही उत्तर पर गोला करें।

क. नाल पर जी. वी. पेंट लगाएँ।

ख. मॉं की लापरवाही के लिए उसे डॉंटें

ग. शिशु को अस्पताल भेंजें

घ. नाल को फिर से ठीक से बॉंधें

प्रश्न 3. शिशु जन्म के बाद पहले पन्द्रह मिनट में आप क्या क्या करती है? किसी 3 उत्तरों पर गोला करें।

क. शिशु का वजन करें

ख. स्तनपान शुरू कराना

ग. शिशु को पोंछें तथा लपेटे

घ. विटामिन 'के' की सुई लगाएँ

च. शिशु का सॉंस तथा रोने के लिए निरिक्षण करें

छ. स्वास्थ्य शिक्षा दें

आशा का नाम ____________________	तारीख ____________
प्रशिक्षक का नाम ____________________	कुल अंक ____________
ब्लॉक ____________________	

प्रश्न 4. गर्भावस्था के दौरान निम्न समस्या होनेपर अस्पताल भेंजने के लिए आपात्स्थिति है या आपात्स्थिति नहीं यह निश्चित करें। सही उत्तर पर गोला करें।

समस्या	अस्पताल भेंजना
क. रतौंधी	आपात्स्थिति है / आपात्स्थिति नहीं
ख. योनी से रक्तस्त्राव	आपात्स्थिति है / आपात्स्थिति नहीं
ग. चेहरे पर सूजन	आपात्स्थिति है / आपात्स्थिति नहीं
घ. दौरे	आपात्स्थिति है / आपात्स्थिति नहीं

प्रश्न 5. रशीदा ने सर्दी में एक लड़की को जन्म दिया। दाई ने प्रसव कराया और वह अवलनाल बाहर आने का इन्तज़ार कर रही थी। आशा प्रसव के समय उपस्थित नहीं थी।

25 मिनट बाद अवलनाल बाहर आई। दाई ने शिशु को साफ किया और उसे सास के पास दिया। शिशु को देखकर सास खुश थी। वह शिशु को उसके पिता को दिखाने के लिए कमरे के बाहर ले गई। शिशु को देखकर सारे परिवार वाले खुश थे।

शिशु को जब माँ के पास लिटाया गया तब माँ सो चुकी थी। शिशु भी सो गया। जब माँ जागी तब शिशु का शरीर छूने में ठंडा लगा। माँ ने शिशु को दूध पीलाना चाहा पर शिशु दूध पी नहीं पा रहा था। शिशु का तापमान 93^0 फॅ. (33.9^0सें.) था।

क. क्या शिशु ठंडा पड़ रहा था? हाँ / नहीं

ख. शिशु के कम तापमान के तीन संभावित कारणों पर गोला करें।

- सर्दी में जन्म
- शिशु को तुरंत स्तनपान नहीं कराया
- शिशु लड़की थी
- आशा प्रसव के समय उपस्थित नहीं थी
- रशीदा का प्रसव माँ के घर नहीं हुआ

ग. एक कार्य पर गोला करें जिससे समस्या को टाला जा सकता था

- प्रसव गरमी में हो
- अवलनाल जल्दी बाहर आयें इसलिए नाल को खींचें
- शिशु को तुरंत पोंछें तथा लपेटे

घ. इस शिशु को गरमी पहुँचाने के तीन कदमों पर गोला करें

- माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखें
- आशा प्रसव के समय उपस्थित हो
- कमरा गर्म करें
- तुरंत अस्पताल भेंजें
- विटामिन 'के' की सुई लगाएँ
- कोट्रिमॉक्सेज़ोल की एक खुराक दें
- शिशु को दूध पीलाएँ

च. शिशु के सामान्य तापमान की श्रेणी पर गोला करें

- 97^0फॅ – 99^0 सें
- 96.4^0फॅ – 100^0 सें
- 97^0फॅ – 98.6^0 सें

प्रश्न 6. शांताबाई को दूसरा बच्चा होने वाला है। प्रसव पीड़ा शुरू होते ही परिवार वालों ने आपको बुलाया। झिल्ली फटी और पानी का रंग सफेद पारदर्शी था। 8 घंटे के अंदर शिशु पैदा हुआ।

क. क्या शांताबाई को दम घुटा शिशु पैदा होने का सामान्य से अधिक खतरा था? हाँ / नहीं

ख. प्रसव के लिए निम्न से कौनसी 2 चीजें आप तैयार रखेंगी? सही उत्तर पर गोला करें।

- सेप्सिस निदान फॉर्म
- शिशु को पोंछने तथा लपेटने के लिए कपड़े
- दूध पाउडर का डिब्बा
- बिल्टा पम्प
- शहद और गुड़
- कोट्रिमॉक्सेज़ोल

ग. शांताबाई का प्रसव हुआ तो शिशु का रोना कमजोर था और वह हॉफ रहा था। आप क्या करोगी? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- मॉ के स्तनों से दूध निकाले और शिशु को पीलाएँ
- शिशु ठंड़ा पड़ने का उपचार करें
- शिशु को पोंछें तथा ढँके
- तापमान नापें
- बिल्टा पम्प का प्रयोग करें
- जेन्टामायसिन की सुई लगाएँ

घ. आप ने शिशु के दम घुटने का उपचार किया तो शिशु रोने लगा। तब आप क्या करोगी? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- बैग और मास्क का प्रयोग करें
- हायपोथर्मिया उपचार फॉर्म भरें
- शिशु को गर्म रखें
- मॉ से कहें कि आयरन की गोली खायें
- मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दें
- स्तनपान शुरू कराएँ

प्रश्न 7. नौ महीने 3 दिन पूरे होने के बाद राधा ने एक शिशु को जन्म दिया। जन्म के समय शिशु का वजन 2 किलो 300 ग्राम था। जन्म के समय शिशु ठीक था पर तीसरे दिन शिशु ने दूध पीना बंद किया और मॉ ने कहा कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है।

क. शिशु की समस्या क्या है? सही उत्तर पर गोला करें।

- समयपूर्व जन्मा शिशु
- निमोनिया
- सेप्सिस

ख. कौनसे लक्षणों के आधारपर आपने निदान किया? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- फूला हुआ पेट
- उल्टियॉ
- मॉ ने कहा कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है
- टुंडी पर मवाद
- शिशु का कम वजन
- शिशु ने दूध पीना बंद किया

ग. शिशु को कौनसी दवाई दी जाएँगी?

- पैरासिटामॉल
- एस्पिरिन
- कोट्रिमॉक्सेज़ोल

प्रश्न 8. जोड़ियॉं बनाएँ

1. मॉं के स्तनों में सूजन है	कोट्रिमॉक्सेजोल दें
2. शिशु की छाती अंदर को धँसती है	सिर्फ नवजात शिशुओं को दें
3. शिशु का तापमान 93.2^0फै	बिल्टा पम्प का प्रयोग करें
4. विटामिन 'के' की सुई	टेट्रासायक्लिन मल्हम से उपचार करें
5. जन्मतेही शिशु रोता नहीं और सॉंस नहीं लेता	शिशु ठंड़ा पड़ा है
6. शिशु की ऑंखे सूजी हुई और लाल है	मॉं के स्तनो से दूध निकाले

प्रश्न 9. उचित शब्दोंसे रिक्त स्थान भरें

क. जन्म के समय शिशु का वजन 2 किलो 100 ग्राम हो तो शिशु .... कहलाता है।

ख. शिशु जन्मतेही नही रोया या धीमे से रोया तो ....।

ग. आप .... शिशु के घर का पहले महीने में 13 बार दौरा करती है।

प्रश्न 10. सही या गलत पर गोला मारे

क. यदि शिशु एरिओला पर चूसे तो मॉं के चूचुक कट फट सकते है सही / गलत

ख. शिशु को मॉं के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि का प्रयोग अधिक खतरेवाले शिशुओं के लिए किया जाता है सही / गलत

प्रश्न 11. निम्न प्रत्येक पिछली माहवारी की तारीख के लिए प्रसव की अपेक्षित तारीख तथा समयपूर्व जन्म की तारीख लिखें।

पिछली माहवारी की तारीख	प्रसव की अपेक्षित तारीख	समयपूर्व जन्म की तारीख
11 अक्टुबर 2006		
7 दिसम्बर 2005		
5 फरवरी 2006		
31 जनवरी 2004		
3 मार्च 2003		

प्रश्न 12. निम्न प्रत्येक जन्म के समय के लिए 30 सेकिंड तथा 5 मिनट बाद का समय लिखें।

जन्म का समय	30 सेकिंड बाद का समय	5 मिनट बाद का समय
10:20:15		
11:12:13		
09:05:50		
12:30:45		
08:10:17		

प्रश्न 13. निम्न से आप के गॉंव के किसी एक का चयन करें जिसे स्वास्थ्य सेवा कि अधिकतम आवश्यकता है।

क. पाठशाला में पढ़नेवाली छोटी लड़की

ख. गॉंव के सरपंच / मुखिया

ग. नवजात शिशु

घ. बूढ़े दादाजी

प्रश्न 14. क्या आप के जैसी गॉंव की प्रशिक्षित कार्यकर्ता सफलतापूर्वक, नवजात शिशु तथा बच्चों की मृत्यु कम कर सकती है? हॉं / नहीं

प्रश्न 15. क्या निम्न लक्षण शिशु की गम्भीर बीमारी को सूचित करते है?

- शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज — हॉं / नहीं
- शिशु को जुकाम — हॉं / नहीं
- शिशु रात को दो बार दूध पीने के लिए रोता है — हॉं / नहीं
- शिशु का रोना कमजोर है — हॉं / नहीं
- शिशु को दौरे पड़ते है — हॉं / नहीं
- दूध पीने के बाद शिशु डकार देता है — हॉं / नहीं
- शिशु ने दूध पीना बंद किया — हॉं / नहीं

मूल्यांकन प्रश्नपत्र के उत्तरः अधिकतम अंक 60 उत्तिर्णांक 30 (50 प्रतिशत)

समयः 1 घंटा 30 मि.

सारे प्रश्न हल करना आवश्यक है (प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक)

प्रश्न 1. लीला आपके गॉव की महिला है। वह पहली बार गर्भवती है। आपने उसके घर का दौरा किया।

क. क्या आप उसका नाम गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची में लिखोगी? **हाँ** / नहीं

ख. क्या आप उसका नाम गर्भवती महिलाओं की सूची में लिखोगी? **हाँ** / नहीं

प्रश्न 2. एक शिशु का जन्म 7 नवम्बर 2005 को हुआ। आप प्रसव के समय उपस्थित थी। दाई ने नाल काटकर बॉध दी। दूसरे दिन जब आप घर के दौरे पर गई तब आप ने पाया कि शिशु की नाल से खून बह रहा था। आप क्या करोगी? सही उत्तर पर गोला करें।

क. नाल पर जी. वी. पेंट लगाएँ।

ख. माँ की लापरवाही के लिए उसे डॉटें

ग. शिशु को अस्पताल भेंजें

घ. नाल को फिर से ठीक से बॉधें

प्रश्न 3. शिशु जन्म के बाद पहले पन्द्रह मिनट में आप क्या क्या करती है? किसी 3 उत्तरों पर गोला करें।

क. शिशु का वजन करें

ख. स्तनपान शुरू कराना

ग. शिशु को पोंछें तथा लपेटे

घ. विटामिन 'के' की सुई लगाएँ

च. शिशु का सॉस तथा रोने के लिए निरिक्षण करें

छ. स्वास्थ्य शिक्षा दें

प्रश्न 4. गर्भावस्था के दौरान निम्न समस्या होनेपर अस्पताल भेंजने के लिए आपात्स्थिति है या आपात्स्थिति नहीं यह निश्चित करें। सही उत्तर पर गोला करें।

समस्या	अस्पताल भेंजना
क. रतौंधी	आपात्स्थिति है / **आपात्स्थिति नहीं**
ख. योनी से रक्तस्त्राव	**आपात्स्थिति है** / आपात्स्थिति नहीं
ग. चेहरे पर सूजन	**आपात्स्थिति है** / आपात्स्थिति नहीं
घ. दौरे	**आपात्स्थिति है** / आपात्स्थिति नहीं

प्रश्न 5. रशीदा ने सर्दी में एक लड़की को जन्म दिया। दाई ने प्रसव कराया और वह अवलनाल बाहर आने का इन्तज़ार कर रही थी। आशा प्रसव के समय उपस्थित नहीं थी।

25 मिनट बाद अवलनाल बाहर आई। दाई ने शिशु को साफ किया और उसे सास के पास दिया। शिशु को देखकर सास खुश थी। वह शिशु को उसके पिता को दिखाने के लिए कमरे के बाहर ले गई। शिशु को देखकर सारे परिवार वाले खुश थे।

शिशु को जब माँ के पास लिटाया गया तब माँ सो चुकी थी। शिशु भी सो गया। जब माँ जागी तब शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा लगा। माँ ने शिशु को दूध पीलाना चाहा पर शिशु दूध पी नहीं पा रहा था। शिशु का तापमान 93^0 फॅ. (33.9^0सें.) था।

क. क्या शिशु ठंडा पड़ रहा था? **हाँ** / नहीं

ख. शिशु के कम तापमान के तीन संभावित कारणों पर गोला करें।

- **सर्दी में जन्म**
- शिशु लड़की थी
- रशीदा का प्रसव माँ के घर नहीं हुआ
- **शिशु को तुरंत स्तनपान नहीं कराया**
- **आशा प्रसव के समय उपस्थित नहीं थी**

ग. एक कार्य पर गोला करें जिससे समस्या को टाला जा सकता था

- प्रसव गरमी में हो
- **शिशु को तुरंत पोंछें तथा लपेटे**
- अवलनाल जल्दी बाहर आयें इसलिए नाल को खींचें

घ. इस शिशु को गरमी पहुँचाने के तीन कदमों पर गोला करें

- **माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखें**
- **कमरा गर्म करें**
- विटामिन 'के' की सुई लगाएँ
- **शिशु को दूध पीलाएँ**
- आशा प्रसव के समय उपस्थित हो
- तुरंत अस्पताल भेंजें
- कोट्रिमॉक्सेज़ोल की एक खुराक दें

च. शिशु के सामान्य तापमान की श्रेणी पर गोला करें

- 97^0फॅ – 99^0 सें
- 96.4^0फॅ – 100^0 सें
- **97^0फॅ – 98.6^0 सें**

प्रश्न 6. शांताबाई को दूसरा बच्चा होने वाला है। प्रसव पीड़ा शुरू होते ही परिवार वालों ने आपको बुलाया। झिल्ली फटी और पानी का रंग सफेद पारदर्शी था। 8 घंटे के अंदर शिशु पैदा हुआ।

क. क्या शांताबाई को दम घुटा शिशु पैदा होने का सामान्य से अधिक खतरा था? हॉं / **नहीं**

ख. प्रसव के लिए निम्न से कौनसी 2 चीजें आप तैयार रखेंगी? सही उत्तर पर गोला करें।

- सेप्सिस निदान फॉर्म
- दूध पाउडर का डिब्बा
- शहद और गुड़
- **शिशु को पोंछने तथा लपेटने के लिए कपड़े**
- **बिल्टा पम्प**
- कोट्रिमॉक्सेज़ोल

ग. शांताबाई का प्रसव हुआ तो शिशु का रोना कमजोर था और वह हॉफ रहा था। आप क्या करोगी? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- मॉं के स्तनों से दूध निकाले और शिशु को पीलाएँ
- **शिशु को पोंछें तथा ढंके**
- **बिल्टा पम्प का प्रयोग करें**
- शिशु ठंडा पड़ने का उपचार करें
- तापमान नापें
- जेन्टामायसिन की सुई लगाएँ

घ. आप ने शिशु के दम घुटने का उपचार किया तो शिशु रोने लगा। तब आप क्या करोगी? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- बैग और मास्क का प्रयोग करें
- **शिशु को गर्म रखें**
- मॉं को स्वास्थ्य शिक्षा दें
- हायपोथर्मिया उपचार फॉर्म भरें
- मॉं से कहें कि आयरन की गोली खायें
- **स्तनपान शुरू कराएँ**

प्रश्न 7. नौ महीने 3 दिन पूरे होने के बाद राधा ने एक शिशु को जन्म दिया। जन्म के समय शिशु का वजन 2 किलो 300 ग्राम था। जन्म के समय शिशु ठीक था पर तीसरे दिन शिशु ने दूध पीना बंद किया और मॉं ने कहा कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है।

क. शिशु की समस्या क्या है? सही उत्तर पर गोला करें।

- समयपूर्व जन्मा शिशु
- निमोनिया
- **सेप्सिस**

ख. कौनसे लक्षणों के आधारपर आपने निदान किया? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- फूला हुआ पेट
- **मॉं ने कहा कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है**
- शिशु का कम वजन
- उल्टियॉं
- टुंडी पर मवाद
- **शिशु ने दूध पीना बंद किया**

ग. शिशु को कौनसी दवाई दी जाएँगी?

- पैरासिटामॉल
- एस्पिरिन
- **कोट्रिमॉक्सेज़ोल**

प्रश्न 8. जोड़ियॉं बनाएँ

1. मॉं के स्तनों में सूजन है	कोट्रिमॉक्सेजोल दें
2. शिशु की छाती अंदर को धॅंसती है	सिर्फ नवजात शिशुओं को दें
3. शिशु का तापमान 93.2^{0}फै	बिल्टा पम्प का प्रयोग करें
4. विटामिन 'के' की सुई	टेट्रासायक्लिन मल्हम से उपचार करें
5. जन्मतेही शिशु रोता नहीं और सॉंस नहीं लेता	शिशु ठंडा पड़ा है
6. शिशु की ऑंखे सूजी हुई और लाल है	मॉं के स्तनो से दूध निकाले

प्रश्न 9. उचित शब्दोंसे रिक्त स्थान भरें

क. जन्म के समय शिशु का वजन 2 किलो 100 ग्राम हो तो शिशु **कम वजन का** कहलाता है।

ख. शिशु जन्मतेही नही रोया या धीमे से रोया तो **जन्मतेही शिशु का दम घुटा** है।

ग. आप **अधिक खतरेवाले** शिशु के घर का पहले महीने में 13 बार दौरा करती है।

प्रश्न 10. सही या गलत पर गोला मारे

क. यदि शिशु एरिओला पर चूसे तो मॉं के चूचुक कट फट सकते है सही / **गलत**

ख. शिशु को मॉं के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि का प्रयोग अधिक खतरेवाले शिशुओं के लिए किया जाता है **सही** / गलत

प्रश्न 11. निम्न प्रत्येक पिछली माहवारी की तारीख के लिए प्रसव की अपेक्षित तारीख तथा समयपूर्व जन्म की तारीख लिखें।

पिछली माहवारी की तारीख	**प्रसव की अपेक्षित तारीख**	**समयपूर्व जन्म की तारीख**
11 अक्टुबर 2006	18 जुलाई 2007	25 जून 2007
7 दिसम्बर 2005	**13 सितम्बर 2006**	**21 अगस्त 2006**
5 फरवरी 2006	**12 नवम्बर 2006**	**20 अक्टुबर 2006**
31 जनवरी 2004	**7 नवम्बर 2004**	**15 अक्टुबर 2004**
3 मार्च 2003	**8 दिसम्बर 2003**	**15 नवम्बर 2003**

प्रश्न 12. निम्न प्रत्येक जन्म के समय के लिए 30 सेकिंड तथा 5 मिनट बाद का समय लिखें।

जन्म का समय	**30 सेकिंड बाद का समय**	**5 मिनट बाद का समय**
10:20:15	**10:20:45**	**10:25:15**
11:12:13	**11:12:43**	**11:17:13**
09:05:50	**09:06:20**	**09:10:50**
12:30:45	**12:31:15**	**12:35:45**
08:10:17	**08:10:47**	**08:15:17**

प्रश्न 13. निम्न से आप के गॉंव के किसी एक का चयन करें जिसे स्वास्थ्य सेवा कि अधिकतम आवश्यकता है।

क. पाठशाला में पढ़नेवाली छोटी लड़की

ख. गॉव के सरपंच / मुखिया

ग. नवजात शिशु

घ. बूढ़े दादाजी

प्रश्न 14. क्या आप के जैसी गॉव की प्रशिक्षित कार्यकर्ता सफलतापूर्वक, नवजात शिशु तथा बच्चों की मृत्यु कम कर सकती है? **हॉ** / नहीं

प्रश्न 15. क्या निम्न लक्षण शिशु की गम्भीर बीमारी को सूचित करते है?

- शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज **हॉ** / नहीं
- शिशु को जुकाम हॉ / **नहीं**
- शिशु रात को दो बार दूध पीने के लिए रोता है हॉ / **नहीं**
- शिशु का रोना कमजोर है **हॉ** / नहीं
- शिशु को दौरे पड़ते है **हॉ** / नहीं
- दूध पीने के बाद शिशु डकार देता है हॉ / **नहीं**
- शिशु ने दूध पीना बंद किया **हॉ** / नहीं

आशाओं की अंक तालिका

आशा का नाम	गाव	लिखित परीक्षा के अंक (1)	योग्यताओ की परीक्षा में अंक (2)	व्यवहार तथा क्षमता के मूल्यांकन में अंक (3)	कुल अंक (4=1+2+3)	सकारात्मक काम (प) कोई बड़ी भूल (म) बेईमानी (न) (5)	आशा का परीक्षाफल (4 तथा 5 पर आधारित) उत्कृष्ट **(अ)** सन्तोषजनक **(ब)** असन्तोषजनक **(क)**

मोड्यूल 14 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा बैग और मास्क से उपचार

सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 5 (दोहराई, मूल्यांकन तथा मोड्यूल 9) के बाद कार्यक्षेत्र के अनुभवों की समीक्षा

दिवस : 1
समयावधि : 1 घं. 15 मि.

प्रयोजन

आशा को पिछले प्रशिक्षण के पश्चात् क्षेत्र में हुए अनुभवों के बारे में चर्चा करने का अवसर देना, उनके प्रश्नों तथा शंकाओं का समाधान करना तथा जिन विषयों में अधिक अभ्यास अथवा स्पष्टीकरण चाहिए, उनकी पहचान करना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यताएँ आयेंगीः

1. पिछले माह क्षेत्र में किये गये कार्य से प्राप्त हुये अनुभवों, उनसे ली गयी शिक्षा तथा कठिनाइयों के बारे में विचारों का आदान–प्रदान।

सामग्री

- आशाओं के गॉव में 'काम तथा प्रशिक्षण में प्रगती का रिकार्ड'

तैयारी

- कार्यशाला के पूर्व प्रशिक्षक एवं सुपरवाईजर एक बैठक करें। बैठक के दौरान प्रत्येक आशा का सुपरवाईजर व्दारा गॉव में भरा गया काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड तथा उसकी समस्याओं पर चर्चा हो और यह सारी बातें सुपरवाईजर प्रशिक्षक को अवगत कराएँ। इस प्रकार तैयारी कर लेने से अगली प्रशिक्षण कार्यशाला आरंभ होने से पहले प्रशिक्षक एवं सुपरवाईजर को आशा की प्रशिक्षण संबंधी जरूरतों का पूरा पूरा ज्ञान होगा।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवं चर्चा</u> (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

1. प्रशिणार्थियों को गोले में बिठायें।
2. प्रत्येक आशा से कहें कि पिछले माह, क्षेत्र में किये कार्य का सारांश प्रस्तुत करें। बतायें कि उसमें निम्न बातें अवश्य प्रस्तुत करें।(इन्हे बोर्ड पर लिख दें)
   - शिशु को जन्मतेही गर्म रखने का अनुभव
   - क्या उसने कोई कम वजन का या समय पूर्व जन्मा शिशु देखा? उसकी देखभाल कैसे की?
   - क्या उसने कोई अधिक खतरेवाला शिशु देखा?
   - स्तनपान संबंधी समस्या या अधिक खतरेवाले शिशु के लिये उसने स्वास्थ्य शिक्षा चित्रपुस्तिका का प्रयोग किया क्या?

- जन्मतेही दम घुटे या सेप्सिस वाले शिशु के उपचार के बारे में परिवार वालों की क्या प्रतिक्रिया थी?
- उसके सकारात्मक तथा नकारात्मक अनुभव
- आशा ने चूषण पंप का प्रयोग करने पर दाई की भावनाएँ।
- कोई कठिनाई या समस्या

3. प्रशिक्षक समय का ध्यान रखे तथा शंकाओं का समाधान करे।
4. जिन विूायों पर प्रशिक्षणार्थियों को अधिक अभ्यास/ जानकारी चाहिए, वह नोट कर लें।
5. आशा के क्षेत्र में रहकर कार्य करने का समग्र मूल्यांकन करने हेतु प्रशिक्षण पश्चात् सुपरवाईजर ने भरा हुआ काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड देखें। यदि किसी को अधिक सहायता की आवश्यकता हो तो सत्र की समाप्ति पर उनसे अलग से चर्चा करें तथा समय दें।

<u>नाटक खेलनाः</u> (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

1. प्रशिणार्थियों को 4–5 समूहों में बॉटें।
2. प्रत्येक समूह को एक विषय चूनने दें। जैसे – सकारात्मक या कठिन स्थिति जिसके बारे में आशाओं ने चर्चा की हो या जिस के बारे में सभी को चिंता हो (गॉव में स्वीकार, दाई के साथ काम करना, बहुत कम वजन के शिशु की देखभाल, जन्मतेही दम घुटे शिशु की देखभाल, सेप्सिस का उपचार, आदि)। कठिनाईयों का सामना कैसे करें या सकारात्मक अनुभव से उसे गॉव में काम करने में कैसे मदद मिलेगी इस के बारे में सभी समूहों में चर्चा हो। भूमिका नाटक, कहानी या प्रस्तुति के माध्यम से आशाएँ अपने अनुभवों का प्रदर्शन करें। (15 मि.)
3. प्रत्येक समूह अपने अनुभवों को प्रस्तुत करें और उस पर चर्चा हो। (5 से 10 मि.)

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
पिछले माह क्षेत्र में किये गये कार्य से प्राप्त हुये अनुभवों, उनसे ली गयी शिक्षा तथा कठिनाइयों के बारे में विचारों का आदान–प्रदान।	चर्चा, भूमिका नाटक या कहानी	आशाओं व्दारा पहचानी गई सामान्य समस्याओं की सूची

मोड्यूल 14 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा बैग और मास्क से उपचार

सत्र 2 : जन्मतेही दम घुटने के निदान तथा उपचार का पहला कदम, की दोहराई

दिवस : 1
समयावधि : 55 मि.

प्रयोजन

आशाओं को नवजात शिशुओं में जन्मतेही दम घुटने की पहचान कराना, इसके परिणामों के बारे में जानकारी देना और प्रसव के दौरान उन परिस्थितियों की जानकारी देना, जिनके कारण जन्मतेही शिशु की साँस में घुटन हो सकती है।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. जन्मतेही दम घुटने की परिभाषा बताना।
2. ऐसे शिशुओं को पहचानना, जिनकी जन्मतेही साँस लेने में घुटन हो रही है (अभ्यास कराना)
3. प्रसव के दौरान की उन परिस्थितियों की जानकारी देना, जिनके कारण जन्मतेही शिशुओं को साँस लेने में कठिनाई हो सकती है।
4. दम घुटने के विपरीत परिणामों की सूची बनाना।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1: जन्मतेही दम घुटना संबंधी जानकारी (मोड्यूल 12 अध्ययनपत्र में है)

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थीयों से कहें कि वे अपने अपने अध्ययनपत्र साथ में रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवं चर्चा</u>: साँस में घुटन किसे कहते हैं और इसके परिणाम ? (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. निम्न कहानी सुनाएँ :

   शालु को शाम के समय प्रसवपीड़ा शुरू हुई। उसके पति दाई और आशा को तुरंत ही बुला लाए। शालु को रूक–रूक कर और ज़ोर से दर्द हो रहे थे। सुबह–सुबह उसकी पानी की थैली फट गई और गाढ़ा, हरे रंग का पानी बाहर निकलने लगा। इसके तुरंत बाद बच्चे का सिर बाहर आने लगा, तो दाई ने देखा कि उसकी गर्दन के चारों और नाल लिपटी हुई है। उसने बच्चे के सिर के ऊपर निकालने की कोशिश की पर नहीं कर पाई। उसने शीघ्रता से नाल बाँधी और काट दी जबकि बच्चे का शरीर अंदर ही था। इसके बाद बच्चा तो आसानी से बाहर आ गया, पर वह बहुत धीमे रोया और हाँफ रहा था।

2. निम्न प्रश्न पूछें :
   - क्या बच्चे की साँस घुट रही थी ? *(हाँ)*
   - इसके क्या लक्षण हैं ? *(धीमे से रोना और हाँफना)*

3. किसी एक आशा से पूछें, कि क्या वे किसी ऐसे प्रसव के समय उपस्थित थीं, जिसमें शिशु रोया नहीं अथवा साँस नहीं ली, धीमे से रोया और हल्की साँस ली ? यदि हाँ, तो उनसे पूछें कि उन्होंने क्या देखा / क्या प्रसवपीड़ा ठीक–ठाक हुई या फिर कोई समस्या हुई ? क्या समस्या हुई ? उनके उत्तर बोर्ड पर लिखें।
4. सभी को बताएँ कि साँस लेने में घुटन किसी भी शिशु को हो सकती है, किसी महिला को प्रसव ठीक–ठाक हुआ हो तो भी। इसलिए प्रत्येक प्रसव से पूर्व इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए। अतः हर प्रसव के समय निम्न तैयारी रखें।
   - साफ कपड़े, तौलिये तथा शिशु के लिए कंबल।
   - चूषण पंप
   - बैग/ मास्क (देखें की वह साफ सुथरा है और काम कर रहा है। बैग और मास्क का प्रयोग आप अगले सत्र में सीखेंगे)
5. आशाओंको याद दिलाएँ : यदि शिशु की साँस में घुटन है, तो प्रसव के पहले 5 मिनट आपात्कालीन स्थिति हैं। इन्हीं 5 मि. के समय में जीवन बचाया जा सकता है, या फिर वह समाप्त भी हो सकता है।
6. आशाओं से कहें कि वे अध्ययनपत्र में 'जन्मतेही दम घुटना', संबंधी जानकारी देंखें। आशाओं को जानकारी पढ़वाएँ और उनके प्रश्नों के उत्तर दें।

<u>पूरे समूह के हल करने के लिए छोटे केस उदाहरण</u> (10 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रत्येक केस प्रस्तुत करें। प्रशिक्षणार्थियों से पूछें, कि इनमें से प्रत्येक शिशु की साँस में घुटन हो रही है या नहीं :
   - शिशु का जन्म 12 बजकर 3 मि. पर हुआ। 30 से. में वह रोने लगा और ठीक से साँस लेने लगा। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? *(नहीं)*
   - नीला ने लड़की को जन्म दिया। 30 से. बाद बच्चा रोया नहीं, पर हाँफ रहा था। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? (हॉं)
   - सुनन्दा का शिशु जन्म के तुरंत बाद धीमे से रोया और हल्की साँस ली। क्या उसे साँस में घुटन थी? (हॉं)
   - नन्दा, का बच्चा ढीला–ढाला जन्मा और न रोया, न साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? (हॉं)
   - मीरा का बच्चा जन्मतेही धीमे से रोया और हाँफ रहा था। क्या उसकी साँस घुटी हुई थी ? (हॉं)
   - मंजू का बच्चा जन्म के समय ज़ोर–ज़ोर से रोया और ज़ोर से साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? *(नहीं)*
2. प्रत्येक केस प्रस्तुत करें। प्रशिक्षणार्थियों से कहें कि प्रत्येक शिशु में जन्मतेही साँस में घुटन के खतरे है या नहीं कहें और चेतावनी देने वाले लक्षण बताएँ
   - मंगला की प्रसव पीड़ा शुरू हुयी। झिल्लि फटी और बहुत कम पानी गया (हॉं, शुष्क प्रसव)।
   - मीना की प्रसवपीड़ा एक पूरा दिन और एक आधा दिन चली (हॉं, लंबी प्रसवपीड़ा)।
   - अर्चना के प्रसव के दौरान शिशु का एक हाथ पहले बाहर आया (हॉं, सिर के अलावा अन्य भाग का पहले बाहर आना)

- यमुना को गर्भावस्था के सातवें महीने में बच्चा पैदा हुआ (हॉं, समयपूर्व जन्म)।
- सिन्धु की प्रसवपीड़ा लगभग 30 घंटे चली (हॉं, लंबी प्रसवपीड़ा)।

3. ध्यान रखें कि प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को बात समझ में आ रही है। सभी की ृांकाओं का समाधान करें।
4. आशाओंको जन्मतेही दम घुटने का कृती चार्ट देखने को कहें। बताएँ कि यदि झिल्लि फटते ही निकलने वाला द्रव गाढ़ा तथा पीले या हरे रंग का हो तो शिशु का सिर बाहर निकलतेही शिशु का मुँह पट्टी वाले कपड़े से अंदर से साफ करें। यह आशाओं ने प्रशिक्षण कार्यशाला 2 में सीखा हैं। उन्होंने प्रसव के समय यह कार्य किया भी होगा। बताऍं कि यदि जन्मतेही शिशु रो नहीं रहा, साँस नहीं ले रहा, हल्की साँस ले रहा है या हाँफ रहा है तो इसका अर्थ है कि उसका दम घुट रहा है और उसे उपचार की आवश्यकता है। उपचार को पुनरुज्जीवन (कृत्रिम साँस दिलाना) कहते हैं।
5. पुनरूज्जीवन की प्रक्रिया बताएँ:
   - **पोंछना तथा लपेटना :** बताएँ कि जन्मते ही शिशु को शीघ्रता से कपड़े से पोंछ लेना तथा सूखे कपड़े में लपेटना चाहिए। कभी–कभी ऐसा करने से वह रोने और साँस लेने लगता है।
   - **चूषण पम्प का प्रयोग :** यदि शिशु पोंछने और लपेटने से भी रोए नहीं, तो उसकी साँस की घुटन दूर करने के लिए दूसरा कदम है, उसके मुँह, गले और नाक के स्रावों को साफ करना, जिससे कि वह अच्छी तरह साँस ले सके। इसके लिए चूषण पम्प का प्रयोग किया जाता है। शिशु का मुँह साफ किया जाता है और यदि वह तब भी रोता तथा साँस नहीं लेता, तो उसका गला और नाक साफ किए जाते हैं।
   - **इस उपकरण के प्रयोग के पहले नाल नही काटनी चाहिए** (पर यदि नाल छोटी है और पर्याप्त जगह नहीं है तो नाल पहले काटी जा सकती है)। यदि शिशुजन्म चारपाई पर कराया जा रहा हो, तो शिशु को नीचे ज़मीन पर लिटाना ठीक रहता है, जिससे कि उसकी नाल से खून बच्चे के शरीर में आता रहे। यदि जन्म चारपाई पर न कराया जा रहा हो, तो शिशु को ज़मीन पर माँ के दाईं ओर माँ की तरफ सिर करके लिटाया जाना चाहिए।
   - **बैग और मास्क :** यदि स्राव निकालने वाले उपकरण की मदद से भी शिशु रोता नहीं और साँस नहीं लेता, तो तुरंत बैग और मास्क का प्रयोग करें। दम घुटने के उपचार में यह दूसरा कदम है और इसके बारे में अगले सत्र में बताया जाएगा।
6. आशाओंको याद दिलाएँ :
   - यदि शिशु ठीक से रो रहा है और साँस ले रहा है तो स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग न करें।
   - शिशु को ढँकना और गर्म रखना आवश्यक है।
   - जैसे ही शिशु रोना/साँस लेना शुरू कर दे, स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग बंद कर दें।

प्रदर्शन (10 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से कहें कि वे स्राव निकालने वाले उपकरण वाली जाँच–सूची अपने अध्ययनपत्र में देंखें।
2. सबसे पहले एक कप/कटोरी से पानी खींचकर दिखाएँ कि यह उपकरण कैसे कार्य करता है।
3. इसके बाद इस उपकरण का प्रयोग बच्चे के आकार की गुड़िया (खिलौने) में करके दिखाएँ। जैसा–जैसा करें वैसा वैसा बोलती भी जाएँ।

यदि चूषण के बाद भी शिशु साँस नहीं ले रहा हो तो तुरंत **अगली कार्यवाही करें** : शिशु को कृत्रिम साँस दिलाने के लिए (फेफड़ों में हवा भेजने के लिए) बैग और मास्क का प्रयोग करें। यदि ऐसा समय से न किया गया, तो शिशु के मस्तिष्क में विकृति हो सकती है, या वह मर भी सकता है। (बैग और मास्क का प्रयोग अगले सत्र में बताया जाएगा) स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग केवल एक ही बार करके उसे फेंक देना चाहिए।

सारांश : (5 मि.)

- किसी एक आशासे पूछें, कि यदि शिशु का दम घुट रहा हो, तो क्या करना चाहिए।
- दूसरी आशासे स्राव निकालने वाले उपकरण के प्रयोग का प्रदर्शन करने को कहें, जबकि अन्य सभी जाँच–सूची का प्रयोग करते हुए निरीक्षण करती रहें।
- कुछ गलतियाँ हों, तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओंकी उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
जन्मतेही दम घुटने की परिभाषा बताना।	कक्षा में प्रश्नोत्तर	–
साँस में घुटन वाले शिशुओं को (अभ्यास द्वारा) पहचानना	केस उदाहरण के माध्यम से अभ्यास	–
प्रसवपीड़ा के दौरान उन परिस्थितियों के बारे में बताना, जो शिशुओं में साँस में घुटन की चेतावनी देती हों	केस उदाहरण	–
साँस में घुटन के विपरीत परिणामों की सूची बनाना	प्रश्नोत्तर	–

मोड्यूल 14 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा बैग और मास्क से उपचार

सत्र 3 : दम घुटने का उपचार : दूसरा कदम : बैग और मास्क का प्रयोग

दिवस : 1 और 2
समयावधि : 4 घं. 30 मि.

प्रयोजन

आशाओंको दम घुटे हुए शिशु को पुनरूज्जीवित करने के लिए बैग और मास्क की सहायता से कृत्रिम साँस दिलाने का अभ्यास कराना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. बताना कि स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण के प्रयोग के बाद भी यदि शिशु साँस नहीं ले रहा, तो क्या करना चाहिए।
2. बैग और मास्क के सही प्रकार से प्रयोग का प्रदर्शन।
3. बताना कि कृत्रिम साँस कितनी देर तक दी जानी चाहिए।
4. बताना कि बैग और मास्क की देखभाल कैसे करें।
5. जन्मतेही दम घुटे शिशु के उपचार की पूरी प्रक्रिया का प्रदर्शन

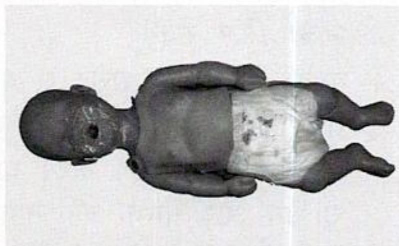
विशेष गुड़िया

सामग्री

- गुड़िया (पुनरूज्जीवन प्रक्रिया के लिये विशेष गुड़िया)
- बिल्टा पंप
- बैग एवं मास्क
- अध्ययनपत्र 1: बैग एवं मास्क के प्रयोग के लिये जाँच–सूची
- अध्ययनपत्र 2: जन्मतेही दम घुटना: कृती चार्ट

तैयारी

- उपर दिया हुआ सभी सामान तैयार रखें।
- आशाओं से कहें कि वे बैग एवं मास्क के प्रयोग के लिये जाँच–सूची अध्ययनपत्र में देखें।
- गुड़िया (पुनरूज्जीवन प्रक्रिया के लिये विशेष गुड़िया) हर समूह के लिए एक।
- बैग और मास्क हर समूह के लिए एक।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवं चर्चा</u> (1घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओंसे पूछें कि यदि नवजात शिशु जन्म के तुरंत बाद रो नहीं रहा है, साँस नहीं ले रहा है, हल्की साँस ले रहा है या हॉफ रहा है तो उन्हें क्या कदम उठाने चाहिए (*निर्णय लेने में सहायक चार्ट देखने को कहें; शिशु को पहले पोंछे, यदि वह फिर भी न रोए, न साँस ले तो स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग करें। यदि शिशु इसके बाद भी न रोए, न साँस लें तो* ***तुरंत बैग और मास्क का प्रयोग करें)।*** इन उपायों को पुनरुज्जीवन (कृत्रिम साँस दिलाना) कहते हैं।
2. जैसे ही बैग और मास्क के प्रयोग के बारे में सोचें, शिशु को माँ की दाईं तरफ लिटा दें। यदि नाल बहुत छोटी है तो तुरंत दाई से कहें की नाल को बाँधकर काट दे।
3. आशाओंसे हवा देने का अर्थ पूछें ? उनके उत्तर सुनें। यदि वे सही बताएँ तो प्रशंसा करें। जो वे न बता पाएँ, उसे बताएँ (*हवा देने का अर्थ है शिशु के फेफड़ों में पर्याप्त हवा (ऑक्सीजन) भेजना जिससे उसे हृदय और मस्तिष्क की क्रियाओं और स्वयं को जीवित रखने के लिए आवश्यक ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा मिल सके)।*
4. बताएँ कि माँ के शरीर से बाहर आने के 1 मि. के अंदर शिशु को हवा की आवश्यकता होती है; उसे तुरंत पोंछें और यदि शिशु रो नहीं रहा, या साँस नहीं ले रहा, तो गले के स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग करें। यदि शिशु यह करने पर भी हिले–डुले नहीं, तो जन्म के 60 से. के भीतर से बैग और मास्क की सहायता से कृत्रिम साँस दिलाएँ।
5. बैग और मास्क दिखाएँ और उसके मुख्य भाग समझाएँ: मास्क, बैग और सुरक्षा वाल्व।

बैग और मास्क का चित्र

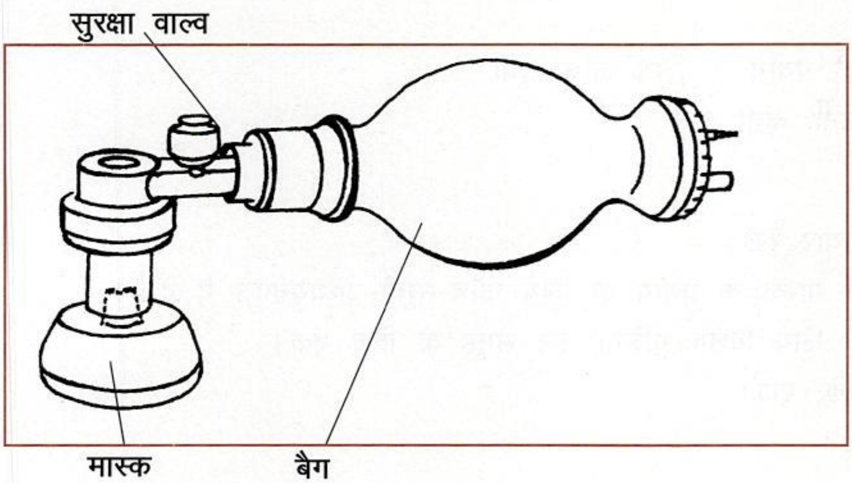

बैग और मास्क का प्रयोग

6. दिखाएँ कि मास्क बैग से कैसे जुड़ा होता है। सुरक्षा वाल्व दिखाएँ।
7. बताएँ कि मुलायम वाला मास्क शिशु के मुँह और नाक के चारों ओर लगा दिया जाता है और सीलबंद करने के लिए उसे कसकर लगाया जाता है। आशा बैग को दबाती है। प्रत्येक बार दबाने से शिशु को साँस मिलती है और हवा उसके फेफड़ों में जाती है।
8. जब आशा बैग दबाती है तो शिशु की छाती ऊपर उठनी चाहिए जैसे हर साँस के साथ होता है। यदि बैग को ठीक से दबाया जाए तो शिशु के छाती में हवा की सही मात्रा जाती है। यदि अभी भी छाती ऊपर नहीं उठ रही हो, तो शिशु के सिर की स्थिति ठीक करें और मास्क को फिर से नाक/मुँह में लगाएँ जिससे हवा बंद सील लग जाए।
9. यदि बैग/मास्क ठीक से कार्य कर रहे हैं तो शिशु की साँस द्वारा बाहर निकाली हुई हवा सुरक्षा वाल्व से बाहर निकल जाएगी और वह उसी हवा को साँस द्वारा अंदर नहीं लेगा।
10. बताएँ कि को गुनगुना पानी और साबुन से साफ करें। प्रत्येक बार प्रयोग के बाद उसे साफ करें। सुखाएँ और उसके डिब्बे में रखें।
11. प्रसव से पहले, मास्क के भाग जोड़कर उसे प्रयोग के लिए तैयार रखना चाहिए।

<u>प्रदर्शन</u> (30 मि.)

1. गुड़िया पर बैग और मास्क का प्रयोग करके दिखाएँ।
2. आशाओं से कहे कि वे बैग और मास्क के प्रयोग के लिए जाँच–सूची अध्ययनपत्र में देखें।
3. जो कार्य करें, उसे बोलकर समझाती जाएँ।
4. प्रश्नों का समाधान करें।

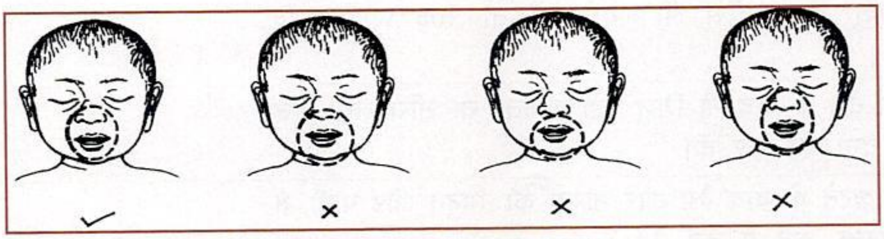

बैग और मास्क की सही स्थिति

बैग और मास्क के प्रयोग के लिये जाँच–सूची				
1. शिशु को ठीक से लिटाएँ, पोंछे, कपडें में लपेटें और अच्छी तरह तह किया हुआ तौलिया कंधो के नीचे रखें ताकि ठुड्डी ऊपर उठे (गर्दन तनी हुई। सर पीछे)				
2. उसके मुँह और नाक के चारों ओर बैग से जुड़ा मास्क रखें। हवा बाहर न निकले ऐसी सील लग जाए।				
3. बैग को 40 बार प्रति मि. की दर से दबाएँ।				
4. ध्यान रहे कि प्रत्येक बार हवा देते समय शिशु की छाती ऊपर उठे।				
5. यदि छाती ऊपर न उठे तो : – सिर की स्थिति ठीक करें, और दोहराएँ – मास्क की स्थिति ठीक करें एवं देखें कि हवा बाहर न निकले। – बैग पर दबाव बढ़ाएँ जिससे अधिक हवा अंदर जाए। – यदि अधिक स्त्राव हो तो पुनः चूषण करें। – यदि ऐसा करने पर भी छाती ऊपर न उठे, तो बैग को मास्क से निकाल दें और शिशु के मुँह और नाक के चारों ओर मास्क रखें, फिर सीधे मास्क में अपने मुँह से फूँकें।				
6. 1 मि. तक हवा देने के बाद देखें कि शिशु ने अपनेसे रोया/साँस ली। यदि नहीं तो हवा देना जारी रखें।				
7. प्रत्येक दो मिनट अथवा 80 बार बैग दबाने के बाद रूकें और कुछ क्षण जाँचे कि शिशु रोया/साँस ली। यदि हाँ तो रूक जाएँ, यदि नहीं तो जारी रखें।				
8. यदि 10 मि. तक साँस देने के बाद भी शिशु नही हाँफता, या साँस लेना शुरू नहीं करता, तो हवा देना बंद कर दें।				
9. कृत्रिम साँस देना बंद करने के बाद बैग और मास्क को साबुन और पानी से धोएँ और सुखाकर उसके डब्बे में रख दें।				

<u>प्रशिक्षणार्थियों हेतु अभ्यास</u> (1 घं. 30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. सभी आशाओंको 3–3 सदस्यों के समूहों में बाँटें।
2. एक आशा बैग और मास्क का प्रयोग करने का अभ्यास करे और दूसरी जाँच–सूची का प्रयोग करते हुए उसे देखती रहे।
3. प्रत्येक आशा से 40 बार प्रति मि. के हिसाब से साँस दिलाने का अभ्यास कराएँ। शेष सभी आशा 1मि. तक समय देखें।

4. प्रशिक्षक कमरे में घूमकर देखें, सभी की मदद करें और उनकी योग्यता की जाँच करें।
5. जब आशाओं को बैग और मास्क के प्रयोग का अभ्यास हो जाए तो उन्हें कृत्रिम साँस देने का पूरा अभ्यास कराएँ – झिल्लि फटने पर पानी का रंग देखना, यदि द्रव गाढ़ा तथा पीला या हरा हो तो शिशु का सिर दिखते ही पट्टी वाले कपडे से शिशु का मुँह अंदर से साफ करना, शिशु को पोंछने से लेकर, गले के स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग और बैग और मास्क के प्रयोग तक। जन्म के 60 से. के तुरंत बाद बैग और मास्क का प्रयोग शुरू कर दिया जाए।
6. प्रत्येक आशाको इसका पूरा अभ्यास कराएँ।
7. प्रशिक्षक कमरे में घूमकर देंखें कि आशा ने कहॉ तक सीखा है?

<u>प्रस्तुति एवं चर्चा</u> : कितनी देर कृत्रिम साँस दें ? कृत्रिम साँस किसे दें ? (1 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. बताएँ कि जैसे ही शिशु ज़ोर से रोने और अपने आप साँस लेने लगे, कृत्रिम साँस देना बंद कर देना चाहिए और अन्य प्रकार की देखभाल (शिशु को गर्म रखना, माँ के पास रखना और स्तनपान शुरू कराना) जारी रखना चाहिए।
2. यदि शिशु गर्भ में ही देर का मरा हुआ पैदा हो, तो उसे कृत्रिम साँस देने की आवश्यकता नहीं।
3. यदि शिशु को कृत्रिम साँस देने से कोई फर्क नहीं पड़ रहा, या वह हल्की साँस ले रहा हो, तो कृत्रिम साँस देंना जारी रखें। 2–2 मिनट बाद (या 80 साँसों के बाद) शिशु की हालत देखें। शिशुजन्म का समय लिखा हैं। उस समय से 1 मि. के अंदर ही कृत्रिम साँस देना शुरू कर दिया जाता है, अतः जन्म के 11 मि. पर कृत्रिम साँस देना बंद कर देना चाहिए।
4. यदि 10 मि. के बाद शिशु हाँफने लगे, तो उसे आगे 5 मि. तक और साँस दें। 15 मि. के बाद यदि शिशु अपने आप साँस न ले (हॉफना ही पर्याप्त नहीं) तो कृत्रिम साँस देना बंद कर दें।
5. यदि शिशु न रोए/न साँस ले (10 मि. की कृत्रिम साँस के बाद भी) तो शिशु मृत पैदा हुआ है और उसे पुनः जीवित नहीं किया जा सकता।
6. यदि प्रसव के बाद शिशु हाँफ रहा हो या उसने साँस ली हो लेकिन 10 मि. तक कृत्रिम साँस देने पर भी उसने स्वयं साँस नहीं ली हो (या 10 मिनट पर शिशु हॉफ रहा था पर 15 मिनट पर पर उसने स्वयं सॉस न ली हो) तो शिशु मर चुका है, यद्यपि वह जन्म के समय जीवित माना जायेगा।
7. दोनों ही स्थितियों (मृत शिशु जन्म या जीवित जन्म, जिन्हें पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता) के बारे में दाई, माँ और उसके परिवार को बता दें। किसी को दोष न दें। स्वयं को भी दोषी न मानें। माँ, दाई और आप – सभी ने जितना अच्छा संभव था किया। कुछ बातें किसी के वश में नहीं होती। प्रसव के बाद माँ के पास परामर्श तथा घर के दौरों के लिये अवश्य जाएँ।
8. आशाओंसे पूछें कि क्या प्रत्येक शिशु – चाहे वह समय से बहुत पूर्व जन्मा हो (28 हफ्ते / 6महिने 15 दिन से कम) को कृत्रिम साँस देना चाहिए? उनके उत्तर सुनें। बताएँ कि यह एक कठिन प्रश्न है। बताएँ कि वे क्या करेंगी। 28 हफ्ते (6महिने 15 दिन) से कम गर्भकाल में जन्में शिशु का जीवित रहना बहुत मुश्किल है, चाहे उसे कृत्रिम साँस दी जाए या नहीं, क्योंकि वह समय से बहुत पहले जन्मा होता है। जिन शिशुओं के शरीर में किसी प्रकार की विकृतियां हो, वे कृत्रिम साँस देने के बाद भी बच नहीं पायेंगे। आशा इस संबंध में माता–पिता को समझा दें।

सारांश : (20 मि.)

- किसी एक आशा से पूछें, कि यदि जन्मतेही किसी शिशु का दम घुट रहा हो, तो क्या करना चाहिए?
- दूसरी आशा से घटनाओं के क्रम का प्रदर्शन करने को कहें – झिल्लि फटने पर पानी का रंग देखना, यदि पानी गाढ़ा पीला या हरा हो तो शिशु का सिर दिखते ही पट्टी वाले कपड़े से शिशु का मुँह अंदर से साफ करना, जन्मतेही शिशु को पोंछना, गले के स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग, बैग और मास्क का प्रयोग आदि। अन्य सभी आशा जाँच–सूची का प्रयोग करते हुए निरीक्षण करें।
- चर्चा करें और सभी की शंकाओं का समाधान करें।
- पूछें कि बैग और मास्क की देखभाल कैसे करनी चाहिए।
- कुछ गलतियाँ हों, तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन : (10 मि.)

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बताना कि स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण के प्रयोग के बाद भी यदि शिशु साँस नहीं ले रहा, तो क्या करना चाहिए।	प्रश्नोत्तर प्रदर्शन	आशा व्दारा किये गये प्रदर्शन का जॉच सूची के आधारपर प्रशिक्षक व्दारा निरिक्षण
बैग और मास्क के सही प्रकार से प्रयोग का प्रदर्शन।	प्रत्येक आशा व्दारा जाँच–सूची के आधारपर बैग और मास्क के सही प्रयोग का प्रदर्शन	आशा व्दारा किये गये प्रदर्शन का जॉच सूची के आधारपर प्रशिक्षक व्दारा निरिक्षण
बताना कि कृत्रिम साँस कितनी देर तक दी जानी चाहिए।	प्रश्नोत्तर	–
बताना कि बैग और मास्क की देखभाल कैसे करें	प्रश्नोत्तर	–
जन्मतेही दम घुटे शिशु के उपचार की पूरी प्रक्रिया का प्रदर्शन	प्रत्येक आशा व्दारा जन्मतेही दम घुटे शिशु के उपचार की पूरी प्रक्रिया का प्रदर्शन	आशा व्दारा किये गये प्रदर्शन का जॉच सूची के आधारपर प्रशिक्षक व्दारा निरिक्षण

बैग एवं मास्क के प्रयोग के लिये जाँच–सूची				
1. शिशु को ठीक से लिटाएँ, पोंछे, कपडें में लपेटें और अच्छी तरह तह किया हुआ तौलिया कंधो के नीचे रखें ताकि ठुड्डी ऊपर उठे (गर्दन तनी हुई, सर पीछे)				
2. उसके मुँह और नाक के चारों ओर बैग से जुड़ा मास्क रखें। हवा बाहर न निकले ऐसी सील लग जाए।				
3. बैग को 40 बार प्रति मि. की दर से दबाएँ।				
4. ध्यान रहे कि प्रत्येक बार हवा देते समय शिशु की छाती ऊपर उठे।				
5. यदि छाती ऊपर न उठे तो : – सिर की स्थिति ठीक करें, और दोहराएँ – मास्क की स्थिति ठीक करें एवं देखें कि हवा बाहर न निकले। – बैग पर दबाव बढ़ाएँ जिससे अधिक हवा अंदर जाए। – यदि अधिक स्राव हो तो पुनः चूषण करें। – यदि ऐसा करने पर भी छाती ऊपर न उठे, तो बैग को मास्क से निकाल दें और शिशु के मुँह और नाक के चारों ओर मास्क रखें, फिर सीधे मास्क में अपने मुँह से फूँकें।				
6. 1 मि. तक हवा देने के बाद देखें कि शिशु ने अपने से रोया/साँस ली। यदि नहीं तो हवा देना जारी रखें।				
7. प्रत्येक दो मिनट अथवा 80 बार बैग दबाने के बाद रूकें और कुछ क्षण जाँचे कि शिशु रोया/साँस ली। यदि हाँ तो रूक जाएँ, यदि नहीं तो जारी रखें।				
8. यदि 10 मि. तक साँस देने के बाद भी शिशु नही हाँफता, या साँस लेना शुरू नहीं करता, तो हवा देना बंद कर दें।				
9. कृत्रिम साँस देना बंद करने के बाद बैग और मास्क को साबुन और पानी से धोएँ और सुखाकर उसके डब्बे में रख दें।				

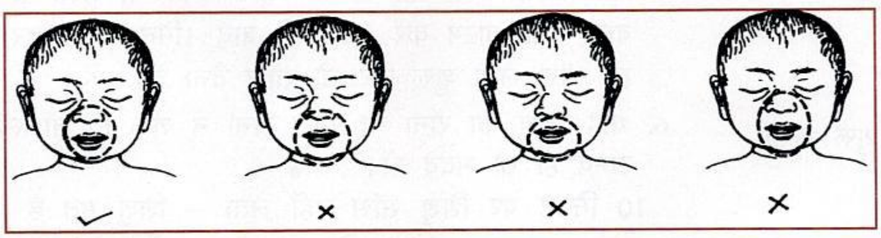

बैग और मास्क की सही स्थिति

जन्मतेही दम घुटना : कृती चार्ट

पूरी तरह तैयार रहें। प्रसवपीड़ा के दौरान दिखाई देने वाले उन लक्षणों की जानकारी रखें, जो दम घुटा हुआ बच्चा पैदा होने की संभावना का संकेत देते हैं।

प्रसवपीड़ा के दौरान : पानी की थैली के फटनेपर 'पानी' के रंग के बारे में माँ से प्राप्त जानकारी

'पानी' गाढ़ा हरा या पीला है

जब शिशु का सिर दिखने लगे तब
शिशु का मुँह अंदर से पट्टी वाले कपड़े से साफ करें

'पानी' सफेद पारदर्शी है

जन्म के तुरंत बाद :

1. जन्म का समय नोट करें और समय की गिनती आरंभ करें
2. शिशु को शीघ्रता से पोंछे और कपड़े में लपेटें

30 सेकिंड पर

शिशु ठीक से रोया

दम घुटा नहीं है

3. नाल बाँधे और काटें
4. शिशु को सूखा कपड़ा ओढ़ाएँ
5. शिशु को माँ के पास लिटाएँ
6. स्तनपान शुरू कराएँ

शिशु रोया नही सॉस नही ली या हल्की सॉस ली

दम घुटा हुआ हैं

3. शिशु को ठीक तरह से रखें। सिर थोड़ा पीछे की ओर।
4. कपड़ा तह करके कंधों के नीचे रख दें। ठोडी उपर उठी हो और सिर थोडा पीछे की ओर
5. तुरंत बिल्टा पम्प से मुँह साफ कराएँ। यदि शिशु साँस नही लेता, तो गला साफ करें। यदी फिर भी शिशु साँस नही लेता तो बिल्टा पम्प से नाक साफ करें

   यदि शिशु रोता नहीं तो बैग और मास्क से तुरंत साँस (1 मिनट में 40 बार) देना आरंभ करें (जन्म के बाद 1मिनट के अंदर)। यदि शिशु रोना या सॉस लेना शुरू करें तो सॉस देना बंद करें।
6. यदि शिशु का रोना या सॉस लेना न शुरू हो तो सॉस देना जारी रखें संभव हो तो मदद लें।

10 मिनट पर शिशु सॉस नहीं लेता – शिशु मृत है

शिशु हॉफ रहा है – सॉस देना 5 मिनट तक जारी रखें

15 मिनट पर शिशु सॉस नहीं लेता – शिशु मृत है

मोड्यूल 14 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा बैग और मास्क से उपचार

सत्र 4 : मूल्यांकन : जन्मतेही दम घुटने का निदान तथा उपचार

दिवस : 2

समयावधि : 1 घं. 45 मि.

प्रयोजन

आशाओंको दम घुटने की पहचान तथा उपचार की पूरी प्रक्रिया के अभ्यास का समय देना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. दम घुटे शिशुजन्म का संकेत देने वाली अलग अलग स्थितियाँ पहचानना ।
2. दम घुटे शिशुओं को पहचानना और उनकी ठीक प्रकार से देखभाल करना।
3. दम घुटे शिशुओं के उपचार की पूरी प्रक्रिया का प्रदर्शन करना।

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1: मूल्यांकन : जन्मतेही दम घुटना
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: जन्मतेही दम घुटनाः मूल्यांकन के उत्तर
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2: प्रात्यक्षिक मूल्यांकन अंक तालिका (जिसमे निम्न जॉच सूचियॉं है – दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम, बिल्टा पंप का प्रयोग तथा बैग और मास्क का प्रयोग)
- गुड़िया
- बिल्टा पंम्प (प्रात्यक्षिक मूल्यांकन के लिये)
- बैग और मास्क/ट्यूब और मास्क (प्रात्यक्षिक मूल्यांकन के लिये)

तैयारी

- अभ्यासपत्र 1 और प्रशिक्षक प्रपत्र 2 की प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार प्रतियाँ बनाएँ।
- 2 गुडियाएँ (पुनर्जिवन प्रक्रिया के लिये विशेष गुड़िया अथवा ऐसी गुड़िया जिसका मुँह और नासाछिद्र खुले हो) तथा प्रात्यक्षिक मूल्यांकन हेतु पर्याप्त बिल्टा पम्प तथा बैग और मास्क तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन</u> (1 घं. 30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. अभ्यासपत्र 1 : मूल्यांकन प्रश्न पत्र बाँटें।
2. प्रत्येक आशा स्वयं इसे हल करे।
3. आशाओं से कहे कि वे हल किये प्रश्नपत्रों की अदलाबदली करें।
4. प्रत्येक प्रश्न पर चर्चा करें, शंकाओं का समाधान करें।
5. प्रशिक्षक प्रत्येक आशा की दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम, बिल्टा पंप का प्रयोग तथा बैग और मास्क के प्रयोग की योग्यता की जाँच सूची के आधारपर जॉच करें (प्रशिक्षक प्रपत्र 2)।

सारांश : (15 मि.)

- मुख्य बातों को संक्षिप्त में बताएँ और जिन बातों पर अधिक ध्यान देने की या दोहराने की आवश्यकता है, उनके लिए मूल्यांकन के नतीजों के बारे में बताएँ।
- आशाओंकी उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
दम घुटे शिशुजन्म का संकेत देने वाली अलग अलग स्थितियाँ पहचानना।	प्रश्नपत्र	प्रत्येक आशा व्दारा हल किया गया प्रश्नपत्र
दम घुटे शिशुओं को पहचानना और उनकी ठीक प्रकार से देखभाल करना।	प्रश्नपत्र	प्रत्येक आशा व्दारा हल किया गया प्रश्नपत्र
दम घुटे शिशुओं के उपचार की पूरी प्रक्रिया का प्रदर्शन करना।	प्रत्येक आशा दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम, बिल्टा पंप का प्रयोग तथा बैग और मास्क के प्रयोग का सही प्रदर्शन करें	प्रत्येक आशा व्दारा किये गये प्रदर्शन का जॉच सूची के आधारपर प्रशिक्षक व्दारा निरिक्षण

मूल्यांकन : जन्मतेही दम घुटना

यह मूल्यांकन दो भागों में किया जाएगा :

1. लिखित परीक्षा 36 अंक – उत्तीर्ण होने के लिए 18 अंक

लिखित परीक्षा (उत्तिर्णांक 50 प्रतिशत)

1. प्रसव पीड़ा के दौरान दिखाई देने वाले ऐसे कोई 4 लक्षण बताएँ जिनसे दम घुटे शिशु के जन्म का संकेत मिलता हो ? (प्रत्येक उत्तर के लिए 1 अंक × 4 = 4 अंक)

   1. ______________________________

   2. ______________________________

   3. ______________________________

   4. ______________________________

   अन्य सही उत्तर : नाल का पहले निकलना या शिशु के गर्दन के चारों ओर नाल लिपटी होना, ब्रीच (या अन्य असामान्य) प्रसव होना

2. सरोज ने एक शिशु को सुबह 7:15 पर जन्म दिया। शिशु न रोया, न उसने साँस ली। (प्रत्येक उत्तर के लिये 2 अंक × 6 = 12 अंक)

   आप सबसे पहले कौन से 2 कदम उठाएँगी।

   1. ______________________________

   2. ______________________________

   शिशु तब भी रोया नहीं, न उसने साँस ली

   3. ऐसे में आप क्या करेंगी ? ______________________________

   4. कितनी देर तक ? ______________________________

   ____

   5. अब क्या कदम उठाएँगी ? ______________________________

   6. प्रसव फॉर्म में आप शिशु के बारे में क्या लिखेंगी ? ______________________________

आशा का नाम ______________________	तारीख ______________
प्रशिक्षक का नाम ______________________	कुल अंक ______________
ब्लॉक ______________________	

3. इन्दिरा ने 24 घंटे तक चली लंबी प्रसव पीड़ा के बाद दोपहर 12:10 बजे एक शिशु को जन्म दिया। योनि से निकले द्रव का रंग हरा सा था और शिशु 7 माह 20 दिन के गर्भकाल में जन्मा। (प्रत्येक उत्तर के लिये 2 अंक × 10 = 20 अंक)

1. क्या शिशु में दम घुटने के लक्षण हैं ? __________

यदि हाँ, तो कौन से ?

2. ____________________

3. ____________________

4. ____________________

शिशु धीमे–धीमे रो रहा है पर साँस ठीक से नहीं ले रहा।

आप क्या करेंगी ?

5. ____________________

6. ____________________

7. ____________________

एक मिनट के बाद शिशु रोने और ठीक से साँस लेने लगता है। अब आप क्या करेंगी ?

8. ____________________

9. ____________________

10. ____________________

मूल्यांकन : दम घुटना के उत्तर

यह मूल्यांकन दो भागों में किया जाएगा :

1. लिखित परीक्षा 36 अंक – उत्तीर्ण होने के लिए 18 अंक

लिखित परीक्षा (उत्तिर्णांक 50 प्रतिशत)

लिखित परीक्षा

1. प्रसव पीड़ा के दौरान दिखाई देने वाले ऐसे कोई 4 लक्षण बताएँ जिनसे दम घुटे शिशु के जन्म का संकेत मिलता हो ? (प्रत्येक उत्तर के लिए 1 अंक × 4 = 4 अंक)

   1. समय से पूर्व जन्म

   2. लम्बी प्रसवपीड़ा या प्रसव के समय अन्य परेशानी

   3. हरे रंग के द्रव्य का योनि से निकलना

   4. योनि से कम द्रव्य निकलना (शुक्र प्रसव)

   अन्य सही उत्तर : नाल का पहले निकलना या शिशु के गर्दन के चारों ओर नाल लिपटी होना, ब्रीच (या अन्य असामान्य) प्रसव होना

2. सरोज ने एक शिशु को सुबह 7:15 पर जन्म दिया। शिशु न रोया, न उसने साँस ली। (प्रत्येक उत्तर के लिये 2 अंक × 6 = 12 अंक)

   आप सबसे पहले कौन से 2 कदम उठाएँगी।

   1. शिशु को पोंछे और कपड़े से ढ़ंके

   2. बिल्टा पंप का प्रयोग करें।

   शिशु तब भी रोया नहीं, न उसने साँस ली

   3. **ऐसे में आप क्या करेंगी ?** बैग और मास्क की सहायता से कृत्रिम साँस दें।

   4. **कितनी देर तक ?** जब तक कि शिशु स्वयं साँस न लेने लगे या 10 मि. तक 7:25 बजे तक शिशु न रोया, न उसने साँस ली।

   5. **अब क्या कदम उठाएँगी ?** कृत्रिम साँस देना बंद कर दें।

   6. **प्रसव फॉर्म में आप शिशु के बारे में क्या लिखेंगी ?** मृत शिशु जन्म

3. इन्दिरा ने 24 घंटे तक चली लंबी प्रसव पीड़ा के बाद दोपहर 12:10 बजे एक शिशु को जन्म दिया। योनि से निकले द्रव का रंग हरा सा था और शिशु 7 माह 20 दिन के गर्भकाल में जन्मा। (प्रत्येक उत्तर के लिये 2 अंक × 10 = 20 अंक)

1. **क्या शिशु में दम घुटने के लक्षण हैं ?** हाँ

यदि हाँ, तो कौन से ?

2. शिशु का समय से पूर्व जन्म
3. 24 घं. से अधिक चली प्रसवपीड़ा
4. हरे रंग का द्रव योनि से निकलना

शिशु धीमे–धीमे रो रहा है पर साँस ठीक से नहीं ले रहा।

आप क्या करेंगी ?

5. शिशु को पोंछे
6. उसे गर्म रखने के लिये कपड़ा ओढ़ाएँ
7. स्राव बाहर निकालने के लिये चूषण पम्प का प्रयोग

एक मिनट के बाद शिशु रोने और ठीक से साँस लेने लगता है। अब आप क्या करेंगी ?

8. कृत्रिम साँस देना बंद कर दें
9. माँ के पास लिटाएँ
10. स्तनपान शुरू कराएँ।

प्रात्यक्षिक मूल्यांकन अंकतालिका

(प्रत्येक कदम में 3 अंक × 22 बातें = 66 अंक, उत्तिर्णांक 40 (60 प्रतिशत))

जन्मतेही दम घुटने के उपचार में शुरूआती कदमः

1 से 3 के पैमाने के अनुसार प्राप्त अंक (अधिकतम अंक 3)

आशा का नाम					
1. झिल्लि फटने पर पानी का रंग कैसा था यह देखें या माँ से पूछें।					
2. यदि पानी गाढ़ा पीला या हरा हो तो जैसे ही शिशु का सिर दिखने लगे (पूरा शिशु बाहर आने से पहले) वैसेही पट्टी वाले कपड़े से शिशु का मुँह अंदर से साफ करें।					
3. शिशु पैदा होते ही जन्म का समय नोट करें और समय की गिनती आरंभ करें।					
4. जन्मतेही शिशु रोता नहीं, साँस नहीं लेता, धीमे साँस लेता है या हाँफता है – जन्मतेही दम घुटने के बारे में निर्णय करें।					
5. शिशु को पोंछें					
6. शिशु को कपड़े से ढँके।					

चूषण पंप के प्रयोग के लिये जाँच–सूची

1 से 3 के पैमाने के अनुसार प्राप्त अंक (अधिकतम अंक 3)

आशा का नाम					
1. शिशु को सही स्थिति में रखें, पोंछे, कपड़े में लपेटें और तौलिया तह करके कंधों के नीचे रख दें। शिशु का सिर थोड़ा पीछे और गर्दन तनी हुई।					
2. विसंक्रमित किये हुये उपकरण को खोल से बाहर निकालें।					
3. एक मुँह वाली नली का अगला हिस्सा अपने मुँह में रखें। दूसरी नली को उसके खुले भाग से 1 हाथ छोड़कर दूसरे हाथ से पकड़ें।					
4. दूसरी नली का खुला भाग आधा अंगुल शिशु के मुँह में डालें और मुँह के स्रावों को निकालने के लिए कुछ देर तक मुँह के अंदर धुमाते हुए चूषण करें। यदि शिशु रोने लगे और ठीक से साँस लेने लगे तो रुक जाएँ। यदि अभी भी न रोए/साँस न ले, तो अगला कदम उठाएँ।					
5. लगभग एक अंगुल नली को शिशु के गले में डालें और धीरे से गले के स्रावों का चूषण करें। यदि शिशु रोने/साँस लेने लगे, तो, रूक जाएँ अन्यथा अगला कदम उठाएँ।					
6. शिशु के गले और मुँह से नली निकाल लें, उसका खुला सिरा उसके एक नासिका छिद्र में डालें और धीरे से चूषण करें। इसी तरह दूसरी तरफ की नासिका छिद्र से थी निकालें।					
7. जब सारा स्त्राव निकाल चुकें तो इस उपकरण को फेंक दें। (इसे दोबारा प्रयोग नहीं करना चाहिए)					

बैग और मास्क के प्रयोग के लिये जाँच–सूची

1 से 3 के पैमाने के अनुसार प्राप्त अंक (अधिकतम अंक 3)

आशा का नाम					
1. शिशु को ठीक से लिटाएँ, पोंछे, कपडें में लपेटें और अच्छी तह किया हुआ तौलिया कंधो के नीचे रखें, ताकि ठुड्डी ऊपर उठे (गर्दन तनी हुई, सर पीछे)					
2. उसके मुँह और नाक के चारों ओर बैग से जुड़ा मास्क रखें हवा बाहर न निकले, ऐसी सील लग जाए।					
3. बैग को 40 बार प्रति मि. की दर से दबाएँ।					
4. ध्यान रहे कि प्रत्येक बार हवा देते समय शिशु की छाती ऊपर उठे।					
5. यदि छाती ऊपर न उठे तो – सिर की स्थिति ठीक करें, और दोहराएँ – मास्क की स्थिति ठीक करें एवं देखें कि हवा बाहर न निकले। – ज्यादा हवा अंदर जाए इसलिए बैग पर दबाव बढ़ाएँ। – यदि अधिक स्राव हो तो पुनः चूाण करें। – यदि इतना करने पर भी छाती ऊपर न उठे तो बैग को मास्क से निकाल दें और शिशु के मुँह और नाक के चारों ओर मास्क रखें और सीधे मास्क में अपने मुँह से फूँके।					
6. 1 मि. तक हवा देने के बाद देखें कि शिशु अपनेसे रोया/साँस ली। यदि नहीं, तो हवा देना जारी रखें।					
7. प्रत्येक दो मिनट अथवा 80 बार बैग दबाने के बाद रूकें और कुछ क्षण जाँचे कि शिशु रोया/साँस ली। यदि हाँ तो रूक जाएँ, यदि नहीं तो जारी रखें।					
8. यदि 20 मि. तक साँस देने के बाद भी शिशु नही हाँफता या साँस लेना शुरू नहीं करता, तो हवा देना बंद कर दें।					
9. कृत्रिम साँस देना बंद करने के बाद बैग और मास्क को साबुन और पानी से धोएँ और सुखाकर उसे उसके डब्बे में रख दें।					

मोड्यूल 15 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा जेन्टामायसिन की सुई से उपचार

सत्र 1 : नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान तथा उपचार की दोहराई

दिवस : 2
समयावधि : 2 घं. 35 मि.

प्रयोजन

आशाओं ने पिछली प्रशिक्षण कार्यशाला में सेप्सिस का निदान तथा कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करना सीखा है। उन्होंने उस निदान तथा उपचार को दोहराकर उसकी परीक्षा भी उत्तीर्ण की है। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में वे कोट्रिमॉक्सेज़ोल तथा जेंटामायसीन की सुई से सेप्सिस का उपचार करना सीखेंगी। इस सत्र में वे नवजात शिशु के सेप्सिस को कोट्रिमॉक्सेज़ोल के उपचार तक दोहरायेंगी।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. बताना कि सेप्सिस (जन्तुदोष) क्या है, यह कैसे होता है और इससे क्या खतरे हैं।
2. नवजात शिशु में सेप्सिस का निदान करना।
3. बताना कि सेप्सिस होने से कैसे रोका जा सकता है।
4. सेप्सिस का कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करना

सामग्री

- अध्ययनपत्र : नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) संबंधी जानकारी (अध्ययनपत्र में दी है)
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: कक्षा में केस प्रस्तुति
- अभ्यासपत्र 1: केस अध्ययन
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : केस अध्ययन के उत्तर

तैयारी

- आशाओं को बताएँ कि माँ तथा नवजात शिशु का रिकार्ड तथा अध्ययनपत्र वे अपने पास रखें।
- आशाओं की संख्या के अनुसार अभ्यासपत्र 1 की प्रतियाँ तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवँ चर्चा</u> (1 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. निम्न कहानी सुनाएँ :
   जानकी ने शनिवार को एक पुत्री को जन्म दिया। वह जन्म के समय स्वस्थ थी । तीसरे दिन उसकी टुंडी में मवाद हो गया। सातवें दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया।
2. आशाओंसे पूछें कि शिशु को कौन सी बीमारी है ? उनके उत्तर सुनें और सही उत्तरों पर उनकी प्रशंसा करें। यदि उन्हें नहीं मालूम हो तो बताएँ, कि उसे सेप्सिस (जन्तुदोष) हुआ है जो एक गंभीर प्रकार का संक्रमण है। परिभाषा नीचे दिए विषय–वस्तु बाक्स में देखें

विषय–वस्तु

परिभाषा : सेप्सिस (जन्तुदोष) एक प्रकार का संक्रमण है।

नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) फेफड़े, मस्तिष्क अथवा खून का गंभीर संक्रमण हैं।

बीमारी कितनी गंभीर होती है ?

भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्रों में 10 में से 1 नवजात शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) हो जाता है। जन्म के बाद पहले महीने में सेप्सिस (जन्तुदोष) होना बहुत खतरनाक है और इससे शिशु की मौत भी हो सकती है। इलाज के अभाव में सेप्सिस (जन्तुदोष) से पीड़ित अधिकांश शिशु मर जाते हैं। इलाज के बाद अधिकांश जीवित रहते हैं और उनका विकास/वृध्दि सामान्य रूप से होते है।

3. आशाओंसे पूछें कि क्या उन्हें पिछले दो महीनों में किसी ऐसे शिशु के बारे में अनुभव है, जिसे जन्म के पहले महीने में संक्रमण हुआ हो। शिशु का क्या हुआ ?
4. बताएँ कि सेप्सिस (जन्तुदोष) बहुत गंभीर बीमारी है। इलाज के अभाव में इससे पीड़ित अधिकांश शिशुओं की मौत हो जाती है। परन्तु इलाज के बाद अधिकांश जीवित रहते हैं।
5. आशाओंसे पूछें कि नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) के मुख्य कारण क्या हो सकते हैं ? उनके उत्तर सुनें और बोर्ड अथवा कागज पर लिखें।
6. आशाओं से कहें कि वें नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) संबंधी जानकारी वाली शीट अध्ययनपत्र में देखें। कारणों के बारे में चर्चा करें और आशाओं द्वारा बताए गए कारणों से तुलना करें। जो उन्होंने न बताया हो, उसे शामिल करें और त्रुटीपूर्ण बातें निकाल दें।
7. आशाओंको बताएँ कि शिशुओं में संक्रमण होते ही उसका पता लगाना और उसे होने से रोकना उनके रोज़मर्रा के काम में शामिल है। जिन कारणों से शिशुओं को सेप्सिस होने का खतरा होता है वह हैं: माँ में संक्रमण होने, समय से पूर्व जन्म, कम वज़न के शिशु का जन्म, केवल स्तनपान न कराना और गन्दे हाथों अथवा कपड़ों के प्रयोग। पहले से सावधानी बरतने से शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) होने को रोका जा सकता है।
8. बताएँ कि नवजात शिशुओं में संक्रमण शरीर के अलग–अलग हिस्सों में हो सकता है, जैसे नाल में संक्रमण, या फेफड़ों में (निमोनिया) या फिर खून में। यह संक्रमण जल्दी ही गंभीर रूप धारण कर सकते हैं। नवजात शिशु – खास–तौर पर समय से पूर्व जन्मे और कम वज़न वाले – संक्रमण का मुकाबला प्रभावकारी ढंग से नहीं कर पाते। उनके शरीर में शीघ्र ही जीवविष (टॉक्सिन) फैल जाते हैं और उनका रोना और दूध पीना बंद हो सकता है और वे ठंडा पड़ सकते हैं। ऐसे में यह बताना मुश्किल होता है कि उन्हें संक्रमण शरीर के किस भाग में शुरू हुआ और साफ–साफ लक्षण दिखाई न देने के कारण, सही निदान नहीं किया जा सकता। आशाओंको सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान में सहायता देने के लिए हमने विशिष्ट मापदण्डों को प्रयोग में लाते हुए एक सरल विधि विकसित की है (अध्ययनपत्र देखें)
9. आशाओं से कहें कि वे घरों का दौरा फॉर्म का सेप्सिस निदान भाग देंखें। चर्चा करें।
10. बताएँ कि सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान के लिए एक ही समय पर (उसी दिन) **दो लक्षण** दिखाई देने चाहिएँ। क्यों ? क्योंकि एक लक्षण तो किसी भी शिशु में हो सकता हैं, पर 2 लक्षणों का होना निश्चित रूप से बताता है कि उसे सेप्सिस (जन्तुदोष) ही है।

11. यह भी ध्यान में रखें कि पहले 3 लक्षण – हाथ पैर लुंज पुंज, कम या बिल्कुल स्तनपान नहीं करना, धीमे से या बिल्कुल भी न रोना, यदि ये जन्म के समय भी दिखाई दिए हों, तो मापदण्डों में शामिल नहीं होंगे । इन लक्षणों को तभी सेप्सिस (जन्तुदोष) के लक्षण माना जाएगा जब शिशु जन्म के समय तो ठीक–ठाक रहा हो, पर बाद में उसमें ये लक्षण विकसित होना शुरू हुए हों (पहले स्तनपान ठीक से कर रहा हो और बाद में स्तनपान ठीक से नहीं या बिल्कुल नहीं कर पा रहा हो, पहले हाथ पैरों में अच्छी ताकद हो जो बाद में हाथ पैर लुंज पुंज हो गये हो, शुरू में रोना सामान्य था जो बाद में धीमे से रोया या बिल्कुल नहीं रोया हो)

12. उदाहरण दें :

    1. बिन्दी जन्म के समय धीमे से रोई और उसकी साँस भी धीमी चल रही थी। ऐसी हालत 4 दिन तक रही। तीसरे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ने लगा। क्या उसे सेप्सिस (जन्तुदोष) था ? (*नहीं*) क्यों? (*तीसरे दिन पाया जाने वाला लक्षण केवल शरीर का ठंडा पड़ना था। जन्म के समय ही वह धीमे रोई/हल्की साँस ली, अतः इन्हें सेप्सिस (जन्तुदोष) के लक्षणों में शामिल नहीं किया जा सकता।* चौथे दिन उसका पेट फूलना शुरू हुआ और वह छूने में ठंडी भी लग रही थी ? ऐसे में आप क्या करेंगी ? (*सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान क्योंकि चौथे दिन एक साथ 2 लक्षण दिखाई दिए*)।
    2. नीता का जन्म के समय दम घुटा हुआ था। वह न रोई, न उसकी साँस चल रही थी। कृत्रिम साँस देने के बाद वह चैतन्य हो गई और उसका रोना/साँस लेना सामान्य हो गया। छठे दिन वह ठंडी पड़ने लगी और धीमे से रो पा रही थी। आप क्या निदान करेंगी (*सेप्सिस (जन्तुदोष) क्योंकि उसमें दो लक्षण "ठंडा पड़ना" और "धीमे से रोना" एक साथ दिखाई दिए*)

    नोट : यदि शिशु में सेप्सिस का एक लक्षण हो तो अगले तीन दिन आशा रोज शिशु के घर जाएँ और सेप्सिस के अन्य लक्षणों के लिये सतर्क रहें। यदि शिशु को स्तनपान की समस्या या ठंडे पड़ने की समस्या हो तो उपचार मार्गदर्शिका के अनुसार उपचार करें। टुंडी में मवाद हो तो जी. वी. पेंट लगाएँ। यदि सेप्सिस के अन्य लक्षण के साथ बुखार हो तो पैरासिटामॉल देकर 1 घंटा इन्तजार करें। यदि बुखार कम न हो और सेप्सिस का अन्य लक्षण बना रहें तो सेप्सिस का उपचार करें।

13. आशाओंसे पूछें कि क्या सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम की जा सकती है ? वे 'हाँ' में उत्तर देंगी। पूछें कि कैसे रोकथाम की जा सकती है? उनके उत्तर सुनें (अध्ययनपत्र देंखें)

    ✓ यदि वे बतायें कि 'स्वच्छतापूर्वक काम करने से' तो उनसे विस्तार से बताने को कहें (*जैसे – शिशुजन्म से पूर्व दाईयाँ हाथ धोएँ और अपने हाथ माँ के अन्दरूनी हिस्सों में न डालें, साफ ब्लेड का प्रयोग करें, आशा और अन्य सभी लोग शिशु को छूने/गोद लेने से पहले हाथ धोएँ, शौच के बाद तथा शिशु की टट्टी धोने के बाद माँ अपने हाथ धोएँ, बीमार लोग जच्चा/बच्चा के कमरे में न जाएँ आदि*)

    ✓ पूछें कि शिशु को गर्म कैसे रखेंगी ? (*प्रसव के तुरंत बाद शिशु को पोंछे और सूखे कपड़े में लपेटें; माँ के पास लिटाएँ और स्तनपान शुरू कराएँ; शिशु को कपड़े पहनाएँ, यदि शिशु कम वज़न का पैदा हुआ है, तो गर्म थैली और/अथवा मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि का प्रयोग करें*)।

    ✓ पूछें कि स्तनपान कराने की अच्छी विधियाँ कौन सी हैं ? (*स्तनपान जन्म के तुरंत बाद शुरू कराना शिशु के मॉगने पर पिलाना (पहले कुछ हफ्तों में हर 2–3 घंटे बाद), केवल स्तनपान कराना (अन्य कोई भी तरल पदार्थ/आहार न देना,)*।

14. बतायें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम, और माँ/बच्चे के पास जाने पर शिशु के स्वास्थ्य की अच्छी देखभाल करने में आशाओं की अहम् भूमिका है। उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि शिशुजन्म स्वच्छतापूर्वक हो, शिशु को गर्म रखा जाए विशेषकर सर्दियों में और स्तनपान ठीक से कराया जाए।
   - ✓ आशा प्रसव के तुरंत बाद स्तनपान शुरू करवा दें।
   - ✓ प्रसव के बाद के अपने दौरों में आशा ध्यान रखें कि शिशु को स्तनपान ठीक से कराया जा रहा हो, वह माँ को स्तनपान कराते हुए देखें और पूछें कि रात–दिन में कितनी बार उसने स्तनपान कराया। वह शिशु का वज़न भी करें।
   - ✓ इसी तरह शिशु को गर्म रखने पर भी ध्यान दें। यदि तापमान सामान्य से कम है, तो जरूरी है कि माँ शिशु को गर्म रखें; ठीक से कपड़े पहनाएँ और ओढ़ाएँ।
   - ✓ आशा कई बार हाथ धोने की आदत पर जोर दें।

घर का हर दौरा शिशु के स्वास्थ्य की देखभाल और सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम का एक अवसर प्रदान करता है। आपका व्यवहार ही सर्वोत्तम शिक्षक है।

प्रस्तुति एवँ चर्चा (15 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से पूछें कि सेप्सिस के उपचार के कौनसे चार भाग है? उनके उत्तरों में निम्न होना चाहिये।
   - शिशु की बीमारी के बारे में माता–पिता को बताना और शिशु को अस्पताल ले जाने की सलाह देना। यदि वे उसे अस्पताल ले जाना नहीं चाहते, तो शिशु की घर पर ही देखभाल की स्वीकृति लेना।
   - उपचार करना (दवा की सही खुराक उतने दिनों तक देना जितना कि आवश्यक हो।)
   - माता–पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में सलाह देना और दिन में दो बार उसे घर पर देखने जाना। देखना कि उसकी ठीक–ठाक देखभाल की जा रही है।
   - आवश्यक फॉर्म भरना और लेखा–जोखा रखना।
2. बतायें कि कोट्रिमॉक्सेजोल द्वारा इलाज कितने दिन चलेगा यह गर्भकाल के आधार पर निश्चित किया जाता है। नवजात शिशुओं के लिए खुराक है – 1/4 चम्मच कोट्रिमॉक्सेजोल दिन में दो बार।
   - समय से पूर्व जन्मे शिशुओं को दवा 10 दिन तक दी जानी चाहिए।
   - ठीक समय पर जन्मे शिशुओं को दवा 7 दिन तक दी जानी चाहिए।

   माता–पिता द्वारा लिखित स्वीकृति दिए जाने के तुरंत बाद पहली खुराक दे दें। कोट्रिमॉक्सेजोल की दवा आशा द्वारा (या माँ द्वारा ठीक तरह समझाकर) सुबह और शाम खिलानी है। बतायें कि आशा दिन में दो बार शिशु के घर पर जाकर तब तक देखभाल करे जब तक कि इलाज पूरा न हो जाए, अर्थात ठीक समय पर जन्मे शिशु के लिए 7 दिन तक और समय से पूर्व जन्मे शिशु के लिए 10 दिन तक।
3. आशाओं से घरेलू देखभाल के बारे में पूछें। उनके उत्तर सुनें। बतायें कि सेप्सिस वाले शिशुओं को अधिक देखभाल की जरूरत होती है। सुनिश्चित करें कि माँ–
   - शिशु को गर्म रखें।
   - थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान करायें (2–2 धंटे बाद)
   - सलाह नुसार दवा दें
   - शिशु को छूने से पहले हाथ धोएँ

- यदि हालत बिगड़ने लगे, तो तुरंत आशा को बुलाएँ
- अन्य संक्रमणों की देखभाल करें – जैसे नाभि (टुंडी), त्वचा, आँखें आदि।

बड़े समूह में केस प्रस्तुति (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षक निम्नलिखित केस सभी के सामने प्रस्तुत करें (प्रशिक्षक प्रपत्र 1 देखें) पहला भाग पढ़ें और प्रश्न पूछें। उत्तर देने का समय दें। उत्तरों पर चर्चा करें। यदि आशाओं ने गलत उत्तर दिए हों, तो सभी से राय लें। केस के दूसरे भाग को पढ़ें।
2. अंत में केस की और आशाओं द्वारा किए गए कार्यों की समीक्षा करें।
3. किसी के कोई प्रश्न/शंकाएं हों, तो समाधान करें।

प्रशिक्षणार्थियों हेतु अभ्यास – केस अध्ययन (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. अभ्यासपत्र 1: केस अध्ययन बाँटें।
2. सभी आशाओंको 3–4 सदस्यों के छोटे समूहों में बाँटें। प्रत्येक समूह के सदस्य मिलकर केस का अभ्यास और प्रश्नों पर चर्चा करें। (25 मि.)
3. पूरे समूह के साथ मिलकर केस अध्ययनों पर चर्चा करें (20 मि.)
4. प्रश्नों का समाधान करें। ध्यान रहें कि सारी समस्याओं का समाधान हो।

सारांश : (10 मि.)

- किसी एक आशासे सेप्सिस (जन्तुदोष) की परिभाषा बताने को कहें और पूछें कि इसका निदान और इलाज क्यों आवश्यक है *(सेप्सिस (जन्तुदोष) एक प्रकार का संक्रमण है। हमारे देश के गाँवों में नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) होना आम बात है और यदि इसका शीघ्र ही इलाज न किया जाए तो शिशु की मौत भी हो सकती है।)*
- आशाओंसे सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान के लिए सात (7) लक्षण बताने को कहें।
- पूछें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान कैसे किया जाता है? (नवजात शिशु में एक साथ 2 लक्षणों का पाया जाना)
- पूछें कि यदि सेप्सिस का एक लक्षण मौजूद हो तो वे क्या करती है? (अगले तीन दिन तक रोज शिशु के घर का दौरा करें। यदि शिशु को स्तनपान संबंधी समस्या, ठंडे पड़ने की समस्या या बुखार हो तो जैसा आपने सीखा है उस प्रकार से शिशु का उपचार करें।)
- सभी आशाओंसे पूछें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) की रोकथाम कैसे की जा सकती है? (स्वच्छ प्रसव, हाथ धोने, स्तनपान कराने, शिशु को गर्म रखने, स्वच्छ कपड़ों के प्रयोग, और बीमार लोगों को दूर रखना)।
- कुछ गलतियाँ हो तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओंकी उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बताना कि सेप्सिस (जन्तुदोष) क्या है, यह कैसे होता है और इससे क्या खतरे हैं।	प्रश्न–उत्तर	–
नवजात शिशु में सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान करना	केस अध्ययन	आशा व्दारा केस अध्ययन के उत्तर
बताना कि सेप्सिस (जन्तुदोष) होने से कैसे रोका जा सकता है	चर्चा/केस अध्ययन	आशा व्दारा केस अध्ययन के उत्तर
सेप्सिस का कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करना	प्रश्नोत्तर	–

कक्षा में केस प्रस्तुति

1. फातिमा ने 18 दिसम्बर को सुबह 9 बजकर 30 मिनट ओर 40 सेकंड पर एक लड़की को जन्म दिया। फातिमा का गर्भकाल उस समय 9 महीने 2 दिन था। शिशु जन्म के समय ज़ोर से रोया और 30 से. पर ठीक से साँस ले रहा था। उसका वज़न 2 कि.ग्रा. 600 ग्रा. था। आशा ने प्रसव के तुरंत बाद उसे माँ के स्तनों से लगाया और उसने ठीक से दूध पिया।

   क्या शिशु अधिक खतरे वाला है ? *नहीं; वह समय पूरा होने पर जन्मा है, उसका वज़न ठीक है, वह ठीक से रोया, साँस ठीक से चल रही थी और ठीक प्रकार से स्तनपान कर रहा था।*

   पन्द्रहवें दिन आशा ने घर का नियमित दौरा किया। आशा ने शिशुका तापमान लिया जो 100.8° फै. (38.2° सें.) था। जाँच करने पर मालूम हुआ कि शिशु की टुंडी पर मवाद था।

   आशा ने शिशु का पैरासिटामॉल से उपचार किया और 1 घंटा इन्तजार किया। शिशु का बुखार कम नहीं हुआ।

   क्या शिशु को सेप्सिस हो गया है ? ***हाँ***

   यदि हाँ, तो उसमें क्या लक्षण दिखाई दिए : ***बुखार और टुंडी पर मवाद***

   यदि नहीं, तो क्यों : ____________________

2. अंजुम ने एक लड़के को जन्म दिया। उसका वज़न 2.2 कि.ग्रा. था। प्रसव के तुरंत बाद आशा ने शिशु को स्तनपान कराने में अंजुम की मदद की। पहले से ही शिशु ठीक से स्तनपान नहीं कर पा रहा था। अगले 3 दिनों तक आशा ने शिशु को स्तनों से लगाने और माँ–बच्चे को सही स्थिति में रखने तथा प्रोत्साहित करने की कोशिश की। दूसरे दिन आशाने नाल पकी हुई देखी। चौथे दिन शिशु ठीक से स्तनपान करने लगा।

   क्या उसे सेप्सिस (जन्तुदोष) हुआ है ? ***नहीं***

   यदि हाँ तो क्यों ? यदि नही ंतो क्यों ?

   नहीं; यद्यपि दूसरे दिन शिशु की नाल पक गई थी, पर उसे स्तनपान करने में जन्म से ही कठिनाई हो रही थी अतः केवल एक ही लक्षण देखा गया।– दूसरे दिन नाल के पकने के आधार पर शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) नहीं माना जा सकता।

   दूसरे दिन आप क्या करेंगी ?

   नाल को रूई के फोहे से साफ करे और उस पर जी वी पेंट लगाएँ।

   माँ को बतायें कि दिन में 2 बार नाल पर जी वी पेंट लगाएँ।

   अगले दिन नाल की जाँच करें

केस अध्ययन

1. नन्दा को 30 सितम्बर को सुबह 7:20 पर बच्चा पैदा हुआ। प्रसव के समय 8 माह 5 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु का वज़न 1 कि.ग्रा 950 ग्रा. था। शिशु पहले 6 दिनों तक बिल्कुल ठीक था।

शिशु जन्म के समय सामान्य था या खतरे वाला ? सामान्य / खतरे वाला

यदि ठीक था तो क्यों ? यदि खतरे वाला था तो क्यों ?

____

____

जन्म के बाद 28 दिनों तक आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?

प्रसव के समय आप माँ को उसकी घरेलू देखभाल के बारे में क्या–क्या बताएँगी ?

1. ____________________________________
2. ____________________________________
3. ____________________________________
4. ____________________________________
5. ____________________________________

सातवें दिन जब आशा वहाँ गई, उसने पाया कि शिशु ने स्तनपान करना बंद कर दिया है और उसका पेट फूला हुआ है। उसकी साँस तो ठीक चल रही थी, पर उसका रोना कमज़ोर था।

शिशु को क्या हुआ है ? __________________________

आपने किन कारणों के आधार पर इस रोग का निदान किया ?

____

____

आशा का नाम __________________	तारीख __________
प्रशिक्षक का नाम ________________	कुल अंक __________
ब्लॉक ______________________	

2. कमल ने जन्म के अनुमानित समय से एक हफ्ते बाद शिशु को जन्म दिया। उसका वज़न 2.9 कि.ग्रा. था। वह तन्दुरुस्त और स्वस्थ था। आशाने कमल को उसे स्तनपान कराने में मदद की और एक घंटे बाद उसकी जाँच की। ऑठवें दिन माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ रहा है। उसका तापमान 94° फै. (34.4° सें.) पाया गया। वह दूध पी रहा था और रो भी रहा था। उसका पेट मुलायम था और हाथ–पैर भी ठीक थे। उसकी नाल ठीक हो चुकी थी और वह ठीक से साँस ले रहा था, छाती अंदर धँसी नहीं थी।

आप क्या करेंगी और कैसे ?

____

____

____

____

____

____

क्या उसे सेप्सिस हुआ है ? हाँ / नहीं

यदि हाँ तो क्यों ? यदि नहीं तो क्यों नहीं ?

____

अगले दिन आप उसे फिर देखने गई। तब उसका तापमान ठीक पाया गया।

आप उसके माता–पिता को क्या सलाह देंगी।

____

____

____

____

3. लीलाबाई को तीसरा बच्चा होने वाला था। शिशु का जन्म 7 महीने 24 दिन के गर्भकाल पूरा होने पर हुआ और उसका वज़न 1.550 कि.ग्रा. था। शिशु ने 14 दिन तक स्तनपान नहीं किया। पन्द्रहवें दिन उसने स्तनपान किया।

शिशु जन्म के समय कैसा था ? सामान्य / अधिक खतरे वाला

क्यों ?

____

पहले महीने में आप उसे देखने कितनी बार जाएँगी ? ______________

पहले दिन आप उसके माता–पिता को क्या सलाह देंगी ?

1. ______________________________
2. ______________________________
3. ______________________________
4. ______________________________
5. ______________________________

सत्रहवें दिन शिशु को दो बार उल्टी हुई पर माँ ने स्तनपान कराना जारी रखा। वह ठंडा नहीं पड़ा था और ठीक से रो भी रहा था। अठ्ठाइसवें दिन उसका वज़न 2.250 कि.ग्रा. हो गया था।

अठ्ठाइसवें दिन आप किस निर्णय पर पहुँचेंगी ?

____

____

पैतालीसवें दिन शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज थें और माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ पड़ रहा। आपने उसका तापमान लिया और 94° फै. (34.4° सें.) पाया।

आपने क्या निदान किया ? ______________

क्यों ? ______________

किस दिन उसे ऐसा हुआ ? ______________

केस अध्ययन के उत्तर

1. नन्दा को 30 सितम्बर को सुबह 7:20 पर बच्चा पैदा हुआ। प्रसव के समय 8 माह 5 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु का वज़न 1 कि.ग्रा 950 ग्रा. था। शिशु पहले 6 दिनों तक बिल्कुल ठीक था।

शिशु जन्म के समय सामान्य था या खतरे वाला ? सामान्य / *खतरे वाला*

यदि ठीक था तो क्यों ? यदि खतरे वाला था तो क्यों ? क्यों कि, *समय से पूर्व जन्मा (8 महीने 14 दिन के गर्भकाल से कम में) और कम वज़न का (2 कि.ग्रा. से कम)*

जन्म के बाद 28 दिनों तक आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ? *13*

प्रसव के समय आप माँ को उसकी घरेलू देखभाल के बारे में क्या–क्या बताएँगी ?

1. शिशु को गर्म थैली के प्रयोग से और माँ के पास लिटाकर और/अथवा शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना

2. 2–2 घंटें में स्तनपान कराना

3. नहलाना नहीं

4. हर बार शिशु को छूने से पहले हाथ धोना

5. खतरे वाले लक्षण देखते ही तुरंत आशाको बुलाना;

सातवें दिन जब आशा वहाँ गई, उसने पाया कि शिशु ने स्तनपान करना बंद कर दिया है और उसका पेट फूला हुआ है। उसकी साँस तो ठीक चल रही थी, पर उसका रोना कमज़ोर था।

शिशु को क्या हुआ है ? *सेप्सिस*

आपने किन कारणों के आधार पर इस रोग का निदान किया ?

एक ही दिन दो लक्षण साथ–साथ दिखाई देना – स्तनपान करना बन्द कर दिया, और पेट फूला हुआ था।

2. कमल ने जन्म के अनुमानित समय से एक हफ्ते बाद शिशु को जन्म दिया। उसका वज़न 2.9 कि.ग्रा. था। वह तन्दुरुस्त और स्वस्थ था। आशाने कमल को उसे स्तनपान कराने में मदद की और एक घंटे बाद उसकी जाँच की। ऑठवें दिन माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ रहा है। उसका तापमान 94° फै. (34.4° सें.) पाया गया। वह दूध पी रहा था और रो भी रहा था। उसका पेट मुलायम था और हाथ–पैर भी ठीक थे। उसकी नाल ठीक हो चुकी थी और वह ठीक से साँस ले रहा था, छाती अंदर धँसी नहीं थी।

आप क्या करेंगी और कैसे ?

शिशु को फिर से गर्म करने की कोशिश करेंगे।

- कमरे का तापमान बढ़ाकर
- गीले या ठंडे कम्बल/कपड़े हटाकर
- शिशु को माँ के शरीर से चिपकाकर रखें और उसकी पीठ या पेट पर गर्म कपड़ा (इतना गर्म न

हो कि जल जाए) रखें। कपड़ा ठंडा होते ही, बदलकर दूसरा गर्म कपड़ा उसके ऊपर रखें। ऐसा तब तक करते रहें जब तक कि शिशु का तापमान सामान्य न हो जाए।

- कपड़े पहनाएँ, गर्म थैली में रखें, टोपी पहनाएँ और माँ के पास लिटाएँ।

उसे बताएँ कि शिशु को गर्म रखना, अच्छी तरह कपड़े पहनाकर रखना और अपने शरीर से लगाकर रखना बहुत ज़रूरी है। उसे थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान कराते रहें।

शिशु का तापमान लेने के लिए दिन में एक बार उसके पास जाएँ और फिर अगले दिन भी जाएँ। खतरनाक लक्षण दिखाई देते ही माँ तुरंत आशा को बुलाएँ (यदि शिशु स्तनपान करना बंद कर दे, या बहुत धीरे–धीरे रो रहा हो, आदि)

क्या उसे सेप्सिस हुआ है ? *नहीं*

यदि हाँ तो क्यों ? यदि नहीं तो क्यों नहीं ? *उस दिन केवल एक ही लक्षण दिखाई दिया।*

अगले दिन आप उसे फिर देखने गई। तब उसका तापमान ठीक पाया गया।

आप उसके माता–पिता को क्या सलाह देंगी।

शिशु को ठीक से कपड़े पहनाकर रखना, गर्म रखना और माँ के शरीर से लगाकर रखना बहुत ज़रूरी है शिशु के शरीर का तापमान गिरना बहुत खतरनाक है, क्योंकि ऐसा होने पर उसमें सेप्सिस (जन्तुदोष) होने का खतरा बढ़ जाता है। उसे थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान कराना चाहिए।

3. लीलाबाई को तीसरा बच्चा होने वाला था। शिशु का जन्म 7 महीने 24 दिन के गर्भकाल पूरा होने पर हुआ और उसका वज़न 1.550 कि.ग्रा. था। शिशु ने 14 दिन तक स्तनपान नहीं किया। पन्द्रहवें दिन उसने स्तनपान किया।

शिशु जन्म के समय कैसा था ? सामान्य / *अधिक खतरे वाला*

क्यों ? *समय से पूर्व जन्म, कम वज़न का, ठीक से स्तनपान नहीं कर पा रहा।*

पहले महीने में आप उसे देखने कितनी बार जाएँगी ? *13*

पहले दिन आप उसके माता–पिता को क्या सलाह देंगी ?

1. गर्म थैली का प्रयोग करें, माँ के पास लिटाकर और/या शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखने की विधि I के प्रयोग द्वारा शिशु को गर्म रखें।

2. स्तनों को दबाकर दूध निकालें और 2–2 घंटे पर शिशु को चम्मच से दूध पिलाएँ जब तक कि वह ठीक से स्तनपान न करने लगे (उसे प्रतिदिन स्तनों से लगाने की कोशिश करें)

3. उसे नहलाए नहीं

4. हर बार शिशु को छूने से पहले हाथ धोएँ।

5. खतरे वाले लक्षण देखते ही तुरंत आशाको बुलाएँ

सत्रहवें दिन शिशु को दो बार उल्टी हुई पर माँ ने स्तनपान कराना जारी रखा। वह ठंडा नहीं पड़ा था और ठीक से रो भी रहा था। अठ्ठाइसवें दिन उसका वज़न 2.250 कि.ग्रा. हो गया था।

अठ्ठाइसवें दिन आप किस निर्णय पर पहुँचेंगी ? *शिशु का वज़न 2.3 कि.ग्रा. से कम था इसलिए दूसरे महीने में उसकी जाँच कम से कम 4 बार करनी चाहिए।*

पैतालीसवें दिन शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज थें और माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ पड़ रहा। आपने उसका तापमान लिया और 94° फै. (34.4° सें.) पाया।

आपने क्या निदान किया ? *सेप्सिस (जन्तुदोष)*

क्यों ? *हाथ पैर लुंज पुंज और शिशु ठंडा पड़ा हुआ*

किस दिन उसे ऐसा हुआ ? *45वें दिन*

मोड्यूल 15 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा जेन्टामायसिन की सुई से उपचार

सत्र 2 : नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का जेन्टामायसिन से उपचार

दिवस : 2 तथा 3
समयावधि : 3 घं. 35 मि.

प्रयोजन

आशाओंको नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) के उपचार की जानकारी और योग्यता हासिल करवाना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. एन्टीबायोटिक का उचित खुराक तय करना।
2. शिशु को एन्टीबायोटिक सुई (जेन्टामायसिन) और मुँह से (कोट्रिमॉक्सेजोल) देना।
3. माता–पिता को शिशु की बीमारी के बारे में समझाने, उनसे उपचार के लिए स्वीकृति लेने और उन्हें घरेलू देखभाल के बारे में सलाह देने के लिए बातचीत की सफल विधियों के प्रयोग का प्रदर्शन।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1 : दवा की खुराक का चार्ट
- अध्ययनपत्र 2 : जेन्टामायसिन सुई वाली जाँच–सूची
- अभ्यासपत्र 1 : केस अध्ययन
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर
- जेन्टामायसिन की शीशी
- इन्सुलिन की सुई
- स्पिरिट
- रुई के फोहे
- प्रयोग में लाई सुईयों के लिये प्लास्टिक का डिब्बा
- सुई लगाने के अभ्यास के लिए गुडिया, आम या बैंगन
- कोट्रिमॉक्सेजोल सिरप की बोतलें
- चम्मच (5 मि.ली.)

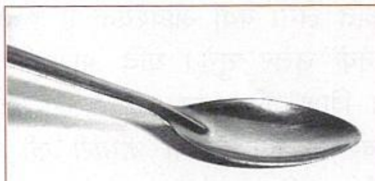

5 मि.ली. का चम्मच

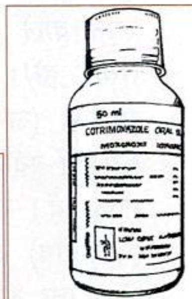

कोट्रिमॉक्सेजोल सिरप की बोतल

तैयारी

- पूरक फॉर्म तथा अध्ययनपत्र की प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार पर्याप्त प्रतियाँ तैयार रखें। प्रत्येक आशा के लिये एक कापी जरूरी है।
- पर्याप्त सुई तथा इंजेक्शन की शिशियाँ तैयार रखें। हर प्रशिक्षणार्थी के लिए एक सुई और एक शीशी। (एक बार अभ्यास करने के बाद जेंटामायसिन खतम हो जाए तो उसी बोतल में पानी भरकर अभ्यास हेतु प्रयोग कर सकते हैं।)
- सामग्री मे दी गई अन्य चीजें तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

प्रस्तुति एवँ चर्चा : सेप्सिस (जन्तुदोष) की देखभाल (50 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. बताएँ कि सेप्सिस (जन्तुदोष) की देखभाल के 4 भाग हैं :
   - शिशु की बीमारी के बारे में माता–पिता को बताना और यदि वे उसे अस्पताल नहीं भेजना चाहते, तो शिशु की घर पर ही देखभाल की स्वीकृति लेना।
   - उपचार करना (दवा की सही खुराक उतने दिनों तक देना जितना कि आवश्यक हो।)
   - माता–पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में सलाह देना और दिन में दो बार उसे घर पर देखने जाना। देखना कि उसकी ठीक–ठाक देखभाल की जा रही है।
   - आवश्यक फॉर्म भरना और लेखा–जोखा रखना।

   इस सत्र में हम पहले तीन भागों के बारे में – (पूर्व सूचना देकर स्वीकृति लेना, उपचार करना और घरेलू देखभाल करना) चर्चा करेंगे। फॉर्मों, उनको भरने के बारे में जानकारी, और अभ्यास अगले सत्र में कराया जाएगा।
2. आशाओंसे 'पूर्व सूचना देकर स्वीकृति लेने' के बारे में पूछें। *(इसका अर्थ है बीमारी की गंभीरता के बारे में माता–पिता को बताना, उन्हें इसके संभावित खतरों के बारे में जानकारी देना और आशाद्वारा घर पर ही उपचार के लिए उनकी स्वीकृति लेना।)* ऐसा करना क्यों आवश्यक है ? *(जिससे कि माता–पिता किए जाने वाले उपचार के लाभ और खतरे, दोनों के बारे में समझ सकें, और अपनी इच्छा से इसके लिए तैयार हों)*।
3. सेप्सिस (जन्तुदोष) में माता–पिता को शिशु की हालत के बारे में बताना, और उपचार के लिए उनकी लिखित स्वीकृति लेना क्यों आवश्यक है ? आशाओंको इस बारे में आपस में विचार–विमर्श करने का पूरा मौका दें। उनके उत्तर सुनें। यदि आशाठीक से याद नहीं कर पा रही हों, तो उन्हें बताएँ कि सेप्सिस (जन्तुदोष) से शिशु की जान को खतरा होता है और सेप्सिस (जन्तुदोष) के इलाज के लिए अस्पताल ले जाना आवश्यक है। *(आशा बीमारी की गंभीरता के बारे में माता–पिता को बताएँ: इससे शिशु शिघ्र मर सकता है, इसलिए तुरंत अस्पताल ले जाने की सलाह दें। यदि वे अस्पताल न ले जाना चाहें, तो माता–पिता को पूर्व–सूचना देकर, स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवा ले और उन्हें खतरों और उपचार के बारे में पूरी तरह समझाकर शिशु की चिकित्सा घर पर ही करें)*।
4. याद रहे कि उपचार शुरू करने से पहले पूर्व सूचना देकर स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर माता या पिता अथवा अन्य अभिभावक के हस्ताक्षर ले लेने चाहिएँ। आशाओं से कहें कि वे पूरक फॉर्म पुस्तिका में यह फॉर्म देखें (अगले सत्र में उन्हें इसे भरने का अभ्यास करवाया जाएगा)।
5. **सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचार** नवजात शिशु में सेप्सिस (जन्तुदोष) के उपचार के लिये कोट्रिमॉक्सेजोल (आशा जिसका सेप्सिस के इलाज के लिये प्रयोग कर रही है) और जेन्टामाइसिन का प्रयोग किया जाता है। जेन्टामाइसिन एक एन्टीबायोटिक है जिसकी सुई लगाई जाती है। जबकि कोट्रिमॉक्सेजॉल खाने की दवाई है। इन दोनों दवाओं से शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) पूरी तरह ठीक हो जाता है।
6. बतायें कि अक्सर आवश्यकता न होने पर भी सुई लगा दी जाती है, जिसके परिणाम कई खतरे हो सकते हैं: जैसे गलत दवा/गलत खुराक का देना और कभी–कभी त्वचा में जिस जगह पर सुई लगती है, वहाँ संक्रमण का होना। सेप्सिस (जन्तुदोष) से शिशु की जान को खतरा होता है, अतः जेन्टामाइसिन की सुई

तो लगाना आवश्यक है। आशाओं को घरों का दौरा फॉर्म का सेप्सिस (जन्तुदोष) निदान भाग दिखाएँ जिसकी मदद से वे सेप्सिस (जन्तुदोष) का सही निदान कर पाएँगी और उन्हीं शिशुओं को सुई लगेगी जिन्हें वास्तव में सेप्सिस (जन्तुदोष) है।

7. आशाओं को अध्ययन पत्र 1ः खुराक वाली शीट देंखने को कहें (नीचे दिया विषय– वस्तु बाक्स देंखें)
8. बताएँ कि जेन्टामाइसिन की खुराक शिशु के वज़न के हिसाब से दी जानी चाहिए। जब शिशु को सेप्सिस हो तो आशा उसके लिखे हुये वज़न के हिसाब से जेन्टामाइसिन की ठीक–ठीक खुराक निर्धारित करे।
9. बतायें कि जेन्टामाइसिन और कोट्रिमॉक्सेजोल द्वारा इलाज कितने दिन चलेगा यह गर्भकाल के आधार पर निश्चित किया जाता है।
   - समय से पूर्व जन्मे शिशुओं को दोनों दवाएँ 10 दिन तक दी जानी चाहिए।
   - ठीक समय पर जन्मे शिशुओं को दोनों दवाएँ 7 दिन तक दी जानी चाहिए।
10. माता–पिता द्वारा लिखित स्वीकृति दिए जाने के तुरंत बाद **पहली खुराक दे दें।**
    आशा द्वारा जेन्टामाइसिन की सुई दिन में एक बार लगानी है। कोट्रिमॉक्सेजोल की दवा आशा द्वारा (या माँ द्वारा ठीक तरह समझाकर) दो बार सुबह और दोपहर खिलानी है। आशाओं ने कोट्रिमॉक्सेजोल देने का अभ्यास किया है।
11. बतायें कि आशादिन में दो बार शिशु की घर पर जाकर तब तक देखभाल करे जब तक कि इलाज पूरा न हो जाए, अर्थात ठीक समय पर जन्मे शिशु के लिए 7 दिन तक और समय से पूर्व जन्मे शिशु के लिए।

विषय–वस्तु

सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचार

इसके लिए 2 एन्टीबायोटिक दवाएँ दी जाती हैं : जेन्टामाइसिन और कोट्रिमॉक्सेजोल

1. जेन्टामाइसिन की सुई दिन में एक बार

शिशु का वज़न 8 माह 14 दिन से पहले	**समय से पूर्व जन्माः जन्म के बाद**	**समय पूरा होने पर जन्मा या 1 महीना पूरा होने पर**
1500 ग्रा. से कम	5 मि.ग्रा.	8 मि.ग्रा.
1500<2000 ग्रा. से कम	5 मि.ग्रा.	10 मि.ग्रा.
2000<2500 ग्रा. से कम	7 मि.ग्रा.	12 मि.ग्रा.
2500<3000 ग्रा. से कम	9 मि.ग्रा.	15 मि.ग्रा.
3000 ग्रा. या अधिक		18 मि.ग्रा.
	10 दिन तक दिन में एक बार	7 दिन तक दिन में एक बार

2. कोट्रिमॉक्सेजॉल सिरप (पीने की दवा) दिन में 2 बार

समय पूरा होने पर जन्मा शिशु : एक चौथाई चम्मच दिन में 2 बार × 7 दिन

समय से पूर्व जन्मा शिशु : एक चौथाई चम्मच दिन में 2 बार × 10 दिन

12. बताएँ : आशा माता–पिता को अवश्य बताएँ कि जिस बच्चे का सेप्सिस (जन्तुदोष) का इलाज चल रहा है उसकी देखभाल कैसे करनी है। अधिक खतरे वाले शिशुओं की घरेलू देखभाल के लिए भी इसी तरह की सलाह दी जानी चाहिए (अधिक खतरे वाले शिशुओं की स्वास्थ्य शिक्षा के लिए कार्ड का प्रयोग करें)।
13. सेप्सिस (जन्तुदोष) से ग्रस्त शिशुओं की हालत बहुत नाजुक होती है और जल्दी ही बिगड़ सकती है। उनकी जान बचाना जितना दवाओं पर निर्भर है उतनाही अच्छी तरह देखभाल करने पर – जैसे ठीक से स्तनपान कराकर, गर्म रखकर और सही दवाई देकर। सुनिश्चित करें –
    - शिशु को गर्म रखें।
    - थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान करायें (2–2 धंटे बाद)
    - दवा अवश्य दें
    - शिशु को छूने से पहले हाथ धोएँ
    - यदि हालत बिगड़ने लगे, तो तुरंत आशाको बुलाएँ
    - अन्य संक्रमणों की देखभाल करें – जैसे नाभि (टुंडी), त्वचा, आँखें आदि।

प्रदर्शन : जेन्टामाइसिन और कोट्रिमॉक्सेजोल देना (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से कहें कि वें अध्ययनपत्र में जेन्टामाइसिन सुई वाली जाँच–सूची देखें।
2. समझाएँ कि जेन्टामाइसिन की सुई वैसे ही लगाई जाती है, जैसे विटामिन 'के' की सुई, परन्तु दोनों में 2 अन्तर हैं :
    - जेन्टामाइसिन की शीशी में द्रव दवा को बाहर गिरने से रोकने के लिए एक रबर की सील लगी होती है, जबकि विटामिन 'के' की शीशी में, काँच की नोक को तोड़कर दवा को सीधे सुई (सिरिंज) में भरा जाता है।
    - जेन्टामाइसिन की शीशी में दवा की कई खुराकें होती है और उसका कई बार उपयोग कर सकते हैं। जबकि विटामिन 'के' की शीशी का उपयोग केवल एक बार करके उसे फेंक देते हैं। क्योंकि जेन्टामाइसिन का प्रयोग कई बार किया जाता है, अतः शीशी को विसंक्रमित अवस्था में रखना चाहिए (शीशी का मुँह प्रयोग करने से पहले, स्पिरिट से साफ करें, रबर सील के अंदर केवल विसंक्रमित सुईयाँ ही डालें और सिरिंज की बची हुई दवा को वापस शीशी में न डालें)
3. सभी को जेन्टामाइसिन की शीशी दिखाएँ। बताएँ कि इस तरह की शीशी और विटामिन 'के' की शीशी में से दवा कैसे निकाली जाती है में अंतर है। बताएँ कि शीशी में हवा नहीं होती, इसलिए सुई डालकर दवा निकालना कठिन होता है, इसलिए दवा को सिरिंज में खींचने (डालने) के लिए दवा के बराबर हवा शीशी में डालनी पड़ती है।
4. आशाओं को इन्सुलिन सिरिंज दिखाएँ। उन्हें बताएँ कि खुराक मिलीग्राम में मापी जाती है, जो सिरिंज पर लिखे नम्बर के बराबर होती है।

    उदाहरण : ठीक समय पर जन्मे शिशु (जिसका वज़न 2.300 कि.ग्रा. हो) को जेन्टामाइसिन की 12 मि. ग्रा. दवा देनी पड़ेगी। दवा सिरिंज पर लगे 12 के निशान तक भरनी चाहिए।
5. आशाओंसे जेन्टामाइसिन जाँच–सूची में दिए 6–12 तक के बिन्दुओं को पढ़वाएँ।
6. सिरिंज में दवा भरने का प्रदर्शन करके दिखाएँ। 6–12 तक के बिदुओं को देखें।

6.	स्पिरिट में भीगा रुई का तीसरा फोहा लें और शीशी के रबर का ढक्कन पोंछे।
7.	प्लास्टिक के खोल से सिरिंज बाहर निकालें, देखें कि दोनों ढक्कन का सील ठीक है। पहले पिचकारी का ढक्कन खोलें, फिर सुई का ढक्कन खोलें।
8.	सिरिंज की में जितनी दवा भरनी हो, उतनी पिचकारी बाहर की ओर खींचे, जिससे सिरिंज में उतनी हवा हवा आ जाए
9.	सुई को शीशी के रबर के ढक्कन में डालें और पिचकारी को शीशी में अंदर धकेलें, जिससे हवा शीशी के अंदर जाए।
10.	सिरिंज और शीशी को उठाकर उलटा करें। ध्यान रहे कि सुई की नोक दवा में डूबी रहे। पिचकारी को बाहर की ओर खींचे, जिससे उसमें जितनी खुराक देनी है, उससे थोड़ी सी ज़्यादा दवा भर जाए।
11.	सिरिंज को शीशी से निकाल लें और सुई का मुँह ऊपर की ओर रखें। सिरिंज को उंगली से धीरे से मारे, जिससे हवा के बुलबुले ऊपर चले जाएँ।
12.	पिचकारी को धीरेसे सिरिंज के अंदर धकेलें, जिससे हवा का बुलबुला और खुराक से ज्यादा दवा बाहर निकल जाए। जितनी दवा चाहिये उतनी पिचकारी को अंदर धकेले जिससे की पिचकारी की काली रिंग सिरिंज में, तय कि हुई खुराक तक जाएँ। अब सिरिंज में खुराक के अनुसार पर्याप्त दवा होगी।

7. आशाओं को अवश्य बताएँ कि शीशी के मुँह (रबर की सील) में प्रत्येक बार सुई डालने से पहले, स्पिरिटमें भीगे फोहे से पोंछ लेना चाहिए। 2 मि.ली. की प्रत्येक शीशी में 80 मि.ग्रा. दवा होती है। समय पर जन्मे शिशु को जिसका वज़न 2.5 कि.ग्रा. हो, उसे 15 मि.ग्रा. दवा की मात्रा सुई द्वारा देनी चाहिए। इसलिए एक शीशी में से 5 बार सुई लगाई जा सकती है। (बचे दो दिन के लिये जितनी अतिरिक्त मात्रा जरूरी हो, उसे अन्य शीशीसे ले सकते हैं। समय से पूर्व जन्में अत्यधिक छोटे शिशु के लिए जिसे प्रत्येक बार 5 मि.ग्रा. दवा की सुई लगानी है एक शीशी में से 10 बार सुई लगाई जा सकती है। बची हुई दवाई अन्य शिशु के लिये काम में आ सकती है।
8. आशाओं से पूरी जाँच–सूची बोलकर पढ़ने को कहें। (प्रत्येक से 1 या 2 बिन्दु पढ़वाएँ)
9. जाँच–सूची से पढ़ते हुए, एक एक कदम को स्पूट करें तथा प्रदर्शन करें। आशा जाँच सूची के आधार पर निरीक्षण करें। 2.8 कि.ग्रा. के समय पूरा होने पर जन्मे शिशु का उदाहरण देकर समझाएँ (सिरिंज पर लगे '15' निशान तक 15 मि.ग्रा. दवा भरें)।
10. कोट्रिमॉक्सेजोल की खुराक के बारे में समझाएँ। 1/4 चम्मच सिरप (दवा) नापकर शिशु को सुबह–शाम दें।
11. प्रदर्शन के बाद किसी के कोई प्रश्न हों, तो उनका समाधान करें।

प्रशिक्षणार्थियों हेतु अभ्यास (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओंके 3–3 सदस्यों के छोटे समूह बनाएँ। प्रत्येक आशा को एक–एक सिरिंज और दवा की शीशी दें (अभ्यास के लिये दवा की जगह, शीशी में पानी का प्रयोग किया जा सकता है)। उन्हें कोट्रिमॉक्सेजोल,

चम्मच बाँटें।

2. प्रत्येक आशा पहले सिरिंज में द्रव की ठीक मात्रा भरने का अभ्यास करे। वे 5, 6, 7, 8, 9, 10, 12 और 15 मि.ग्रा. मात्रा भर कर अभ्यास करें।
3. इसके बाद पूरी जाँच–सूची देखकर, वे शिशु को सुई लगाने का अभ्यास करें; अन्य आशा जाँच–सूची देखकर उसे ऐसा करते हुए देखें।

   वे निम्न बातों का ध्यान रखें :
   - सुई लगाने की जगह चुनना
   - त्वचा पर सुई लगाते समय सिरिंज किस कोण पर रखना है (90° के कोण पर जैसे कि जमीन पर पेड़ सीधा खड़ा होता है)
   - सुई कितनी अंदर डालनी है (सुई की पूरी लम्बाई)
   - सुई बाहर निकालना
   - सुई लगाने के बाद देखभाल
4. प्रशिक्षक कमरे में घूम कर सभी की सहायता करें।

केस अध्ययन – छोटे समूह (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं को उन्हीं समूहों में रखें। अभ्यासपत्र 1: केस अध्ययन, बाँटें।
2. आशा ठीक खुराक, घर के दौरे पर जाने और घरेलू देखभाल की सलाह देने के बारे में मिलकर बातचीत करें (20 मि.)।
3. सभी छोटे समूहों को मिला दें और पूरे समूह के सदस्य आपस में उत्तरों की चर्चा करें।
4. प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

बड़े समूह में भूमिका नाटक (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रत्येक समूह से केस अध्ययन के आधार पर, (अथवा स्वयं के अनुभव पर आधारित) एक छोटी भूमिका नाटक प्रस्तुत करने को कहें। उस नाटक में बताया जाए कि माता–पिता को कैसे समझाया जाए कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है, उन्हें स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करना सिखाया जाए और शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में बताया जाए।
2. बातचीत की योग्यता में सुधार और दी जाने वाली जानकारी के बारे में रचनात्मक सलाह देते हुए भूमिका नाटक के बारे में चर्चा करें। यदि आशा बातचीत में अच्छी योग्यता का प्रदर्शन करें, तो उनकी प्रशंसा करें।

सारांश :

- एक आशा से पूछें कि जेन्टामायसिन की सुई लगाना सीखने के पश्चात् उसे कैसा महसूस हो रहा है।
- अन्य आशा से पूछें कि सेप्सिस वाला शिशु छोड़कर किसी अन्य को जेन्टामायसिन की सुई क्यों नहीं लगानी चाहिये?
- किसी अन्य आशा से पूछें कि किसी शिशु के लिये वह जेन्टामायसिन की सही खुराक कैसे तय करेगी?

- कुछ गलतियाँ हों, तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
एन्टीबायोटिक का उचित खुराक तय करना।	केस अध्ययन	आशाओं के छोटे समूहों में केस अध्ययन हल करना
शिशु को एन्टीबायोटिक सुई (जेन्टामायसिन) और मुँह से (कोट्रिमॉक्सेजोल) देना।	प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी जॉच सूची का प्रयोग कर सुई लगाने का प्रदर्शन करें। कोट्रिमॉक्सेजोल की सही मात्रा मापने का प्रदर्शन।	आशाओं के प्रदर्शन का प्रशिक्षक व्दारा जॉच सूची के आधारपर निरिक्षण
माता–पिता को शिशु की बीमारी के बारे में समझाने, उनसे उपचार के लिए पूर्व स्वीकृति लेने और घरेलू देखभाल के बारे में सलाह देने के लिए बातचीत की सफल विधियों का प्रयोग और प्रदर्शन	भूमिका नाटक	भूमिका नाटक का प्रशिक्षक व्दारा निरिक्षण

दवा की खुराक का चार्ट

इसके लिए 2 एन्टीबायोटिक दवाएँ दी जाती हैं : जेन्टामाइसिन और कोट्रिमॉक्सेजोल

1. जेन्टामाइसिन की सुई दिन में एक बार

शिशु का वज़न **8 माह 14 दिन से पहले**	**समय से पूर्व जन्मा:** **जन्म के बाद 1 महीना पूरा होने**	**समय पूरा होने पर जन्मा या** **पर**
1500 ग्रा. से कम	5 मि.ग्रा.	8 मि.ग्रा.
1500<2000 ग्रा. से कम	5 मि.ग्रा.	10 मि.ग्रा.
2000<2500 ग्रा. से कम	7 मि.ग्रा.	12 मि.ग्रा.
2500<3000 ग्रा. से कम	9 मि.ग्रा.	15 मि.ग्रा.
3000 ग्रा. या अधिक		18 मि.ग्रा.
	10 दिन तक दिन में एक बार	7 दिन तक दिन में एक बार

2. कोट्रिमॉक्सेजॉल सिरप (पीने की दवा) दिन में 2 बार

समय पूरा होने पर जन्मा शिशु : एक चौथाई चम्मच दिन में 2 बार × 7 दिन

समय से पूर्व जन्मा शिशु : एक चौथाई चम्मच दिन में 2 बार × 10 दिन

जेन्टामाईसिन की सुई लगाने के लिए जाँच–सूची

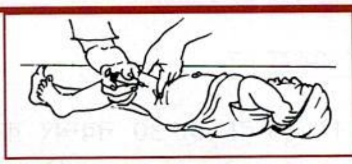

		कितनी बार अभ्यास किया					
		1	2	3	4	5	6
1.	जेन्टामायसीन की शीशी, सिरिंज तथा स्पिरिट की बोतल निकालकर रखें। हाथ धोने वाली जाँच –सूची के अनुसार हाथ धोएँ						
2.	रूई के चार फोहे बनायें और उन्हें स्पिरिट में भिगोयें।						
3.	स्पिरिट में भीगे एक फोहे से हाथ पोछें और वह फोहा अगल रख दें।						
4.	शिशु को लिटाकर उसकी जाँघ खोलें और सुई लगाने के लिये जगह चुनें।						
5.	स्पिरिट में भीगा दूसरा रुई का फोहा लें और जिस जगह पर सुई लगानी है, वहाँ फोहा रखकर हाथ को गोलाई मे बाहर की तरफ घुमाते हुए पोंछे और फोहा अगल रख दें।						
6.	स्पिरिट में भीगा रुई का तीसरा फोहा लें और शीशी के रबर का ढक्कन पोंछे।						
7.	प्लास्टिक के खोल से सिरिंज बाहर निकालें, देखें कि दोनों ढक्कन का सील ठीक है। पहले पिचकारी का ढक्कन खोलें, फिर सुई का ढक्कन खोलें।						
8.	सिरिंज की में जितनी दवा भरनी हो, उतनी पिचकारी बाहर की ओर खींचे, जिससे सिरिंज में उतनी हवा हवा आ जाए।						
9.	सुई को शीशी के रबर के ढक्कन में डालें और पिचकारी को शीशी में अंदर धकेलें, जिससे हवा शीशी के अंदर जाए।						
10.	सिरिंज और शीशी को उठाकर उलटा करें। ध्यान रहे कि सुई की नोक दवा में डूबी रहे। पिचकारी को बाहर की ओर खींचे, जिससे उसमें जितनी खुराक देनी है, उससे थोड़ी सी ज़्यादा दवा भर जाए।						
11.	सिरिंज को शीशी से निकाल लें और सुई का मुँह ऊपर की ओर रखें। सिरिंज को उंगली से धीरे से मारे, जिससे हवा के बुलबुले ऊपर चले जाएँ।						
12.	पिचकारी को धीरेसे सिरिंज के अंदर धकेलें, जिससे हवा का बुलबुला और खुराक से ज्यादा दवा बाहर निकल जाए। जितनी दवा चाहिये उतनी पिचकारी को अंदर धकेले जिससे की पिचकारी की काली रिंग सिरिंज में, तय कि हुई खुराक तक जाएँ। अब सिरिंज में खुराक के अनुसार पर्याप्त दवा होगी।						
13.	सिरींज को एक हाथ में पकड़ें						
14.	स्पिरिट में भीगा रुई का चौथा फोहा लें और उस जगह पर फोहा रखकर हाथ गोलाई मे घुमाकर फिर पोंछे और इस फोहे को बचाकर अलग रख दें।						
15.	दूसरे हाथ से सुई लगाने वाली जगह की त्वचा को खींचकर पकड़ें। सुई सीधी खड़ी करके उसे जाँघ में लगा दें।						
16..	सिरिंज की पिचकारी को पूरा दबाएँ जिससे सारी दवा अंदर चली जाए।						
17.	सिरिंज को खड़ा रखते हुए सुई को बाहर निकाल लें और त्वचा छोड़ दें। स्पिरिट के भीगे रुई के चौथे फोहे से त्वचा को पोंछे।						
18.	जाँचें कि सुई लगाने की जगह से खून तो नहीं निकल रहा। यदि निकल रहा हो, तो 3–4 मिनट के लिये रुई का फोहा लगाकर दबा दें।						
19.	घर ले जाकर संभालकर रखने के लिये सिरिंज को प्लास्टिक बॉक्स में तथा खाली शीशीयॉं अन्य डिब्बे में रख दें।						
20.	घर ले जाने के लिये रूई के प्रयुक्त फोहे अलग डिब्बे में डालें। घर में सुई का प्रयुक्त सामान संभालकर रखें जिसे आपने जैसा पहले सीखा है उस प्रकार से नष्ट कराना है।						

केस अध्ययन

1. सुनन्दा को 30 नवम्बर को सुबह 8:20 पर बच्चा पैदा हुआ। प्रसव के समय 8 माह 5 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु का वज़न 1 कि. 950 ग्रा. था। शिशु पहले 6 दिनों तक बिल्कुल ठीक था। सातवें दिन जब आशा वहाँ गई, उसने पाया कि शिशु ने स्तनपान करना बंद कर दिया है और उसका पेट फूला हुआ है। उसकी साँस तो ठीक चल रही थी, पर उसका रोना कमज़ोर था। उसका वज़न 1 कि 900 ग्रा. था। आशाने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया, क्योंकि शिशु ने दूध पीना बंद कर दिया था और उसका पेट फूला हुआ था।

आप सबसे पहले क्या करेंगी ?

____

____

____

____

____

शिशु का क्या उपचार किया जाएगा ? (कितनी खुराक/कितने दिन)

____

____

आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?

____

आप माता–पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में क्या बताएँगी ?

1. ______________________________________
2. ______________________________________
3. ______________________________________

आशा का नाम ____________	तारीख ________
प्रशिक्षक का नाम ____________	कुल अंक ________
ब्लॉक ____________	

2. विमल ने जन्म के अनुमानित समय से 1 हफ्ते बाद शिशु को जन्म दिया। उसका वज़न 2.9 कि.ग्रा. था। वह तन्दुरुस्त और स्वस्थ था। आशाने विमल को उसे स्तनपान कराने में मदद की और 1 घंटे पर उसकी जाँच की। दसवें दिन माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ रहा है। उसका तापमान 93°F पाया गया। उसका वज़न 3 कि.ग्रा. था। वह दूध भी पी रहा था और रो भी रहा था, पर उसकी छाती अंदर को धँसी थी। उसका पेट मुलायम था और हाथ–पैर भी ठीक थे। उसकी नाल ठीक हो चुकी थी। आशाने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

आप सबसे पहले क्या करेंगी।

____

____

____

____

____

शिशु के उपचार करने के लिए, पूर्व स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर माता–पिता से हस्ताक्षर क्यों करवाना चाहिए ?

____

____

____

____

आप क्या उपचार देंगी ? (कारण लिखें)

____

____

____

लौट जाने से पहले आप माता–पिता को क्या–क्या बताएँगी ?

____

____

____

आप कितनी बार शिशु को देखने जाएँगी ?

____

3. ताराबाई को चौथा बच्चा होने वाला था। शिशु का जन्म 7 महीने 27 दिन के गर्भकाल पूरा होने पर हुआ और उसका वज़न 1.65 कि.ग्रा. था। शिशु ने 14 दिन तक स्तनपान नहीं किया। अठ्ठाईसवें दिन उसका वज़न 2.250 कि.ग्रा. हो गया था। आशाने दूसरे महीने में शिशु के घर जाना जारी रखा और उसका वज़न बढ़ाने की और अधिक कोशिश की। पैतालीसवें दिन शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज थे और माँ ने बताया कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता हैं। आपने उसका तापमान लिया और 94° फै. (34.4° सें.) पाया और आशाने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

शिशु में जन्म के समय खतरे वाले क्या लक्षण दिखाई दिए ?

____

सेप्सिस (जन्तुदोष) की पहचान के लिए कौन से लक्षण ध्यान में रखे गए ?

____

____

आप माता–पिता को सेप्सिस (जन्तुदोष) और इसके उपचार के लिए पूर्व स्वीकृति लेने के बारे में क्या बताएँगी ?

____

____

उपचार के लिए आप कितनी खुराक देंगी और कितने दिनों तक ?

____

____

शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में आप माता–पिता को क्या बताएँगी ?

____

____

____

____

____

केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. सुनन्दा को 30 नवम्बर को सुबह 8:20 पर बच्चा पैदा हुआ। प्रसव के समय 8 माह 5 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु का वज़न 1 कि. 950 ग्रा. था। शिशु पहले 6 दिनों तक बिल्कुल ठीक था। सातवें दिन जब आशा वहाँ गई, उसने पाया कि शिशु ने स्तनपान करना बंद कर दिया है और उसका पेट फूला हुआ है। उसकी साँस तो ठीक चल रही थी, पर उसका रोना कमज़ोर था। उसका वज़न 1 कि 900 ग्रा. था। आशाने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया, क्योंकि शिशु ने दूध पीना बंद कर दिया था और उसका पेट फूला हुआ था।

आप सबसे पहले क्या करेंगी ?

माता–पिता को बताएँगे कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है जो कि एक भयंकर प्रकार का संक्रमण है। इसके लिए उसे अस्पताल ले जाना चाहिए।

यदि माता–पिता उसे अस्पताल नहीं ले जा सकते , तो आप (आशा) घर पर ही सुई और पीने की दवा देकर उसका इलाज कर सकती हैं। माता–पिता को यह भी बताया जाना चाहिए कि इलाज के बाद भी शिशु मर सकता है और आशाइसके लिए जिम्मेदार नहीं होगी। घर पर इलाज शुरू करने से पहले, माता–पिता से पूर्व स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवा लेना आवश्यक है।

शिशु का क्या उपचार किया जाएगा ? (कितनी खुराक/कितने दिन)

जेन्टामाइसिन की सुई 6 मि.ग्रा. दिन में एक बार 10 दिन तक

कोट्रिमॉक्सेजॉल 1/4 चम्मच दिन में दो बार 10 दिन तक

आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?

दिन में दो बार, 10 दिन तक।

आप माता–पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में क्या बताएँगी ?

1. *शिशु के शरीर को गर्म रखें।*
2. *2–2 घंटे बाद स्तनपान कराएँ।*
3. *शिशु में खतरे वाले लक्षण देखते रहें और यदि उसकी हालत और खराब हो जाए तो तुरंत आशाको बुलाएँ।*

2. विमल ने जन्म के अनुमानित समय से 1 हफ्ते बाद शिशु को जन्म दिया। उसका वज़न 2.9 कि.ग्रा. था। वह तन्दुरुस्त और स्वस्थ था। आशाने विमल को उसे स्तनपान कराने में मदद की और 1 घंटे पर उसकी जाँच की। दसवें दिन माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ रहा है। उसका तापमान 93°F पाया गया। उसका वज़न 3 कि.ग्रा. था। वह दूध भी पी रहा था और रो भी रहा था, पर उसकी छाती अंदर को धँसी थी। उसका पेट मुलायम था और हाथ–पैर भी ठीक थे। उसकी नाल ठीक हो चुकी थी। आशाने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

आप सबसे पहले क्या करेंगी।

माता–पिता को बताएँगे कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है। उन्हें सलाह देंगे कि शिशु को अस्पताल ले जाएँ। यदि ऐसा करना संभव न हो तो बताएँ कि घर पर रहकर ही शिशु का इलाज हो सकता है और इसके लिए उनसे पूर्व स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवा लें। माता पिता से सन्मान पूर्वक बर्ताव करें , पर उन्हें स्थिति की गंभीरता के बारे में अवश्य जानकारी दें।

शिशु के उपचार करने के लिए, पूर्व स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर माता–पिता से हस्ताक्षर क्यों करवाना चाहिए ?

माता–पिता को बताया जाना चाहिए कि सेप्सिस (जन्तुदोष) एक गंभीर प्रकार का संक्रमण है। इलाज के बाद भी शिशु की मौत हो सकती है। शिशु को घर पर रखकर इलाज करवाने के लिए माता–पिता ही ज़िम्मेदार होंगे। उन्हें यह भी बताएँ कि इलाज के लिये एक सुई और पीने की दवा दी जाती है। कभी–कभी सुई लगने से शिशु को कुछ समस्या हो सकती है, पर इसके लिए आशा दोषी नहीं है।

आप क्या उपचार देंगी ? (कारण लिखें)

जेन्टामाइसिन सुई 15 मि.ग्रा. दिन में एक बार, 7 दिन तक

कोट्रिमॉक्सेजोल 1/4 चम्मच दिन में दो बार, 7 दिन तक

क्योंकि शिशु का वज़न 3 कि.ग्रा. है और वह ठीक समय पर जन्मा है।

लौट जाने से पहले आप माता–पिता को क्या–क्या बताएँगी ?

1. *शिशु के शरीर को गर्म रखें।*
2. *2–2 घंटे बाद स्तनपान कराएँ।*
3. *शिशु में खतरे वाले लक्षण देखते रहें और यदि उसकी हालत और खराब हो जाए तो तुरंत आशाको बुलाएँ।*

आप कितनी बार शिशु को देखने जाएँगी ?

दिन में दो बार 7 दिन तक।

3. ताराबाई को चौथा बच्चा होने वाला था। शिशु का जन्म 7 महीने 27 दिन के गर्भकाल पूरा होने पर हुआ और उसका वज़न 1.65 कि.ग्रा. था। शिशु ने 14 दिन तक स्तनपान नहीं किया। अठ्ठाईसवें दिन उसका वज़न 2.250 कि.ग्रा. हो गया था। आशाने दूसरे महीने में शिशु के घर जाना जारी रखा और उसका वज़न बढ़ाने की और अधिक कोशिश की। पैतालीसवें दिन शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज थे और माँ ने बताया कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता हैं। आपने उसका तापमान लिया और 94° फै. (34. 4° सें.) पाया और आशाने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

शिशु में जन्म के समय खतरे वाले क्या लक्षण दिखाई दिए ?

समय से पूर्व जन्मा। कम वज़न का और स्तनपान नहीं कर पा रहा।

सेप्सिस (जन्तुदोष) की पहचान के लिए कौन से लक्षण ध्यान में रखे गए ?

शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज और शरीर ठंडा (हाइपोथर्मिया)

आप माता–पिता को सेप्सिस (जन्तुदोष) और इसके उपचार के लिए पूर्व स्वीकृति लेने के बारे में क्या बताएँगी ?

माता–पिता को बतायेंगे कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है जोकि एक गंभीर प्रकार का संक्रमण है। उन्हें सलाह देंगे कि शिशु को अस्पताल ले जाएँ। यदि ऐसा करना संभव न हो तो शिशु को घर पर रखकर ही उसके इलाज के बारे में जानकारी दें और पूर्व स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवाएँ।

उपचार के लिए आप कितनी खुराक देंगी और कितने दिनों तक ?

जेन्टामाइसिन की सुई 9 मि.ग्रा. दिन में एक बार, 10 दिन तक

कोट्रिमॉक्सेजॉल 1/4 चम्मच दिन में दो बार, 10 दिन तक

शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में आप माता–पिता को क्या बताएँगी ?

शिशु को जन्म से ही खतरे वाले लक्षण हैं। नीयत समय से पूर्व जन्में शिशुओं की ज़्यादा देखभाल करनी पड़ती है। इसे सेप्सिस (जन्तुदोष) भी हो गया है अतः निम्न बातों का ध्यान रखें :

1. *शिशु का शरीर गर्म रखें।*
2. *उसे 2–2 घंटे पर स्तनपान कराएँ।*
3. *उसमें खतरे वाले लक्षण देखती रहें और यदि हालत अधिक बिगड़े , तो तुरंत आशाको बुलाएँ।*

मोड्यूल 15 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा जेन्टामायसिन की सुई से उपचार

सत्र 3 : फॉर्म भरना

दिवस : 3
समयावधि : 1 घं. 35 मि.

प्रयोजन

आशा को नवजात शिशु में सेप्सिस की पहचान और उपचार करने वाले फार्मों की जानकारी देना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यता आएँगी –

1. सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचार और शिशु की प्रगती का रिकार्ड रखने के लिए सेप्सिस (जन्तुदोष) उपचार फॉर्म का प्रयोग।

सामग्री

- घरों का दौरा फॉर्म का नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) निदान भाग (मॉ तथा नवजात शिशु का रिकार्ड)
- अभ्यासपत्र 1: केस अध्ययनः सेप्सिस उपचार के बाद होने वाली समस्याओं को पहचानना
- अभ्यासपत्र 2: सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म (इसमें – पूर्व स्वीकृति लेने वाला फॉर्म, देखभाल की योजना, अस्पताल भेजने के मापदण्ड तथा खुराक का चार्ट शामिल है।)
- अभ्यासपत्र 3: केस प्रस्तुति
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: केस प्रस्तुति के उत्तर (उनके प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षक संबंधित फॉर्म भरें जिसका प्रयोग इस सत्र के दौरान होगा)

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अभ्यासपत्र 1,2,3 की प्रतियाँ बना लें।
- प्रशिक्षणार्थियों को बताएँ कि वे मॉ तथा नवजात शिशु का रिकार्ड फॉर्म अपने साथ रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवँ चर्चा</u> (25 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. सेप्सिस देखभाल/उपचार से संबंधित तीनों फॉर्म सभी को बाँटें। 3 फॉर्म पहचानें। घरों का दौरा फॉर्म का नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) निदान भाग, पूर्व स्वीकृति लेने वाला फॉर्म, सेप्सिस उपचार फॉर्म।
2. आशाओं को नवजात शिशु सेप्सिस (जन्तुदोष) उपचार फॉर्म देखने दें। उन्हें बताएँ कि वे यह फॉर्म उस दिन से प्रयोग करें, जिस दिन शिशु का सेप्सिस के लिये उपचार शुरू हो।
3. सभी आशाओं को अभ्यासपत्र 3: केस प्रस्तुति बॉटे। पहली केस समझाएँ ओर दिखाएँ कि केस के आधारपर फॉर्म का सेप्सिस उपचार भाग कैसे भरना है। आशाओं को बाकी चार केस के आधारपर फॉर्म भरने दें।

4. अभ्यासपत्र 3 पूरा भरने के लिये आशाओं को 15 मिनट का समय दें। सभी आशाओं ने फॉर्म पूरा भरने के बाद उन्हें आपस में फॉर्म की अदलाबदली करने को कहें। प्रशिक्षक सही उत्तर बताएँ और आशाएँ एक दूसरे का अभ्यासपत्र जॉचे। प्रशिक्षक शंकाओं का समाधान करें।

केस प्रस्तुति (1 घंटा)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से कहें कि अब वे सेप्सिस फॉर्म भरने का पूरा अभ्यास करेंगी। इस में पूर्व स्वीकृती लेना, उपचार तथा अस्पताल भेजना शामिल है।
2. आशाओं को छोटे समुहों में बाँटें, या सभी को अलग–अलग कार्य करने दें
2. केस प्रस्तुति अभ्यासपत्र 3 तथा फॉर्म बाँटें।
3. 50 मि. के बाद सभी छोटे समूहों को मिलाकर एक साथ बुलाएँ और भरे हुए फॉर्मों की समीक्षा करें।
4. सभी की शंकाओं का समाधान करें।

सारांश : (10 मि.)

- किसी एक आशासे पूछें कि तीनों फॉर्मों से उन्हें कैसे मदद मिलती है।
- एक अन्य आशासे पूछें कि नवजात शिशुओं में सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान कैसे किया जाता है। (घरो का दौरा फॉर्म के सेप्सिस निदान भाग पर एक दिन में दो लक्षण दिखाई देना।)
- किसी अन्य आशासे पूछें कि सेप्सिस (जन्तुदोष) से ग्रस्त शिशु की कितनी बार और कितने दिनों तक उपचार/देखभाल की जानी चाहिए। (*जब तक दवा दी जा रही हो, तब तक दिन में 2 बार (नीयत समय पर जन्मे शिशु को 7 दिन तक, और समय से पूर्व जन्मे शिशु को 10 दिन तक)। इसके बाद भी शिशु को देखने के लिए जाती रहें; अधिक खतरे वाले शिशुओं के लिए महीने में 13 बार, सामान्य शिशुओ के लिए महीने में 5 बार; दूसरे महीने में, जिन्हे देखने जाना है उन्हें दूसरे माह में 4 बार*)

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचार और शिशु की प्रगती का रिकार्ड रखने के लिए सेप्सिस (जन्तुदोष) उपचार फॉर्म का प्रयोग।	केस उदाहरण / पूरे भरे फॉर्मों की जाँच। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी सेप्सिस के उपचार के लिए तथा शिशु की प्रगती का रिकार्ड रखने केलिये सेप्सिस उपचार फॉर्म का सही प्रयोग करें।	प्रत्येक आशा व्दारा भरा गया तथा आशाओं ने ही प्रशिक्षक ने बतायें उत्तरों के आधारपर जॉचा हुआ सेप्सिस उपचार फॉर्म।

केस अध्ययनः सेप्सिस उपचार के बाद होने वाली समस्याओं को पहचानना

1. आशा ने लता का सेप्सिस का उपचार जेन्टामायसिन की सुई से करना शुरू किया। पहले दिन उसने सुई लगाई। दूसरे दिन सुई की जगह सामान्य थी। तीसरे दिन सुई की जगह पर सूजी हुई थी।

उपचार

(1/4 चम्मच कोट्रिमॉक्सेजोल दिन में दो बार। समयपूर्व जन्में शिशुओं को 10 दिन, समय से जन्में शिशुओं को 7 दिन)

दिन	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई ?	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं
पिछली बार जहाँ सुई लगाई गई थी उसकी हालत सू–सूजी हुई ला–लाल सा–सामान्य		सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा
क्या कोट्रिमॉक्सेजॉल सिरप पिलाया गया?	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं

2. आशा श्याम का सेप्सिस का उपचार जेन्टामायसिन की सुई से कर रही थी। शिशु को रोज़ सुई लगी। सॉतवे दिन आशाने देंखा कि सुई की जगह लाल है।

उपचार

(1/4 चम्मच कोट्रिमॉक्सेजोल दिन में दो बार। समयपूर्व जन्में शिशुओं को 10 दिन, समय से जन्में शिशुओं को 7 दिन)

दिन	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई ?	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं
पिछली बार जहाँ सुई लगाई गई थी उसकी हालत सू–सूजी हुई ला–लाल सा–सामान्य		सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा
क्या कोट्रिमॉक्सेजॉल सिरप पिलाया गया?	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं

3. साजन को 5 दिन तक रोज जेन्टामायसिन की सुई लगी और सुई की जगह सामान्य थी। छठें दिन आशा ने देखा कि सुई की जगह सूजी हुई है।

उपचार

(1/4 चम्मच कोट्रिमॉक्सेजोल दिन में दो बार। समयपूर्व जन्में शिशुओं को 10 दिन, समय से जन्में शिशुओं को 7 दिन)

दिन	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई ?	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं
पिछली बार जहाँ सुई लगाई गई थी उसकी हालत सू–सूजी हुई ला–लाल सा–सामान्य		सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा
क्या कोट्रिमॉक्सेजॉल सिरप पिलाया गया?	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं

4. अशोक समय पर जन्मा शिशु था इसलिये उसका सेप्सिस का उपचार जेन्टामायसिन की सुई से 7 दिन किया गया। सभी सुईयों की जगह सामान्य थी।

उपचार

(1/4 चम्मच कोट्रिमॉक्सेजोल दिन में दो बार। समयपूर्व जन्में शिशुओं को 10 दिन, समय से जन्में शिशुओं को 7 दिन)

दिन	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई ?	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं
पिछली बार जहाँ सुई लगाई गई थी उसकी हालत सू–सूजी हुई ला–लाल सा–सामान्य		सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा
क्या कोट्रिमॉक्सेजोल सिरप पिलाया गया?	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं

5. जाई समय से पूर्व जन्मी थी। उसका सेप्सिस का उपचार जेन्टामायसिन की सुई से 10 दिन किया गया। छठें दिन आशा ने देंखा कि सुई की जगह सूजी हैं। बाकी सारे दिन सुई की जगह सामान्य थी।

उपचार

(1/4 चम्मच कोट्रिमॉक्सेजोल दिन में दो बार। समयपूर्व जन्में शिशुओं को 10 दिन, समय से जन्में शिशुओं को 7 दिन)

दिन	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई ?	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं
पिछली बार जहाँ सुई लगाई गई थी उसकी हालत सू–सूजी हुई ला–लाल सा–सामान्य		सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा	सू / ला / सा
क्या कोट्रिमॉक्सेजोल सिरप पिलाया गया?	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं

पूरक फॉर्म 5
आवश्यकतानुसार प्रयोग करें

सेप्सिस उपचार – पूर्व स्वीकृति फॉर्म

माँ का नाम ______________________ गाँव का नाम ______________

आशा का नाम ______________________ निदान की तारीख ______________

माँ अथवा पिता की स्वीकृति

मैं ______________________ निवासी ग्राम ______________

को आशा ने बताया है कि मेरा नवजात शिशु गंभीर रूप से बीमार है और उसकी जान को खतरा है। आशा ने शिशु को अस्पताल ले जाने के लिये बताया है पर मैं शिशु को अस्पताल नहीं ले जा सकता या मेरी इच्छा नहीं हैं। इसलिए मैं आशा को शिशु का दवा से और सुई लगाकर उपचार करने की स्वीकृति देता/देती हूँ। मुझे जानकारी है कि शिशु गंभीर रूप से बीमार है और उपचार के दौरान उसकी मृत्यु भी हो सकती है। ऐसा होने पर मैं आशा को मृत्यु का उत्तरदाई नहीं ठहराऊँगा (गी)।

हस्ताक्षर/अंगूठे का निशान

____

आशा का नाम ______________	तारीख ______________
प्रशिक्षक का नाम ______________ ब्लॉक ______________	कुल अंक ______________

पूरक फॉर्म 5
आवश्यकतानुसार प्रयोग करें

सेप्सिस उपचार फॉर्म

सेप्सिस उपचार का दिन ➔	1		2		3		4		5		6		7		8		9		10	
तारीख ➔																				
सुबह/शाम	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा	सु	शा
1 हाथ पैर लुंज पुंज																				
2 स्तनपान कम/बन्द																				
3 रोना धीमे/बन्द																				
4 पेट फूला हुआ उल्टी																				
5 तापमान सुबह नापे और लिखें																				
शाम																				
मॉं कहे कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है																				
6 छाती अंदर धँसी																				
7 टुंडी में मवाद																				
8 अन्य समस्याएँ (दिन लिखें)																				

पूरक फॉर्म 5
आवश्यकतानुसार प्रयोग करें

उपचार का रिकार्ड

जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई ?	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं	हाँ/नहीं
पिछली बार जहाँ सुई लगाई गई थी उसकी हालत ठी = ठीक सू = सूजी हुई सा–सामान्य	ठी/सू/सा	ठी/सू/सा	ठी/सू/सा	ठी/सू/सा	ठी/सू/सा	ठी/सू/सा	ठी/सू/सा	ठी/सू/सा	ठी/सू/सा	ठी/सू/सा
क्या कोट्रिमॉक्सेजॉल सिरप पिलाया गया ?	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नही	हाँ/नही हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नहीं	हाँ/नहीं हाँ/नही	हाँ/नहीं हाँ/नहीं

देखभाल करना

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1 क्या शिशु को ठीक से ओढाया गया?										
2 क्या शिशु को टोपी और फ्रॉक पहने था?										
3 क्या शिशु को नहलाया गया?										
4 क्या शिशु को माँ के पास/गर्म रखा गया?										
5 क्या शिशु को 2–2 घंटे पर स्तनपान कराया गया?										
6 माँ के नाखून साफ/कटे हुए हैं और वह अपने हाथ साबुन से धोती है?										
7 अन्य सेप्सिस (आँख, त्वचा, नाल) के लिए दवा ठीक से दी जा रही है										

अस्पताल भेजने के लिये मापदण्ड

यदि नीचे दिए लक्षणों में से कोई हो तो तुरंत अस्पताल भेजें। जिस दिन अस्पताल भेजा गया वह दिन लिखें।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1 एन्टीबायोटिक दवाएँ देने के 24 घंटे बाद तक भी शिशु की हालत में सुधार न हो रहा हो										
2 एक दिन तक गर्मी पहुँचाने की कोशिशो के बावजूद शिशु के शरीर का तापमान 95° फॅ (35° सें) से कम हो										
3 पूरे दिन प्रयत्न करने पर भी शिशु स्तनपान न कर रहा हो										
4 शिशु का शरीर अधिक पीला पड़ गया हो										
5 शिशु के मुँह, नाक और गुदा से खून निकल रहा हो										
6 टेटनेस हो गया हो; 4 दिन बाद यदि दूध पीना बंद कर दे, शरीर अकड़ जाए और मुँह न खुले।										
7 शिशु को दौरे पड़ें।										

सुपरवाईजर की टिप्पणी

यदि शिशु अब भी बीमार हो तो समस्या लिखें	**7 वें /10वें दिन परिणामः शिशु स्वस्थ है/अब भी बीमार है/मृत** **सुपरवाईजर के हस्ताक्षर** ______________________

सेप्सिस (जन्तुदोष) का उपचार

इसके लिए 2 एन्टीबायोटिक दवाएँ दी जाती हैं : जेन्टामाइसिन और कोट्रिमॉक्सेजोल

1. जेन्टामाइसिन की सुई दिन में एक बार

शिशु का वज़न	समय से पूर्व जन्मा: 8 माह 14 दिन से पहले	समय पूरा होने पर जन्मा या जन्म के बाद 1 महीना पूरा होने पर
1500 ग्रा. से कम	5 मि.ग्रा.	8 मि.ग्रा.
1500<2000 ग्रा. से कम	5 मि.ग्रा.	10 मि.ग्रा.
2000<2500 ग्रा. से कम	7 मि.ग्रा.	12 मि.ग्रा.
2500<3000 ग्रा. से कम	9 मि.ग्रा.	15 मि.ग्रा.
3000 ग्रा. या अधिक		18 मि.ग्रा.
	10 दिन तक दिन में एक बार	7 दिन तक दिन में एक बार

2. कोट्रिमॉक्सेजॉल सिरप (पीने की दवा) दिन में 2 बार

   समय पूरा होने पर जन्मा शिशु : एक चौथाई चम्मच दिन में 2 बार × 7 दिन

   समय से पूर्व जन्मा शिशु : एक चौथाई चम्मच दिन में 2 बार × 10 दिन

केस प्रस्तुति

1. अर्चना ने 17 अक्टूबर को सुबह 8 बजकर 30 मि. 45 से. पर एक लड़की को जन्म दिया। अर्चना का गर्भकाल 9 माह 7 दिन रहा। बच्ची ठीक से रो रही थी और साँस ले रही थी। उसका वज़न 2 कि. 800 ग्रा. था। उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं थें। आशा ने प्रसव के तुरंत बाद, उसे माँ के स्तनों से लगाया और उसने ठीक से स्तनपान भी किया।

   सोलहवें दिन आशा को घर बुलाया गया। माँ ने बताया कि लड़की का शरीर ठंडा पड़ रहा है। आशा ने उसके शरीर का तापमान लिया और उसे 93.5° फॅ. (34.2° सें.) पाया। जाँच करने पर पाया कि उसकी छाती अंदर को नहीं धँसी थी। उसका रोना कमजोर था। कल, 15 वें दिन के दौरे में लड़की का वज़न 3 कि.ग्रा. पाया गया। आशा ने निदान किया कि लड़की को सेप्सिस (जन्तुदोष) है।

   अब आप क्या करेंगी ?

   अब यह फॉर्म भरें।

   पूर्व स्वीकृति फॉर्म पर माता–पिता से हस्ताक्षर करवाने के बाद आप लड़की की जाँच करें और इलाज करना शुरू करें।

   वह कम स्तनपान कर रही हैं।

   बहुत धीमे रो रही हैं।

   मॉ कहती है कि शिशु का शरीर ठंड़ा है और मापने पर तापमान 93.5° फॅ. (34.2° सें.) है।

   उसका पेट मुलायम है और उसे उल्टी नहीं हो रही।

   छाती अंदर को धँसी नहीं है।

   उसकी नाल पकी नहीं है।

   आप उसे कितनी दवाएँ देंगी ?

   सेप्सिस उपचार वाला फॉर्म भरें (उचित खाने में ✓ या × का निशान लगाऍं)

   घर से जाते समय माता–पिता को बताएँ कि लड़की की घरेलू देखभाल कैसे करनी है। आप दोबारा जाने पर इन सबकी जाँच करेंगी (उसे ठीक से ओढ़ाना, 2–2 घंटे पर स्तनपान कराना, आदि) और सेप्सिस (जन्तुदोष) के उपचार वाले फॉर्म में भरेगी।

   लड़की को कब अस्पताल भेजें इस बारे में अंतिम प्रश्न नोट करें। इस पर निशान तभी लगाना है यदि शिशु को इनमें से कुछ लक्षण हों और तभी अस्पताल भेजना है।

   आप लड़की को देखने के लिए 7 दिन तक दिन में 2 बार जाएँगी।

   उपचार के पाँचवें दिन शाम को आपने दवा दी और पायाः

   - लड़की ठीक से स्तनपान कर रही है,
   - ठीक से रो रही है
   - उसके शरीर का तापमान 98.0° फॅ. (36.7° सें.) है।
   - पेट फूला हुआ नहीं है और उल्टी नहीं हो रही।

- छाती अंदर धँसी नहीं है
- नाल पकी नहीं हैं।
- दाई जाँघ में जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई, बाई जाँघ, जहाँ पिछली बार सुई लगी थी, बिल्कुल ठीक है।
- शिशु ठीक से टोपी, कपड़े पहने हुये है और उसे ओढ़ाया गया है।
- उसे माँ के पास लिटाया गया है
- माँ उसे 2–2 घंटे पर स्तनपान करा रही है।
- माँ के नाखून छोटे हैं और उसने बताया कि वह बच्ची को छूने से पहले अपने हाथ धोती है।
- बच्ची को किसी अन्य बीमारी की दवा नहीं दी जा रही और उसकी हालत में सुधार हो रहा है।
- उसमें खतरे वाले ऐसे कोई लक्षण नहीं है कि उसे अस्पताल भेजा जाए।

सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म भरें।

केस प्रस्तुति के उत्तर

1. अर्चना ने 17 अक्टूबर को सुबह 8 बजकर 30 मि. 45 से. पर एक लड़की को जन्म दिया। अर्चना का गर्भकाल 9 माह 7 दिन रहा। बच्ची ठीक से रो रही थी और साँस ले रही थी। उसका वज़न 2 कि. 800 ग्रा. था। उसके हाथ पैर लुंज पुंज नहीं थें। आशा ने प्रसव के तुरंत बाद, उसे माँ के स्तनों से लगाया और उसने ठीक से स्तनपान भी किया।

   सोलहवें दिन आशा को घर बुलाया गया। माँ ने बताया कि लड़की का शरीर ठंडा पड़ रहा है। आशा ने उसके शरीर का तापमान लिया और उसे 93.5° फॅ. (34.2° सें.) पाया। जाँच करने पर पाया कि उसकी छाती अंदर को नहीं धँसी थी। उसका रोना कमजोर था। कल, 15 वें दिन के दौरे में लड़की का वज़न 3 कि.ग्रा. पाया गया। आशा ने निदान किया कि लड़की को सेप्सिस (जन्तुदोष) है।

   अब आप क्या करेंगी ? माता–पिता को बच्ची की हालत और घर पर इलाज कराने के खतरों के बारे में पहले से बता दें। यदि वे बच्ची को अस्पताल नहीं ले जाना चाहते और घर पर रखकर इलाज करवाना चाहें, तो उनसे पूर्व स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवाएँ।

   अब यह फॉर्म भरें। निदान की तारीख है 1 नवम्बर (प्रसव की तारीख के 15 दिन बाद)

   पूर्व स्वीकृति फॉर्म पर माता–पिता से हस्ताक्षर करवाने के बाद आप लड़की की जाँच करें और इलाज करना शुरू करें।

   वह कम स्तनपान कर रही हैं।
   बहुत धीमे रो रही हैं।
   मॉ कहती है कि शिशु का शरीर ठंड़ा है और मापने पर तापमान 93.5° फॅ. (34.2° सें.) है।
   उसका पेट मुलायम है और उसे उल्टी नहीं हो रही।
   छाती अंदर को धँसी नहीं है।
   उसकी नाल पकी नहीं है।

   आप उसे कितनी दवाएँ देंगी ?

   जेन्टामाइसिन 15 मि.ग्रा. सुई दिन में 1 बार;
   कोट्रिमॉक्सेजोल 1/4 चम्मच दिन में 2 बार, 7 दिन तक

   सेप्सिस उपचार वाला फॉर्म भरें (उचित खाने में ✓ या × का निशान लगाएँ)

   उपचार का पहला दिन वाले दौरे का पहला खाना भरें

स्तनपान कम	✓
रोना बहुत धीमे	✓
मॉ कहती है कि शिशु का शरीर ठंड़ा है और मापने पर तापमान 93.5° फॅ. (34.2° सें.) है।	✓
पेट मुलायम है और उसे उल्टी नहीं हो रही।	×
छाती अंदर को नहीं धँसी	×
नाल पकी हुई नहीं	×

घर से जाते समय माता–पिता को बताएँ कि लड़की की घरेलू देखभाल कैसे करनी है। आप दोबारा जाने पर इन सबकी जाँच करेंगी (उसे ठीक से ओढ़ाना, 2–2 घंटे पर स्तनपान कराना, आदि) और सेप्सिस (जन्तुदोष) के उपचार वाले फॉर्म में भरेगी।

लड़की को कब अस्पताल भेजें इस बारे में अंतिम प्रश्न नोट करें। इस पर निशान तभी लगाना है यदि शिशु को इनमें से कुछ लक्षण हों और तभी अस्पताल भेजना है।

आप लड़की को देखने के लिए 7 दिन तक दिन में 2 बार जाएँगी।

उपचार के पाँचवे दिन शाम को आपने दवा दी और पायाः

- लड़की ठीक से स्तनपान कर रही है,
- ठीक से रो रही है
- उसके शरीर का तापमान 98.0° फॅ. (36.7° सें.) है।
- पेट फूला हुआ नहीं है और उल्टी नहीं हो रही।
- छाती अंदर धँसी नहीं है
- नाल पकी नहीं हैं।
- दाई जाँघ में जेन्टामाइसिन की सुई लगाई गई, बाई जाँघ, जहाँ पिछली बार सुई लगी थी, बिल्कुल ठीक है।
- शिशु ठीक से टोपी, कपड़े पहने हुये है और उसे ओढ़ाया गया है।
- उसे माँ के पास लिटाया गया है
- मॉं उसे 2–2 घंटे पर स्तनपान करा रही है।
- माँ के नाखून छोटे हैं और उसने बताया कि वह बच्ची को छूने से पहले अपने हाथ धोती है।
- बच्ची को किसी अन्य बीमारी की दवा नहीं दी जा रही और उसकी हालत में सुधार हो रहा है।
- उसमें खतरे वाले ऐसे कोई लक्षण नहीं है कि उसे अस्पताल भेजा जाए।

सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म भरें। पॉचवे दिन का शाम के दौरे का खाना भरें।

स्तनपान 'अच्छी तरह'	×
रोना – ठीक	×
तापमान – 98.0° फॅ. (36.7° सें.)	×
पेट – फूला हुआ नहीं, उल्टी नहीं	×
छाती अंदर धँसी नहीं	×
नाल – पकी हुई नहीं	×
जेन्टामाइसिन सुई नहीं लगायी गई (सुबह लगाई गई)	
कोट्रिमॉक्सेजॉल – ¼ चम्मच पिलाई	
पिछली बार की सुई – (दायाँ पैर) ठीक है	
शिशु ठीक से ढका है	– हाँ
टोपी, फ्रॅाक पहने है	– हाँ
नहलाया गया	– नहीं
मॉं के पास रखा हैं।	– हॉं
स्तनपान 2–2 घंटे पर	– हाँ
माँ के नाखून छोटे और साबुन से हाथ धोती है	– हाँ
अन्य सेप्सिस का उपचार	– आवश्यकता नहीं है।

मोड्यूल 15 : सेप्सिस (जन्तुदोष) : निदान तथा जेन्टामायसिन की सुई से उपचार

सत्र 4 : मूल्यांकन : केस अध्ययन एवं प्रात्यक्षिक

दिवस : 3

समयावधि : 1 घं. 30 मि.

प्रयोजन

आशाओंकी सेप्सिस (जन्तुदोष) के निदान, देखभाल तथा इलाज करने, माता–पिता को उचित सलाह देने, और ठीक प्रकार से फॉर्म भरने की योग्यताओं की जाँच करना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. आशाओं ने जैसे सीखा है वैसे प्रमाणित मार्गदर्शिका के अनुसार सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान और उपचार करना। लिखित परीक्षा में कम से कम 50 प्रतिशत और प्रात्यक्षिक परीक्षा में कम से कम 60 प्रतिशत अंक प्राप्त करना।

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1: लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: जेन्टामाइसिन सुई वाली जाँच सूची
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2: लिखित परीक्षा प्रश्नपत्र के उत्तर
- जेन्टामाइसिन की सुई तथा दवाई की शीशी (पानी का प्रयोग भी कर सकते है)
- गुडियाएँ/ बैंगन – सुई लगाने के लिए
- स्पिरिट, रूई, साबुन, पानी तथा प्रयोग की हुई सुईयॉ रखने के लिए प्लास्टिक डिब्बा

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अभ्यासपत्र 1 और 2 की प्रतियाँ तैयार रखें।
- जेन्टामाइसिन की शीशियाँ (पानी का प्रयोग भी कर सकते है) तथा सुईयाँ पर्याप्त संख्या मे उपलब्ध कराएँ। इनका प्रयोग प्रात्यक्षिक परीक्षा में होना है।
- ऊपर दी गयी सूची के अनुसार अन्य सामान तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन</u> (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं को अभ्यासपत्र 1: लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र बाँटें
2. प्रत्येक आशा प्रश्नपत्र स्वयं हल करे।
3. सभी आशाओं ने हल करने के बाद प्रश्नपत्र इकट्ठा कर लें।
4. प्रत्येक प्रश्न/उत्तर के बारे में चर्चा करें। सभी की समस्याओं का समाधान करें।
5. सारे प्रश्नपत्र जॉच कर अंक दें।

प्रशिक्षणार्थियों की प्रात्यक्षिक परीक्षा (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षक प्रत्येक आशा को जेन्टामाइसिन की विशिष्ट खुराक सुई में भरने को कहें। कितनी खुराक देनी हैं यह आशा को बताएँ। प्रशिक्षक जॉच सूची के अनुसार जेन्टामाइसिन की सही खुराक सिरिंज में भरने और सुई लगाने की योग्यता के लिये आशाओं का मूल्यांकन करें।
2. प्रत्येक आशा ने सुई लगाने की योग्यता का प्रदर्शन करने के बाद उससे पूछें कि उससे क्या गलतियाँ हुई है? यदि आशा ने कुछ गलतियाँ की हो तो तुरंत उसें समझाएँ और उन कदमों को सुधारने का अवसर दें।

सारांश :

- इस परीक्षा में प्राप्त अंक आशाओं को बताएँ। अच्छे काम के लिये आशाओं की प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
प्रमाणित मार्गदर्शिका के अनुसार सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान और उपचार करना	लिखित परीक्षा और प्रदर्शन। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी प्रमाणित मार्गदर्शिका के अनुसार सेप्सिस का सही निदान तथा उपचार करे।	प्रत्येक आशा ने हल किया हुआ लिखित प्रश्नपत्र। प्रत्येक आशा के जेन्टामायसिन की सुई लगाने के प्रदर्शन पर प्रशिक्षक व्दारा दिये गये अंक।

लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र

लिखित परीक्षा में अंक (कुल अंक 80, उत्तीर्णांक 40)

जेन्टामाइसिन की सुई लगाने का प्रदर्शन (20 अंक हर ठीक कदम के लिए 1 अंक। उत्तीर्णांक = 12)

कुल प्राप्तांक : (उत्तीर्णांक लिखित परीक्षा में 50 प्रतिशत या उससे अधिक, सुई लगाने के प्रदर्शन में 60 प्रतिशत या उससे अधिक)

नोट : दवाई की खुराक तय करने के लिये सेप्सिस उपचार फॉर्म देखें।

1. राम का जन्म 9 महीने पर हुआ और उसका वज़न 2 कि.ग्रा. था। वह जन्म के समय ठीक था, पर चौथे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया और उसने स्तनपान बंद कर दिया (2 अंक×12 = 24 अंक)

   1. उसका निदान क्या है ? ____________

   क्यों ? विशेष लक्षण क्या दिखे ?

   2. ____________

   3. ____________

   आप उसे क्या दवाएँ देंगी ?

   4. ____________

   5. ____________

   कितनी खुराक देंगी ?

   6. ____________

   7. ____________

   8. आप कितने दिन दवा देंगी ? ____________

   9. इस अवधि में आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ? ____________

   माता–पिता को आप घर पर शिशु की देखभाल के बारे में कौन सी 3 बाते बताएँगी ?

   10. ____________

   11. ____________

   12. ____________

2. नीता का जन्म 7 महीने पर हुआ और उसने पहले 7 दिनों तक ठीक से स्तनपान नहीं किया। चौथे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया, पर अन्य कोई लक्षण नहीं थे (2 अंक × 12 प्रश्न = 24)

   1. क्या उसे सेप्सिस है ? हाँ/नहीं

   2. क्यों या क्यों नही ? ____________

3. क्या नीता का स्तनपान न करना सेप्सिस का लक्षण है ? ____________
4. क्यों या क्यों नहीं ? ____________
5. नीता को क्या बीमारी है ? ____________
6. उस दिन आप क्या करेंगी ?

____

____

____

अगले दिन दोपहर में जाने पर आप पाती हैं कि उसकी स्थिति उसी प्रकार है। अगले दिन आपको बुलाया जाता है। आप पाती हैं कि उसका शरीर अभी भी ठंडा है तथा छाती अंदर को धँसी है। और उसका वज़न 1 कि. 850 ग्रा. है।

7. उसके रोग का क्या निदान है ? ____________
8. क्यों ? ____________

____

आप उसे क्या दवा और कितनी खुराक देंगी ?

9. ____________
10. ____________
11. आप दवा कितने दिन देंगी ? ____________
12. क्यों ? ____________

3. प्रत्येक शिशु को आप सुई व्दारा जेन्टामाइसिन की दवा कितनी और कितने दिन तक देंगी ? (2 अंक × 16 = 32 अंक)

1. शिशु का वज़न 2 कि. 150 ग्रा. है और वह 9 माह पर जन्मा है:

____

2. शिशु का वज़न 1 कि. 800 ग्रा. है और वह 8 माह पर जन्मा है:

____

3. शिशु का वज़न 2 कि. 300 ग्रा. है और वह 9 माह 5 दिन पर जन्मा है:

____

4. शिशु का वज़न 1 कि. 400 ग्रा. है और वह 7 माह 10 दिन पर जन्मा हैः

____

5. शिशु का वज़न 2 कि. 600 ग्रा. है और वह 9 माह पर जन्मा हैः

____

6. शिशु का वज़न 1 कि. 750 ग्रा. है और वह 8 माह 10 दिन पर जन्मा हैः

____

7. शिशु का वज़न 2 कि. 050 ग्रा. है और वह 8 माह 27 दिन पर जन्मा हैः

____

8. शिशु का वज़न 1 कि. 300 ग्रा. है और वह 7 माह पर जन्मा हैः

____

9. शिशु का वज़न 2 कि. 750 ग्रा. है और वह 9 माह पर जन्मा हैः

____

10. शिशु का वज़न 2 कि. है और वह 8 माह 28 दिन पर जन्मा हैः

____

11. शिशु का वज़न 1 कि. 900 ग्रा. है और वह 8 माह 13 दिन पर जन्मा हैः

____

12. शिशु का वज़न 2 कि. 250 ग्रा. है और वह 9 माह 3 दिन पर जन्मा हैः

____

13. शिशु का वज़न 2 कि. 400 ग्रा. है और वह 9 माह 7 दिन पर जन्मा हैः

____

14. शिशु का वज़न 1 कि. 500 ग्रा. है और वह 8 माह 7 दिन पर जन्मा हैः

____

15. शिशु का वज़न 1 कि. 900 ग्रा. है और वह 9 माह पर जन्मा हैः

____

16. शिशु का वज़न 2 कि. है और वह 8 माह 16 दिन पर जन्मा हैः

____

जेन्टामाईसिन की सुई लगाने के लिए जाँच–सूची

	आशा का नाम				
1.जेन्टामायसीन की शीशी, सिरिंज तथा स्पिरिट की बोतल निकालकर रखें। हाथ धोने वाली जाँच –सूची के अनुसार हाथ धोएँ					
2.रूई के चार फोहे बनायें और उन्हें स्पिरिट में भिगोयें।					
3.स्पिरिट में भीगे एक फोहे से हाथ पोछें और वह फोहा अगल रखें					
4.शिशु को लिटाकर उसकी जाँघ खोलें और सुई लगाने के लिये जगह चुनें।					
5. स्पिरिट में भीगा दूसरा रुई का फोहा लें और जिस जगह पर सुई लगानी है, वहाँ फोहा रखकर हाथ को गोलाई मे बाहर की तरफ घुमाते हुए पोंछे और फोहा अगल रख दें।					
6. स्पिरिट में भीगा रुई का तीसरा फोहा लें और शीशी के रबर का ढक्कन पोंछे।					
7. प्लास्टिक के खोल से सिरिंज बाहर निकालें, देखें कि दोनों ढक्कन का सील ठीक है। पहले पिचकारी का ढक्कन खोलें। फिर सुई का ढक्कन खोलें।					
8. सिरिंज की में जितनी दवा भरनी हो, उतनी पिचकारी बाहर की ओर खींचे, जिससे सिरिंज में उतनी हवा हवा आ जाए।					
9. सुई को शीशी के रबर के ढक्कन में डालें और पिचकारी को शीशी में अंदर धकेलें, जिससे हवा शीशी के अंदर जाए।					
10. सिरिंज और शीशी को उठाकर उलटा करें। ध्यान रहे कि सुई की नोक दवा में डूबी रहे। पिचकारी को बाहर की ओर खींचे, जिससे उसमें जितनी खुराक देनी है, उससे थोड़ी सी ज़्यादा दवा भर जाए।					
11. सिरिंज को शीशी से निकाल लें और सुई का मुँह ऊपर की ओर रखें। सिरिंज को उंगली से धीरे से मारे, जिससे हवा के बुलबुले ऊपर चले जाएँ।					
12. पिचकारी को धीरेसे सिरिंज के अंदर धकेलें, जिससे हवा का बुलबुला और खुराक से ज्यादा दवा बाहर निकल जाए। जितनी दवा चाहिये उतनी पिचकारी को अंदर धकेले जिससे की पिचकारी की काली रिंग सिरिंज में, तय कि हुई खुराक तक जाएँ। अब सिरिंज में खुराक के अनुसार पर्याप्त दवा होगी।					
13. सिरींज को एक हाथ में पकड़ें					
14. स्पिरिट में भीगा रुई का चौथा फोहा लें और उस जगह पर फोहा रखकर हाथ गोलाई मे घुमाकर फिर पोंछे और इस फोहे को बचाकर अलग रख दें।					
15. दूसरे हाथ से सुई लगाने वाली जगह की त्वचा को खींचकर पकड़ें। सुई सीधी खड़ी करके उसे जाँघ में लगा दें।					
16. सिरिंज की पिचकारी को पूरा दबाएँ जिससे सारी दवा अंदर चली जाए।					
17. सिरिंज को खड़ा रखते हुए सुई को बाहर निकाल लें और त्वचा छोड़ दें। स्पिरिट के भीगे रुई के चौथे फोहे से त्वचा को पोंछे।					
18. जाँचे कि सुई लगाने की जगह से खून तो नहीं निकल रहा। यदि निकल रहा हो, तो 3–4 मिनट के लिये रुई का फोहा लगाकर दबा दें					
19. घर ले जाकर संभालकर रखने के लिये सिरिंज को प्लास्टिक बाक्स में तथा खाली शीशीयॉं अन्य डिब्बे में रख दें।					
20. घर ले जाने के लिये रूई के प्रयुक्त फोहे अलग डिब्बे में डालें। घर में सुई का प्रयुक्त सामान संभालकर रखें जिसे आपने जैसा पहले सीखा है उस प्रकार से नष्ट कराना है।					

लिखित प्रश्न परीक्षा पत्र के उत्तर

लिखित परीक्षा में अंक (कुल अंक 80, उत्तीर्णांक 40)

जेन्टामाइसिन की सुई लगाने का प्रदर्शन (20 अंक, हर ठीक कदम के लिए 1 अंक। उत्तीर्णांक = 12)

कुल प्राप्तांक : (उत्तीर्णांक लिखित परीक्षा में 50 प्रतिशत या उससे अधिक, सुई लगाने के प्रदर्शन में 60 प्रतिशत या उससे अधिक)

नोट : दवाई की खुराक तय करने के लिये सेप्सिस उपचार फॉर्म देखें।

1. राम का जन्म 9 महीने पर हुआ और उसका वज़न 2 कि.ग्रा. था। वह जन्म के समय ठीक था, पर चौथे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया और उसने स्तनपान बंद कर दिया (2 अंक×12 = 24 अंक)

   1. उसका निदान क्या है ? **सेप्सिस**

   क्यों ? विशेष लक्षण क्या दिखे ?

   2. **शरीर ठंडा पड़ गया था**
   3. **स्तनपान बंद हो गया था**

   आप उसे क्या दवाएँ देंगी ?

   4. **जेन्टामाइसिन**
   5. **कोट्रिमॉक्सेज़ोल**

   कितनी खुराक देंगी ?

   6. **जेन्टामाइसिन 12 मि.ग्रा. दिन में 1 बार**
   7. **कोट्रिमॉक्सेज़ॉल 1/4 चम्मच दिन में 2 बार**

   8. आप कितने दिन दवा देंगी ? **7 दिन**

   9. इस अवधि में आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ? **दिन में 2 बार × 7 दिन**

   माता–पिता को आप घर पर शिशु की देखभाल के बारे में कौन सी 3 बाते बताएँगी ?

   10. **शिशु को गर्म रखें (माँ के पास चिपकाकर रखें, कपड़े पहनाएँ)**

   11. **कई बार स्तनपान कराएँ, हर 2 घंटे के बाद**

   12. **यदि शिशु की हालत बिगड़े, तो तुरंत आशाको बुलाएँ**

2. नीता का जन्म 7 महीने पर हुआ और उसने पहले 7 दिनों तक ठीक से स्तनपान नहीं किया। चौथे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया, पर अन्य कोई लक्षण नहीं थे (2 अंक × 12 प्रश्न = 24)

   1. क्या उसे सेप्सिस है ? हाँ/**नहीं**

   2. क्यों या क्यों नही ? **उसमें चौथे दिन केवल एक लक्षण था – शरीर ठंडा (हाइपोथर्मिया)**

   3. क्या नीता का स्तनपान न करना सेप्सिस का लक्षण है ? **नही**

4. क्यों या क्यों नहीं ? **क्योंकि वह जन्म के समय से ही स्तनपान नहीं कर रही थी।**

5. नीता को क्या बीमारी है ? **हाइपोथर्मिया**

6. उस दिन आप क्या करेंगी ? **माँ को शिशु के शरीर को गर्म करना सिखाएँ। बताएँ कि वह शिशु को अपने शरीर से चिपकाकर रखे और थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान कराती रहे। बताए कि आप दोपहर में शिशु का तापमान लेने फिर आएगी।**

अगले दिन दोपहर में जाने पर आप पाती हैं कि उसकी स्थिति उसी प्रकार है। अगले दिन आपको बुलाया जाता है। आप पाती हैं कि उसका शरीर अभी भी ठंडा है तथा छाती अंदर को धँसी है। और उसका वज़न 1 कि. 850 ग्रा. है।

7. उसके रोग का क्या निदान है ? **सेप्सिस (जन्तुदोष)**

8. क्यों ? **उसमें एक ही दिन में 2 लक्षण दिखाई दिए – शरीर का ठंडा होना और छाती अंदर को धँसी होना।**

आप उसे क्या दवा और कितनी खुराक देंगी ?

9. **जेन्टामाइसिन 6 मि.ग्रा. दिन में 1 बार**

10. **कोट्रिमॉक्सेज़ोल 1/4 चम्मच दिन में 2 बार**

11. आप दवा कितने दिन देंगी ? **10 दिन**

12. क्यों ? **शिशु का जन्म समय से पहले हुआ था।**

3. प्रत्येक शिशु को आप सुई व्दारा जेन्टामाइसिन की दवा कितनी और कितने दिन तक देंगी ? (2 अंक × 16 = 32 अंक)

1. शिशु का वज़न 2 कि. 150 ग्रा. है और वह 9 माह पर जन्मा है:
   12 मि.ग्रा प्रतिदिन × 7 दिन
2. शिशु का वज़न 1 कि. 800 ग्रा. है और वह 8 माह पर जन्मा है:
   6 मि.ग्रा प्रतिदिन × 10 दिन
3. शिशु का वज़न 2 कि. 300 ग्रा. है और वह 9 माह 5 दिन पर जन्मा है:
   12 मि.ग्रा प्रतिदिन × 7 दिन
4. शिशु का वज़न 1 कि. 400 ग्रा. है और वह 7 माह 10 दिन पर जन्मा है:
   5 मि.ग्रा प्रतिदिन × 10 दिन
5. शिशु का वज़न 2 कि. 600 ग्रा. है और वह 9 माह पर जन्मा है:
   15 मि.ग्रा प्रतिदिन × 7 दिन

6. शिशु का वज़न 1 कि. 750 ग्रा. है और वह 8 माह 10 दिन पर जन्मा है:
6 मि.ग्रा प्रतिदिन × 10 दिन

7. शिशु का वज़न 2 कि. 050 ग्रा. है और वह 8 माह 27 दिन पर जन्मा है:
12 मि.ग्रा प्रतिदिन × 7 दिन

8. शिशु का वज़न 1 कि. 300 ग्रा. है और वह 7 माह पर जन्मा है:
5 मि.ग्रा प्रतिदिन × 10 दिन

9. शिशु का वज़न 2 कि. 750 ग्रा. है और वह 9 माह पर जन्मा है:
15 मि.ग्रा प्रतिदिन × 7 दिन

10. शिशु का वज़न 2 कि. है और वह 8 माह 28 दिन पर जन्मा है:
12 मि.ग्रा प्रतिदिन × 7 दिन

11. शिशु का वज़न 1 कि. 900 ग्रा. है और वह 8 माह 13 दिन पर जन्मा है:
6 मि.ग्रा प्रतिदिन × 10 दिन

12. शिशु का वज़न 2 कि. 250 ग्रा. है और वह 9 माह 3 दिन पर जन्मा है:
12 मि.ग्रा प्रतिदिन X 7 दिन

13. शिशु का वज़न 2 कि. 400 ग्रा. है और वह 9 माह 7 दिन पर जन्मा है:
12 मि.ग्रा प्रतिदिन X 7 दिन

14. शिशु का वज़न 1 कि. 500 ग्रा. है और वह 8 माह 7 दिन पर जन्मा है:
6 मि.ग्रा प्रतिदिन X 10 दिन

15. शिशु का वज़न 1 कि. 900 ग्रा. है और वह 9 माह पर जन्मा है:
10 मि.ग्रा प्रतिदिन X 7 दिन

16. शिशु का वज़न 2 कि. है और वह 8 माह 16 दिन पर जन्मा है:
12 मि.ग्रा प्रतिदिन X 7 दिन

प्रशिक्षण कार्यशाला 6 : सारांश तथा गाँव में कार्य करने की योजना बनाना

दिवस : 3
समयावधि : 1 घं.

प्रयोजन

जो इस प्रशिक्षण के दौरान (प्रशिक्षण कार्यशाला 6 मोड्यूल 14 तथा 15) के दौरान सीखा, उसकी समीक्षा करना। आने वाले दिनों में समुदाय के बीच आशाओंको जो कार्य करना है, उसकी योजना बनाना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यतायें आएँगी:

1. बता पाना कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला के बाद समुदाय के बीच क्या–क्या कार्य करने है।

सामग्री

- बैग तथा मास्क
- गले के स्त्राव निकालने वाला उपकरण (चूषण पम्प)
- कोट्रिमॉक्सेज़ोल

तैयारी

- उपर दिया सारा सामान तैयार रखें। आशा अपने गॉंव लौटते समय अपने साथ तीन गले का स्त्राव निकालने वाले उपकरण, एक बैग तथा मास्क और पॉंच बोतल कोट्रिमॉक्सेजोल ले जायेगी।

प्रशिक्षण विधि:

प्रश्नोत्तर/ चर्चा (55 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से पूछें की इस प्रशिक्षण के दौरान उन्होने क्या नया सीखा है (दम घुटे शिशु की पहचान तथा गले का स्त्राव निकालने वाले उपकरण से तथा बैग और मास्क की सहायता से उसका उपचार, सेप्सिस का निदान तथा मुँह से कोट्रिमॉक्सेज़ोल और जेन्टामायसिन की सुई देकर उसका उपचार, सेप्सिस के उपचार वाला फॉर्म भरना, तथा खतरे के लक्षणों वाले शिशुओं के माता–पिता को उनकी घर पर ही देखभाल के लिए परामर्श देना)
2. बतायें कि आशाओं को बैग और मास्क दिया गया है पर वे शिशुओं पर उसका प्रयोग करना आरंभ न करें। फिलहाल, दम घुटे शिशु के उपचार का अभ्यास करने के लिये उन्हें वह दिया गया हैं। बतायें कि अगली प्रशिक्षण कार्यशाला में दम घुटे शिशु तथा सेप्सिस के उपचार के लिये उनका मूल्यांकन किया जाएगा। आशायें नियमित रूप से इन विषयों के अध्ययनपत्र पढ़ती रहें और योग्यताओं का अभ्यास कर माहरत हासिल करें। मूल्यांकन में जिन आशाओं का काम सन्तोषजनक होगा उन्हें जेन्टामायसिन की सुई का भंडारण दिया जायेगा और वे नवजात शिशु के सेप्सिस का उपचार करना आरंभ करेगी। जरूरत के अनुसार बैग और मास्क का प्रयोग कर वे दम घुटे शिशु का उपचार करना भी आरंभ करेगी।

3. कुछ छूट गया हो तो उसे जोड़ दें।
4. बतायें कि अब आशाएँ प्रशिक्षण के अंत की ओर बढ़ रही हैं। इस अवधि में सुपरवाईज़र उनके काम के निरीक्षण तथा मूल्यांकन हेतु महीने में दो बार दौरे पर आयेंगे। गुड़िया पर, दम घुटे शिशु का बैग और मास्क से उपचार का प्रदर्शन तथा जेन्टामायसिन की सुई लगाने का प्रदर्शन भी सुपरवाईजर देखेंगे।
5. प्रत्येक दौरे में सुपरवाईज़र जॉच सूची के आधारपर आशा के काम का मूल्यांकन करेंगे। इससे, आशाओं की कुछ गलतियाँ हो तो उन्हें सुधारने का उन्हें अवसर मिलेगा। प्रत्येक आशा का मूल्यांकन आशा का प्रशिक्षण तथ़ा काम में प्रगति का रिकार्ड में लिखा जायेगा।
6. आशाएँ गॉव में कौनसे फॉर्म भरने वाली है उसकी उन्हें याद दिलाएँ। आशाएँ अपने पास के विविध फॉर्मो को बीच बीच में देखें और जो फॉर्म उनके पास अधिक संख्या में न हो उन्हें समय से सुपरवाईजर को मॉग लें।

सारांश (5 मि.)

- प्रशिक्षणार्थियों से पूछें कि समुदाय में कार्य करने के लिए वे स्वयं को कैसे सुनियोजित करेंगी जिससे सभी कार्य वे ठीक प्रकार से कर सके।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बता पाना कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला के बाद आशा को समुदाय के बीच क्या कार्य करने है। सभी आशाएँ गॉव लौटते समय सारा सामान साथ ले जाएँ जो गॉव में काम करने के लिये आवश्यक है।	प्रश्नोत्तर	आशाओं की सूची तथा आशाओं को दिये गये सामान की सूची। प्रशिक्षक व्दारा भरा गया प्रशिक्षक प्रपत्र 1।

प्रशिक्षण कार्यशाला 6 और 7 में किसी को भी जेन्टामायसिन की सुई की शीशीयों का भंडारण न दें। मूल्यांकनकर्ता व्दारा प्रमाणित किये जाने पर आशाओं को जेन्टामायसिन सुई की शीशीयॉ दी जाएँगी।

नवजात शिशु तथा बच्चों की घर में देखभालः 'आशा' प्रशिक्षण कैसे करें

प्रशिक्षण कार्यशाला 7

मोड्यूल 16 : नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम

समयसूची
आशा प्रशिक्षण की प्रशिक्षण कार्यशाला 7
मोड्यूल 16 तथा 9क (बीमार बच्चा)

समय	दिवस 1	दिवस 2	दिवस 3
सुबह का सत्र 8.30 से 12.30 दोपहर का सत्र 13.30 से 17.30	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (15 मि.) मोड्यूल 16 : नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 6 (मोड्यूल 14 एवं 15) के बाद कार्यक्षेत्र के अनुभवों की समीक्षा (1 घंटा 30 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 2 : जन्मतेही शिशु का दम घुटना तथा सेप्सिस के उपचार के लिए आशाओं का अंतिम मूल्यांकन (2 घंटे) भोजन (1 घंटा 30 मि.) सत्र 2 : (मूल्यांकन जारी) जन्मतेही शिशु का दम घुटना तथा सेप्सिस के उपचार के लिए आशाओं का अंतिम मूल्यांकन (1 घंटा) चाय (15 मि.) सत्र 3 : बीमार नवजात शिशु तथा मॉ को अस्पताल भेजना। (2 घंटे)	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (10 मि.) सत्र 4 : मॉ तथा नवजात शिशु के रिकार्डो की समीक्षा (2 घंटे) चाय (15 मि.) सत्र 5 : स्वास्थ्य के विषय पर वार्ता का आयोजन करना (1 घंटा 20 मि.) भोजन (1 घंटा 15 मि.) सत्र 6 : शिशु की निरंतर देखभाल के परामर्श कार्डो का प्रयोग (1 घंटा 30 मि.) मोड्यूल 9 : बीमार शिशु की देखभाल तथा टीकाकरण और पोषण के लिए परामर्श 9क : परामर्श तथा पुनः जॉच सत्र 1 : बच्चें के आहार का आंकलन करना तथा आहार संबंधी समस्याओं को पहचानना (1 घंटा 30 मि.) चाय (15 मि.) सत्र 2 : आहार संबंधी सुझाव (1 घंटा 30 मि.)	गीत, पिछले दिवस की समीक्षा (10 मि.) सत्र 3 : आहार संबंधी परामर्श (1 घंटा 30 मि.) सत्र 4 : फॉलो अप (1 घंटा 30 मि.) चाय (15 मि.) प्रशिक्षण कार्यशाला 7 : सारांश तथा गॉव में कार्य करने की योजना बनाना (40 मि.) संक्षेप में दोहराना तथा समापन 15 मि.) भोजन
शाम	संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल	संक्षेप में दोहराना (15 मि.) खेल	
मनोरंजन	समूह चर्चा : शराब	वक्तृत्व : गॉव में झगड़े	

आशयसूची

प्रशिक्षण कार्यशाला 7

पृष्ठ संख्या

मोड्यूल 16 :	नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम	
सत्र 1 :	**प्रशिक्षण कार्यशाला 6 (मोड्यूल 14 एवं 15) के बाद कार्यक्षेत्र के अनुभवों की समीक्षा**	657
अभ्यासपत्र 1 :	मूल्यांकन प्रश्नपत्र	660
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 :	मूल्यांकन प्रश्नपत्र के उत्तर	665
सत्र 2 :	**जन्मतेही शिशु का दम घुटना तथा सेप्सिस के उपचार के लिए आशाओं का अंतिम मूल्यांकन**	670
अभ्यासपत्र 1 :	लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र	672
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 :	लिखित परीक्षा प्रश्नपत्र के उत्तर	676
प्रशिक्षक प्रपत्र 2 :	अंकतालिका	680
सत्र 3 :	**बीमार नवजात शिशु तथा माँ को अस्पताल भेजना**	681
अध्ययनपत्र 1 :	अस्पताल कब भेजे	687
अभ्यासपत्र 1 :	अस्पताल भेजने के लिए पर्ची (माँ तथा नवजात शिशु के लिए)	689
अभ्यासपत्र 2 :	अस्पताल भेजने की पर्ची भरने के लिए केस प्रस्तुति	690
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 :	केस प्रस्तुति के आधारपर भरी हुई अस्पताल भेजने के लिए पर्ची, नवजात शिशु के लिए	691
सत्र 4 :	**माँ तथा नवजात शिशु के रिकार्डो की समीक्षा**	692
अध्ययन पत्र 1 :	घर घर जाने पर आशा के कार्यो का क्रम	697
अभ्यासपत्र 1 :	अलग अलग स्थितियों की सूची	698
प्रशिक्षक प्रपत्र 1 :	अभ्यासपत्र 1 का उत्तर पत्र	701
सत्र 5 :	**स्वास्थ्य के विषय पर वार्ता का आयोजन करना**	704
अभ्यासपत्र 1 :	स्वास्थ्य के विषय में वार्ताओं का आयोजन करने के लिए स्थानिक जानकारी	707
सत्र 6 :	**शिशु की निरंतर देखभाल के परामर्श कार्डो का प्रयोग**	708
प्रशिक्षण कार्यशाला 7 :	सारांश तथा गॉव में कार्य करने की योजना बनाना	712

मोड्यूल 16 : नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम

सत्र 1 : प्रशिक्षण कार्यशाला 6 (मोड्यूल 14 एवं 15) के बाद कार्यक्षेत्र के अनुभवों की समीक्षा

दिवस : 1

समयावधि : 1 घं. 30 मि.

प्रयोजन

आशा को पिछले प्रशिक्षण के पश्चात् क्षेत्र में हुए अनुभवों के बारे में चर्चा करने का अवसर देना, उनके प्रश्नों तथा शंकाओं का समाधान करने के बारे में विचार करना, तथा जिन विषयों में अधिक अभ्यास अथवा स्पष्टीकरण चाहिए, उनकी पहचान करना। पिछले मूल्यांकन में जो आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक नहीं था उनका मूल्यांकन करना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यताएँ आयेंगीः

1. पिछले माह क्षेत्र में किये गये कार्य से प्राप्त हुये अनुभवों, उनसे ली गयी शिक्षा तथा कठिनाइयों के बारे में विचारों का आदान–प्रदान।

सामग्री

- आशा का क्षेत्र में काम तथा प्रशिक्षण में प्रगती का रिकार्ड
- अभ्यासपत्र 1 : मूल्यांकन प्रश्नपत्र
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : मूल्यांकन प्रश्नपत्र के उत्तर
- गले का स्त्राव निकालने वाला उपकरण (चूषण पम्प)
- बैग और मास्क
- कृत्रिम सॉस देने के लिए गुड़िया
- शिशु को पोंछने तथा लपेटने के लिए कपड़ा (दम घुटे शिशु के उपचार की पूरी प्रक्रिया के लिए)
- शिशु के कंधों के नीचे रखने के लिए तह किया हुआ कपड़ा
- जेन्टामाइसिन की शीशियाँ
- सिरिंज
- रूई तथा स्पिरिट
- स्वास्थ्य शिक्षा चित्र पुस्तिका
- ब्लैक बोर्ड तथा चॉक

तैयारी

- कार्यशाला के पूर्व प्रशिक्षक एवं सुपरवाईजर एक बैठक करें। बैठक के दौरान प्रत्येक आशा का सुपरवाईजर व्दारा गॉव में भरा गया काम तथा प्रशिक्षण में प्रगति का रिकार्ड तथा उसकी समस्याओं पर चर्चा हो और यह सारी बातें सुपरवाईजर प्रशिक्षक को अवगत कराएँ। इस प्रकार तैयारी कर लेने से अगली प्रशिक्षण

कार्यशाला आरंभ होने से पहले प्रशिक्षक एवं सुपरवाईजर को आशा की प्रशिक्षण संबंधी जरूरतों का पूरा पूरा ज्ञान होगा।

- आशा को पहले से बता दें कि वें स्वास्थ्य शिक्षा चित्र पुस्तिका तथा अध्ययन पत्र अपने साथ रखें।
- पिछले मूल्यांकन में जो आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक नहीं था उनके मूल्यांकन के लिए उपर दिया हुआ सारा सामान तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति/चर्चा</u> (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

1. प्रशिणार्थियों को गोले में बिठायें।
2. प्रत्येक आशा से कहें कि पिछले माह, क्षेत्र में किये कार्य का सारांश प्रस्तुत करें। बतायें कि उसमें निम्न बातें अवश्य प्रस्तुत करें।(इन्हे बोर्ड पर लिख दें)
    - क्या उनमें से किसी ने दम घुटा शिशु देखा?
    - आशा ने यदि ऐसे किसी शिशु का चूषण पम्प के प्रयोग से उपचार किया हो तो परिवार की प्रतिक्रिया क्या रही?
    - क्या किसी ने सेप्सिस से ग्रस्त शिशु का कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार किया हैं?
    - जिन परिवारों के बीच रहकर उसने कार्य किया उनकी प्रतिक्रिया।
    - यदि आशा ने दाई की उपस्थिति में शिशु का चूषण पम्प के प्रयोग से उपचार किया हो तो दाई की प्रतिक्रिया।
    - बैग तथा मास्क प्रयोग करने का अभ्यास करने में कोई कठिनाई।
    - यदि शिशु जन्मते ही रोया नहीं अथवा साँस नहीं ली, तो ऐसे में परिवार की प्रतिक्रिया।
    - क्या परिवार के लोगों ने दम घुटे शिशु का चूषण पम्प के प्रयोग से उपचार करवाया?
    - आशा द्वारा सेप्सिस के उपचार के लिये शिशु को अस्पताल भेजने की सलाह देने पर परिवार की क्या प्रतिक्रिया रही।
3. प्रशिक्षक समय का ध्यान रखे तथा शंकाओं का समाधान करे।
4. यदि आवश्यक हो तो किसी विशेष विषय पर सामूहिक रूप से चर्चा करें।
5. जिन विषयों पर प्रशिक्षणार्थियों को अधिक अभ्यास/ जानकारी चाहिए, वह नोट कर लें।
6. आशा का क्षेत्र में काम तथा प्रशिक्षण का रिकार्ड देखें। आशा के गॉव में काम के बारे में विशिष्ट जानकारी उसे दें तथा आशा ने गॉव में कैसा काम किया है यह भी बताएँ। यदि किसी आशा को अधिक सहायता की आवश्यकता हो तो सत्र की समाप्ति पर उनसे अलग से चर्चा करें तथा समय दें।
7. यदि आशाओं के क्षेत्र में काम तथा प्रशिक्षण का रिकार्ड देंखकर ऐसा लगे कि आशाओं की योग्यताओं में कमी है तो उस विषय की समीक्षा करें तथा उसे दोहराएँ।
8. पिछली प्रशिक्षण कार्यशाला में जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक नहीं था उनके मूल्यांकन के लिये प्रशिक्षक समय निश्चित करें।

नाटक खेलनाः (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

1. प्रशिणार्थियों को 4–5 समूहों में बॉटें।
2. प्रत्येक समूह को एक विषय चूनने दें। जैसे – सकारात्मक या कठिन स्थिति जिसके बारे में आशाओं ने चर्चा की हो या जिस के बारे में सभी को चिंता हो (जन्मतेही दम घुटे शिशु का चूषण पम्प से उपचार, सेप्सिस का कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार, आदि)। कठिनाईयों का सामना कैसे करें या सकारात्मक अनुभव से उसे गॉव में काम करने में कैसे मदद मिलेगी इस के बारे में सभी समूहों में चर्चा हो। भूमिका नाटक, कहानी या प्रस्तुति के माध्यम से आशाएँ अपने अनुभवों का प्रदर्शन करें। (10 मि.)
3. प्रत्येक समूह अपने अनुभवों को प्रस्तुत करें और उस पर चर्चा हो। (5 से 10 मि.)

सारांश (5 मि.)

- आशाओं के गॉव में काम का सुपरवाईजर ने किया हुआ मूल्यांकन कैसा रहा इसके बारे में प्रशिक्षक आशाओं को बताएँ।
- गॉव में आशाओं के काम का सारांश करें। जिन विषयों को दोहराने की आवश्यकता हो उसके बारे में भी बताएँ। ऐसे विषयों की इसी प्रशिक्षण के दौरान अलग से समय निकालकर समीक्षा करें।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
पिछले माह क्षेत्र में किये गये कार्य से प्राप्त हुये अनुभवों, उनसे ली गयी शिक्षा तथा कठिनाइयों के बारे में विचारों का आदान–प्रदान।	चर्चा	प्रशिक्षक व्दारा निरीक्षण

मूल्यांकन प्रश्नपत्र (अधिकतम अंक 60 उत्तिर्णांक 30 (50 प्रतिशत), समय 1 घंटा 30 मि.)

सारे प्रश्न हल करने है। (प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक)

प्रश्न 1. आमगॉव की शीला 4 महीने की गर्भवती है। वह अपने माता पिता से मिलने गॉव में आई हैं। दो महीने गॉव में रहेगी। गर्भवती महीलाओं की सूची तैयार करते समय आप उसके मॉ के घर जाती हैं।

क. क्या आप शीला का नाम गर्भवती महीलाओं की सूची में लिखेंगी? हॉ / नहीं

ख. क्या आप शीला का नाम गर्भधारण योग्य महीलाओं की सूची में लिखेंगी? हॉ / नहीं

प्रश्न 2. राम का जन्म 10 दिसम्बर 2006 को हुआ। आप प्रसव के समय उपस्थित थी। दूसरे दिन आप मॉ तथा शिशु को देखने गई। शिशु की जॉच करते समय आप ने पाया कि उसकी नाल पर हल्दी तथा तेल लगाया है। आप ने नाल की देखभाल के बारे में क्या बताया है? दो सही उत्तरों पर गोला करें

- नाल को ढॅककर रखें
- डेटॉल लगाएँ
- नाल को साफ और सूखा रखें
- नालपर कसकर कपड़ा बॉधे
- पाउडर लगाएँ
- कुछ भी न लगाएँ

प्रश्न 3. आप प्रसव के समय उपस्थित हो तो सामान्य शिशु पैदा होने पर एक घंटे के अंदर आप क्या क्या करती है? दो सही उत्तरों पर गोला करें

- स्तनपान शुरू कराना
- शिशु को नहलाना
- शिशु का कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार
- शिशु को पोंछें
- शिशु को लपेटे
- मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दें

प्रश्न 4. निम्न प्रत्येक के लिये यह निश्चित करें कि क्या समस्या का होना अस्पताल भेजने के लिए आपात्स्थिती है या नहीं।

क. धुंधला दिखाई देना	आपात्स्थिती नहीं / आपात्स्थिती
ख. पिछली गर्भधारणा का बुरा अनुभव	आपात्स्थिती नहीं / आपात्स्थिती
ग. बच्चेदानी में एक से अधिक गर्भ का होना	आपात्स्थिती नहीं / आपात्स्थिती
घ. बच्चेदानी में शिशु का हिलना बंद होना	आपात्स्थिती नहीं / आपात्स्थिती

आशा का नाम ______________________ तारीख ____________

प्रशिक्षक का नाम ______________________ कुल अंक ____________

ब्लॉक ______________________

प्रश्न 5. निम्न प्रत्येक उदाहरण में निश्चित करें कि वह गर्भपात है, मृत शिशु जन्म हैं या नवजात शिशु मृत्यु। सही उत्तर पर गोला करें।

क. गर्भावस्था के 6 महीने पूरे होने के बाद कांता ने शिशु को जन्म दिया। जन्म के समय शिशु न रो रहा था, न हिल रहा था न हीं सॉस ले रहा था।

गर्भपात / मृत शिशु जन्म / नवजात शिशु मृत्यु

ख. गर्भावस्था के 8 महीने 10 दिन पूरे होने के बाद एक मॉ ने शिशु को जन्म दिया। जन्म के समय शिशु कमजोर सॉस ले रहा था। शिशु एक दिन तक वैसेही रहा। दूसरे दिन शिशु की मृत्यु हुई।

गर्भपात / मृत शिशु जन्म / नवजात शिशु मृत्यु

प्रश्न 6. शांता ने जनवरी में सुबह एक शिशु को जन्म दिया। आशा ने एक घंटे बाद शिशु की जॉच की। शिशु का वजन 2 किलो 600 ग्राम था। आप शिशु का वर्णन कैसे करोगी? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- शिशु कम वजन का नहीं है क्यों कि शिशु का वजन 2 किलो 500 ग्राम से अधिक है
- शिशु समयपूर्व जन्मा हैं
- शिशु सामान्य है
- शिशु अधिक खतरेवाला है

प्रश्न 7. निम्न समस्याओं में आप मॉ की मदद कैसे करोगी?

क. मॉ को लगता है कि उसे दूध कम है

- शिशु को दूध पीलाना बंद करें
- शिशु को बार बार स्तनपान कराएँ
- शिशु को अस्पताल भेंजें
- मॉ की सहायता करें

ख. शिशु अधिक खतरेवाला है और स्तनों से दूध पी नहीं पा रहा हैं।

- मॉ से कहे कि शिशु को अपनी त्वचा से चिपकाकर रखें
- शिशु को पूरक आहार दें
- मॉ के स्तनों से दूध निकालकर शिशु को पीलाएँ
- डिब्बे का दूध दें

प्रश्न 8. निम्न समस्या देखने पर आप क्या करोगी? प्रत्येक में एक सही उत्तर पर गोला करें।

क. जॉघ की मोडों में शिशु की त्वचा कटी है

- जी. वी पेंट लगाएँ
- टेट्रासायक्लिन मल्हम लगाएँ
- शिशु को अस्पताल भेंजे

ख. शिशु की दोंनो ऑखों में मवाद है

- कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें
- टेट्रासायक्लिन मल्हम लगाएँ
- शिशु को पैरासिटामॉल दें

ग. मॉ गर्भावस्था में भरपेट खाना नहीं खाती

- भरपेट खाना खाने की आवश्यकता नहीं
- मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दें
- मॉ को अस्पताल भेंजे

घ. मॉ शिशु को पानी पीलाती है

- मॉ की प्रशंसा करें
- शिशु को स्तनपान करना बंद करें
- मॉ को सलाह दें कि ऐसा न करें

प्रश्न 9. चन्दा ने एक लड़के को बरसात में जन्म दिया। दाई ने प्रसव कराया और वह अवलनाल बाहर आने का इन्तजार कर रही थी। आशा प्रसव के समय उपस्थित नहीं थी।

30 मिनट बाद अवलनाल बाहर आई। लगभग उसी समय आशा पहुँची। आशा ने शिशु को पोंछा और लपेटा। उसने शिशु को स्तनपान के लिए मॉ के पास रखा। पोते को देंखकर दादी बहुत खुश थी। उसने मॉ को रूकने को कहॉ और पिता को दिखाने शिशु को कमरे के बाहर ले गई। नन्हें शिशु को देखकर परिवारजन खुश थे।

बाद में शिशु को मॉ के पास रखा गया पर तब तक मॉ सो चुकी थी। शिशु भी सो गया। जब मॉ की नींद खुली तब शिशु छूने में ठंड़ा था। शिशु का तापमान 93^{0}फै. (33.9^{0}सें) था। मॉ ने शिशु को दूध पिलाना चाहा पर शिशु दूध पी नहीं पा रहा था।

क. क्या शिशु ठंड़ा पड़ा था? हॉं / नहीं

ख. शिशु के कम तापमान के तीन कारण कौनसे हो सकते है?

- बरसात में जन्म
- परिवारजनों की खुशी
- चन्दा ने मॉ के घर प्रसव नहीं कराया
- पिता की खुशी
- तुरंत स्तनपान नहीं कराया
- शिशु को पिलाने के पहले मॉ सो गई

ग. तुरंत किये जानेवाले कौनसे कार्य से शिशु को ठंड़ा पड़ने से बचाया जा सकता था?

- तुरंत स्तनपान
- शिशु को नहलाना
- शिशु को पानी पीलाना

घ. शिशु को गर्मी पहुँचाने के दो उपाय कौनसे है?

- मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना
- शिशु को अस्पताल भेजना
- शिशु को नहलाना
- कमरे को गर्म करना

च. आशा व्दारा लिए गए दो सही कदम कौनसे है?

- मॉ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना
- शिशु को लपेटना
- शिशु को पोंछना
- शिशु को गुड़ पानी पिलाना

प्रश्न 10. चम्पाबाई पहले बच्चे के समय प्रसव पीड़ा में हैं। प्रसव पीड़ा शुरू होते ही परिवार वालों ने आप को बुलाया। अचानक झिल्लि फटी और आपने देखा कि पानी गाढ़ा और पीले रंग का है। प्रसव सामान्य था।

क. क्या चम्पाबाई को दम घुटा शिशु पैदा होने का खतरा सामान्य से अधिक है?

हॉं / नहीं

ख. शिशु का सिर दिखने लगतेही आप क्या कदम उठाओगी? एक सही उत्तर पर गोला करें।

- बिल्टा पम्प का प्रयोग करें
- शिशु को लपेटना
- शिशु का मुँह अंदर से पट्टी वाले कपड़े से साफ करें

ग. जब चम्पाबाई ने शिशु को जन्म दिया तब शिशु न रो रहा था न सॉंस ले रहा था। अब आप क्या कदम उठाओगी? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- स्तनपान शुरू कराएँ
- शिशु को पोंछे और ओढ़ाएँ
- शिशु को विटामिन 'के' की सुई लगाएँ
- मॉं को स्वास्थ्य शिक्षा दें
- बिल्टा पम्प का प्रयोग करें

प्रश्न 11. गर्भावस्था के 9 महीने 5 दिन पूरे होने पर श्यामा ने श्यामली को जन्म दिया। जन्म के समय शिशु का वजन 2 किलो 100 ग्राम था। जन्म के समय श्यामली ठीक थी। पॉंचवे दिन उसने स्तनपान करना बंद किया और मॉं कहती थी कि शिशु छूने में ठंड़ा हैं।

क. श्यामली की समस्या क्या है? एक सही उत्तर पर गोला करें।

- सेप्सिस
- जन्मतेही दम घुटना

ख. कौनसे लक्षणों के आधारपर आपने निदान किया? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- जन्म के समय शिशु का वजन 2 किलो 100 ग्राम
- दूध पीना बंद करना
- शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा
- कम वजन का शिशु

ग. आप कितने दिन तक श्यामली का उपचार करोगी? एक सही उत्तर पर गोला करें।

- 10 दिन
- 7 दिन

घ. कोट्रिमॉक्सेज़ोल दिन में कितनी बार दिया जाता है? एक सही उत्तर पर गोला करें।

- दिन में दो बार
- दिन में एक बार

प्रश्न 12. उचित जोड़ियाँ बनाएँ

1. शिशु की टुंडी पर मवाद हो तो	शिशु का दम घुट सकता है
2. शिशु की आँखों में मवाद हो तो	जी. वी. पेंट लगाएँ
3. स्तनपान तुरंत शुरू कराने से	जन्म के तुरंत बाद
4. लम्बी चली प्रसव पीड़ा से	गर्भाशय सिकुड़ता है
5. शिशु को पोंछे	टेट्रासायक्लिन मल्हम लगाएँ

प्रश्न 13. उचित शब्दों से खाली स्थान भरें

क. शिशु का जन्म के समय वजन 2 किलो 500 ग्राम से कम हो तो शिशु ——————कहलाता है।

ख. जन्म के समय शिशु हॉफता हो तो शिशु का ————————।

ग. शिशु को ————— युनिट विटामिन 'के' दिया जाता है

प्रश्न 14. सही या गलत लिखें

क. यदि माँ को लगे कि उसे कम दूध बनता है तो वह शिशु को पीलाना बंद करें। सही / गलत

ख. यदि झिल्लि फटने पर पानी गाढ़ा और हरे रंग का हो तो जन्मतेही शिशु का दम घुट सकता है। सही / गलत

ग. यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2 किलो 300 ग्राम से कम हो तो दूसरे महीने में शिशु के घर का दौरा न करें। सही / गलत

प्रश्न 15. पिछले माहवारी की निम्न तिथियों के लिए प्रसव की अपेक्षित तिथि तथा समयपूर्व जन्म की तिथियॉं लिखें।

पिछले माहवारी की तिथि	प्रसव की अपेक्षित तिथि	समयपूर्व जन्म की तिथि
1. 9 अप्रैल 2006		
2. 17 जुलाई 2005		
3. 21 जून 2006		
4. 18 मई 2006		

प्रश्न 16. निम्न प्रत्येक जन्म के समय के लिए 30 सेकिंड तथा 5 मिनट बाद का समय लिखें।

जन्म का समय	30 सेकिंड बाद का समय	5 मिनट बाद का समय
1. 06:41:15		
2. 04:18:20		
3. 01:50:25		
4. 02:15:10		

मूल्यांकन प्रश्नपत्र के उत्तर (अधिकतम अंक 60 उत्तिर्णांक 30 (50 प्रतिशत), समय 1 घंटा 30 मि.)

सारे प्रश्न हल करने है। (प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक)

प्रश्न 1. आमगॉव की शीला 4 महीने की गर्भवती है। वह अपने माता पिता से मिलने गॉव में आई हैं। दो महीने गॉव में रहेगी। गर्भवती महीलाओं की सूची तैयार करते समय आप उसके मॉ के घर जाती हैं।

क. क्या आप शीला का नाम गर्भवती महीलाओं की सूची में लिखेंगी? हॉ / **नहीं**

ख. क्या आप शीला का नाम गर्भधारण योग्य महीलाओं की सूची में लिखेंगी? हॉ / **नहीं**

प्रश्न 2. राम का जन्म 10 दिसम्बर 2006 को हुआ। आप प्रसव के समय उपस्थित थी। दूसरे दिन आप मॉ तथा शिशु को देखने गई। शिशु की जॉच करते समय आप ने पाया कि उसकी नाल पर हल्दी तथा तेल लगाया है। आप ने नाल की देखभाल के बारे में क्या बताया है? दो सही उत्तरों पर गोला करें

- नाल को ढँककर रखें
- डेटॉल लगाऍ
- **नाल को साफ और सूखा रखें**
- नालपर कसकर कपड़ा बॉधे
- पाउडर लगाऍ
- **कुछ भी न लगाऍ**

प्रश्न 3. आप प्रसव के समय उपस्थित हो तो सामान्य शिशु पैदा होने पर एक घंटे के अंदर आप क्या क्या करती है? दो सही उत्तरों पर गोला करें

- **स्तनपान शुरू कराना**
- शिशु को नहलाना
- शिशु का कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार
- **शिशु को पोंछें**
- **शिशु को लपेटे**
- मॉ को स्वास्थ्य शिक्षा दें

प्रश्न 4. निम्न प्रत्येक के लिये यह निश्चित करें कि क्या समस्या का होना अस्पताल भेजने के लिए आपात्स्थिती है या नहीं।

समस्या	अस्पताल भेजना
क. धुंधला दिखाई देना	आपात्स्थिती नहीं / **आपात्स्थिती**
ख. पिछली गर्भधारणा का बुरा अनुभव	**आपात्स्थिती नहीं** / आपात्स्थिती
ग. बच्चेदानी में एक से अधिक गर्भ का होना	**आपात्स्थिती नहीं** / आपात्स्थिती
घ. बच्चेदानी में शिशु का हिलना बंद होना	आपात्स्थिती नहीं / **आपात्स्थिती**

प्रश्न 5. निम्न प्रत्येक उदाहरण में निश्चित करें कि वह गर्भपात है, मृत शिशु जन्म हैं या नवजात शिशु मृत्यु। सही उत्तर पर गोला करें।

क. गर्भावस्था के 6 महीने पूरे होने के बाद कांता ने शिशु को जन्म दिया। जन्म के समय शिशु न रो रहा था, न हिल रहा था न हीं सॉस ले रहा था।

गर्भपात / मृत शिशु जन्म / नवजात शिशु मृत्यु

ख. गर्भावस्था के 8 महीने 10 दिन पूरे होने के बाद एक मॉ ने शिशु को जन्म दिया। जन्म के समय शिशु कमजोर सॉस ले रहा था। शिशु एक दिन तक वैसेही रहा। दूसरे दिन शिशु की मृत्यु हुई।

गर्भपात / मृत शिशु जन्म / **नवजात शिशु मृत्यु**

प्रश्न 6. शांता ने जनवरी में सुबह एक शिशु को जन्म दिया। आशा ने एक घंटे बाद शिशु की जॉच की। शिशु का वजन 2 किलो 600 ग्राम था। आप शिशु का वर्णन कैसे करोगी? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- **शिशु कम वजन का नहीं है क्यों कि शिशु का वजन 2 किलो 500 ग्राम से अधिक है**
- शिशु समयपूर्व जन्मा हैं
- **शिशु सामान्य है**
- शिशु अधिक खतरेवाला है

प्रश्न 7. निम्न समस्याओं में आप मॉ की मदद कैसे करोगी?

क. मॉ को लगता है कि उसे दूध कम है

- शिशु को दूध पीलाना बंद करें
- **शिशु को बार बार स्तनपान कराएँ**
- शिशु को अस्पताल भेंजें
- **मॉ की सहायता करें**

ख. शिशु अधिक खतरेवाला है और स्तनों से दूध पी नहीं पा रहा हैं।

- **मॉ से कहे कि शिशु को अपनी त्वचा से चिपकाकर रखें**
- शिशु को पूरक आहार दें
- **मॉ के स्तनों से दूध निकालकर शिशु को पीलाएँ**
- डिब्बे का दूध दें

प्रश्न 8. निम्न समस्या देखने पर आप क्या करोगी? प्रत्येक में एक सही उत्तर पर गोला करें।

क. जॉघ की मोडों में शिशु की त्वचा कटी है

- **जी. वी पेंट लगाएँ**
- टेट्रासायक्लिन मल्हम लगाएँ
- शिशु को अस्पताल भेंजे

ख. शिशु की दोंनो ऑखों में मवाद है

- कोट्रिमॉक्सेज़ोल से उपचार करें
- **टेट्रासायक्लिन मल्हम लगाएँ**
- शिशु को पैरासिटामॉल दें

ग. माँ गर्भावस्था में भरपेट खाना नहीं खाती

- भरपेट खाना खाने की आवश्यकता नहीं
- **माँ को स्वास्थ्य शिक्षा दें**
- माँ को अस्पताल भेंजे

घ. माँ शिशु को पानी पीलाती है

- माँ की प्रशंसा करें
- शिशु को स्तनपान करना बंद करें
- **माँ को सलाह दें कि ऐसा न करें**

प्रश्न 9. चन्दा ने एक लड़के को बरसात में जन्म दिया। दाई ने प्रसव कराया और वह अवलनाल बाहर आने का इन्तजार कर रही थी। आशा प्रसव के समय उपस्थित नहीं थी।

30 मिनट बाद अवलनाल बाहर आई। लगभग उसी समय आशा पहुँची। आशा ने शिशु को पोंछा और लपेटा। उसने शिशु को स्तनपान के लिए माँ के पास रखा। पोते को देंखकर दादी बहुत खुश थी। उसने माँ को रूकने को कहाँ और पिता को दिखाने शिशु को कमरे के बाहर ले गई। नन्हें शिशु को देखकर परिवारजन खुश थे।

बाद में शिशु को माँ के पास रखा गया पर तब तक माँ सो चुकी थी। शिशु भी सो गया। जब माँ की नींद खुली तब शिशु छूने में ठंड़ा था। शिशु का तापमान 93°फै. (33.9°सें) था। माँ ने शिशु को दूध पिलाना चाहा पर शिशु दूध पी नहीं पा रहा था।

क. क्या शिशु ठंड़ा पड़ा था? **हाँ** / नहीं

ख. शिशु के कम तापमान के तीन कारण कौनसे हो सकते है?

- **बरसात में जन्म**
- परिवारजनों की खुशी
- चन्दा ने माँ के घर प्रसव नहीं कराया
- पिता की खुशी
- **तुरंत स्तनपान नहीं कराया**
- **शिशु को पिलाने के पहले माँ सो गई**

ग. तुरंत किये जानेवाले कौनसे कार्य से शिशु को ठंड़ा पड़ने से बचाया जा सकता था?

- **तुरंत स्तनपान**
- शिशु को नहलाना
- शिशु को पानी पीलाना

घ. शिशु को गर्मी पहुँचाने के दो उपाय कौनसे है?

- **माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना**
- शिशु को अस्पताल भेजना
- शिशु को नहलाना
- **कमरे को गर्म करना**

च. आशा व्दारा लिए गए दो सही कदम कौनसे है?

- माँ के शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना
- **शिशु को लपेटना**
- **शिशु को पोंछना**
- शिशु को गुड़ पानी पिलाना

प्रश्न 10. चम्पाबाई पहले बच्चे के समय प्रसव पीड़ा में हैं। प्रसव पीड़ा शुरू होते ही परिवार वालों ने आप को बुलाया। अचानक झिल्लि फटी और आपने देखा कि पानी गाढ़ा और पीले रंग का है। प्रसव सामान्य था।

क. क्या चम्पाबाई को दम घुटा शिशु पैदा होने का खतरा सामान्य से अधिक है?

हाँ / नहीं

ख. शिशु का सिर दिखने लगतेही आप क्या कदम उठाओगी? एक सही उत्तर पर गोला करें।

- बिल्टा पम्प का प्रयोग करें
- शिशु को लपेटना
- **शिशु का मुँह अंदर से पट्टी वाले कपड़े से साफ करें**

ग. जब चम्पाबाई ने शिशु को जन्म दिया तब शिशु न रो रहा था न साँस ले रहा था। अब आप क्या कदम उठाओगी? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- स्तनपान शुरू कराएँ
- **शिशु को पोंछे और ओढ़ाएँ**
- शिशु को विटामिन 'के' की सुई लगाएँ
- माँ को स्वास्थ्य शिक्षा दें
- **बिल्टा पम्प का प्रयोग करें**

प्रश्न 11. गर्भावस्था के 9 महीने 5 दिन पूरे होने पर श्यामा ने श्यामली को जन्म दिया। जन्म के समय शिशु का वजन 2 किलो 100 ग्राम था। जन्म के समय श्यामली ठीक थी। पाँचवे दिन उसने स्तनपान करना बंद किया और माँ कहती थी कि शिशु छूने में ठंड़ा हैं।

क. श्यामली की समस्या क्या है? एक सही उत्तर पर गोला करें।

- **सेप्सिस**
- जन्मतेही दम घुटना

ख. कौनसे लक्षणों के आधारपर आपने निदान किया? दो सही उत्तरों पर गोला करें।

- जन्म के समय शिशु का वजन 2 किलो 100 ग्राम
- **दूध पीना बंद करना**
- **शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा**
- कम वजन का शिशु

ग. आप कितने दिन तक श्यामली का उपचार करोगी? एक सही उत्तर पर गोला करें।

- 10 दिन
- **7 दिन**

घ. कोट्रिमॉक्सेज़ोल दिन में कितनी बार दिया जाता है? एक सही उत्तर पर गोला करें।

- दिन में दो बार
- **दिन में एक बार**

प्रश्न 12. उचित जोड़ियाँ बनाएँ

1. शिशु की टुंडी पर मवाद हो तो	शिशु का दम घुट सकता है
2. शिशु की आँखों में मवाद हो तो	जी. वी. पेंट लगाएँ
3. स्तनपान तुरंत शुरू कराने से	जन्म के तुरंत बाद
4. लम्बी चली प्रसव पीड़ा से	गर्भाशय सिकुड़ता है
5. शिशु को पोंछे	टेट्रासायक्लिन मल्हम लगाएँ

प्रश्न 13. उचित शब्दों से खाली स्थान भरें

क. शिशु का जन्म के समय वजन 2 किलो 500 ग्राम से कम हो तो शिशु **कम वजन का** कहलाता है।

ख. जन्म के समय शिशु हॉफता हो तो शिशु का **दम घुटा है।**

ग. शिशु को **चार** युनिट विटामिन 'के' दिया जाता है

प्रश्न 14. सही या गलत लिखें

क. यदि मॉ को लगे कि उसे कम दूध बनता है तो वह शिशु को पीलाना बंद करें। **गलत**

ख. यदि झिल्लि फटने पर पानी गाढ़ा और हरे रंग का हो तो जन्मतेही शिशु का दम घुट सकता है। **सही**

ग. यदि 28 वें दिन शिशु का वजन 2 किलो 300 ग्राम से कम हो तो दूसरे महीने में शिशु के घर का दौरा न करें। **गलत**

प्रश्न 15. पिछले माहवारी की निम्न तिथियों के लिए प्रसव की अपेक्षित तिथि तथा समयपूर्व जन्म की तिथियाँ लिखें।

पिछले माहवारी की तिथि	प्रसव की अपेक्षित तिथि	समयपूर्व जन्म की तिथि
1. 9 अप्रैल 2006	14 जनवरी 2007	22 दिसम्बर 2006
2. 17 जुलाई 2005	23 अप्रैल 2006	31 मार्च 2006
3. 21 जून 2006	28 मार्च 2007	5 मार्च 2007
4. 18 मई 2006	22 फरवरी 2007	30 जनवरी 2007

प्रश्न 16. निम्न प्रत्येक जन्म के समय के लिए 30 सेकिंड तथा 5 मिनट बाद का समय लिखें।

जन्म का समय	30 सेकिंड बाद का समय	5 मिनट बाद का समय
1. 06:41:15	**06:41:45**	**06:46:15**
2. 04:18:20	**04:18:50**	**04:23:20**
3. 01:50:25	**01:50:55**	**01:55:25**
4. 02:15:10	**02:15:40**	**02:20:10**

मोड्यूल 16 : नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम

सत्र 2 : जन्मतेही शिशु का दम घुटना तथा सेप्सिस के उपचार के लिए आशाओं का अंतिम मूल्यांकन

दिवस : 1
समयावधि : 3 घं.

प्रयोजन

दम घुटे शिशु की तथा सेप्सिस वाले शिशु की देखभाल करने में आशा की योग्यता का आंकलन करना। इसमें निदान, उपचार, माता पिता को परामर्श देना तथा उपयुक्त फॉर्म भरना शामिल है। इस मुल्यांकन को तटस्थ परिक्षक व्दारा करवाना, जिससे मूल्यांकन के पश्चात् सफल आशाओं को बैग और मास्क तथा जेन्टामायसिन की सुई का प्रयोग करने के लिए प्रमाणित किया जा सके।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यता आएगी –

1. दम घुटे शिशुजन्म का तथा सेप्सिस का निदान तथा उपचार मार्गदर्शक तथ्यों के अनुसार करना (लिखित परीक्षा में 50 प्रतिशत या अधिक तथा प्रात्यक्षिक परीक्षा में 60 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त करना)।

सामग्री

- अभ्यासपत्र 1: लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: लिखित परीक्षा प्रश्नपत्र के उत्तर
- प्रत्येक आशा का गॉव में काम तथा प्रशिक्षण में प्रगती का रिकार्ड जिसमें दम घुटे शिशु का उपचार वाली जॉच सूचियॉ (दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम, चूषण पम्प का प्रयोग तथा बैग और मास्क का प्रयोग) तथा जेन्टामाइसिन सुई वाली जाँच–सूची दी है। इसी में प्रत्येक आशा के प्रात्यक्षिक को रिकार्ड करना हैं।
- चुषण पम्प तथा बैग और मास्क
- शिशु को पोछनें तथा लपेटने के लिए कपडा, शिशु के कंधें के नीचे रखने के लिए तह किया हुआ कपडा
- जेन्टामाइसिन की सुई तथा दवाई की शीशी
- गुडियाएँ/ बैंगन – सुई लगाने के लिए
- स्पिरिट, रूई, साबुन, पानी तथा प्रयोग की हुई सुईयॉ रखने के लिए प्लास्टिक डिब्बा
- संगणक के साथ वेब कैमेरा या विडिओ कैमेरा
- प्रशिक्षक प्रपत्र 2 : अंकतालिका

तैयारी

- अभ्यासपत्र 1 की प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार प्रतियॉ बनाएँ।
- जेन्टामाइसिन की शीशियाँ तथा सुईयाँ पर्याप्त संख्या मे उपलब्ध कराएँ। इनका प्रयोग प्रात्यक्षिक परीक्षा में सुई लगाने के प्रात्यक्षिक के लिए होना है।
- ऊपर दी गयी सूची के अनुसार अन्य सामान तैयार रखें।

- प्रत्येक आशा का गॉव में काम तथा प्रशिक्षण में प्रगती का रिकार्ड साथ रखें जिसमें प्रत्येक आशा के प्रात्यक्षिक को रिकार्ड करना हैं।
- आशाएँ जब लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र लिख रही हो तब बाहरी परीक्षक उपस्थित हो।
- आशाओं के प्रात्यक्षिक का विडिओ या वेब कैमेरा से रिकार्डिंग कर लें। इसे बाहरी परीक्षक देखें और आशाओं की योग्यता का स्वतन्त्र मूल्यांकन करें।

प्रशिक्षण विधि

मूल्यांकन (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. अभ्यासपत्र 1ः लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र बाँटें।
2. प्रत्येक आशा स्वयं इसे हल करे।
3. हल किये प्रश्नपत्र इकट्ठा कर लें।
4. हल किये प्रश्नपत्रों को बाहरी परीक्षक जॉचे। यदि बाहरी परीक्षक मूल्यांकन के समय उपस्थित हो तो प्रश्नपत्र तुरंत जॉच लें। प्रशिक्षक, आशाओं को प्राप्त अंकों की सूची प्रशिक्षक प्रपत्र 2 में बना लें।

प्रात्यक्षिक परीक्षा (2 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रत्येक आशा को दम घुटे शिशु के उपचार की पूरी प्रक्रिया का तथा जेन्टामाइसिन की सुई लगाने का प्रदर्शन करने को कहें।
2. एक समय एकही आशा प्रात्यक्षिक कर सकती है। इसलिए जिस आशा का प्रश्नपत्र हल करना समाप्त हो गया हो उसकी प्रात्यक्षिक परीक्षा शुरू कर सकते है।
3. सभी आशाओं के प्रात्यक्षिक का विडिओ कैमेरा या वेब कैमेरा से रिकार्डिंग कर लें।
4. सारे रिकार्डिंग को बाहरी परीक्षक देखें और आशाओं की योग्यता का मूल्यांकन करें और अंक दें।
5. प्रशिक्षक, आशाओं के प्रात्यक्षिक के हर कदम को जॉच सूचियों में लिख लें। सभी आशाओं का मूल्यांकन हो जाने पर प्रशिक्षक आशाओं की गल्तियों के बारे में चर्चा करें तथा सुधार बताएँ।

सारांश

1. आशाओं के मूल्यांकन का नतीजा तैयार करें जिसमें सुपरवाईजर व्दारा गॉव में किया गया मूल्यांकन, लिखित परीक्षा के अंक और प्रात्यक्षिक परीक्षा के अंक समाविष्ट हो।
2. किसी आशा का परीक्षाफल सन्तोषजनक कहलाने के लिए उसे निम्न प्रकार से अंक प्राप्त होना आवश्यक है।
   क. लिखित परीक्षा न्यूनतम अंकः 50 प्रतिशत
   ख. प्रात्यक्षिक परीक्षा न्यूनतम अंकः 60 प्रतिशत
   ग. गॉव में काम का सुपरवाईजर व्दारा मूल्यांकन श्रेणीः अ या ब
3. जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक होगा उन्हीं आशाओं को शिशुओं पर बैग और मास्क तथा जेन्टामायसिन की सुई का प्रयोग करने के लिए प्रमाणित किया जाएगा।
4. जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक नहीं होगा उन आशाओं का पुनः प्रशिक्षण और भविष्य में मूल्यांकन किया जाएगा।
5. यदि संभव हो तो आशाओं का प्रमाणिकरण उनके गॉव में किया जाए। इससे, जान बचाने वाली उपयुक्त सेवाएँ आशाओं से लेने में गॉव के लोग आश्वस्त होंगे।

लिखित परीक्षा का प्रश्नपत्र : दम घुटे शिशु का उपचार तथा सेप्सिस

(सेप्सिस की खुराक के लिए आशाएँ सेप्सिस उपचार फॉर्म देखें)

लिखित परीक्षाः (प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक)

लिखित परीक्षा के उत्तर : दम घुटे शिशु का उपचार तथा सेप्सिस

लिखित परीक्षाः (प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक)

1. हारिनी ने एक शिशु को सुबह 8 बजे जन्म दिया। शिशु कमजार रोया। आप सबसे पहले कौन से 2 कदम उठाएँगी।

    1. ____________________
    2. ____________________

    शिशु ने रोना आरंभ किया

    ऐसे में आप क्या करेंगी ?

    3. ____________________
    4. ____________________
    5. क्या शिशु मृत जन्म है? हॉं / नहीं

2. प्रभा ने 30 घंटे तक चली लंबी प्रसव पीड़ा के बाद सबेरे 10:10 बजे एक शिशु को जन्म दिया। योनि से निकला द्रव गाढ़ा और हरे रंग का था। शिशु 7 माह 5 दिन के गर्भकाल में जन्मा।

    1. क्या जन्मतेही शिशु का दम घुटने के लक्षण हैं ? हॉं / नहीं

    कौन से कारणों से शिशु का जन्मतेही दम घुट सकता है?

    2. ____________________
    3. ____________________
    4. ____________________

    शिशु जन्मतेही न रो रहा है और न सॉंस ले रहा हैं। आप क्या करेंगी ? तीन कदम लिखें।

    5. ____________________
    6. ____________________
    7. ____________________

    30 सेकिंड पर शिशु रोता नहीं और सॉंस नहीं लेता। अब आप क्या करोगी ?

    8. ____________________

1 मिनट पर शिशु रोता नहीं और साँस नहीं लेता। अब आप क्या करोगी ?

9. ______________________________

2 मिनट पर शिशु रोने लगा। अब आप क्या करोगी ?

10. ______________________________

11. ______________________________

3. श्याम का जन्म 8 महीने 20 दिन पर हुआ और उसका वज़न 2 कि.ग्रा. था। वह जन्म के समय ठीक था, पर छठे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया और उसने स्तनपान बंद कर दिया।

इस शिशु की क्या क्या समस्याएँ है?

1. ______________________________
2. ______________________________

क्यों ? प्रत्येक समस्या के लिए विशेष लक्षण क्या है?

3. ______________________________
4. ______________________________

____

आप उसे क्या दवाएँ देंगी?

दवाई का नाम	खुराक	कितने दिन
5. ______	______	______
6. ______	______	______

उपचार की इस अवधि में आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?

7. ______________________________

माता–पिता को आप घर पर शिशु की देखभाल के बारे में कौन सी 2 बाते बताएँगी ?

8. ______________________________
9. ______________________________

4. गीता का जन्म 7 महीने 4 दिन पर हुआ और उसने पहले 5 दिनों तक ठीक से स्तनपान नहीं किया। तीसरे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया, पर अन्य कोई लक्षण नहीं थे

1. क्या उसे सेप्सिस है ? हाँ / नहीं
2. क्या तीसरे दिन नीता का स्तनपान न करना सेप्सिस का लक्षण है ? हाँ / नहीं

   क्यों ?

3. ______________________________

गीता को क्या समस्या है ?

4. ______

5. ______

तीसरे दिन आप क्या करेंगी ?

6. ______

7. ______

8. ______

अगले दिन दोपहर आपको बुलाया जाता है। आप पाती हैं कि उसका शरीर अभी भी ठंडा है तथा छाती अंदर को धँसी है। और उसका वज़न 1 कि. 850 ग्रा. है।

9. क्या शिशु को सेप्सिस है? हाँ / नहीं

उसमें कौनसे 2 लक्षण है?

10. ______

11. ______

5. निम्न शिशुओं के लिए जेन्टामाइसिन दवा की खुराक क्या होगी और आप कितने दिन दवा देंगी ?

	खुराक	कितने दिन
1. शिशु 9 महीने पर पैदा हुआ और जन्म के समय वजन 2 किलो 150 ग्राम था	______	______
2. शिशु 8 महीने पर पैदा हुआ और जन्म के समय वजन 1 किलो 800 ग्राम था	______	______
3. शिशु 9 महीने पर पैदा हुआ और जन्म के समय वजन 2 किलो 150 ग्राम था	______	______

6. शिशु को जेन्टामाइसिन की सुई लगाने के बाद सुई की जगह पर क्या समस्याओं के लिए आप देखेगी? क्या सुई की जगह पर निम्न से कुछ है?

1. ______
2. ______
3. ______

7. क्या आप सिरिंज से सुई अलग करोगी?

1. हॉं / नहीं

घर में आप प्रयुक्त सुई तथा सिरिंज कहाँ रखोगी?

2. ______________________________

प्रयुक्त सिरिंज तथा सुईयॉं आप अन्त में नष्ट कैसे करोगी?

3. ______________________________

शिशुओं में सेप्सिस होने को कैसे रोका जा सकता है?

4. ______________________________

5. ______________________________

6. ______________________________

जिस शिशु का आप सेप्सिस के लिए उपचार कर रही है उसे अस्पताल कब भेजोगी?

7. ______________________________

यदि शिशु रोने लगे या सॉंस लेने लगे तो आप बैग और मास्क से पुनरूज्जीवन करना कब बंद करोगे?

8. ______________________________

लिखित परीक्षा प्रश्नपत्र के उत्तर : दम घुटे शिशु का उपचार तथा सेप्सिस

(सेप्सिस की खुराक के लिए आशाएँ सेप्सिस उपचार फॉर्म देखें)

लिखित परीक्षाः (प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक)

1. हारिनी ने एक शिशु को सुबह 8 बजे जन्म दिया। शिशु कमजार रोया। आप सबसे पहले कौन से 2 कदम उठाएँगी।

    1. शिशु को पोंछे और कपड़े में लपेटे

    2. बिल्टा पंप का प्रयोग करें।

    शिशु ने रोना आरंभ किया

    ऐसे में आप क्या करेंगी ?

    3. शिशु को माँ के पास रखें

    4. स्तनपान शुरू करवाएँ

    5. क्या शिशु मृत जन्म है? हाँ / **नहीं**

2. प्रभा ने 30 घंटे तक चली लंबी प्रसव पीड़ा के बाद सबेरे 10:10 बजे एक शिशु को जन्म दिया। योनि से निकला द्रव गाढ़ा और हरे रंग का था। शिशु 7 माह 5 दिन के गर्भकाल में जन्मा।

    1. क्या जन्मतेही शिशु का दम घुटने के लक्षण हैं ? **हाँ** / नहीं

    कौन से कारणों से शिशु का जन्मतेही दम घुट सकता है?

    2. शिशु का समय से पूर्व जन्म

    3. 24 घं. से अधिक चली प्रसवपीड़ा

    4. गाढ़ा और हरे रंग का द्रव योनि से निकलना

    शिशु जन्मतेही न रो रहा है और न साँस ले रहा हैं। आप क्या करेंगी ? तीन कदम लिखें।

    5. जन्म का समय लिखें

    6. शिशु को पोंछे

    7. कपड़े पहनाएँ/ओढ़ाएँ

    30 सेकिंड पर शिशु रोता नहीं और साँस नहीं लेता। अब आप क्या करोगी ?

    8. चूषण पम्प का प्रयोग करें

    1 मिनट पर शिशु रोता नहीं और सॉस नहीं लेता। अब आप क्या करोगी ?

    9. बैग और मास्क का प्रयोग करें

    2 मिनट पर शिशु रोने लगा। अब आप क्या करोगी ?

    10. माँ के पास लिटाएँ

    11. स्तनपान शुरू करवाएँ

3. श्याम का जन्म 8 महीने 20 दिन पर हुआ और उसका वज़न 2 कि.ग्रा. था। वह जन्म के समय ठीक था, पर छठे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया और उसने स्तनपान बंद कर दिया।

इस शिशु की क्या क्या समस्याएँ है?

1. कम वजन का शिशु

2. सेप्सिस

क्यों ? प्रत्येक समस्या के लिए विशेष लक्षण क्या है?

3. कम वजन का शिशु – जन्म के समय वजन 2 किलो 500 ग्राम से कम

4. सेप्सिस – शरीर ठंडा पड़ गया

– स्तनपान बंद कर दिया।

आप उसे क्या दवाएँ देंगी?

दवाई का नाम	खुराक	कितने दिन
5. कोट्रिमॉक्सेज़ॉल	**1/4 चम्मच दिन में दो बार**	**7 दिन**
6. जेन्टामाइसिन	**12 मि. ग्राम दिन में एक बार**	**7 दिन**

उपचार की इस अवधि में आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?

7. दिन में 2 बार 7 दिन

माता–पिता को आप घर पर शिशु की देखभाल के बारे में कौन सी 2 बाते बताएँगी ?

8. शिशु को गर्म रखें (माँ के पास चिपकाकर रखें, कपड़े पहनाएँ)

9. कई बार स्तनपान कराएँ, हर 2 घंटे के बाद

4. गीता का जन्म 7 महीने 4 दिन पर हुआ और उसने पहले 5 दिनों तक ठीक से स्तनपान नहीं किया। तीसरे दिन उसका शरीर ठंडा पड़ गया, पर अन्य कोई लक्षण नहीं थे

1. क्या उसे सेप्सिस है ? हाँ / **नहीं**

2. क्या तीसरे दिन नीता का स्तनपान न करना सेप्सिस का लक्षण है ? हाँ / **नहीं**

   क्यों ?

3. क्योंकि वह जन्म के समय से ही स्तनपान नहीं कर रही थी।

गीता को क्या समस्या है ?

4. समयपूर्व जन्म

5. हाइपोथर्मिया

तीसरे दिन आप क्या करेंगी ?

6. माँ को शिशु के शरीर को गर्म करना सिखाएँ।

7. बताएँ कि वह शिशु को थोड़ी–थोड़ी देर में स्तनपान कराती रहे।

8. दोपहर में शिशु का तापमान लेने फिर आएगी।

अगले दिन दोपहर आपको बुलाया जाता है। आप पाती हैं कि उसका ृरीर अभी भी ठंडा है तथा छाती अंदर को धँसी है। और उसका वज़न 1 कि. 850 ग्रा. है।

9. क्या शिशु को सेप्सिस है? **हाँ** / नहीं

उसमें कौनसे 2 लक्षण है?

10. शरीर का ठंडा होना

11. छाती अंदर को धँसी होना।

5. निम्न शिशुओं के लिए जेन्टामाइसिन दवा की खुराक क्या होगी और आप कितने दिन दवा देंगी ?

	खुराक	कितने दिन
1. शिशु 9 महीने पर पैदा हुआ और जन्म के समय वजन 2 किलो 150 ग्राम था	**12 मि ग्राम दिन में एक बार**	**7 दिन**
2. शिशु 8 महीने पर पैदा हुआ और जन्म के समय वजन 1 किलो 800 ग्राम था	**6 मि ग्राम दिन में एक बार**	**10 दिन**
3. शिशु 9 महीने पर पैदा हुआ और जन्म के समय वजन 2 किलो 150 ग्राम था	**12 मि ग्राम दिन में एक बार**	**7 दिन**

6. शिशु को जेन्टामाइसिन की सुई लगाने के बाद सुई की जगह पर क्या समस्याओं के लिए आप देखेगी? क्या सुई की जगह पर निम्न से कुछ है?

1. सूजन

2. खून निकलना

3. लाली

7. क्या आप सिरिंज से सुई अलग करोगी?

1. हाँ / **नहीं**

घर में आप प्रयुक्त सुई तथा सिरिंज कहाँ रखोगी?

2. पीले डिब्बे में

प्रयुक्त सिरिंज तथा सुईयाँ आप अन्त में नष्ट कैसे करोगी?

3. इकट्ठा की हुई सारी सुईयाँ तथा सिरिंज नष्ट करवाने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में ले जाकर

शिशुओं में सेप्सिस होने को कैसे रोका जा सकता है?

4. नाल को स्वच्छ और सूखा रखें

5. हर बार शौच से लौटने के बाद शिशु को पीलाने से पहले साबून और पानी से हाथ धोना

6. शिशु को गर्म रखें

जिस शिशु का आप सेप्सिस के लिए उपचार कर रही है उसे अस्पताल कब भेजोगी?

7. प्रतिजैविक से उपचार शुरू करने के 24 घंटे बाद भी शिशु की हालत में सुधार न हो तो

यदि शिशु रोने लगे या साँस लेने लगे तो आप बैग और मास्क से पुनरूज्जीवन करना कब बंद करोगे?

8. 15 मिनट के बाद

अंकतालिका

आशा का नाम	लिखित परीक्षा के अंक	प्रात्यक्षिक परीक्षा के अंक				कुल अंक
		दम घुटे शिशु के उपचार में शुरूआती कदम	चूषण पंप का प्रयोग	बैग और मास्क का प्रयोग	जेन्टामायसीन की सुई लगाना	
1.						
2.						
3.						
4.						
5.						
6.						
7.						
8.						
9.						
10.						
11.						
12.						
13.						
14.						
15.						
16.						
17.						
18.						
19.						
20.						
21.						
22.						
23.						
24.						
25.						
26.						
27.						
28.						
29.						
30.						

मोड्यूल 16 : नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम

सत्र 3 : बीमार नवजात शिशु तथा माँ को अस्पताल भेजना

दिवस : 1

समयावधि : 2 घं.

प्रयोजन

आशा यह तय करें कि मॉ तथा बच्चा कब गंभीर रूप से बीमार है तथा उन्हे अस्पताल भेजना आवश्यक है। इस सत्र में गर्भावस्था, प्रसवपीडा, प्रसव एवं प्रसव के पहले पहीने (तथा प्रसव के दूसरे महीने में उन शिशुओं को जिनका वजन 28 वें दिन 2300 ग्राम से कम है) में अस्पताल भेजने के मापदंडों की समीक्षा की जायेगी। इसमें यह भी बताया जायेगा की बीमार मॉ बच्चे को किस अस्पताल भेजना है।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगीः

1. गर्भावस्था, प्रसवपीड़ा, प्रसव एवं प्रसव के पहले पहिने में उन स्थितियों की जानकारी देना जिनमें मॉ बच्चे को अस्पताल भेजना आवश्यक है।
2. बताना कि उन्हें किस अस्पताल में भेजना चाहिए।
3. अस्पताल भेजने के लिए पर्ची सही भरना।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1: अस्पताल कब भेजे
- अभ्यासपत्र 1: अस्पताल भेजने के लिए पर्ची (मॉ तथा नवजात शिशु के लिए)
- अभ्यासपत्र 2: अस्पताल भेजने की पर्ची भरने के लिए केस प्रस्तुति
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: केस प्रस्तुति के आधारपर भरी हुई अस्पताल भेजने के लिए पर्ची, नवजात शिशु के लिए
- अस्पताल भेजने के लिए पर्ची पुस्तिका

तैयारी

- ध्यान रखें की अध्ययनपत्र, अभ्यासपत्र तथा अस्पताल भेजने के लिए पर्ची पुस्तिका पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति तथा चर्चा</u>: (1 घं. 50 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. बताएँ कि मॉ तथा बच्चे को, आशा के अतिरिक्त अन्य कई स्वास्थ्य कर्मचारियों की सहायता/सेवाओं की आवश्यकता पड़ सकती है। जैसे, गर्भावस्था के दौरान उनकी देखभाल नर्स बहिनजी करती हैं। अन्य समय आशा किसी बीमारी का उपचार नहीं कर सकती अथवा किसी आपात्स्थिति में भी ऐसी सहायता की आवश्यकता हो सकती है। यह बहुत आवश्यक है कि आशा उन स्थितियों को पहचाने जब आपात्स्थिति हो और अतिरिक्त सेवाएँ आवश्यक हो। परिवार जनों को अस्पताल बताने के अतिरिक्त वह उन्हे शीघ्र अस्पताल तक पहुँचाने का भी प्रयत्न करे जिससे जान बचाई जा सके।

2. गर्भावस्था के दौरान अस्पताल भेजने के बारे में बताएँ। यह शुरूआती प्रशिक्षण कार्यशाला में बताया जा चुका है। आशा से गर्भावस्था फॉर्म देखने को कहें तथा पूछें कि मॉ को गर्भावस्था के दौरान आशा कौन कौन सी सेवाएँ देती है? उनके उत्तर सुनें (सामान्य स्थिति में अस्पताल भेजना, गर्भावस्था के दौरान देखभाल (आइरन/फोलिक ऐसिड गोलियॉ, टिटनस की सुई तथा आपात्स्थिति में, खतरे के लक्षण उपस्थित होने पर अस्पताल भेजना)। विषय वस्तु बाक्स देखें।
3. गर्भावस्था फॉर्म में प्रश्न 2 – गर्भावस्था में प्रगति तथा उठाए जाने वाले कदम देखें। आशा को सूची पढ़ने को कहें। यदि मॉ को पेशाब में जलन है, योनि से सफेद रंग का स्त्राव निकल रहा है, रतौंधी, बुखार, त्वचा में संक्रमण आदि है तो अन्य समस्याओं वाले खाने में इसे लिखें। इन समस्याओं के लिए अस्पताल भेजना सामान्य स्थिति मानी जाती है। मॉ को मार्गदर्शनों के अनुसार अस्पताल भेजना चाहिए।
4. आशा से परामर्श कार्डो को याद करने को कहें जिसमें गर्भावस्था के दौरान खतरे के लक्षण बताए गए हैं। उनके उत्तर सुनें। खतरे के लक्षणों वाली महिलाओं को तुरंत अस्पताल भेजना चाहिए। (चेहरे तथा हाथो में सूजन, दौरे, रक्तस्त्राव अथवा धब्बे)

   यदि मॉ के चेहरे अथवा हाथों में सूजन है, सिर दर्द अथवा धुंधला दिखाई दे रहा है, दौरे पड़ रहे हैं, रक्तस्त्राव/धब्बे पड़ रहे हैं, तो मॉ को तुरंत अस्पताल भेजना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो खतरे के इन लक्षणों के कारण मॉ की मौत हो सकती है, अथवा वह विकलांग भी हो सकती है।
5. यदि मॉ को गर्भावस्था के दौरान संक्रमण हुआ हो तो उसमें कई जटिलताएँ हो सकती है, जैसे, समय से पूर्व प्रसव अथवा कम वज़न के शिशु का जन्म। मॉ को गर्भावस्था के दौरान संक्रमणों से बचाने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। आइरन, फोलिक ऐसिड गोलियॉ देनी चाहिए, भारी काम नही करना चाहिए तथा अधिक भोजन लेना चाहिए। आशा, गर्भावस्था के दौरान मॉ की उचित देखभाल करने की सलाह दे ताकि उसके, तथा उसके गर्भस्थ शिशु को, स्वास्थ्य समस्याओं से बचाया जा सके।

विषय–वस्तु

अस्पताल कब भेजें?		
	सामान्य स्थिति (जितना जल्दी संभव हो)	आपात्कालीन स्थिति (तुरंत)
गर्भावस्था	गंभीर ऐनीमिया बुखार पेशाब में जलन/ दर्द योनि से सफेद रंग का स्त्राव त्वचा पर खुजली/ दाद खाज/फोड़ा फुन्सी / मवाद वाला फोड़ा इससे पूर्व गर्भावस्थाओं में बुरा अनुभव एक से अधिक गर्भ गर्भ की असामान्य स्थिति रतौंधी गर्भावस्था के दौरान देखभालः आइरन फोलिक ऐसिड गोलियॉ तथा टिटनस की सुई उच्च रक्तचाप अथवा उसकी शंका	योनि से रक्तस्त्राव/ धब्बेगर्भ में शिशु का हिलना डुलना कम/ बंद सिरदर्द तथा धुँधला दिखाई देना दौरे चेहरे तथा हथेलियों में सूजन

	सामान्य स्थिति (जितना जल्दी संभव हो)	आपात्कालीन स्थिति (तुरंत)
प्रसव		लंबी प्रसवपीड़ा– हल्का दर्द उठने के 24 घंटो तक प्रसव न हुआ हो शिशु की असामान्य स्थिति – सिर के अलावा अन्य कोई भाग पहले निकले माँ को अत्यधिक रक्तस्त्राव हो रहा हो अवलनाल बाहर न निकले – 30 मि. के भीतर अवलनाल बाहर न आये माँ बेहोश हो या दौरे पड़ रहे हों, बच्चेदानी की झिल्ली फट गयी हो (24 घंटे से अधिक) योनि अथवा बच्चेदानी का कटना फटना
शिशु जन्म के बाद 1 से 28 वें दिन	नवजात शिशु को टीके माँ के स्तन सूजे हुए, लाल तथा स्तनो में दर्द बुखार	**माँ** योनि से बदबूदार द्रव निकल रहा हो तथा 100°फै. (37.8°सें) से अधिक बुखार हो शिशु जन्म के बाद अत्यधिक रक्तस्त्राव हो रहा हो– 24 घंटो में 5 से अधिक पैड बदले हों दौरे बुखार, बहुत बीमार उलटा सीधा बोलना या बर्ताव **शिशु** शिशु को स्तनपान करने में समस्या है जो आशा के परामर्श तथा घरेलू उपचार से ठीक नही हुई हो। **शिशु में खतरे के लक्षण** प्रतिजैविक दवाओं के 24 घँटे के उपचार के बाद भी ठीक नही हुआ पीला पड़ गया (पीलिया) –पहले दिन अथवा 14 दिन के बाद भी पीलिया है नाक मुँह तथा गुदा से रक्तस्त्राव दौरे 24 घंटे तक शिशु को गर्म रखने के उपायों के बाद भी तापमान 95°फै. (35° सें) से कम टिटनस (चौथे दिन के बाद अकड़न, स्तनपान करने तथा मुंह खोलने में असमर्थ)

6. बताएँ कि गर्भावस्था के दौरान ही प्रसव के लिए परिवार योजना बना लेना, बहुत महत्वपूर्ण है। आपात्स्थिति कभी भी आ सकती है और जल्द गंभीर हो जाती है। यह जानना आवश्यक है कि आपात्स्थिति में कहाँ जाना है, यातायात के लिए पैसे बचाकर रखना है, तथा परिवार जनों से बातचीत करके अस्पताल जाने की अनुमति लेनी है (कुछ महीलाएँ पति के अनुमति के बिना कहीं नहीं जा सकतीं)।

7. प्रसव के दौरान अस्पताल भेजने के बारे में बताएँ। प्रसवपीड़ा तथा प्रसव के दौरान अस्पताल आपात्स्थिति में ही भेजा जाता है। मुख्य समस्याएँ होती हैं:

माँ: लंबी प्रसवपीड़ा, बहुत पहले बच्चेदानी की झिल्ली फटना (24 घंटे के पहले) दौरे, अत्यधिक रक्तस्त्राव तथा अवलनाल का देर तक बाहर न आना (30 मि. के भीतर बाहर न निकलना) (विषय वस्तु बाक्स देखें) **शिशु:** नाल का पहले बाहर निकलना, असामान्य जन्म (सिर के अलावा कोई अन्य भाग पहले बाहर आये), इससे प्रसवपीड़ा लंबी हो सकती है।

8. आशा से प्रसव वाला फॉर्म देखने को कहें। पहला प्रश्न है– प्रसवपीड़ा कब शुरू हुई? लंबी चलनेवाली प्रसवपीड़ा माँ तथा बच्चे दोनों के लिए आपात्स्थिति है। यदि माँ को लंबे समय तक प्रसवपीड़ा होती रहे तो बच्चेदानी फटने की संभावना होती है जो उसके तथा शिशु के लिए जानलेवा हो सकती है। लंबी चलने वाली प्रसवपीड़ा के कारण दम घुटे शिशु का जन्म हो सकता है। लंबी चलने वाली प्रसवपीड़ा तय करने के निम्न मापदंड हैं:

   – जिस महिला को पहला बच्चा हो रहा हो उसमें प्रसवपीड़ा 24 घंटे से अधिक नहीं होनी चाहिए (3 से 5 मि. पर दर्द हो)

   – जिस महिला को पहले बच्चे हो चुके हों उसमें प्रसवपीड़ा 12 घंटे से अधिक नहीं होनी चाहिए।

9. बताएँ कि प्रसवपीड़ा के दौरान अथवा प्रसव के बाद, अत्यधिक रक्तस्त्राव (दो कप से अधिक खून बहना) एक आपात्स्थिति है। इससे महिला की दो घंटे में मौत हो सकती है। ऐसे में उसे तुरंत अस्पताल ले जाना चाहिए। अवलनाल देर तक बाहर न निकले, प्रसव के 30 मि. तक बाहर न निकले, अथवा इसका थोड़ा भाग ही निकले तो यह भी एक आपात्स्थिति है। इससे माँ को अत्यधिक रक्तस्त्राव होगा और संक्रमण भी हो सकता है।

10. प्रसव के पहले माह में अस्पताल भेजने के बारे में बताएँ।

    माँ: प्रसव के पहले महीने में माँ को रक्तस्त्राव और संक्रमण का खतरा होता है (बच्चेदानी, स्तन, पेशाब)। रक्तस्त्राव का सबसे अधिक खतरा शिशु जन्म के कुछ घंटे से लेकर पहले सप्ताह तक होता है। यह खतरा पूरे महीने में लगातार बना रहता है। आशा को घरों का दौरा फॉर्म का पहला पन्ना देखने को कहें। माँ को बुखार, योनि से बदबुदार द्रव के स्त्राव के साथ, 100^0 फै. (37.8^0 सें) बुखार, या पेशाब के समय दर्द के लिए अस्पताल भेजें। स्तनों में दर्द के लिए माँ से कई बार स्तनपान कराने और गर्म सेंक करने को कहें। यदि समस्या बनी रहे तो अस्पताल भेजें। शिशु जन्म के बाद अत्यधिक रक्तस्त्राव (कई पैडों का प्रयोग किया हो, रक्तस्त्राव कम न हो) भी एक आपात्स्थिति है।

    शिशु: शिशुओं में गंभीर समस्या होने पर उन्हें अस्पताल भेजना चाहिए जैसे दौरे, रक्तस्त्राव, टिटनस, गंभीर पीलिया (पहले दिन पीलिया हो या 14 दिन के बाद भी बना रहे), सेप्सिस, स्तनपान करने में कठिनाई, या हाईपोथर्मिया का उपचार करने पर भी 24 घंटे तक शिशु की हालत में सुधार न हो। (उपर दिया विृय वस्तु बाक्स देखें)

11. **किस अस्पताल में भेजें:** बताएँ कि आइरनफोलिक ऐसिड गोलियाँ अथवा टीके के लिए, आशा माँ बच्चे को नर्स बहिनजी के पास भेजे। अन्य सामान्य स्थितियाँ जैसे बुखार के लिए आशा उन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अथवा प्राइवेट डॉक्टर के पास भेजे। आपात्स्थिति में अस्पताल भेजना आवश्यक है।

प्रशिक्षक/सुपरवाईज़र अपने क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ तथा पास के अस्पताल की पहले से पहचान कर ले जहाँ आपातस्थिति में माँ बच्चे का उपचार सम्भव हो सके। सुपरवाईज़र तथा आशा अस्पताल के कर्मचारियों से व्यक्तिगत रूप से बात कर ले ताकि जब वे अस्पताल पहुँचे तो उनकी देखभाल ठीक से की जा सके। जहाँ तक संभव हो, आशा माँ बच्चे के साथ अस्पताल जाए। इससे परिवार के लोगों में विश्वास आयेगा तथा अस्पताल में तुरंत उपचार मिलने में उन्हें कठिनाई नहीं होगी। सेप्सिस के लिए प्रतिजैविक दवाएँ, तथा यातायात के दौरान उचित देखभाल, जैसे शिशु को गर्म रखना, तथा स्तनपान जारी रखना, आवश्यक है।

12. **अस्पताल भेजने के लिए पर्ची का प्रयोगः** अस्पताल भेजने के लिए पर्ची का महत्व समझाएँ। शिशु या माँ को अस्पताल भेजने के लिए पर्ची के साथ अस्पताल भेजने पर डाक्टर को माँ या शिशु की समस्या, यदि दी हो तो क्या दवाई दी गई है यह पार्श्वभूमि तुरंत समझ में आएँगी। यह जानकारी, जो माँ शायद ठीक से न बता पाएँ, इकट्ठा करने में समय बरबाद न होगा।

13. आशाओं से कहें कि वे अभ्यासपत्र 1: अस्पताल भेजने के लिए पर्ची (माँ तथा शिशु) को देखें। एक एक करके सारे बिन्दु देखें और समझाएँ। प्रसव के समय गर्भावस्था के कितने दिन पूरे हुए थे यह जानकारी आशाको माँ तथा शिशु की देखभाल रिकार्ड में मिल सकती है। उसी फॉर्म में शिशु का जन्म के समय रोना तथा जन्म के समय वजन की जानकारी भी मिलेगी। आशा ने शिशु को क्या उपचार दिया है यह जानकारी उपचार फॉर्मो में मिलेगी जैसे – स्तनपान संबंधी समस्या उपचार फॉर्म, हायपोथर्मिया उपचार फॉर्म, सेप्सिस उपचार फॉर्म आदि। माँ या शिशु को अस्पताल भेजते समय अस्पताल भेजने वाली पर्ची भर कर आशा परिवार के सदस्य के पास दें।

    आशाओं से कहें कि वे माँ को अस्पताल भेजने वाली पर्ची देंखें। पर्ची में दिए गए सारे बिंदु एक एक करके समझाएँ और बताएँ कि गर्भावस्था के दौरान देखभाल की सारी जानकारी गर्भावस्था फॉर्म में दी हैं।

14. आशाओं को अभ्यासपत्र 1 और 2 बॉट दें। आशाएँ स्वयं काम करें और केस प्रस्तुति के आधारपर अस्पताल भेजने वाली पर्ची भरें। इसलिए उन्हें 15 मिनट का समय दें। पन्द्रह मिनट के पश्चात् आशाएँ आपस में अभ्यासपत्र की अदलाबदली करें।

15. आशाएँ बड़े समूह में बैठें और प्रशिक्षक केस के उत्तरों की उनके साथ चर्चा करें। प्रशिक्षक ने कहें उत्तरों के आधारपर आशाएँ एक दूसरे के अभ्यासपत्र जाँचें और अंक दें। प्रशिक्षक आशाओं की शंकाओं का समाधान करें।

सारांश (10 मि.)

- आशा से पूछें कि गर्भवती महिला को नर्स बहिनजी के पास या अस्पताल कब भेजना चाहिए ?
- किसी दूसरी आशा से वे तीन स्थितियाँ बताने को कहें जिनमें प्रसव के दौरान या प्रसव के तुरंत बाद अस्पताल भेज देना चाहिए। बताएँ कि यदि महिला को प्रसव के बाद रक्तस्त्राव हो रहा है तो उसे कहाँ भेजना चाहिए।
- एक अन्य आशा से पूछें कि पहले शिशु को कब तथा किस अस्पताल में भेजना चाहिए।
- जहाँ आवश्यक हो वहाँ सुधार करें, तथा कुछ रह गया हो तो वह भी बताएँ।
- आशा कि उसके अच्छे कार्य के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
गर्भावस्था, प्रसवपीड़ा, प्रसव एवं प्रसव के पहले महीने में उन स्थितियों की जानकारी देना जिनमें माँ बच्चे को अस्पताल भेजना आवश्यक है।	चर्चा/फॉर्मों की समीक्षा	–
बताना कि माँ तथा नवजात शिशु को किस अस्पताल में भेजना चाहिए।	चर्चा/प्रश्नोत्तर	–
अस्पताल भेजने के लिए पर्ची सही भरना।	केस प्रस्तुति के आधारपर अस्पताल भेजने के लिए पर्ची भरना	अस्पताल भेजने के लिए पर्ची भरने के अभ्यास की अंक तालिका

अस्पताल कब भेजें?		
	सामान्य स्थिति (जितना जल्दी संभव हो)	आपात्कालीन स्थिति (तुरंत)
गर्भावस्था	गंभीर एनीमिया बुखार पेशाब में जलन/ दर्द योनि से सफेद रंग का स्त्राव त्वचा पर खुजली/ दाद खाज/फोड़ा फुँसी / मवाद वाला फोड़ा इससे पूर्व गर्भावस्थाओं में बुरा अनुभव एक से अधिक गर्भ गर्भ की असामान्य स्थिति रतौंधी गर्भावस्था के दौरान देखभालः आइरन फोलिक ऐसिड गोलियाँ तथा टिटनस की सुई उच्च रक्तचाप अथवा उसकी शंका	योनि से रक्तस्त्राव/ धब्बे गर्भ में शिशु का हिलना डुलना कम/ बंद सिरदर्द तथा धुँधला दिखाई देना दौरे चेहरे तथा हथेलियों में सूजन
प्रसव		लंबी प्रसवपीड़ा– हल्का दर्द उठने के 24 घंटो तक प्रसव न हुआ हो शिशु की असामान्य स्थिति – सिर के अलावा अन्य कोई भाग पहले निकले माँ को अत्यधिक रक्तस्त्राव हो रहा हो अवलनाल बाहर न निकले – 30 मि. के भीतर अवलनाल बाहर न आये माँ बेहोश हो या दौरे पड़ रहे हों, बच्चेदानी की झिल्ली फट गयी हो (24 घंटे से अधिक) योनि अथवा बच्चेदानी का कटना फटना
शिशु जन्म के बाद 1 से 28 वें दिन	नवजात शिशु को टीके माँ के स्तन सूजे हुए, लाल तथा स्तनो में दर्द बुखार	**माँ** योनि से बदबूदार द्रव निकल रहा हो तथा 100^0फै. (37.8^0सें) से अधिक बुखार हो शिशु जन्म के बाद अत्यधिक रक्तस्त्राव हो रहा हो– 24 घंटो में 5 से अधिक पैड बदले हों दौरे बुखार, बहुत बीमार उलटा सीधा बोलना या बर्ताव **शिशु** शिशु को स्तनपान करने में समस्या है जो आशा के परामर्श तथा घरेलू उपचार से ठीक नही हुई हो।

	सामान्य स्थिति (जितना जल्दी संभव हो)	आपात्कालीन स्थिति (तुरंत)
		शिशु में खतरे के लक्षण प्रतिजैविक दवाओं के 24 घंटे के उपचार के बाद भी ठीक नही हुआ पीला पड़ गया (पीलिया) –पहले दिन अथवा 14 दिन के बाद भी पीलिया है नाक मुँह तथा गुदा से रक्तस्त्राव दौरे 24 घंटे तक शिशु को गर्म रखने के उपायों के बाद भी तापमान 95°फै. (35° सें) से कम टिटनस (चौथे दिन के बाद अकड़न, स्तनपान करने तथा मुंह खोलने में असमर्थ)

अस्पताल भेजने के लिए पर्ची

नवजात शिशु को अस्पताल भेजना

माँ का नामः ______________________ गाँव का नाम ______________

गर्भावस्था काल ________ महीने _______ दिवस जन्म के समय वजन __________

क्या शिशु जन्मतेही रोया था? हाँ / नहीं

कौनसी समस्या के लिए शिशु को अस्पताल भेजा जा रहा है?

अब तक किया गया उपचारः ______________________________

____

____

दवाई का नाम कितने दिन दी

1.

2.

3.

तारीख आशा का नाम

माँ को अस्पताल भेजना

अस्पताल भेजनाः(उचित पर गोला करें)गर्भावस्था के दौरान/प्रसव के दौरान/प्रसव के पश्चात्

माँ का नामः ______________________ गाँव का नाम ______________

गर्भावस्था में देखभालः

टीटेनस के टीकेः एक/दो

गर्भावस्था में जाँचः एक/दो/तीन बार प्राथमिक आरोग्य केंद्र/सब सेंटर/नर्स बहनजी/निजी अस्पताल

कौनसी समस्या के लिए माँ को अस्पताल भेजा जा रहा है? ______________________

____

____

____

अब तक किया गया उपचारः ______________________________

____

____

तारीख आशा का नाम

आशा का नाम ______________	तारीख ______________
प्रशिक्षक का नाम ______________	कुल अंक ______________
ब्लॉक ______________	

केस प्रस्तुतिः (अंक 10)

- खुर्सा गॉंव में संगीता नाम की आशा है।
- डारंबा खुर्सा गॉंव में रहती हैं।
- गर्भावस्था के 8 महीने 20 दिन पूरे होने के बाद डारंबा को बेटा पैदा हुआ।
- शिशु जन्मतेही रोया।
- शिशु का जन्म के समय वजन 2 किलो 600 ग्राम था।
- चौथे दिन शिशु का रोना कमजोर था और दूध पीना कम था।
- आशा ने सेप्सिस का निदान किया।
- आशा ने कोट्रिमॉक्सेजोल से उपचार शुरू किया।
- कोट्रिमॉक्सेजोल की दो खुराक देने के बाद आशा ने शिशु को दूसरे दिन फिर देखा।
- उपचार शुरू करने के 24 घंटे बाद भी शिशु की हालत में सुधार नहीं था।
- 20 जनवरी 2008 को आशा ने अस्पताल भेजने वाली पर्ची भरी और शिशु को अस्पताल भेजा।

इस शिशु का अस्पताल भेजने के लिए पर्ची भरें।

केस प्रस्तुति के आधारपर भरी हुई अस्पताल भेजने के लिए पर्ची

अस्पताल भेजने के लिए पर्ची

नवजात शिशु को अस्पताल भेजना

मॉं का नामः **डारंबा** गॉंव का नाम **खुर्सा**

गर्भावस्था काल 8 महीने 20 दिवस जन्म के समय वजन 2 **किलो** 600 **ग्राम**

क्या शिशु जन्मतेही रोया था? **हॉं** / नहीं

कौनसी समस्या के लिए शिशु को अस्पताल भेजा जा रहा है? **चौथे दिन रोना कमजोर और दूध पीना कम। उपचार शुरू करने के 24 घंटे बाद भी शिशु की हालत में सुधार नहीं।**

अब तक किया गया उपचारः

दवाई का नाम	कितने दिन दी
1. **कोट्रिमॉक्सेजोल**	**1 दिन**
2.	
3.	

तारीखः 20 **जनवरी** 2008 आशा का नामः **संगीता**

मॉं को अस्पताल भेजना

अस्पताल भेजनाः (उचित पर गोला करें) गर्भावस्था के दौरान/प्रसव के दौरान/प्रसव के पश्चात्

मॉं का नाम गॉंव का नाम

गर्भावस्था में देखभालः

टीटेनस के टीकेः एक/दो

गर्भावस्था में जॉंचः एक/दो/तीन बार प्राथमिक आरोग्य केंद्र/सब सेंटर/नर्स बहनजी/निजी अस्पताल

कौनसी समस्या के लिए मॉं को अस्पताल भेजा जा रहा है?

अब तक किया गया उपचारः

तारीख आशा का नाम

मोड्यूल 16 : नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम

सत्र 4 : माँ तथा नवजात शिशु के रिकार्डों की समीक्षा

दिवस : 2

समयावधि : 2 घं.

प्रयोजन

आशाओं ने अब तक गर्भावस्था फॉर्म पुस्तिका, मॉं तथा नवजात शिशु रिकार्ड पुस्तिका, पूरक फॉर्म पुस्तिका, माता पिता के लिए जानकारी पत्र की पुस्तिका से अलग अलग रिकार्डो का प्रयोग करने का अभ्यास किया है। अंतिम प्रशिक्षण के इस सत्र में सारे नवजात रिकार्डो की समीक्षा की जाएगी जिससे आशा के मन में यदि किसी रिकार्ड के बारे में कोई संदेह हो तो दूर हो जाएगा।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी:

1. नवजात शिशुओं तथा माताओं को उत्तम सेवाएँ देने हेतु रिकार्डो का ठीक प्रकार से प्रयोग।
2. घरों के दौरे के समय आशा के कार्यो का क्रम बताना।

सामग्री

- गर्भावस्था फॉर्म पुस्तिका
- मॉं तथा नवजात शिशु रिकार्ड (प्रसव फॉर्म, नवजात शिशु की पहली जॉंचः फॉर्म, घरों का दौरा फॉर्म, नवजात शिशु स्वास्थ्य सेवा मूल्यांकन फॉर्म, निदान तथा उपचार सारांश)
- पूरक फॉर्म पुस्तिका (अधिक खतरे वाले शिशुओं का घरों का दौरा फॉर्म, घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना, स्तनपान संबंधी समस्याः उपचार फॉर्म, हाइपोथर्मिया उपचार फॉर्म, सेप्सिस उपचार फॉर्म)
- माता–पिता के लिए जानकारी प्रपत्र पुस्तिका (शिशु जन्म के पूर्व तथा पश्चात् मॉं क्या कदम उठाये, अधिक खतरे वाले शिशु जानकारी पत्र, खतरे के लक्षण जानकारी पत्र)
- अस्पताल भेजने कि लिए पर्ची पुस्तिका
- अध्ययन पत्र 1: घरों के दौरे पर आशा के कार्यो का क्रम।
- अभ्यासपत्र 1: अलग अलग स्थितियों की सूची
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: अभ्यासपत्र 1 के उत्तर

तैयारी

- उपर्युक्त सभी फॉर्म तथा पुस्तिकायें पर्याप्त मात्रा में तैयार रखें। आशा से कहें कि उसे दी गयी अध्ययन सामग्री साथ लाए।

प्रस्तुति, समीक्षा एवं चर्चा (1 घंटा 10 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझावः

1. संक्षेप में बतायें कि अब आशा नवजात शिशु की देखभाल करना पूरी तरह सीख चुकी है और नवजात शिशुओं को सेवा देने में सक्रिय हैं। अतः नवजात शिशु तथा मॉं को दी जा रही सभी सेवाओं का

लेखा–जोखा उसे रखना है।

2. माँ तथा नवजात शिशु वाले फॉर्म (प्रसव वाला फॉर्म, शिशु की पहली जॉच फॉर्म, घरों का दौरा फॉर्म, नवजात शिशु स्वास्थ्य सेवा मूल्यांकन फॉर्म, निदान तथा उपचार सारांश) की एक प्रति प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को बॉंट दें।

3. गर्भावस्था फॉर्म से शुरू करें और बतायें कि इसमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

4. आशाओं से अभ्यास पुस्तिका 1 में दिये गये प्रसव फॉर्म को तथा माँ एवं नवजात शिशु फॉर्म में दिये गये प्रसव फॉर्म को देखने को कहें। आशाओं से कहें कि वे माँ एवं नवजात शिशु फॉर्म में देखें कि क्या नई जानकारी को जोड़ा गया हैं। यही फॉर्म का प्रयोग आशाएँ गाँव में कर रही हैं। समझाएँ कि शुरूआती प्रशिक्षण कार्यशालाओं के बाद आशाएँ प्रसव में उपस्थित होना तथा प्रसव का निरिक्षण करना सींख रही थी। अब आशाएँ यह भी जानती हैं कि जन्मतेही दम घुटे शिशु का पुनरूज्जीवन कैसे करना है। अब वे यह भी पहचानती है कि जन्मतेही शिशु सामान्य है या उसका दम घुटा हैं। यदि दम घुटे शिशु का पुनरूज्जीवन नहीं किया जा सकता तो वह 'मृत शिशु जन्म' कहलाता है।

   उदाहरणः

   - प्रश्न 9ब में तीन विकल्प दिये गये हैं – सामान्य / दम घुटा शिशु / देर का मरा

     यदि शिशु का पुनरूज्जीवन किया गया हो तो इस जानकारी को प्रश्न 9क में लिखना है।

   - पुनरूज्जीवन का क्या परिणाम हुआ, शिशु जीवीत है या मृत शिशु जन्म इस जानकारी को प्रश्न 9ड में लिखना हैं।

5. नवजात शिशु की पहली जॉचः फॉर्म की समीक्षा करें।

   - फॉर्म के भाग 1 को देखें। प्रश्न नंबर 6 में एक खाना जोड़ा गया है जिसमे बताया गया है कि यदि स्तनपान की समस्या है, तो क्या करना है। पिछली प्रशिक्षण कार्यशाला में वे यह सीख चुकी हैं कि स्तनपान संबंधी समस्या के लिए क्या कदम उठाने हैं। यहाँ आशा को लिखना है कि उसने कोई कदम उठाये या नहीं।

   - फॉर्म के भाग 2 को देखें। प्रश्न नंबर 1 में आशा को शिशु के शरीर का तापमान लिखना है। यदि तापमान 97^0 फै. (36.1^0 सें) से कम है तो शिशु को गर्म करने के उपाय करने हैं।

   - प्रश्न नं. 5 में आशाओं को लिखना है कि क्या शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज है, रोना कमजार या बंद है तथा दूध पीना कमजोर या बंद है।

   - प्रश्न 5 के नीचे खाने में अधिक खतरे वाले शिशु का निदान तथा उपचार के बारे में जानकारी हैं। आशाओं ने अब तक ऐसे शिशुओं की देखभाल की है और इस काम का अच्छा अभ्यास किया हैं। प्रशिक्षक इस खाने के प्रत्येक बिंदु को पढ़े और समझाएँ।

6. घरों का दौरा फॉर्म की समीक्षा करें। आशाओं को क्या कार्य करने है इस बारे में जानकारी इस नये फॉर्म में दी गई है। एक एक करके सारे कार्यो को समझाएँ। आशाओं के कोई सवाल हो तो पूछें। चर्चा के लिए पर्याप्त समय दें। आशाओं को याद दिलाएँ कि सेप्सिस निदान के भाग में पहले दिन की जानकारी को शिशु की पहली जॉच फॉर्म से नकल करना है। आशाओं को समझाएँ कि 42 वें दिन के घर के दौरे के बाद यह फॉर्म पूरा हो जाता है। शिशु 2 महीने का होने तक यह फॉर्म आशा के पास ही रहें। इस

दौरान यदि शिशु को कोई समस्या है और आशा को बुलाया जाता हैं, तो आशा शिशु का उपचार करें और दौरे की जानकारी इसी फॉर्म में अन्य दिन के कालम में भरें।

7. मॉं तथा नवजात शिशु वाले फॉर्म के अंत में नवजात शिशु स्वास्थ्य सेवा मूल्यांकन फॉर्म देखें। सब विषयों को एक एक कर के पढ़ें। देखभाल किये हुये मॉं–बच्चे के बारे में जानकारी आशा इस फॉर्म में भरें। यह फॉर्म उसी महीने में पूरा किया जाना चाहिए जिस में सेवाए दी गयी। प्रत्येक प्रश्न ज़ोर से बोल कर पढ़ें, तथा उदाहरण दे, जिससे हर आशा यह समझ जाये कि उत्तर कैसे देने हैं। सुपरवाईज़र खुद भी इस फॉर्म को पूरा करें। इस फॉर्म को भरने के लिए आवश्यक जानकारी इसी फॉर्म में दी गयी है। जिन कार्यक्रमों में कार्यकर्ताओं को उनके कार्य के अनुसार पारिश्रमिक दिया जाता है, वहॉं इस फॉर्म का प्रयोग पारिश्रमिक के निर्धारण में किया जायेगा।

8. पूरक फॉर्म की पुस्तिका में दिये गये अन्य फॉर्म हैः अधिक खतरे वाले शिशुः घरों का दौरा फॉर्म, घरों का दौरा फॉर्मः दूसरे महीने का दौरा, स्तनपान संबंधी समस्याः उपचार फॉर्म, हाईपोथर्मिया उपचार फॉर्म और सेप्सिस उपचार फॉर्म।

9. आशाओं से कहें कि वे माता–पिता के लिए जानकारी प्रपत्रों वाली पुस्तिका के बारे में बताने को कहें। इस पुस्तिका में तीन प्रकार के प्रपत्र हैं:
   1. मॉं व्दारा शिशु के जन्म से पूर्व तथा पश्चात् उठाये जाने वाले कदम (सभी गर्भवती महिलाओं को सातवें महीने वाले घर के दौरे के समय दिया जायेगा)।
   2. खतरे के लक्षणः जानकारी प्रपत्र। विषय–वस्तु की समीक्षा करें।
   3. अधिक खतरे के लक्षणों वाले शिशुः जानकारी प्रपत्र (अधिक खतरे के लक्षणों वाले शिशुओं के माता–पिता को दिया जायेगा)।

   बतायें कि दूसरा प्रपत्र प्रसव के पश्चात् दूसरे दिन परिवार को दिया जाना है जब आशा शिशु की जांच के लिए आयेगी, तथा मॉं एवं परिवार के लोगों को स्वास्थ्य शिक्षा देगी। आशा नवजात शिशु की जॉंच के लिए जाते समय प्रत्येक बार माता–पिता से इस प्रपत्र में दिए गए खतरे के लक्षणों की चर्चा करें। तीसरा प्रपत्र अधिक खतरे के लक्षणों वाले शिशुओं के माता–पिता को दूसरे दिन दिया जायेगा। प्रपत्रों में दी गई जानकारी की चर्चा आशा माता–पिता से करें।

10. आशाओं से कहें कि वे अध्ययनपत्र में दिए गए, घरों के दौरे के समय आशा के कार्यों के क्रम को देंखें। पहले आशाओं को उनके कार्यों का अलग क्रम से दिया गया था। अब आशा नवजात शिशु की पूरी देखभाल कर रही है इसलिए इन कार्यों के क्रम को बदला गया है। आशाओं के साथ इस सूची की समीक्षा करें और कुछ समस्या हो तो उनका समाधान करें।

11. निदान तथा उपचार सारांश वाला फॉर्म देखे। बताए की नवजात शिशु तथा मॉं के लिए भरे गये फॉर्मो में से यह जानकारी मिल जायेगी। एक एक करके सभी विषय पढ़ते जाये और आशा से पूछते जाये कि जानकारी किस फॉर्म में उपलब्ध है। फॉर्म देखकर उन्हें उत्तर देने को कहें। आशा को फॉर्म के बारे में जानकारी होनी चाहिए। यद्यपि फॉर्म में दी गयी जानकारी सुपरवाईज़र व्दारा भरी जानी है।

12. आशा से पूछें कि नवजात शिशु की घरेलू देखभाल हेतु कौन कौन सी सूचियॉं, फॉर्म तथा प्रपत्र प्रयोग किए जाते है। आशा की सहायता से इसकी एक सूची ब्लैक बोर्ड पर बनाएँ। सूची में निम्न बातें सम्मिलित होनी चाहिएः

13. आशाओं से कहें कि वें अस्पताल भेजने की पर्ची को देंखें। पिछले सत्र में ही इसकी चर्चा हुई हैं। कुछ समस्या हो तो आशाओं को पूछें।

रजिस्टरः

1. गॉंव की गर्भधारण योग्य महिलाओं की सूची
2. गर्भवती महिलाओं की सूची

गर्भावस्था फॉर्म पुस्तिकाः

1. गर्भावस्था फॉर्म

हर घर में मॉं तथा नवजात शिशु की देखभाल का रिकार्डः

1. प्रसव फॉर्म
2. नवजात शिशु की पहली जॉंचः फॉर्म
3. घरों का दौराः फॉर्म
4. नवजात शिशु स्वास्थ्य सेवा मूल्यांकन फॉर्म
5. निदान तथा उपचार सारांश

पूरक फॉर्म पुस्तिकाः

1. घरों का दौरा फॉर्मः अधिक खतरे वाले शिशु
2. घरों का दौरा फॉर्मः दूसरे महीने का दौरा
3. स्तनपान संबंधी समस्याएँ उपचार फॉर्म
4. हाईपोथर्मिया उपचार फॉर्म
5. नवजात शिशु सेप्सिस उपचार फॉर्म

माता–पिता के लिए जानकारी पत्रः

1. शिशु जन्म से पहले तथा बाद में मॉं व्दारा उठाये जाने वाले कदम
2. खतरे के लक्षणः जानकारी पत्र
3. अधिक खतरे के लक्षण वाले शिशुः जानकारी पत्र

अस्पताल भेजने के लिए पर्ची

1. नवजात शिशु को अस्पताल भेजने के लिए पर्ची
2. मॉं को अस्पताल भेजने के लिए पर्ची

<u>समूह में अभ्यास</u> (40 मि.)

1. आशाओं के 5–5 के समूह बनाएँ।
2. प्रत्येक आशा फॉर्म, रजिस्टर, जानकारी प्रपत्र तथा अस्पताल भेजने के लिए पर्ची पुस्तिका का अपना पूरा सेट लेकर समूह में शामिल हो।
3. प्रत्येक समूह को अभ्यासपत्र 1: अलग अलग स्थितियों की सूची की एक–एक कापी दें।
4. अभ्यासपत्र से एक–एक स्थिति की चर्चा समूह में हो।
5. सूची में दिए गए प्रत्येक स्थिति के लिए कौनसे रिकार्ड या फॉर्म का प्रयोग किया जाएगा यह प्रत्येक आशा निश्चित करें।

6. प्रत्येक आशा ने चयन किये फॉर्म या रिकार्ड पर समूह में चर्चा हो और अंतिम निर्णय अभ्यासपत्र में लिखें।
7. प्रशिक्षक कमरे में घूम घूमकर देंखें तथा किसी की कोई समस्या हो तो सहायता हरें।

सारांश (10 मि.)

- आशा से सत्र में बताई गयी मुख्य बातों की समीक्षा करने को कहें।
- यदि कुछ शेष रह गया हो तो बतायें तथा गलतियों को सुधारें।
- आशा की उनके अच्छे कार्य के लिये प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
नवजात शिशुओं तथा माताओं को उत्तम सेवाएँ देने हेतु रिकोर्डो का ठीक प्रकार से प्रयोग	समूह में अभ्यास	प्रत्येक समूह व्दारा पूरा किया गया अभ्यासपत्र ।

घर घर जाने पर आशा के कार्यों का क्रम

- नमस्कार करें
- इधर उधर की बाते करें, खुशहाली पूछें।
- माँ की जानकारी भरे (घरों का दौरा फॉर्म)।
- माँ की समस्याओं के लिए स्वास्थ्य संबंधी परामर्श दें, आवश्यकता नुसार।
- नवजात शिशु की जानकारी भरें (घरों का दौरा फॉर्म)।
- आवश्यकता नुसार सेप्सिस उपचार फॉर्म, हायपोथर्मिया उपचार फॉर्म, स्तनपान संबंधी समस्या उपचार फॉर्म भरें।
- शिशु की समस्या के लिए माँ को स्वास्थ्य संबंधी परामर्श दें, आवश्यकता नुसार।
- झोले से आवश्यक उपकरण निकाले और साफ सुथरे कपड़े पर रखें।
- हाथ धोएँ
- नवजात शिशु की जाँच करें – तापमान मापें, वज़न करें तथा फॉर्म के अनुसार, क्रम में कार्य करें।
- आँखे, त्वचा तथा नाल की देखभाल करें।
- घरों का दौरा फॉर्म पूरा करें।
- नवजात शिशु में खतरे के लक्षणों के बारे में माँ से बातचीत करें और माँ को पूछें कि आशा को कब बुलाना है।

अलग–अलग स्थितियों की सूची – नीचे दी गई है।

प्रत्येक स्थिति में उस दिन आप कौनसे रिकार्ड, फॉर्म और प्रपत्र का प्रयोग करेंगी यह प्रत्येक स्थिति के सामने लिखें। उदाहरणः बाहर गॉव की महिला आप के गॉव में आई और आज उसका प्रसव हुआ। उसके गॉव में आने के बारे में आपको आज ही पता चला और आप प्रसव में उपस्थित थी। (आप निम्न फॉर्म और रिकार्ड का प्रयोग करेंगी। 1. गर्भवती महिलाओं की सूची, 2. गर्भावस्था फॉर्म, 3. प्रसव फॉर्म, शिशु की पहली जॉच फॉर्म)

स्थितियॉ	**प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टर, फॉर्म तथा प्रपत्र** (आवश्यकता हो तो 1 से अधिक लिखें)	अंक
1. मॉ को प्रसव के दिन से दूध नहीं है।	1. 2. 3.	
2. शिशु का जन्म के समय वजन 1 किलो 200 ग्राम।	1. 2.	
3. मॉ को लगता है कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है।	1. 2.	
4. शिशु पॉचवे दिन स्तनपान नहीं कर पा रहा हैं।	1. 2.	
5. आपने सातवें दिन शिशु के घर का दौरा किया और सेप्सिस का निदान किया है।	1. 2.	
6. 9 महीने की गर्भवती महिला आपके गॉव में प्रसव के लिए आती है।	1. 2.	
7. आशा प्रसव में उपस्थित थी और मृत शिशु जन्म हुआ।	1.	
8. आशा प्रसव के 1 घंटा बाद शिशु की पहली जॉच कर रही है।	1.	
9. अट्ठाईसवें दिन शिशु का वजन 2 किलो 100 ग्राम था। आप 35 वें दिन घर का दौरा कर रही है।	1.	
10. आशा घरों का दौरा कर मॉ तथा सामान्य शिशु की देखभाल कर रही है। पॉचवे दिन मॉ कहती है कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है।	1. 2.	

स्थितियाँ	प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टर, फॉर्म तथा प्रपत्र (आवश्यकता हो तो 1 से अधिक लिखें)	अंक
11. मापने पर आशा ने शिशु का तापमान 93^0फै ($33.9\ ^0$सें) पाया।	1. 2.	
12. शिशु का जन्म हुआ तब माँ के गर्भावस्था के 8 महीने पूरे हुए थे। आप दूसरे दिन घरों का दौरा कर रही है।	1. 2. 3.	
13. पाँचवे दिन के घर के दौरे में आशा ने पाया कि माँ के चूचुक कटे–फटे है।	1. 2.	
14. पन्द्रहवें दिन घरों के दौरे में आशा ने पाया कि शिशु की टुंड़ी पर मवाद हैं और शिशु का रोना कमजोर है।	1. 2.	
15. 28 वें दिन आशा ने पाया कि जन्म के बाद शिशु का वजन 300 ग्राम से कम बढ़ा हैं। आशा 42 वें दिन घर का दौरा कर रही हैं।	1.	
16. तीसरे दिन घर के दौरे में आशा ने पाया कि माँ के स्तनों में सूजन है।	1. 2.	
17. अधिक खतरेवाले शिशु के घर के दौरे में आशा ने पाया कि शिशु ने दूध पीना बंद किया है और उसका पेट फूला है।	1. 2.	
18. आपके गाँव की गर्भवती महिला को आप गर्भावस्था के सातवें महीने में मिलने जाती है।	1.	
19. प्रसव के बाद दूसरे दिन आप अधिक खतरेवाले शिशु के घर के दौरा कर रही है।	1. 2. 3.	
20. आप के गाँव की एक महिला का आज प्रसव हुआ और उसने सामान्य शिशु को जन्म दिया।	1. 2.	

स्थितियाँ	प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टर, फॉर्म तथा प्रपत्र (आवश्यकता हो तो 1 से अधिक लिखें)	अंक
21. आपने उपर की केस (क्र 20) में दिए गए शिशु के घर का दूसरे दिन दौरा किया।	1. 2.	
22. चौथे दिन शिशु का शरीर ठंड़ा पड़ गया और शिशु ने स्तनपान करना बंद किया।	1. 2.	
23. पॉचवे दिन आपने पाया कि सेप्सिस उपचार के बाद 24 घंटे में शिशु की स्थिति में कोई बदलाव नहीं।	1. 2. 3.	
24. दूसरे गॉव की 7 महीने की गर्भवती महिला आप के गॉव में प्रसव के लिए आई है। आप 7 वें महीने में उससे मिल रही है।	1. 2. 3.	
25. तीन दिन का शिशु लगातार रोता है और 24 घंटे में 3 बार पेशाब करता है।	1. 2. 3.	

अभ्यासपत्र 1 के उत्तर

अलग–अलग स्थितियों की सूची नीचे दी गई है।

प्रत्येक स्थिति में उस दिन आप कौनसे रिकार्ड, फॉर्म और प्रपत्र का प्रयोग करेंगी यह प्रत्येक स्थिति के सामने लिखें। उदाहरणः बाहर गॉंव की महिला आप के गॉंव में आई और आज उसका प्रसव हुआ। उसके गॉंव में आने के बारे में आपको आज ही पता चला और आप प्रसव में उपस्थित थी। (आप निम्न फॉर्म और रिकार्ड का प्रयोग करेंगी। 1. गर्भवती महिलाओं की सूची, 2. गर्भावस्था फॉर्म, 3. प्रसव फॉर्म, शिशु की पहली जॉंच फॉर्म)

स्थितियॉं	प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टर, फॉर्म तथा प्रपत्र (आवश्यकता हो तो 1 से अधिक लिखें)	अंक
1. मॉं को प्रसव के दिन से दूध नहीं है।	1. प्रसव फॉर्म 2. शिशु की पहली जॉंच फॉर्म 3. स्तनपान संबंधित समस्या उपचार फॉर्म	3
2. शिशु का जन्म के समय वजन 1 किलो 200 ग्राम।	1. प्रसव फॉर्म 2. शिशु की पहली जॉंच फॉर्म	2
3. मॉं को लगता है कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. हायपोथर्मिया उपचार फॉर्म	2
4. शिशु पॉंचवे दिन स्तनपान नहीं कर पा रहा हैं।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. स्तनपान संबंधित समस्या उपचार फॉर्म	2
5. आपने सातवें दिन शिशु के घर का दौरा किया और सेप्सिस का निदान किया है।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. सेप्सिस उपचार फॉर्म	2
6. 9 महीने की गर्भवती महिला आपके गॉंव में प्रसव के लिए आती है।	1. गर्भवती महिलाओं की सूची 2. गर्भावस्था फॉर्म	2
7. आशा प्रसव में उपस्थित थी और मृत शिशु जन्म हुआ।	1. प्रसव फॉर्म	1
8. आशा प्रसव के 1 घंटा बाद शिशु की पहली जॉंच कर रही है।	1. शिशु की पहली जॉंच फॉर्म	1
9. अट्ठाईसवें दिन शिशु का वजन 2 किलो 100 ग्राम था। आप 35 वें दिन घर का दौरा कर रही है।	1. घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना	1
10. आशा घरों का दौरा कर मॉं तथा सामान्य शिशु की देखभाल कर रही है। पॉंचवे दिन मॉं कहती है कि शिशु का शरीर छूने में ठंड़ा है।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. हायपोथर्मिया निदान तथा उपचार फॉर्म	2

स्थितियॉं	प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टर, फॉर्म तथा प्रपत्र (आवश्यकता हो तो 1 से अधिक लिखें)	अंक
11. मापने पर आशा ने शिशु का तापमान 93^0फै ($33.9\ ^0$सें) पाया।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. हायपोथर्मिया निदान तथा उपचार फॉर्म	2
12. शिशु का जन्म हुआ तब मॉ के गर्भावस्था के 8 महीने पूरे हुए थे। आप दूसरे दिन घरों का दौरा कर रही है।	1. घरों का दौरा फॉर्मः अधिक खतरे वाले शिशु 2. अधिक खतरेवाले शिशुः जानकारी प्रपत्र 3. खतरे के लक्षणः जानकारी प्रपत्र	3
13. पॉचवे दिन के घर के दौरे में आशा ने पाया कि मॉ के चूचुक कटे–फटे है।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. स्तनपान संबंधी समस्याः उपचार फॉर्म	2
14. पन्द्रहवें दिन घरों के दौरे में आशा ने पाया कि शिशु की टुंड़ी पर मवाद हैं और शिशु का रोना कमजोर है।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. सेप्सिस उपचार फॉर्म	2
15. 28 वें दिन आशा ने पाया कि जन्म के बाद शिशु का वजन 300 ग्राम से कम बढ़ा हैं। आशा 42 वें दिन घर का दौरा कर रही हैं।	1. घरों का दौरा फॉर्मः दूसरा महीना	1
16. तीसरे दिन घर के दौरे में आशा ने पाया कि मॉ के स्तनों में सूजन है।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. स्तनपान संबंधी समस्याः उपचार फॉर्म	2
17. अधिक खतरेवाले शिशु के घर के दौरे में आशा ने पाया कि शिशु ने दूध पीना बंद किया है और उसका पेट फूला है।	1. घरों का दौरा फॉर्मः अधिक खतरे वाला शिशु 2. सेप्सिस उपचार फॉर्म	2
18. आपके गॉव की गर्भवती महिला को आप गर्भावस्था के सातवें महीने में मिलने जाती है।	1. शिशु जन्म से पहले तथा बाद में मॉ व्दारा उठाये जाने वाले कदम	1
19. प्रसव के बाद दूसरे दिन आप अधिक खतरेवाले शिशु के घर के दौरा कर रही है।	1. घरों का दौरा फॉर्मः अधिक खतरे वाला शिशु 2. अधिक खतरे वाला शिशुः जानकारी प्रपत्र 3. खतरे के लक्षण जानकारी प्रपत्र	3
20. आप के गॉव की एक महिला का आज प्रसव हुआ और उसने सामान्य शिशु को जन्म दिया।	1. प्रसव फॉर्म 2. शिशु की पहली जॉच फॉर्म	2

स्थितियाँ	प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टर, फॉर्म तथा प्रपत्र (आवश्यकता हो तो 1 से अधिक लिखें)	अंक
21. आपने उपर की केस (क्र 20) में दिए गए शिशु के घर का दूसरे दिन दौरा किया।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. खतरे के लक्षण जानकारी प्रपत्र	2
22. चौथे दिन शिशु का शरीर ठंड़ा पड़ गया और शिशु ने स्तनपान करना बंद किया।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. सेप्सिस उपचार फॉर्म	2
23. पॉंचवे दिन आपने पाया कि सेप्सिस उपचार के बाद 24 घंटे में शिशु की स्थिति में कोई बदलाव नहीं।	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. सेप्सिस उपचार फॉर्म 3. अस्पताल भेंजने के लिए पर्ची	3
24. दूसरे गॉंव की 7 महीने की गर्भवती महिला आप के गॉंव में प्रसव के लिए आई है। आप उससे 7 वें महीने में मिल रही है	1. घरों का दौरा फॉर्म 2. सेप्सिस उपचार फॉर्म 3. अस्पताल भेंजने के लिए पर्ची	3
25. तीन दिन का शिशु लगातार रोता है और 24 घंटे में 3 बार पेशाब करता है।	1. गर्भवती महिलाओं की सूची 2. गर्भावस्था फॉर्म 3. शिशु जन्म से पहले तथा बाद में मॉं व्दारा उठाये जाने वाले कदम	3

मोड्यूल 16 : नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम

सत्र 5 : स्वास्थ्य के विषय पर वार्ता का आयोजन करना

दिवस : 2
समयावधि : 1 घं. 20 मि.

प्रयोजन

गाँव में 6 महीने में एक बार गर्भवती महिलाओं के लिए स्वास्थ्य के विषय पर वार्ता का आयोजन करने में आशाओं की मदद करना। आशा इस कार्यकम मे सुपरवाइज़र की मदद करेगी।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यता आएँगीः

1. समुदाय की गर्भवती महिलाओं के लिए स्वास्थ्य शिक्षा के विषय में वार्ताओं का आयोजन करना।

सामग्री

- वार्ता के दौरान दिखाने के लिए विडिओ सीडी (नन्ही सी जान – हिन्दी)
- विडिओ सीडी प्लेयर, टी.वी. जनरेटर (यदि गाँव में बिजली नहीं है), टी.वी. रखने के लिए मेज
- स्वास्थ्य शिक्षा चित्र पुस्तिका के 1–2 सेट (यदि समय पर विडीओ सिस्टम ने काम नहीं किया तो)
- हाथ धोने के लिये चीनी मिट्टी का कटोरा
- साबुन और पानी
- गुड़िया
- गर्म थैली
- बैग और मास्क
- बिल्टा पम्प
- कम्बल
- अभ्यासपत्र 1: स्वास्थ्य के विषय में वार्ताओं का आयोजन करने के लिए स्थानिक जानकारी

तैयारी

- उपर दी गई सारी सामग्री तैयार रखें।
- यदि विडिओ सीडी प्लेयर, टी.वी. और जनरेटर का प्रयोग करना है, तो सारा सामान इकट्ठा कर लें और देखें की वह काम कर रहा है।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवँ चर्चा</u> (1 घंटा 10 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. बात करें कि आशा, और प्रशिक्षक स्वास्थ्य वार्ता के लिए तिथि कैसे निश्चित करेंगे। बताएँ कि मासिक दौरे के समय दोनों इसकी तिथि निश्चित करें। वे दोनों यह भी निश्चित करें कि बैठक में किस–किस विषय पर चर्चा की जाएगी और प्रत्येक की क्या–क्या जिम्मेदारियाँ होंगी।

2. आशाओं से पूछें कि वे यह कैसे निर्धारित करेंगी कि वार्ता के लिए किसको सूचित करना है। (*गर्भवती महिलाओं के नामों की सूची वाला रजिस्टर देखें*)।
3. गाँव के प्रमुख लोगों को सूचित करें (महिला मंडल, ए.एन.एम. (बहिन जी), दाई आदि) और ध्यान रखें कि चुने गए दिन पर सभी को आने में सुविधा हो।
4. गर्भवती महिलाएँ और उनके परिवार के सदस्य (जैसे माँ, सास आदि), जो पहले से कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हों, उन्हें वार्ता के एक दिन पहले याद दिला दें।
5. बैठक के लिये ऐसा स्थान चुनें, जो सबके लिए सुविधाजनक हो; यदि विडिओ दिखाया जाना है तो आस–पास बिजली की व्यवस्था होनी चाहिए और विडिओ सीडी प्लेयर तथा टी.वी. रखने की सुविधा भी होनी आवश्यक है। आस–पास के 2–3 गाँव मिलकर ऐसी बैठक में भाग ले सकते हैं।
6. यह समझाएँ कि बैठक के दिन आशा क्या करें:

क. बैठक जहाँ होनी है, उसके आस–पास का क्षेत्र साफ हो।

ख. विडिओ सीडी और टी.वी. लगवा दें।

ग. सभी महिलाओं को बैठा दें।

घ. आशा सबका स्वागत करें और सुपरवाईज़र से परिचय कराएँ।

च. बातचीत में निम्न का ध्यान रखें :

- स्पष्ट, धीरे–धीरे और ऊँची आवाज में बोलें
- सीधे खड़ी हों और श्रोताओं से नजरें मिलाकर बात कहें
- मुस्कराएँ
- प्रश्न पूछें और सभी को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें
- कोई निर्णय / अपनी बात किसी पर थोपे नहीं; अन्य लोगों की बात भी ध्यान से सुनें
- हानिकारक कुरीतियों को दूर करने के लिए कुछ उपाय बताएँ

छ. विडिओ सीडी चला दें। सीडी बन्द करने के लिए विडिओ के निर्देशों को माने।

ज. आशा सुपरवाइजर की निम्न विषयों में चर्चा/प्रदर्शन में मदद करें :

- प्रसव की तैयारी
- हाथ धोना
- शिशु को कंबल में लपेटना
- गर्म थैली का प्रयोग
- बिल्टा पम्प का प्रयोग
- बैग और मास्क का प्रयोग

झ. विडिओ दिखाने के बाद, उसमे दिए वि़ायों पर चर्चा में सुपरवाइज़र की सहायता करें।

ट. पूछें कि क्या किसी के कोई प्रश्न हैं ? धैर्य रखें। ऐसे अवसर पर ही महिलाएँ इकट्ठा होकर आपस में बातचीत और हँसी–मजाक करके कुछ सीख सकती हैं।

ठ. यदि विडिओ उपलब्ध नहीं है या बिजली नहीं है तो निम्न विषयों पर चर्चा करें :

- आई.एफ.ए. गोलियों का महत्त्व
- गर्भावस्था के दौरान आहार
- गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य समस्याएँ

- खतरे के लक्षण
- प्रसव की तैयारी
- जन्म के तुरंत बाद नवजात शिशु की देखभाल; स्तनपान, शिशु को गर्म रखना, देखना कि शिशु की साँस ठीक चल रही है (यदि उसका दम घुट रहा है, तो उसको ठीक करने का तरीका)

ड. किसी विषय पर पहले महिलाओं को अपने विचार व्यक्त करने का मौका दें। फिर उन्हीं की बातों से चर्चा को आगे बढ़ाएँ।

ढ. सहायता के लिये उपर्युक्त परामर्श कार्डों का प्रयोग किया जा सकता है। हालांकि बड़े समूह में प्रयोग करने के लिए कार्ड का आकार छोटा है।

7. सभी आशाओ को अभ्यासपत्र 1 बॉटें। अभ्यासपत्र के सारे बिंदु पढ़ लें। समझाएँ कि यह जानकारी आशाओं को गॉव में स्वास्थ्य के विषय में वार्ताओं का आयोजन करने में उपयुक्त होगी। जब सभी आशाओं को सारे बिंदु समझ जाएँ तो उन्हें, अपने गॉव के बारे में जो जानकारी हो उसके आधारपर स्वयं अभ्यासपत्र भरने के किए 20 मिनट का समय दें। सारे अभ्यासपत्र इकट्ठा कर लें। किसी आशा को अभ्यासपत्र के किसी बिंदु के बारे में विशिष्ट समस्या हो तो उसे मदद करें।

सारांश : (10 मि.)

- आशा और सुपरवाइज़र पहले से वार्ता की तारीख/विषय का आयोजन कर लें।
- समुदाय के प्रमुख लोगों और गर्भवती महिलाओं को पहले से इसकी सूचना दे दें और एक दिन पहले उन्हें इसकी याद दिला दें।
- ध्यान रखें कि बैठक के आस–पास का क्षेत्र साफ हो। देख ले कि सारे उपकरण जैसे विडिओ, टी.वी चल रहे हों।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
समुदाय की गर्भवती महिलाओं के लिये स्वास्थ्य विषयों पर वार्ता का आयोजन	चर्चा	प्रशिक्षक व्दारा अहवाल तथा प्रत्येक आशा व्दारा भरा गया अभ्यासपत्र 1

शाम का सत्र:

शाम के सत्र में प्रशिक्षक सीडी दिखाएँ और समझाएँ कि कहाँ कहाँ रूकना है और कौनसी चर्चा या प्रदर्शन करना हैं। आशाओं को फिल्म के विषय–वस्तु की खुली चर्चा करने दें और कुछ प्रश्न हो तो पूछने दें।

स्वास्थ्य शिक्षा के विषय में वार्ताओं का आयोजन करने के लिए गॉंव के बारे में जानकारी

प्रत्येक आशा को गॉंव में 6 महीने में एक बार, गर्भवती महिलाओं के लिए स्वास्थ्य शिक्षा के विषय में वार्ताओं का आयोजन करने के लिए तैयारी करनी है। आशा के गॉंव में स्वास्थ्य शिक्षा के विाय में वार्ताओं का आयोजन कब किया जा सकता है यह निश्चित करने के लिए आशा अपने गॉंव के बारे में अपनी जानकारी के आधारपर निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें।

1. महिलाओं के लिए साल में कौनसे दो महीने अनुकूल होते है?

   __________ __________

2. महिलाओं के लिए दिन में कौनसा समय सुविधाजनक होता है? __________

3. आप के गॉंव में ऐसी कौनसी आच्छादित जगह है जहॉं 30 महिलाएँ साथ साथ बैठ सकती है?

   ____

4. क्या आपके गॉंव में बिजली की सुविधा है? हॉं / नहीं

5. कार्यक्रम की तिथि तथा समय निश्चित करने के लिए आप किससे चर्चा करेंगी?

   ____

   ____

   ____

6. गर्भवती महिलाएँ और उनकी मॉं या सास मिलाकर कितनी महिलाएँ कार्यक्रम में उपस्थित होंगी?

   ____

7. कार्यक्रम के समय बिजली कट गई तो क्या वैकल्पिक व्यवस्था हो सकती है?

   ____

   ____

8. सारे गॉंव के लिए सार्वजनिक कार्यक्रम में यदि यह फिल्म दिखानी हो तो आपके विचार में कौनसी दिक्कते संभव है?

   ____

   ____

   ____

मोड्यूल 16 : नवजात शिशु की देखभाल में अंतिम कदम

सत्र 6 : शिशु की निरंतर देखभाल के परामर्श कार्डो का प्रयोग

दिवस : 2

समयावधि : 1 घं. 30 मि.

प्रयोजन

शिशु की निरंतर देखभाल के लिए मॉं को दिये जाने वाले स्वास्थ्य शिक्षा संदेश और उनका महत्व आशा को बताना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगीः

1. बताना कि कार्ड 32 से 36 का प्रयोग कब करना है।
2. इन कार्डो के प्रयोग से आशा को निरंतर देखभाल में कैसे सहायता मिलेगी यह बताना।

सामग्री

- स्वास्थ्य शिक्षा चित्र पुस्तिका (कार्ड 32 से 36)
- वार्तालाप कैसे करे? – मार्गदर्शिका (अध्ययनपत्र में दी है)

तैयारी

- आशाओं से कहें कि वे अपनी स्वास्थ्य शिक्षा चित्र पुस्तिका जिसका प्रयोग वे अपने गॉंव में कर रही है तथा उनके पास जो अध्ययनपत्र पहले से है वह अपने साथ रखें।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति एवँ चर्चा</u> (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से पूछें कि वे स्वास्थ्य शिक्षा चित्र पुस्तिका से कार्डो का प्रयोग कब कर रही है? उनकें उत्तरों में निम्न होना चाहिये – गर्भावस्था में मॉं को स्वास्थ्य शिक्षा देंने, प्रसव के दूसरे दिन, अधिक खतरेवाले शिशु की मॉं को स्वास्थ्य शिक्षा देंने तथा आवश्यकतानुसार।
2. पहली कार्यशाला से आशाएँ स्वास्थ्य शिक्षा चित्र पुस्तिका का प्रयोग कर रही है। उसका प्रयोग कैसे करना है इससे वे अब भली भॉंति परिचित है। जिन कार्डोपर पीला, हरा, नीला या लाल रंग का संकेत है उनको आशाने अब तक सीखा है। बचे हुए कार्डोपर गुलाबी रंग का संकेत है जो शिशु की निरंतर देखभाल के लिए परामर्श में प्रयोग करने है।
3. जन्म से लेकर 42 वें दिन तक आशाएँ शिशु की देखभाल करने जा रही हैं। मॉं तथा शिशु के घर का 42 वें दिन का दौरा आशा के नियमित दौरों का आखरी दिन होता है।
4. 2 महीने से 5 वर्ष की उम्र के शिशुओं की स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में आशा ने आई एम सी आई प्रशिक्षण मोड्यूल में सीखा हैं। इन शिशुओं की स्वास्थ्य समस्याओं का उपचार करना भी उसने सीखा है, जैसे – न्युमोनिया, दस्त, बुखार, कुपोषण, खून की कमी की।

5. 2 महीने से 5 वर्ष की उम्र के शिशुओं को स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या होती है तो माता–पिता आशा से संपर्क करें, जो ऐसे कई बीमारीयों का उपचार करती है या समय पर अस्पताल भेजने के लिए सलाह दें सकती हैं। आशा के नियमित दौरों में से आखरी दौरे के दिन आशा निम्न कार्डो के बारे में जानकारी देंगी – टीकाकरण, बीमारी के दौरान आहार देना जारी रखना, खॉसी जुकाम के लिए घरेलु उपचार और खतरे के लक्षण, जिससे माता–पिता शिशु का प्रारंभिक टीकाकरण पूरा करेंगे और शिशु को कोई समस्या हो तो तुरंत आशा को बुलायेंगे। शिशु की देखभाल करने में आशा को इससे सहायता मिलेगी।
6. कार्ड 32 से 36 के विषय–वस्तु की चर्चा करें। नीचे विषय–वस्तु बाक्स देंखें।

विषय–वस्तु

32. टीके लगवाने से बच्चों की कई खतरनाक बीमारियों से रक्षा होती है

– शिशु को टीके लगवाने के लिये नर्स बहनजी से मिलना न भूले।
– शिशु को पहले साल सारे प्रारंभिक टीके लगवाये और काली खांसी, डिफ्थीरिया, टिटेनस, तपेदिक, खसरा, तथा पोलियो जैसे रोगों से बच्चे को बचाईये।

33. सभी आवश्यक प्रारंभिक टीके शिशु को पहले वर्ष में ही लगवा दें

पहले वर्ष में शिशु को 5 बार टीके लगवाने चाहिये।

– जन्मते ही, अथवा जल्दी से जल्दी बी.सी.जी. तथा पोलियों की दवा दी जानी चाहिये
– 6 सप्ताह की आयु के शिशु को डी.पी.टी. 1 का टीका तथा पोलियो की बूँदें (पहली खुराक) पिलानी चाहिये।
– 10 सप्ताह की आयु के शिशु को डी.पी.टी. 2 का टीका तथा पोलियों की बूँदें (दूसरी खुराक) पिलानी चाहिये।
– 14 सप्ताह की आयु में डी.पी.टी. 3 का टीका तथा पोलियों की बूँदें (तीसरी खुराक) पिलानी चाहिये।
– 9 माह की आयु में शीघ्रताशीघ्र शिशु को खसरे का टीका लगवाना चाहिये।

रोगी शिशु को टीका लगाने से कोई खतरा नहीं होता।

34. दस्त के दौरान शरीर में पानी की कमी होने से बचाव के लिये अतिरिक्त तरल पदार्थ दें

दस्त लगने पर आशा से सम्पर्क करें। मॉ को बताएँ कि निम्न लक्षणों के लिये शिशु को देखे। कोई लक्षण नज़र आने पर आशा को तुरंत बुलाएँ।

1. यदि बच्चा और अधिक बीमार /कमज़ोर दिखे।
2. न ही कुछ पी रहा हो, और न स्तनपान कर पा रहा हो।
3. टट्टी में खून जा रहा हो।
4. कम पानी/ दूध पी रहा हो।
5. बुखार हो गया हो।

35. घरेलू दवाओं से शिशु के खाँसी–ज़ुकाम का उपचार करें

खाँसी –जुकाम के लिये बच्चों को कोई दवा नहीं देनी चाहिये।

– यदि शिशु मे निम्न से कोई चिन्ह हो तो शिशु को तुरंत अस्पताल ले जायें

– कुछ नहीं पी पा रहा है या स्तनपान नहीं कर पा रहा है

– सोता जा रहा है और जग नही रहा

– लगातार उल्टियाँ कर रहा है

यदि शिशु को खॉसी है या सॉस तेज चल रही है तो उसे तुरंत आशा के पास ले जाये, वह शिशु का उपचार कर सकती है।

36. यह पहचानें कि कब शिशु को उपचार हेतु स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के पास ले जाना चाहिये

बच्चे को तुरंत स्वास्थ्य केन्द्र ले जायें यदि –

– उसे दौरे पड़ रहे है।

– वह कुछ नहीं पी पा रहा/ स्तनपान नहीं कर पा रहा।

– उपचार के बाद भी और अधिक बीमार हो गया

– उसकी टट्टी में खून आ रहा है।

– बेहोश है, अथवा जगाने से जाग नहीं रहा।

– लगातार उल्टी कर रहा है।

7. प्रत्येक कार्ड के विषय–वस्तु की चर्चा करें। विषय–वस्तु समझाएँ। कोई समस्या हो तो पूछें। सारी शंकाओं का समाधान करें।

स्वास्थ्य शिक्षा कार्ड का प्रयोग करने का अभ्यास (40 मि.)

1. आशाओं की जोड़ियॉ तैयार करें। प्रत्येक आशा कार्ड 32 से 36 का जैसे गॉव में प्रयोग करेंगी वैसेही प्रयोग करने का अभ्यास करें।
2. प्रशिक्षक कमरे में घूमकर निरिक्षण करें और क्या सही है किसमें सुधार आवश्यक है यह बताएँ।
3. बताएँ कि 42 वें दिन घर के दौरे में आशा ने कार्ड 32 से 36 का प्रयोग करना हैं।

सारांश (5 मि.)

- किसी आशा से पूछें कि कार्ड 32 से 36 का प्रयोग कब करना हैं।
- किसी अन्य आशा से पूछें कि शिशु की निरंतर देखभाल में इन कार्डों से उसे कैसे मदद मिलेगी?
- अच्छे काम के लिए आशाओं की प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बताना कि कार्ड 32 से 36 का प्रयोग कब करना है।	प्रश्न–उत्तर	–
इन कार्डो के प्रयोग से आशा को निरंतर देखभाल में कैसे सहायता मिलेगी यह बताना।	प्रश्न–उत्तर	–

प्रशिक्षण कार्यशाला 7 : सारांश तथा गाँव में कार्य करने की योजना बनाना

दिवस : 2
समयावधि : 40 मि.

प्रयोजन

इस प्रशिक्षण अवधि (प्रशिक्षण कार्यशाला 8, मोड्यूल 18 तथा 19) में जो सीखा उसकी समीक्षा करना तथा आने वाले माह में समुदाय के बीच रहकर जो कार्य करने हैं उसकी योजना बनाना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यता आएगी:

1. बताना कि इस प्रशिक्षण की समाप्ति पर समुदाय के बीच वह क्या कार्य करेगी।

सामग्री

- नवजात शिशु वाले फॉर्म
- पूरक फॉर्मो की पुस्तिका
- गर्भावस्था फॉर्मो की पुस्तिका
- आशा के लिए अध्ययन सामग्री
- माता–पिता के लिए जानकारी पत्र की पुस्तिका

तैयारी

- उपर्युक्त सामग्री पर्याप्त मात्रा में तैयार रखें ताकि आशा अपने गांव में कार्य हेतु नवजात शिशु वाले फॉर्मो, पूरक फॉर्मो तथा गर्भावस्था फॉर्मो की पुस्तिकायें पर्याप्त मात्रा में ले जा सके।

प्रशिक्षण विधि:

प्रश्नोत्तर/ चर्चा (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशा से पूछें कि इस प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने क्या नई जानकारी हासिल की (विभिन्न प्रकार के कौन–कौन से फॉर्म हैं, उनका प्रयोग कब करना है, विभिन्न फॉर्मो की पुस्तिकायें तथा इन में दिये हुये फॉर्मो का प्रयोग कब करना है, माता–पिता के लिए प्रपत्र तथा ये उन्हें कब दिये जायेंगे, सामूहिक स्वास्थ्य शिक्षा सत्रों का आयोजन कब और कैसे करना है तथा माँ–बच्चे को कब और कैसे अस्पताल भेजना है)
2. यदि कुछ शेष रह गया हो तो वह भी बतायें।
3. अब तक अधिकांश आशाएँ परीक्षा पास कर चुकी होंगी। जो परीक्षा पास नहीं कर पायीं वे अगले प्रशिक्षण के दौरान परीक्षा देंगी (इस कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षण दोहराया जायेगा)। अगले महीनों में आशा शिशु में सेप्सिस तथा दम घुटने के निदान और उपचार में कुशलता की जॉंच हेतु सुपरवाइज़र के साथ जायेंगी। सुपरवाइज़र नियमित रूप से आशा के कार्य की जॉंच तथा सहायता हेतु महीने में कम से कम एक बार

जायेंगे। अपने दौरे में सुपरवाइज़र आशा को गुड़िया पर दम घुटने का उपचार करते और जेन्टामाइसिन तथा विटामिन 'के' की सुई लगाने का अभिनय/ अभ्यास करते हुये देखेंगे।

4. सुपरवाइज़र जॉच सूची की सहायता से आशा की कार्य–कुशलता की जॉच करेगी तथा जहॉं आवश्यक होगा उन्हें अतिरिक्त जानकारी देगी और गलतियां सुधारेगी। इससे आशा द्वारा दी गयी सेवायें उच्च कोटि की और प्रभावकारी होंगी।
5. आशा को गॉंव के बारे में जो लेखा–जोखा रखना है, उसकी उन्हें याद दिलायें। यह रिकॉर्ड शिशु की घरेलू देखभाल का एक महत्वपूर्ण अंग हैं क्योंकि इनसे आशा तथा सुपरवाइज़र यह सुनिश्चित कर सकेंगी कि समुदाय/ गॉंव के लोगों को उच्च कोटि की सेवायें उपलब्ध हो रही हैं। आशा को बचे हुये रिक्त फॉर्मो/ रिकॉर्डो की संख्या की जानकारी रखनी चाहिए तथा सुपरवाइज़रों को पहले से बता देना चाहिए कि उन्हें अतिरिक्त फॉर्मो की कब आवश्यकता पड़ेगी।

सारांश (10 मि.)

- सभी प्रशिक्षणार्थियों से पूछें कि समुदाय के बीच जो कार्य उन्हें करने है उन्हे योजनाबध्द तरीके से कैसे करेंगी।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बताना कि इस प्रशिक्षण की समाप्ति पर आशा को समुदाय के बीच क्या कार्य करने हैं।	प्रश्नोत्तर	–